

ज्योतिष कल्पद्रुम

ज्योतिषकल्पद्रुम

पवाँरकुलकमलमार्त्तण्ड श्रीमन्महाराज
शंभुसिंहजी सुठालियाधीशकृत।

खेमराज श्रीकृष्णदास प्रकाशन बम्बई



संस्करण- सन् १९८८, संवत् २०४५

मूल्य ३० रुपये मात्र

मुद्रक और प्रकाशक-
मे० खेमराज श्रीकृष्णदास, अध्यक्ष-श्रीवेंकटेश्वर प्रेस, बम्बई-४, के लिये
दे० से० शर्मा, मेनेजर, द्वारा श्रीवेंकटेश्वर प्रेस, खेतवाड़ी, बम्बई-४ में मुद्रित।



पवाँरकुलकमलमार्त्तण्ड श्रीमन्महाराज शंभुसिंहजी मुठालियाधीश ।

प्रस्तावना।



मैंने सम्वत् १९६८ में "ज्ञानप्रदीप" नामक ग्रन्थ सुबोधिनी भाषाटीका सहित तयार करके 'श्रीवेङ्कटेश्वर' स्टीम् प्रेस बंबई में छपवाया था मुझको ऐसा निश्चय नहीं था कि सज्जन गुणवृन्द उस तुच्छ ग्रन्थकी ऐसी गुणज्ञता करेंगे कि थोड़ेही कालमें सम्पूर्ण भारतवर्षमें उस ग्रन्थका प्रचार होगया. सज्जनोंकी यह गुणग्राही देख मेरे उत्साहकी अत्यन्त वृद्धि हुई है। अतएव अबकी बार मैं "ज्योतिषकल्पद्रुम" नामक ग्रन्थ स्वयम् रचकर प्रकाशित करताहूँ जिसके प्रथमभागमें मैंने "जिनेन्द्रमाला" का भाषानुवाद प्रकाशित किया है। यह ग्रन्थ (जिनेन्द्रमाला) आजतक कहीं प्रकाशित नहीं हुआ है और मूल ग्रन्थ तो अभीतक कहीं देखनेमें ही नहीं आया केवल अँग्रेजी अनुवाद इस ग्रन्थका एन् चिदम्बरम् अय्यार बी. ए. ने सम्पादित करके के. आर. प्रेस २८९ थम्बोचेट्टी स्ट्रीट मदरासमें छपवाया था उसी अंग्रेजी भाषाका अनुवाद मैंने सरल हिन्दीभाषामें करके इस ग्रन्थमें प्रकाशित है। ज्योतिषशास्त्र के तीन भाग हैं संहिता, तंत्र और होरा-संहितामें प्राकृतिक ज्योतिषका बर्णन है. जैसे सुभिक्ष, दुर्भिक्ष, वृष्टि अतिवृष्टि, अनावृष्टि, अग्निभय,राजकीय उपद्रव इत्यादि जो प्राकृतिकहैं और तंत्रमें गणित ज्योतिषका बर्णन है अर्थात् सूर्य्य चन्द्र स्पष्ट करना ग्रहण बनाना इत्यादि बातें जिनका सम्बन्ध गणितसे हैं और होरामें फलित ज्योतिषका वर्णन अर्थात् हर एक प्राणीके जन्मकालके ग्रहोंकी स्थितिपरसे उसके समग्र जीवनका वृत्तान्त समझनेकी रीति लिखी है। प्रश्नशास्त्र होराहीमें सम्मिलित है प्रश्नशास्त्रके बहुतसे ग्रन्थ-

हैं परन्तु 'ज्ञानप्रदीप' और 'जिनेन्द्रमाला' ये दो ग्रन्थ इसविषयमें मुख्य हैं, इन ग्रन्थोंका तात्पर्य्य एकही है और इनकी शैली 'षट्पञ्चाशिका' 'भुवनदीपक' आदि ग्रन्थोंसे पृथक् है क्योंकि उन ग्रन्थोंमें केवल प्रकाशक नवग्रहोंकाही विचारहै और जिनेन्द्रमाला व ज्ञानप्रदीपमें अप्रकाशक ग्रहोंका भी विचार कियागया है. ज्योतिषकी स्थितिको केन्द्र मानकर उसके आस पास इन अप्रकाशक ग्रहोंका परिक्रमा देना प्रकाशित कियाहै. वर्त्तमान ग्रन्थमें२४ अध्यायहैं प्रथम अध्यायमें संज्ञाप्रकरण लिखागया है और अध्याय २ से, ४ तक पृच्छकका विचार मालुम करना बताया है और फिर शेष अध्यायोंमें प्रश्नका उत्तर कहनेकी रीति लिखी है जैसे—चोरी,रोग उत्पत्ति, मृत्यु, भोजन, स्वप्न, विवाह, शकुन, शल्य, और नद्यागम यात्रा और वृष्टि इत्यादि अनेक उत्तमोत्तम प्रकरण लिखेगये हैं. मनुष्यका ऐसा कोई कार्य्य नहीं हो सक्ता कि जो इन प्रकरणोंसे अलग हो जिस प्रश्नका वर्णन इन प्रकरणोंमें नहीं आया है उसका उत्तर सामान्य शुभाशुभके प्रकरणमें मिलेगा ।

अन्तके अध्यायमें चेष्टा लिखीगई है प्रसिद्ध ज्योतिषी वराहमिहिरने बृहत्संहितामें चेष्टाके विषयमें यह श्लोक—लिखा है ।

दवज्ञेन शुभाशुभं दिग्गुदितस्थानाहतानीक्षता
वाच्यं प्रष्टृनिजापरांगघटनां चालोक्य कालं धिया ॥
सर्वज्ञो हि चराचरात्मकतयासौ सर्वदर्शी विभुश्चेष्टा-
व्याहृतिभिः शुभाशुभफलं संदर्शयत्यर्थिनाम् ॥ १ ॥

अर्थ—ज्योतिषीको चाहिये कि प्रश्नकर्त्ता तथा अन्य पुरुषके अङ्गलक्षण स्थान दिशा हत पदार्थ (उठाईहुई चीज) इत्यादिको देखकर शुभाशुभ फलकहे क्योंकि सर्वज्ञ चर अचरात्मक सर्वदर्शी

सर्वब्यापी परमात्मा शुभाशुभ फलको चेष्टा और शब्दों द्वारा अर्थी को सूचित करताहै। अंग्रेजी स्कूलका छोटासा विद्यार्थीभी यह बात जानताहै कि रोवर्टब्रूसने छे वक्त शत्रुसेनापर चढ़ाई की परन्तु उसका जय एक बार भी न हुआ निदान रोवर्टब्रूस एकांतमे उदास होकर बैठगया उसवक्त उसने क्या देखा कि एक मकड़ी मक्खीको पकड़नेके लिये कई हमला कर चुकीहै परन्तु गिर गिर पड़ती है अन्तमें मकड़ीने अपने पराजयोंपर हतोत्साह न होकर फिर एक झपट ऐसी मारी कि मक्खीको पकड़कर ऊपर लेगई बादशाहने यह वृत्तान्त देख अपने चित्तमें बिचारा कि मकड़ी कईबार पराजित हुई परन्तु उद्योग करनेसे अंतमें उसकी जीत हुई, इसीतरह मुझकोभी उद्योग करना चाहिये निदान बादशाहने फिर चढ़ाई की और इस चढ़ाईसे बादशाहकी जीत हुई मतलब यह है कि, यहां मकड़ीकी चेष्टासे भावी फल विदित हुआ।

इंग्लिस्तानके बादशाह पहले चार्ल्जको राज्याभिषेकके समयकी पोशाकके लिये बैंगनी मखमलकी आवश्यकता हुई परन्तु उस समय वह मखमल न मिली निदान सबकी यह सलाह हुई कि बादशाहको श्वेत वस्त्र धारण कराकर राज्याभिषेक कराना जो कि उसदेशमें वध्य पशु श्वेत वस्त्रसे ढांककर देवताको चढ़ाया जाता था अतएव यह चेष्टा श्वेत वस्त्रोंकी अशुभ सूचक हुई और उसका परिणाम यह निकला कि बादशाह गादीबैठनेके थोडे ही दिन बाद अपने मन्त्री वर्गोंके हाथसे मारागया॥

तुर्किस्तानमें अभीतक यह चालहै कि वे लोग विक्षिप्त पुरुषके वचनोंकी बड़ी प्रतिष्ठा करतेहैं और उनके मुखसे जो वचन निकलतेहैं उन्हींसे अपना शुभाशुभ निरीक्षण करलेते हैं॥

एन्‌चिदाम्बरम् अय्यारने अंग्रेजी जिनेन्द्रमालाकी भूमिकामें अपनी स्वानुभवसिद्ध मदरासके ज्योतिषीकी एक वार्ता लिखीहै वह यह है कि एक प्रसिद्ध ज्योतिषी मदरासमें आकर ठहरा एक दिन प्रातःकाल उक्त ज्योतिषीकी स्त्री दो केले तरकारीके वास्ते लाई ज्योतिषीने उनमेंसे एक केलेको काटा और पाकगृहमें भेजदिया. इतनेमें एक पुरुष ज्योतिषीके पास आया और कहने लगा कि आप कृपाकर मेरे मनकी चिन्ता बतावें. ज्योतिषीने उस समयकी चेष्टा और चर्य्याको विचारकर कहा कि तुम्हारे दो पुत्र हैं जिनमें से एक खोगया है तदुपरांत ज्योतिषीने पाकगृहमें केलेका वृत्तान्त पूंछा तो मालुमहुआ कि उसकेलेको लवण डालकर पकालिया है फिर ज्योतिषी वापिस पृच्छकके पास आया और कहने लगा कि तुम्हारे खोयेहुए पुत्रको चोरोंने जेवर निकालकर मारडालाहै और खारे समुद्रके पास वह गाड़ागयाहै निदान खोज करनेसे मालुम हुआ कि ज्योतिषीकी भविष्य वाणी सब सत्य निकली संस्कृतके प्राचीन पुस्तकोंमें लिखा है कि रावणके नाना शुमालीने अपनी पुत्री कैकशीको पुत्र माँगनेके लिये विश्रवस ऋषिके पास भेजी वहांपर स्त्री जाकर बहुत देरतक खड़ी रही कि सन्ध्या होगई तब ऋषिकी समाधि खुली तो क्या देखा कि; कैकशी अपने पावोंके नखोंसे पृथ्वी खोदरहीहै इस चेष्टाको बिचार कर ऋषिने यह उत्तर दिया कि तेरे एक रावण नामका राक्षस पुत्र होगा जिसके १० मस्तक होंगे. फिर दूसरी बार कैकशी उक्त ऋषिके पास पुत्रकी याचनाके लिये गई और वहां जाकर सोगई जब ऋषिकी समाधि खुली तो उस चेष्टाको विचारकर ऋषिने कहा कि अबके तेरे पुत्र छै महीने की नींद सोनेवाला कुम्भकर्ण होगा फिर तीसरी बार केशनी ऋषिके पास पुत्रका वरदान मांगने गई और प्रश्न करते वक्त सावधान

चित्तसे रही तो ऋषिने विभीषणके होनेका वरदान दिया, इसीतरह महाभारतमें लिखाहै कि पाण्डु, धृतराष्ट्र और विदुर इन्होंकी माताके गर्भरहते समय चेष्टासे ही इन्होंके पिताने प्रत्येक पुत्रके भावी लक्षण कहदियेथे परंतु चेष्टासे फलित कहना सहज बात नहीं है. एक समय इन्द्रने बृहस्पति और शुक्रको मृत्युलोकमें भेजा वहां इन दोनोंने ज्योतिषीका भेष धारण किया और किसी पुरुषके द्वार पर जा बैठे वहां इन्होंनें क्या देखा कि एक स्त्री पानी भरनेके लिये मयडोल और रस्सीके बाहर निकली और कुवेंपर जाकर वापिस हाथमें रस्सीका टुकडा लियेहुए घरको आई और इन ज्योतिषीयोंसे पूछा कि,मेरा पुत्र बनारस गयाहै वापिस कब लौटेगा ज्योतिषियोंने उस स्त्रीसे टूटी हुई रस्सीका ब्योरा पूछा तो स्त्रीनें जवाब दिया कि पानी भरतेमें रस्सी टूटगई है जिससे डोल जा पड़ा यह सुनकर बृहस्पतिनें उत्तर दिया कि तुम्हारा पुत्र गंगामें डूबगयाहै यह सुनकर स्त्री विलाप करने लगी तब शुक्रने स्त्रीका समाधान किया और कहा कि तुम्हारा पुत्र दो घण्टे बाद वापिस लौटकर आताहै और ऐसाही हुआ कि पुत्र बनारससे आगया. शुक्रने इस चेष्टाका अर्थ बृहस्पतिको इसतरह समझाया कि जलके रहनेका स्थान कुवा है वहांसे जल डोलमें प्राप्त होकर कूपसे जुदा हुआ था परंतु रस्सीके टूटनेसे डोल कुवेमें जा पड़ा और पानी अपने स्थानमें जा मिला इससे यह अर्थ सिद्ध हुआ कि पुत्र जो अपने घरसे निकलकर बाहर गयाहै वह थोडे ही कालमें अपने घर आजावेगा जैसे कि डोलका जल पीछा अपन रहनेके स्थानमें जा पहुँचा। अंग्रेजी में एक कहावतहै वह बहुत सत्य है— "Coming events cast their shadows before" अर्थात् होनेवाली घटना का प्रतिबिम्ब पूर्वसे विदित होता है॥

इस ग्रंथके दूसरेभागमें मैंने स्वानुभूत योगायोग लिखेहैं और बहुतसे ज्योतिषके योग नवीन रचनाकियेह जो अनुभवलब्ध होने से बहुत सत्य हैं और किसी ज्योतिषके ग्रंथमें न निकलेंगे और ग्रन्थके अंतमें प्रश्नोत्तररूपसे "सिद्धान्तप्रकरण" लिखाहै । जो महाशय इस तुच्छ ग्रंथको एकबार भी आद्यापान्त पढ़लेंगे उनका मैं कृतज्ञ होऊंगा और उन्होंके इस कार्य्यसे अपने सम्पूर्ण परिश्रमों को सुफल समझूंगा किं बहुनाबुद्धिमत्सु ॥

ता० ९ जून
सन् १९०४ ई०

सज्जनोंका कृपाभिलाषी–
महाराजा शम्भूसिंह सुठालियाधीश,
स्थान–सुठालिया, (मध्यभारत)



॥ श्रीः ॥

ज्योतिषकल्पद्रुम-विषयानुक्रमणिका।

प्रथमभाग।

इति प्रथमभाग समाप्त।

द्वितीयभाग।

सिद्धान्तप्रकरणम्।

इत्यनुक्रमणिका समाप्ता।

भूमिका ।

श्रीशम्भुसिंहनृपतिर्माधवसूनुः पवांरकुलजन्मा ॥
नप्ता शिवदानानां मालवदेशः सुठालियाधीशः ॥ १॥
नत्वा गणेशं वाणीं च श्रीगुरुं स्वेष्टदेवताम् ॥ ज्योतिः-
कल्पद्रुमं कुर्वे ज्योतिस्तत्त्वप्रकाशकम् ॥ २ ॥ ज्योतिः-
पयोनिधिमगाधमपारपारं यस्मिन्निमज्जति महानिति
मन्दरोऽपि ॥ अल्पोल्पबुद्धिर्गुरुपादसमाश्रयोहं गो-
पादतुल्यमतरं हि तमश्रमेण ॥ ३ ॥ ज्योतिःशास्त्रं
सुदुर्बोधं सुतरां देवभाषया ॥ ज्ञात्वैवं सर्वसुज्ञेयं भाष-
या विवृणोम्यहम् ॥ ४ ॥ आरम्भे श्रीशब्दो मंग-
लार्थः ॥ मालवः देशो यस्येति विग्रहः ॥ १ ॥

अर्थ-मैं शम्भुसिंह नृप माधवसिंहका पुत्र तथा शिवदानसिंहका पौत्र मालवदेशीय सुठालियाका अधिपति, ॥ १ ॥ गणेश सरस्वती श्रीगुरु और इष्टदेवताको नमस्कार करके ज्योतिषतत्त्वको बतलानेवाले इस ज्योतिःकल्पद्रुम नामक ग्रन्थको प्रकाशित करताहूं ॥ २ ॥ यह ज्योतिषशास्त्र समुद्रके तुल्य ऐसा अगाध और अपार है कि जिसमें बड़ा अभिमानी मंदराचल पर्वतभी डूबता है परन्तु मैं अल्पबुद्धि श्रीगुरुके चरणोंके आश्रयसे गोपादके तुल्य विनाही परिश्रम इसके पारंगत होगया ॥ ३ ॥ प्रथमतो ज्योतिषशास्त्र स्वयंही समझनेमें कठिनहै फिर संस्कृतभाषामें होनेसे औरभी कठिन होगया है इसलिये सबलोगोंके समझमें सहजहीआजानेके वास्ते नागरी भाषा में इस ग्रन्थको प्रकाशित करताहूं ॥४॥ यहां श्लोकमें जो श्रीशब्द मेरे नामकेपूर्वआयाहै यह आत्मस्तुतिका प्रकाशक नहीं है प्रत्युत प्राचीन शास्त्रानुसार हरएक ग्रन्थके आरम्भमें मंगलवाची श्रीआदिशब्द आनाचाहिये इसलिये यहां यह श्रीशब्द मंगलार्थ लिखागया है ।

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

ज्योतिषकल्पद्रुम।

अर्थात्

जिनेन्द्रमाला प्रारभ्यते।

उपोद्धात।

(१) श्रीअनुकम्पाशील परमेश्वरको नमस्कार है जिनका महत्व त्रैलोक्य तथा जन्ममरणरहित देवर्षियोंके कथन कल्पनासे परे है और जो सम्पूर्ण चराचरपर अनुग्रह तथा वात्सल्य रखनेवाला है ॥

(२) मैं इस अलौकिक विद्याको सुप्रसिद्ध दैवज्ञों तथा त्रिकालज्ञों की पूर्ण कृपा सहायतापर निर्भर छोड़कर इसग्रंथको लिखना प्रारंभ करताहूं ॥

(३) इस ग्रंथका नाम जिनेन्द्रमाला मैंने रक्खा है और भूत भविष्य वर्त्तमान तथा मनुष्यके जीवनके शुभाशुभ फल निरीक्षणार्थ कई क्रिया विधि इसमें लिखी हैं ॥

४ से ६) आरूढ़ छत्र उदय लग्न त्रिकोण केन्द्र दृष्टिक्षेत्र बलाबल दिशा नरनारी सम विषम जाति रंग चरण आकृति शृंग परिमाण अवस्था स्वाद समीप दूर तिल लांछन गमन शीघ्रगति मंदगति चर स्थिर द्विस्वभाव प्रकाश दिन रात्रि पार्श्व आश्रय स्थान ग्रह राशियोंके काल इन सबको विचारकरके जो भविष्य कहता है वह दैवज्ञ कहाजाताहै ॥

टिप्पणी ।

सम्पूर्ण दिशामंडलके ज्योतिषियोंने बारे भाग कियेहैं जिन्होंके नाम राशियां हैं वृष सिंह वृश्चिक कुंभ ये पूर्व दाक्षिण पश्चिम उत्तर की राशियां हैं, मीन मेष ईशान कोणमें हैं, मिथुन कर्क आग्नेयमें कन्या तुला नैऋत्यमें और धन मकर वायव्यमें हैं पहिले अध्यायका ८१ वां श्लोक देखो ज्योतिषीसे जिस दिशाको पृच्छक बैठाहो उस दिशामें जो लग्न है उसका नाम आरूढ़ है यह लग्न बड़ी सावधानीके साथ याद रखना चाहिये क्योंकि इस ग्रंथमें इसी लग्नके आधारपर सम्पूर्ण भविष्य कथन किया है इन बारे राशियोंपर ग्रहोंकी स्थिाति गति जाननेके लिये पहिले अध्यायका ८३ वां श्लोक देखो छत्रलग्न जाननेके लिये पहिले अध्यायका २ रा श्लोक देखो उदय लग्न उसका नाम है जिसका दिशामंडलमें उदय हुआ हो दृष्टि ग्रहोंकी तथा राशियोंकी दोनोंकी कही जासक्तीहै ग्रहोंके स्थान पांच हैं स्वक्षेत्र, मित्रक्षेत्र, शत्रुक्षेत्र, उच्चक्षेत्र, नीचक्षेत्र, प्रथम अध्यायका १४-१६-१७-२०-२१-२३-श्लोक देखो ॥

(७ से ९) इस ग्रन्थमें मैं इन विषयेंके प्रश्नका भविष्य कथन कहूंगा धातु, मूल, जीव, नष्ट, मुष्टि, शुभाशुभचिंतना, रोग, मृत्यु भोजन, स्वप्न, शकुन, विवाह, प्रीति, संतानोत्पत्ति, आयुधशल्य, झिरन, सेनाआगमन, नद्यागम, यात्रा, वृष्टि, महर्घ, समर्घ नौकागम, चेष्टा ॥ इति श्रीपवांरवंशावतंसश्रीमहाराज शंभुसिंहसुठालियाधीशकृते भाषानुवादे जिनेन्द्रमालाग्रन्थे उपोद्घातकाण्डं समाप्तम्॥

अथ संज्ञातन्त्रं प्रारभ्यते ।

(१) जब सूर्य्य वृष मिथुन कर्क सिंह पर रहें तो सूर्य्यकी मेष वीथी होतीहै और वृश्चिक धन मकर कुंभसे मिथुनवीथी तथा मेष कन्या तुला मीनसे वृषवीथी जानना ॥

टिप्पणी।

क्रान्तिमंडलके मध्यवर्ति स्थानको मेष वृष मिथुन राशियोंमें विभक्त कियाहै मेषके प्रथमाग्र भागको कर्कायनका प्रतिरूप कल्पित कियाहै और मिथुनके अंतिम भागको मकर क्रान्तिका प्रतिरूप नियत कियाहै जब सूर्य्य दक्षिणायन होतेहैं तब कर्क क्रान्तिका परित्याग करते हैं ये १४ जोलाई मुताबिक कर्क संक्रान्तिकी प्रथम तिथिको होताहै न कि सायन गणितसे जो २१ जूनको होताहै इस हिसाबसे कर्क सिंह संक्रान्तिमें सूर्य्यको अनुप्रस्थ मेष राशिका कहना चाहिये इसी तरह कन्या तुलामें वृषके और वृश्चिक धनमें मिथुनके सूर्य्य कहना चाहिये यहाँतक उत्तरायणका हिसाब कहा अब दक्षिणायनका सुनिये कि मकर कुंभ संक्रान्तिमें सूर्य्यका मिथुन मार्ग और मीन मेषमें वृषमार्ग तथा वृष मिथुन संक्रान्तिमें सूर्य्यका मेषमार्ग समझना चाहिये ॥ फल कहनेके पहिले ज्योतिषी कुंडलीको खेंचे और इन चार बातोंको विचारकरे प्रथम स्थिति उस समयके ग्रहोंकी जो दिङ्मण्डलके चारों ओर नियत क्रमसे फिरतेहैं (अध्याय १ श्लोक ८३ देखो) दूसरे आरूढ़ अर्थात् पृच्छकदिशावर्त्ती लग्नको देखे तीसरे छत्रलग्नको और चौथे उदयलग्नको देखे ॥

(२) अथ छत्रलग्नम् । आरूढ़से सूर्यवीथी तक गिनें जितनी गिनती आवे उतनी ही संख्या तात्कालिक उदय लग्नसे गिने जिस राशिपर गणना पूरी होय उसीको छत्रलग्न कहना चाहिये, यह लग्न आरूढ़ लग्नको ढांकताहै इसीसे इसका नाम छत्रलग्न है ॥

टिप्पणी।

उदाहरण जैसे किसीने सन् १८८६ ता० ९ अगस्त सोमवार इष्ट घ० ७ । ३० पर प्रश्नकिया उस दिन कर्कके २.६ अंश गएथे अब मानलो कि, पृच्छक ज्योतिषीसे दक्षिण दिशाको बैठा तो इस

हिसाबसे आरूढ़लग्न सिंह स्पष्ट रूपसे हुआ और तात्कालिक कन्या लग्नका चतुर्थभाग व्यतीत हुआ यहाँ सूर्य्यवीथी मेष हुआ अब आरूढ़लग्न सिंहसे सूर्य्यवीथीतक नौ राशी हैं अतः उदय लग्न कन्या से नवीं ९ राशि वृष हुई तो यह आरूढ़लग्न सिंहका आच्छादक हुआ इसलिये वृष राशि सिंहकी छत्रहुई ॥

(३) आरूढ़से सूर्य्यवीथीतक गिनना जितनी संख्या आवे उसकी अर्द्ध संख्या ऊदयलग्नसे गिनलेना जहाँ गणना पूरी होय वही राशि छत्र है ॥

टिप्पणी ।

इस नियमके अनुसार उदयलग्न कन्यासे पाँचवी राशि मकर हुई यहभी छत्र कहीजासक्ती है ॥

(४ से ५) श्लोक उदयलग्न मेषका वृष छत्र है वृषका मिथुन छत्र है कर्कसिंहका मेष छत्र है कन्या तुलाका छत्र वृष है वृश्चिक धन मकर कुंभका मिथुन छत्र है और मीनका वृष छत्र है ॥

इस श्लोकमें उदयलग्नका छत्र वर्णनकियाहै परंतु सूर्य्यवीथीसे पृथक कोई छत्र नहीं होसक्ता अलबत्ता आरूढ़ और सूर्य्यवीथी जहाँ एकही राशिमें हो तो उस समय इस श्लोकके अनुसार आरूढ़का छत्रलग्न निकालना चाहिये ॥

(६) मिथुन सिंह कन्या तुला वृश्चिक कुंभ ये शीर्षोदय हैं मेष वृष कर्क धन मकर ये पृष्ठोदय हैं और मीन शीर्षपृष्ठोदय हैं ॥

(७) बुध गुरु शुक्र राहु ये शीर्षोदय हैं, सूर्य मंगल शनि ये पृष्ठोदय हैं चंद्रमा केतु शीर्षपृष्ठोदय है ॥

(८) शिरोदय राशियां और ग्रह दिनको जागते रहते हैं आर पृष्ठोदय राशि तथा ग्रह रात्रिमें जागते रहते हैं और शीर्षपृष्ठोदय राशि व ग्रह दिन रात्रि दोनोंमें जागतेरहतेहैं ॥

(९) द्विपद राशियां मनुष्यवत् सरल देखतीहैं और चतुष्पद राशियां पशुवत् तिरछी देखती हैं तथा पक्षी राशियां ऊपरको देखती हैं और बहुपद राशियां नीचे सरीसृपके अनुसार देखतीहैं ॥

टिप्पणी।

इन द्विपद चतुष्पद राशियोंका वर्णन १ अध्यायके ४८ वें श्लोकमें है ॥

(१०) चन्द्रमा गुरु सरल देखते हैं मंगल तिरछा देखताहै सूर्य ऊपर देखतेहैं बुध शुक्र नीचे देखतेहैं शनि राहु वक्र देखते हैं ॥

(११) राशियां और ग्रह प्रथम स्थानको और सप्तम स्थानको पूर्ण देखतेहैं चौथे दशवेंको त्रिपाद दृष्टि नवम पंचमको द्विपाद दृष्टि तृतीय एकादशको एकपाद दृष्टि तथा अष्टम घरको अर्द्धपाद दृष्टिसे देखतेहैं ॥

(१२–१३) सूर्यका मित्र गुरु है चन्द्रके मित्र बुध गुरु हैं मंगलके बुध शुक्र बुधके चन्द्र मंगल गुरु शुक्र, शनि हैं गुरुके सूर्य चन्द्र बुध शुक्र हैं शुक्रके मंगल बुध गुरु शनि हैं और शनिके बुध गुरु शुक्र मित्र हैं ॥

(१४–१५) सूर्यकी मित्र धन मीन राशि हैं चन्द्रकी मिथुन कन्या धन मीन, मंगलकी वृष मिथुन कन्या तुला, बुधकी मेष वृष कर्क तुला वृश्चिक धन मकर कुंभ गुरुकी वृष मिथुन सिंह कन्या तुला कुंभ शुक्रकी मेष मिथुन वृश्चिक धन मकर कुंभ और शनिकी वृष मिथुन कन्या धन मीन राशियां मित्र हैं ॥

(१६) सिंहका स्वामी सूर्य, कर्कका चन्द्र, मिथुन कन्याका बुध, धनमीनका गुरु, वृष तुलाका शुक्र, मकर कुंभका शनि स्वामी है ॥

(१७) मेष राशि सूर्यका उच्चस्थान है, वृष चन्द्रका, मिथुन परिवेषका, कर्क गुरुका, सिंह धूमका, कन्या बुधका, तुला शनिका,

वृश्चिक राहुका, धनु इन्द्रधनुषका, मकर मंगलका, कुंभ सूक्ष्मका, मीन शुक्रका उच्च स्थान है ॥

(१८) सूर्य मेषके १० अंशतक उच्चका रहता है, चन्द्र ३ अंश गुरु ५ अंश, बुध १५ अंश, शनि २० अंश, मंगल २८ अंश, शुक्र २० अंश तक पूर्वोक्त राशियोंमें उच्चके ये सम्पूर्ण ग्रह रहते हैं ॥

(१९-२०) सूर्यके शत्रु चन्द्र मंगल बुध शुक्र शनि हैं चन्द्रके सूर्य मंगल शुक्र शनि, मंगलके सूर्य चन्द्र गुरु शनि, बुधका सूर्य, गुरुका मंगल शनि, शुक्रका सूर्य चंद्र, शनिके सूर्य चंद्र मंगल शत्रु हैं शत्रुग्रहोंकी राशियांभी बहुतसे ग्रहोंकी शत्रु हैं ॥

(२१-२२) सूर्यकी नीच राशि तुला है चंद्रकी वृश्चिक, मंगलकी कर्क, बुधकी मीन, गुरुकी मकर, शुक्रकी कन्या, शनिकी मेष, इन्द्र धनुषकी मिथुन, धूमकी कुंभ, परिवेपकी धनु और सूक्ष्मकी सिंह नीच राशि है ॥

(२३) मिथुन कन्या तुला धनु मकर मीन ये राशियां राहुकी मित्र हैं कुंभ उसका स्वक्षेत्र है वृश्चिक उसकी उच्चराशि और वृष उसकी नीचराशी है मेष कर्क सिंह ये राशियां राहुकी शत्रु हैं ॥

(२४) तत्काल लग्न और नवम पंचम घरमें त्रिकोण स्थानकहेजातेहैं ॥

(२५-२६)लग्न चतुर्थ सप्तम दशम स्थानकी केन्द्रसंज्ञा है प्रथम स्थानका उदय केन्द्र चतुर्थका जलकेन्द्र सप्तमका अस्तकेन्द्र दशमका वियतकेन्द्र नाम है ॥

(२७) शिरोदय राशियां और ग्रह दिनको बली रहते हैं पृष्ठोदय राशियां और ग्रह रात्रिको बली रहतेहैं और शिरपृष्ठोदयराशियां तथा ग्रह दिन रात दोनोंमें बली रहतेहैं ॥

(२८) सूर्य चन्द्र बुध शुक्र सातवें घर पूर्ण दृष्टिसे देखते हैं

मंगल चतुर्थाष्टम शनि तृतीय दशम गुरु नवम पंचम और राहु तीसरे ग्यारहवें घरको पूर्णदृष्टिसे देखतेहैं ॥

(२९-३०) उच्चराशिस्थ ग्रहमें अपने प्राकृतिक बलसे दशगुणा बल होता है स्वक्षेत्री ग्रहमें द्विगुण बल मित्रक्षेत्री ग्रहमें प्राकृतिक बल और शत्रुक्षेत्रीमें अर्द्धबल तथा नीचराशिस्थ ग्रहमें चतुर्थांश बल रहताहै ॥

टिप्पणी।

भाष्यकार लिखतेहैं कि चर राशियोंमें प्राकृतिक बल यथास्थित रहताहै स्थिर राशियोंमें द्विगुण और द्विस्वभाव राशियोंमें त्रिगुण बल होताहै ॥

(३१) द्विपद राशियां लग्नमें बलवान हैं चतुष्पद दशम ग्रहमें बहुपद सप्तम गृहमें और पक्षी राशि चतुर्थ गृहमें बलवान होतीहैं ॥

टिप्पणी।

इन राशियोंकी संज्ञा जाननेकेलिये पहले अध्यायका ४८ श्लोक देखो ॥

(३२) बुध गुरु लग्नमें बलवान होतेहैं चन्द्र शुक्र चतुर्थघरमें, शनि राहु सप्तम घरमें और सूर्य मङ्गल दशम घरमें बलवान होते हैं ॥

टिप्पणी।

भाष्यकार शुक्रको लग्नमें और शनिको दशम घरमें भी बलवान होना लिखतेहैं ॥

(३३) यदि उदयलग्नमें किसी ग्रहको केन्द्रबल न प्राप्त हुवाहो तो आरूढ़ कुंडलीमें देखना यदि उसमेंभी न हो तो छत्रकुण्डकीसे केन्द्र बल लेना यदि उसमेंभी नहो तो गुरुस्थित राशिको लग्न मानकर केन्द्र बल देखना यदि इसमेंभी न हो तो बुधाक्रांत राशिका लग्न मानना यदि उसमेंभी न हो तो उदयलग्नका स्वामी जिस राशिपर बैठाहै उसको लग्न मानकर ग्रहोंका केन्द्रबल देखना ॥

टिप्पणी. ।

प्रश्नोंके उत्तर देनेमें सबमें बलवान राशियां और ग्रह फल देतेहैं ऐसा याद रखना ॥

(३४–३५) बुध मंगल शनि गुरु शुक्र चंद्र सूर्य्य राहु इनमें प्रत्येक ग्रह उत्तरोत्तर बलवान हैं जैसे बुधसे मंगल बली और बुध व मंगलसे शनि बली है इस तरह सब समझना ॥

(३६) मेषकी पूर्व दिशा है सिंह धनकी आग्नेय कोण बृषकी दक्षिण दिशा, कन्या मकरकी नैर्ऋत्यकोण मिथुनकी पश्चिम दिशा, तुला कुम्भकी वायव्य कोण कर्ककी उत्तरदिशा वृश्चिक व मीनकी ईशान कोण है ॥

(३७) सूर्य शुक्र मंगल राहु शनि चन्द्र बुध गुरु क्रमानुसार पूर्व आग्नेय दाक्षिण, नैर्ऋत्य पश्चिम वायव्य उत्तर ईशानके स्वामी हैं ॥

(३८) मेष मिथुन सिंह तुला धन कुंभ ये राशियां पुरुष हैं और शेष स्त्री हैं ॥

(३९) सूर्य मंगल, गुरु ये ग्रह पुरुष हैं चंद्र शुक्र राहु स्त्रियां हैं बुध शनि केतु नपुंसक ग्रह हैं ॥

(४०) मेष सिंह एकाकी पुरुष राशियां हैं मिथुन तुला धन कुंभ युग्म पुरुष राशिया ह वृष कर्क कन्यावृश्चिक एकाकी स्त्री राशियां हैं मकर मीन युग्म स्त्री राशियां हैं ॥

(४१) सूर्य मङ्गल एकाकी हैं गुरु युग्म ग्रह हैं चंद्र एकाकी शुक्र-राहु युग्म बुध शनि केतु ये तीनों युग्म ग्रह हैं ॥

(४२) धन मीन ब्राह्मण हैं मेष सिंह क्षत्रिय हैं कर्क वृश्चिक वैश्य हैं मिथुन तुला कुम्भ शूद्र हैं वृष कन्या मकर म्लेच्छ हैं ॥

(४३–४४) चंद्र गुरु ब्राह्मण हैं सूर्य मङ्गल क्षत्रिय बुध वैश्य है शुक्र शूद्र है शनि राहु म्लेच्छ हैं ॥

(४५) मेष सिंह धन लाल हैं वृष कर्क तुला श्वेत हैं वृश्चिक कुंभ मीन हरीहैं मिथुन कन्या मकर काली हैं ॥

(४६) गुरुका रंग स्वर्ण सरीखा है सूर्य मङ्गल केतुलाल हैं चंद्र शुक्र श्वेत हैं बुध हरा है और शान राहु काले हैं ॥

(४७) गरुका रंग स्वर्णका सूर्यका अग्निसरीखा मङ्गलका लाल रुधिरतुल्य, चंद्रमाका कांचसरीखा, शुक्रका दूधसरीखा, बुधका हरा शनि राहु काले हैं ॥

(४८) मिथुन कन्या तुला कुम्भ द्विपद राशियांहैं मेष बृष सिंह धनु चतुष्पद हैं मकर मीन पक्षी राशियां हैं कर्क वृश्चिक बहुपद राशियां हैं ॥

(४९) बुध गुरु शुक्र द्विपद ग्रह हैं सूर्य मङ्गल शनि चतुष्पद हैं चन्द्र राहु बहुपद हैं ॥

(५०) राशियोंके स्वरूपका वर्णन–मिथुन स्त्रीपुरुषका जोड़ा स्त्रीके हाथमें वीणा और पुरुषके हाथमें गदा, कन्या नावपर बैठी हुई साथमें दीपक और शस्य है, तुला मनुष्यस्वरूप तराजू हाथमें लियेहुए, धन मनुष्य स्वरूप धनुष हाथमें लियेहुए नीचेका भाग घोड़ेका, मकरका आकार मगर सरीखा मुख मृगका, कुंभका आकार मनुष्यका हाथमें घड़ा लियेहुए, मीनमें दो मछलियां हैं एकके मुखमें दूसरीकी पूँछ लगकर गोल बनीहुई है शेष राशियोंका स्वरूप नामतुल्य जानना जैसे वृष बैलरूप,कर्क केंकड़ा, सिंह शेर, वृश्चिक बिच्छू ॥

(५१) सूर्य्यं चतुष्कोणहैं, चंद्रमा लघुवृत्त, मंगल डमरूसरीखा, बुध त्रिकोण, गुरु दीर्घवृत्त अर्थात् अंडाकृति, शुक्र अष्टकोण, शनि शूर्पाकार, राहु दीर्घरेखातुल्य, ॥

(५२) सूर्य बुध झुकेहुए सींगके हैं, चन्द्रमाका सींग चपटा है, मंगल ओछे सींगका है, गुरु शुक्रके लंबे सींग हैं, शनि टूटे सींगका है, राहुका सींग खंडित है, ॥

५३ मेषकी ७ किरणें हैं वृषकी ८, मिथुनकी ९, कर्ककी ३, सिंहकी ७, कन्याकी ११, तुलाकी २, वृश्चिककी ४, धनकी ६, मकरकी ८, कुंभकी ८, मीनकी २७ किरणें हैं ॥

(५४ सूर्यकी किरणें ५ हैं, चन्द्रकी २१ मङ्गलकी ७ बुधकी ९ बृहस्पातिकी १० शुक्रकी १६ शनिकी ४ राहुकी ४ किरणे हैं ॥

(५५) चन्द्र मङ्गल शनि ओछे कदके हैं बुध गुरु राहु लम्बे कदके हैं, सूर्य शुक्र मध्य कदके हैं ॥

(५६) सूर्यके ८ योजन चन्द्रके १ योजन मङ्गलके ७ योजन गुरुके ९ योजन बुधके ८ योजन शुक्रके १६ योजन शनिके २० योजन और राहुके २० योजन है ,जो योजन ग्रहोंके वही योजन इ-नकी राशियोंके जानना ॥

(५७) सूर्यकी उमर ५० वर्षकी है चन्द्रकी ७० की मङ्गलकी १६ वर्षकी बुधकी २० वर्षकी गुरुकी ३० वर्षकी शुक्रकी ७७ शनि की १०० राहुकी १०० वर्षकी उमर है ॥

(५८) सूर्यका स्वाद कडुवा, चंद्रका कषाय अर्थात् तोरा जिसके खानेसे छाती ऐंठे, मंगलका तीक्ष्ण अर्थात् चरपरा, बुधका खारा, गुरुका मीठा, शुक्रका अम्ल अर्थात् खट्टा, शनिका कडुआ स्वाद और राहुकाभी यही स्वाद कहना ॥

(५९)सूर्यका तिल लांछन नितम्बपर, अर्थात् कूलोंपर होता है, चन्द्रमाका मस्तकमें, मङ्गलका पीठपर, बुधका भुजाके नीचे और कांखमें, गुरुका भुजापर, शुक्रका चेहरेपर, शनिका जंघापर और राहुका तिल व लांछन पांवमे होताहै ॥

(६०)सूर्य मंगल बुध गुरु इनके तिल लांछन दक्षिण भागमें होतेहैं, और चन्द्र शुक्र शनि राहु इनके तिल व लांछन वामभागमें होते हैं ॥

(६१) ग्रहोंके लांछन स्वरूप कहतेहैं—सूर्य्यका लांछन तिल ज्योतिके पुष्प सरीखा, चन्द्रका अर्क (आंकड़ा)के फूलसरीखा, मंगलका, तुवरकी दालके तुल्य, बुधका अगस्त्याके पत्र सरीखा, गुरुका एरण्डके पत्रसरीखा, शुक्रका इमलीके पत्राकार, शनिका धतूराके पत्रसमान, राहुका तलपोटके पत्रसरीखा लांछन होताहै ॥

(६२) मेष, कर्क,तुला, कुम्भ इन प्रत्येकके ८ प्रकाश हैं, वृष, मिथुन, मकर इनके छै छै प्रकाश हैं सिंहके सात, कन्या, धनुके ११वृश्चिकके ४ और मीनके २७ प्रकाश हैं ॥

(६३) सूर्य्यका प्रकाश ५ है चन्द्रका २१ मंगलका १४ बुधका ९ गुरुका १० शुक्रका ११ शनि राहुका ४ प्रकाश है किसीके मतसे रविके ७ और शुक्रके १६ प्रकाश होतेहैं ॥

(६४) वृष, सिंह, वृश्चिक, कुम्भ, स्थिर राशियां हैं, मेष, कर्क, तुला, मकर, चर राशियां हैं, मिथुन, कन्या, धनु, मीन द्विस्वभाव राशियां हैं ॥

(६५) सूर्य्य शुक्र स्थिर ग्रह हैं, चन्द्र, मंगल, राहु, चर ग्रह हैं, बुध, गुरु, शनि द्विस्वभाव ग्रह हैं ॥

(६६) कर्क, वृश्चिक, मन्दगति हैं, मकर मीन उड़नेवाले हैं, और शेष राशियां चलनेवाली हैं अर्थात् पादचारी हैं, चन्द्र राहु मन्दगति हैं, बुध उड़नेवाला, शनि पङ्गु अर्थात् लँगड़ानेवाला, सूर्य्य, मंगल, गुरु, शुक्र, पादचारी हैं यहां मन्दगतिसे आशय पेट घीसके धीरे चलनेका है ॥

(६७) मेष,धनु,जंगल हैं, वृष चांवलका खेत है, मिथुन कन्या

गांव है कर्क जलमार्ग अर्थात् बरहा, मोरी इत्यादि, सिंह पहाड़ है, तुला, मकर, मीन, नदियां हैं, वृश्चिक कूप है, कुम्भ जलपात्र है, इनका काम चौर्य्य पदार्थके ढूंढूनेमें पड़ताहै ॥

(६८) किसीके मतसे मेष जंगल है, वृष चांवलका खेत है, ॥ मिथुन गांव है, कर्क नहर है, सिंह पहाड़ है, कन्या जल है, तुला गांव है, वृश्चिक कूपहै, धनु बाग है, मकर शुष्कनदी अथवा निमकका पात्र, कुंभ झील, मीन समुद्र है ॥

(६९) किसीके मतसे, मेष जंगल है, वृष चांवलका खेत है, मिथुन बाग है, कर्क नहर है, सिंह पहाड़ है, कन्या जल है, तुला नदीका किनारा अथवा तालाव, वृश्चिक कूप है, धनु, मकर कुंभ, मीन इन प्रत्येकसे कूप, तालाव, नाली याने खाई समझना ॥

(७०) किसीके मतसे–मेष बनहै, वृष चाँवलोंका खेत, मिथुन गांव, कर्क जल, सिंह पहाड़, कन्या, तुला नदी, वृश्चिक कूप वा गढ्ढा, धनु बाग, मकर खाई, कुंभ समुद्र, मीनसे झिरना या समुद्र ॥

(७१) मतान्तर–मेष, सिंह, वृश्चिक, धनु, बन हैं, वृष, कर्क, मकर, मीन, जल हैं, मिथुन कन्या, तुला, कुंभ गाँव हैं ॥

(७२) सूर्य्य, मङ्गल, शनि ये बन हैं चंद्र शुक्र जल है, बुध गुरु गांव है, राहु झीलवाली ऊँडीपृथ्वी है ॥

टिप्पणी।

मित्र क्षेत्री ग्रहसे चोरीगया घरमें मिलेगा ऐसा कहना, स्वक्षेत्री ग्रहसे चौर्य्य पदार्थ गांवमें मिलेगा, उच्चराशिस्थसे ग्राम समीप, शत्रु या नीच क्षेत्रीसे गांवसे दूर चोरीगए पदार्थकी स्थिति है ऐसा कहना किसीके मतसे आरूढ़ लग्नका स्वामी उपरोक्त स्थानका सूचकहै और किसीका यह मत है कि सूर्य्याक्रान्त राशिके स्वामीसे चौर्य्यकी स्थिति निर्णय करना ॥

(७३) मतान्तर-सूर्य्य गुरु देवालय तथा उच्चस्थान हैं, चन्द्र शुक्र जल हैं, मंगल पृथ्वी है, बुध शयनस्थान, शनि अग्निकुंड या हवनहोनेकी जगह है, राहु वृक्षोंकी कोचर है॥

टिप्पणी।

रवि भोजन करनेका पाटा तथा भोजनपात्र हैं। अर्थात् रोटी पकाने खानेके बरतन, चंद्र सिरकेका वरतन, मंगल लघुपात्र, बुध दीवाल, गुरु धान्य नापनेका पात्र, शुक्र जलपात्र, शनि रणभूमि, राहु सर्पकी बामी या चींटीका बमीला॥

(७४) पृष्ठोदय राशि तथा ग्रह इन्होंका समय रात्रि है शीर्षोदय ग्रह राशियोंका समय दिन है शिरपृष्ठोदय राशियोंका समय सायंकाल है॥

(७५) किसीके मतसे स्थिरराशि तथा स्थिर ग्रहोंका समय दिन है चर राशि तथा चरग्रहोंका समय रात्रि है और द्विस्वभाव राशि तथा ग्रहोंका समय सायंकाल है॥

(७६) प्रश्नलग्नसे दिन रात्रि वारका निश्चय करना सूर्योदयसे ३० घटीतक दिनकी संज्ञा है और बाद ३० घटीतक रात्रिकी संज्ञा है इस तरह सम्पूर्ण दिन रात्रिकी ६० घटीकी संज्ञा है सूर्योदयात् इष्ट जो ३० घटीके भीतर हो उसके पौने चार खंड करना जिससे खंडमें इष्ट आवे उससे फल कहना समसे दिन विषमसे रात्रि ३० घटीके बादका जो इष्ट होय तो सम्पूर्ण सूर्योदयात् इष्टमें से ३० घटादेना जो शेष रहे उसकी पूर्वोक्त क्रिया करना अब वार जाननेके लिये ६० घटीके भीतर जितना सूर्योदयात् इष्ट हो उस सम्पूर्णके पौने-चार खंड करना जितने खंड हों उतनेही बार प्रश्नकरनेके दिनसे गिनलेना जो वार आवे वही उत्तर है॥

टिप्पणी।

जैसे किसीने मंगलवारको सूर्योदयात् घटी २० पर प्रश्न किया अब दिन रात्रि जाननेके लिये घटी २० में पौनेचारका भाग दिया

तो यह इष्ट छठे खंडमें हुआ अतएव छे ये संज्ञा सम होनेसे उत्तर दिन आया अब वार जाननेकोलिये उसी घटी २० के इष्टमें पौने-चारका भाग दिया तो छठा खंड हुआ अत एव प्रश्नवार मंगलसे छठा वार रविवार है यही प्रश्नका उत्तर है ॥

(७७) शनि और राहु इन प्रत्येक ग्रहोंका काल एकवर्ष है, सूर्यके छे महीने, बुधके दो महीने गुरुका एक महीना, शुक्रके १६ दिन, मंगलका १ दिन, चन्द्रकी २ घटी ॥

(७८) किसीके मतसे यह है कि जो ग्रह नीच व शत्रुराशिका हो उसकी जितने किरणे हैं उतनेही वर्ष जानना जो ग्रह मित्रक्षेत्र है उसकी किरणोंके उतने ही महीने जानना और स्वक्षेत्री ग्रहकी जितने किरणे हैं उतने ही दिन जानना जो ग्रह उच्चका है उसकी किरणोंके तुल्य घटी कहना मतलब यह है कि नीच ग्रह जो कार्य्य वर्षोंमें करेगा उसीकार्य्यको उच्चस्थ ग्रह घटियोंमें करदेगा ॥

(७९) कार्य्यकी अवधि जाननेमें दिन जाननेका प्रकार—चंद्र नक्षत्रसे तात्कालिक उदयलग्नके नक्षत्र तक गिनना जितनी संख्या आवे उतने ही दिनोंमें प्रश्नका फल मिलेगा ॥

(८०) भविष्यकी अवधि कहनेमें ज्योतिषीको चाहिये कि वृष-भोदय लग्नसे अवधि मुकर्रर करे अथवा जो ग्रह उसलग्नमें बैठाहो वह जो ग्रहोंमें अत्यन्त बलवान् हो इसको विचारे ॥

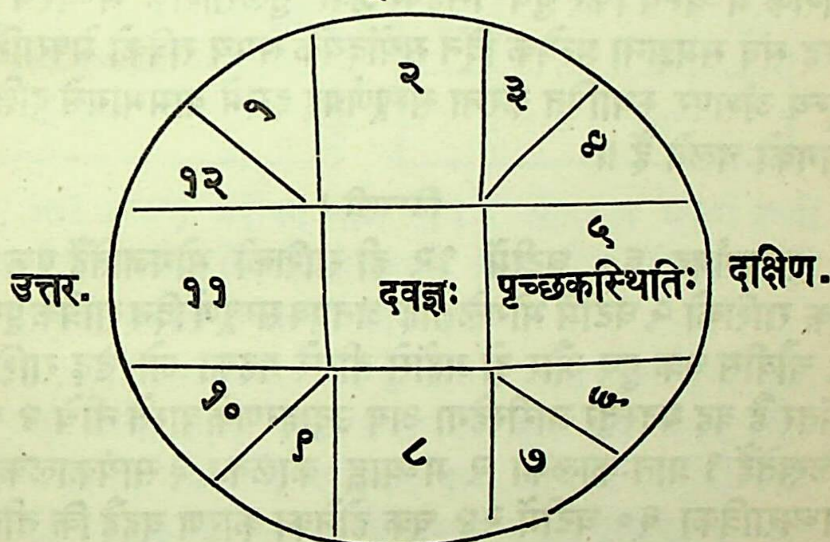
टिप्पणी ।

सूर्य्योदयात् इष्टमें २॥ का भागदेना जितने खण्ड आवें उतनेही वृषभ लग्नसे गिनलेना जो संख्या आवे वही वृषभोदय लग्न है मत-लब यह है कि यहाँ सूर्य्योदय वृषभ लग्नमें मानाहै चाहे कोई भी ऋतु या कालहो सदा सूर्य्योदय वृषभ लग्नमें होताहै और प्रत्येक लग्न २॥ घड़ी की कल्पना की है जैसे प्रातःकाल सूर्य्योदयसे २॥ घड़ी तक वृषभ लग्न रही फिर २॥ घड़ीतक मिथुन रही इसी तरह प्रश्न कालमें जो लग्न आवे वही वृषभोदय लग्नहै और किसीका यह मत

है कि सूर्य्योदय लग्न तथा उस पर स्थित ग्रहसे कालित करना अर्थात् स्पष्ट सूर्यके तुल्य सूर्य्योदयके समय लग्न मानकर २॥ घड़ीका प्रत्येक लग्न मानके हिसाबसे इष्टकालतक गिनलेना जो आवे वही सूर्य्योदय लग्न है परन्तु सर्व सम्मति होनेसे वृषभोदयलग्न तथा उसपर स्थित ग्रह और सब ग्रहोंमें जो अत्यन्त बलवान है इन्हीं तीनोंकी जो अवधि है उसीके तुल्य भविष्यफलकी अवधि कहना॥

(८१) अथ आरूढ़चक्रम्—एक गोलवृत्त खींचो उसके मध्यमें दो रेखा सीधी खींचो और दो रेखा आड़ी खींचो ऐसा करनेसे चार कोठे बाहरी बनते हैं इन कोठोंमें परिधितक एक २ रेखा और खींचों ऐसा करनेसे सम्पूर्ण १२ कोठे बनजावेंगे, वृषलग्नको बिलकुल पूर्व दिशामें रक्खो और क्रमानुसार द्वादश राशियां इस कोठेमें स्थापित करदो उदाहरणकेलिये पूर्वोक्त चक्र नीचे लिखते हैं॥

आरूढ़चक्रम् ।



टिप्पणी ।

यह आरूढ़चक्रका क्रम मूल ग्रन्थमें कहाहै आजकल जो प्रचलित जैमिनीका चक्र पञ्चाङ्गोंमें तथा जन्मपत्रियोंमें लिखाजाताहै उससे भी काम निकलसक्ताहै परन्तु उसमें एक दूसरेकी सन्मुखस्थ राशियां नहीं मालूमहोतीं प्रत्युत जो चक्र ऊपर लिखा है इसमें प्रत्येकराशिकी सन्मुखस्थ लग्न स्पष्टतासे विदित होसक्तीहै यही इस चक्रमें विशेषलाभ है ॥

(८२) परस्पर सन्मुखस्थ राशियां यहहैं मेष तुला, वृष वृश्चिक, मिथुन धन, कर्क मकर, सिंह कुंभ, कन्या मीन, ये परस्पर आमने सामनेकी राशियां हैं ॥

(८३) आरूढ़ ग्रह आठ हैं सूर्य, मंगल, गुरु, बुध, शुक्र, शनि, चंद्र, राहु ये चक्रमें इस क्रमसे हैं कि दो ग्रह पार्श्वस्थ और तीसरा ग्रह डेढ़ राशिके अंतरसे जैसे सूर्य मेषपर मंगल वृषपर और गुरु कर्क राशिके मध्यस्थ फिर बुध सिंहपर शुक्र तुलराशिके मध्यस्थ इस तरह सब समझना प्रत्येक दिन सूर्योदयके समय रविको मेषराशिके शून्य अंशपर स्थापित करना सम्पूर्णग्रह इसमें वामभागसे दक्षिणभागको चलते हैं ॥

टिप्पणी ।

सम्पूर्णग्रह ६० घटीमें १२ ही राशिको भोगजातेहैं एक ग्रह एक राशिको ५ घटीमें भोगलेताहै अंतएव सम्पूर्ण दिन रात्रिके पृथक् २ चौवीस चक्र हुए और दो ग्रहोंसे तीसरे ग्रहका जो डेढ़ राशिका अंतर है वह बदस्तूर जारीरहेगा अब उदाहरणके वास्ते नीचे ४ चक्र लिखतेहैं १ प्रातःकालका २ मध्याह्न कालका ३ सायंकालका ४ मध्यरात्रिका ६० घटीमें २४ चक्र होनेका कारण यहहै कि तीसरा ग्रह जो डेढ़ राशिके अंतरपर रहताहै वह शेष आधी राशिको ढाई

घटीमें भोगकर आगेकी राशिपर चलाजाता है इस तरहसे प्रत्येक घंटे (२ $\frac{1}{2}$ घंटे)में चक्रकी सूरत बदलनेसे २४घंटेकेसे२४ चक्र हुए ॥

	सूर्य	मंगल	
राहु	६–७ प्रातःकाल		गुरु
चन्द्र			बुध
	शनि	शुक्र	

	चन्द्र	राहु	
शनि	१२–१ मध्याह्नकाल		सूर्य
शुक्र			मंगल
	बु	गुरु	

	शुक्र	शनि	
बुध	६–७ सायंकाल		चन्द्र
गुरु			राहु
	मंगल	सूर्य	

	गुरु	बुध	
मंगल	१२–१ मध्यरात्रि		शुक्र
सूर्य			शनि
	राहु	चन्द्र	

इन आठ आरूढ़ ग्रहोंका नाम याम है और इस संपूर्ण ग्रंथमें इन्हीं ग्रहोंका उपयोग कियाहै संस्कृतमें याम तीन घंटेका नामहै जो दो पार्श्वस्थ ग्रहोंके अन्तरका काल है ॥

(८४) अप्रकाशक ग्रह १२ हैं जिनके नाम ये हैं सूर्य, धूम, राहु, चन्द्र, शनि, सूक्ष्म, शुक्र, इन्द्रधनुष, बुध, गुरु, मंगल और परिवेष ये ग्रह दिशामंडलमें दक्षिणसे वाम भागको फिरतेहैं और प्रत्येक ग्रह एकएक राशिपर रहतेहैं अन्तर एकसे दूसरेका ३० अं-

शका रहता है और सम्पूर्ण दिनरात्रिमें ये ग्रह १२ ही राशिको भोग लेते हैं और प्रत्येक दिन सूर्योदयके समय रवि वृष लग्नके अन्तिम अंशपर रहताहै ॥

टिप्पणी ।

इन चक्रोंकी सूरत दो घंटे बाद बदल जातीहै क्योंकि एकएक ग्रह एक राशिको दो घंटेमें भोग लेताहै उदारणके वास्ते चार चक्र नीचे लिखेजाते हैं पहला प्रातःकालका, दूसरा मध्याह्नकालका. तीसरा सायंकालका, चौथा मध्यरात्रिका इन ग्रहोंका काम नौका गमके प्रश्नमें पड़ेगा अध्याय २३ का श्लोक ३ देखो ॥

राहु	धूम	सूर्य	परिवेष
चन्द्र	६–८ प्रातःकाल		मंगल
शनि			गुरु
सूक्ष्म	शुक्र	इन्द्र धनु.	बुध

परिवेष	मंगल	गुरु	बुध
सूर्य	१२–२ मध्याह्नकाल		इन्द्रधनु
धूम			शुक्र
राहु	चन्द्र	शनि	सूक्ष्म

बुध	इन्द्रधनुष	शुक्र	सूक्ष्म
गुरु	६–८ सायंकाल		शनि
मंगल			चन्द्र
परिवेष	सूर्य	धूम	राहु

क्सूम	शनि	चन्द्र	राहु
शुक्र	१२=२ मध्यरात्रि		धूम
इन्द्रधनुष			र्य
बुध	गुरु	मंगल	परिवेष

(८९) अथ साप्ताहिकग्रहाः—जैसे कि आरूढ़ ग्रह ८ हैं इस तरह यह भी आठ हैं और दक्षिणसे वाम चलतेहैं १२ राशियों को

१२ घंटेमें भोगलेतेहैं प्रत्येक दोग्रह पार्श्वस्थ राशियोंपर रहते हैं और तीसरा ग्रह डेढ़ राशिके अन्तरसे रहताहै और जिस ग्रहका वार होताहै वही ग्रह सूर्योदयके समय मेष राशिके प्रथम अंशपर स्थित किया जाता है ॥

टिप्पणी।

हरएक ग्रह एक राशिको एक घण्टेमें भोग लेताहै इनको चक्रमें इस तरह स्थितकरना कि, सूर्य्यके वामभागमें मंगल रहे फिर डेढ़ राशिके अन्तरसे गुरु स्थितकरना उसके बाद बुध फिर एक राशि-बीचमें छोड़कर दूसरी राशिके मध्यमें शुक्र स्थापित करना उसके आगेकी राशिमें शनि स्थापित करना उसके आगेकी राशि छोड़-कर चन्द्र स्थापित करना उसके आगेकी राशिमें राहु लिखना ऐसे १२ घण्टेके २४ चक्र बनेंगे क्योंकि प्रत्येक तीसरा ग्रह जो राशिके मध्यमें रहताहै वह आधे घण्टेमें शेष उत्तरार्द्धका भोगकर आगेकी राशिपर चलाजावेगा इससे प्रत्येक आध आध घण्टेमें नवीन चक्र बनतारहेगा अब उदाहरणके वास्ते सातों वारोंके ७ चक्र सूर्योदय समयके लिखतेहैं जो चक्र दिनके चौवीस हैं वोही रात्रिके भी समझना ॥

रवि		राहु	चन्द्र
मंगल	रविवार प्रातःकाल		
			शनि
गुरु	बुध		शुक्र

चन्द्र		शनि	शुक्र
राहु	चन्द्रवार प्रातःकाल		
			बुध
रवि	मंगल		गुरु

मंगल		रवि	राहु
गुरु	मंगलवार प्रातःकाल		
			चन्द्र
बुध	शुक्र		शनि

बुध		गुरु	मंगल
शुक्र	बुधवार प्रातःकाल		
			रवि
शनि	चन्द्र		राहु

गुरु		मंगल	सूर्य
बुध	गुरुवार प्रातःकाल		
			राहु
शुक्र	शनि		चन्द्र

शुक्र		बुध	गुरु
शनि	शुक्रवार प्रातःकाल		
			मंगल
चन्द्र	राहु		सूर्य

शनि		शुक्र	बुध
चन्द्र	शनिवार प्रातःकाल		
			गुरु
राहु	रवि		मंगल

(८६) परस्पर सन्मुखस्थ ग्रह यहहैं सूर्य, शुक्र–मंगल, शनि–बुध, राहु–गुरु, चंद्र, धूम, इंद्रधनु ॥ सूक्ष्मपरिवेष ॥

टिप्पणी ।

उपरोक्त चक्रमें देखनेसे मालुम होगा कि यह ग्रह आमने सामने रहते हैं ॥ इति श्रीपवाँरवंशावतंसश्रीमहाराजशंभुसिंहसुठालियाधीशकृतभाषानुवादेजिनेन्द्रमालाग्रंथेसंज्ञातंत्रंनाम प्रथमोऽध्यायः १ ॥

अध्याय दूसरा २.

धातुकांडम्।

(१) मेष, कर्क, तुला, मकर, ये धातुराशियां हैं. वृष, सिंह, वृश्चिक, कुंभ ये मूलराशियां हैं. मिथुन, कन्या, धन, मीन ये जीव राशियां हैं. मतलब यह है कि, सम्पूर्ण चरराशियां धातु हैं और स्थिरराशियां मूल हैं तथा द्विस्वभाव राशियां जीव हैं॥

(२) चंद्र, मंगल, शनि, राहु ये धातुग्रह हैं. सूर्य, शुक्र, मूल ग्रह हैं और बुध, गुरु, जीवग्रह हैं॥

(३) सूर्य और चंद्रमा स्वक्षेत्रमें धातुग्रह हैं और अन्यक्षेत्रमें मूल हैं शनि स्वक्षेत्रमें मूलग्रह है अन्यक्षेत्रमें धातु है बुध स्वक्षेत्रमें धातुग्रह है अन्यक्षेत्रमें जीव है यह इन्ही सूर्य, चंद्र, शनि, बुधके वास्ते विशेष नियम हैं अन्य ग्रहोंके लिये नहीं॥

(४) यदि आरूढ़ लग्न धातुराशि हो और उसकी छत्रलग्न भी धातुराशिहो और उस आरूढ़को धातुग्रहदेखें तो धातुसम्बन्धी प्रश्न कहना इसी तरह मूल और जीव प्रश्नभी समझलेना॥

टिप्पणी।

यदि आरूढ़लग्न मूलराशिहो और उसका छत्रभी मूलहो और आरूढ मूलग्रहसे दृष्ट हो तो मूलसम्बन्धी प्रश्न कहना यदि आरूढ लग्न जीवराशिहो और उसका छत्र भी जीवराशि हो तथा जीवग्रहसे दृष्ट हो तो जीवसम्बन्धी प्रश्न कहना॥

(५) धातु और मूलके संयोगसे जीव कहना। जीव धातुके संयोगसे मूल कहना और मूल जीवके मिलनेसे धातु कहना और जहां धातु मूल जीव तीनोंका संयोग हो तो उस जगह उनका बल देखकर प्रश्नका निर्णय करना॥

टिप्पणी ।

संयोगका मतलब यहहै कि जैसे आरूढ़लग्न धातुहै और उसका छत्र मूलराशि है तथा आरूढ़को मूलग्रह देखते हैं तो यहां धातु और मूलके मिलनेसे प्रश्न जीवसम्बन्धी हुआ इसतरह जब आरूढ़ लग्न मूलहै और वह धातुग्रह करके दृष्टहै तथा उसका छत्रभी धातु है तो प्रश्न जीवसंबंधीहै ऐसा कहना. आरूढ़ जीव राशिहै और धातुग्रहसे दृष्ट है और उसका छत्र धातुराशि है तो प्रश्न मूलसम्बन्धी कहना, आरूढ़लग्न धातुराशि है और जीवग्रहसे दृष्ट है तथा उसका छत्रभी जीवराशि है तो प्रश्न मूलसम्बन्धी कहना. आरूढ़लग्न मूल है और जीव ग्रहसे दृष्टहै तथा उसका छत्र भी जीवराशि हो तो प्रश्न धातुसम्बन्धी कहना. आरूढ़लग्न जीव है और मूलग्रहसे दृष्ट है और उसका छत्रभी मूलराशिहै तो प्रश्न धातुसम्बन्धी कहना. आशय यह है कि आरूढ़ लग्न और उसका द्रष्टा ग्रह तथा छत्र लग्न इन तीनोंसे प्रश्नका धातु मूलादि विचार करना यदि ये तीनों पृथक् पृथक् हों तो इनसे जो निर्बली हो उसको छोड़देना और शेष जो दो बचें इनसे अधोलिखित विचार करना ॥

आरूढ़ लग्न धातु राशि हो और बली मूलग्रह उसे देखे तो प्रश्न मूल जीवसम्बन्धी कहना और यदिवह आरूढ़ बली जीवग्रहसे दृष्ट हो तो प्रश्न जीवमूल संबंधी कहना. पुनः आरूढ़ लग्न मूलराशि हो और बली जीव ग्रहसे दृष्टहो तो प्रश्न जीव धातुसंबंधी कहना और यदि उसे बली धातुग्रह देखें तो धातु जीवसंबंधी प्रश्न कहना. आरूढ़ लग्न जीवराशिहो और बली धातुग्रहसे दृष्ट हो तो धातु मूल कहना, और मूलग्रहसे दृष्ट हो तो मूलधातु कहना. भाष्यकारके मतानुसार यहहै कि यदि उदयलग्न धातु हो और धातु ग्रहसे दृष्टहो तथा वह धातुग्रह धातुराशिमेंही स्थितहो तो प्रश्न धातुसम्बन्धी कहना यदि वह द्रष्टा ग्रह मूलराशिमें स्थितहै तो मूलसम्बन्धी और जीवराशिमें

हो तो जीवसम्बन्धी प्रश्न कहना उदय लग्न मूल हो और मूल ग्रहसे दृष्टहो तथा वह द्रष्टा ग्रह मूलराशिमें स्थित हों तो ल सम्बन्धी प्रश्न कहना और इससे पृथक् किसीराशिमें स्थित हो तो प्रश्न जीवसम्बन्धी कहना उदय लग्न जीव हो और जीव ग्रहसे दृष्ट हो तथा वह ग्रह जीवराशिमें स्थित हो तो जीवसम्बन्धी प्रश्न कहना, और इससे पृथक् किसी अन्य राशिमें स्थित हो तो मूलसम्बन्धी प्रश्न कहना, यदि ज्योतिषीने किसीप्रश्नका फल धातुनिर्णीत कियाहो और तात्कालिक उदयलग्न चन्द्रसे युत व दृष्ट हो तो धातु न कहकर उपरोक्त निर्णीत फलको मूल कहना और मूलके स्थानमें जीव कहना तथा जीवके स्थानमें धातु कहना ॥

धातु–इससे इतने पदार्थोंका ग्रहण है मृत्तिका, पाषाण, सुवर्ण, इत्यादि ॥

मूल–इन पदार्थोंका नाम है घास, वृक्ष, लता इत्यादि ॥

जीव–इन पदार्थोंकी गणना है कृमि, पक्षी और सम्पूर्ण जीवधारी ॥

मूल धातु–यह पदार्थ हैं सड़ेहुए अस्थ्यादि शेष अर्थात् मृतक शरीर छाल, जड़, घासके फल, लता, वृक्ष इत्यादि ॥

जीवधातु–अस्थ्यादि शेष, चमड़ा, नख, मांस, कीड़े, पक्षी, जीवधारीके ॥

धातुमूल–इसमें वह पदार्थ शामिल हैं जो मूलधातु और जीव धातु पदार्थोंसे घास, लता, वृक्षके आकारमें बनायेगए हों ॥

जीवमूल–जो पदार्थ मूलमें शामिल हैं वही इसमें जैसे वृक्ष, लता, घास इत्यादि ॥

धातुजीव–पक्षी कृमि और जीवधारियोंकी आकृति जो मूल धातु और जीवधातुसे बनीहुई हो ॥

मूलजीव-पशु पक्षी जीवधारीकी आकृति जो मूलधातुसे बनीहो॥

(६) सूर्य्य पीतल है, चन्द्र काँसी है, मंगल तांबा है, बुधका धातु जस्त और तांबेसे मिश्रित है, गुरुका सुवर्ण है, शुक्रकी चांदी है, शनिका तथा राहुका लोह है ॥

टिप्पणी ।

अब यह निर्णीत होजावे कि प्रश्न धातुसम्बन्धी है तो उपरोक्त निपरूण धातुका करना किसी किसीके मतसे सुवर्ण, चांदी, तांबा, लोहा और शीशा इनके मिश्रणको सूर्यका धातु कहा है और चन्द्रमाका धातु शीशा कहाहै ॥

(७) सूर्य, मंगल, शुक्र, शनि इन्हेंाके शस्त्र एकतरफ धारवालेहैं चन्द्र, बुध और गुरु इन्हेंाके शस्त्र दोनों तरफ धारवाले हैं जो ग्रह स्वक्षेत्री हों तो शस्त्रकी सूरत ग्रहतुल्य कहना और अन्यक्षेत्री हों तो क्षेत्रतुल्य शस्त्रकी सूरत कहना ॥

टिप्पणी ।

राहुके शस्त्रकी सूरत जिस राशिपर वह बैठा हो उसी तुल्य कहना ॥

(८) सूर्यका पाषाण चन्द्रमाकी खारी मिट्टी मङ्गलका कृत्रिम मूँगा बुधकी बिखरीहुई मिट्टी गुरुकी सुनहरी रेत शुक्रका बिल्लौरी कांच तथा कृत्रिम मोती शनिकी लोहसरीखीरेत, राहुका संखिया ॥

टिप्पणी ।

किसीका मत यह है कि गुरुकी ईंट शनिका पाषाण और चिकनी मिट्टी राहुका पाषाण ॥

(९) जवाहरात सूर्यका सूर्यकांतयाने आतिशी कांच, चन्द्रकी चन्द्रकांत, बुधका पन्ना शुक्रकी वैडूर्यमणि अर्थात् लशुनिया और शनिकी नीलमणि है ॥

(१०) सूर्यका लाल अर्थात् माणिक्य है चन्द्रका मोती मंगल-

का मूंगा गुरुका पद्मराग, शुक्रका वैडूर्य शनिकी नीलमणि राहुका हीरा केतुका गोमेदक है॥

(११) यदि प्रश्नलग्नमें द्विपद राशि हो और उसपर द्विपद ग्रह बैठाहो तो भूषणसंबंधी प्रश्न न कहना और रंग भूषणोंका ग्रहसरीखा कहना॥

(१२) सूर्य मंगल और गुरु कंठभूषण हैं चन्द्र बुध कर्णभूषण हैं शुक्र शिरोभूषण हैं शनि और राहु हाथपांवके भूषण हैं॥

(१३) बृहस्पति सोनेके पारे हैं चन्द्रमाका कांति जड़ित भूषण है शनिका नीलमणि जटित भूषण है तथा ऊन नख हड्डी और लोहा इनसे जटित भूषण हैं इसीतरह अन्य ग्रहोंके जड़ाऊ भूषण कहनाहो तो उन ग्रहोंके जो जवाहरात हैं उनसे जटित कहना॥

(१४) प्रश्नके समय गुरु और राहु किसी राशिमें बैठेहों तो भूषण कनकसूत्र याने सुनहरी कलाबत्तू कहना और इस किस्मके गोटा वगैरह पदार्थ कहना बृहस्पति शुक्र किसी राशिपर बैठे हों तो मोती और बिल्लौरसे जड़ाहुआ जेवर कहना यदि बृहस्पति और चन्द्रमा किसी राशिपर बैठे हों तो ताबीज कहना॥

टिप्पणी।

इन बैठेहुए ग्रहोंमें यदि बृहस्पतिभी शामिलहों ता नित्यके पहरनेका भूषण कहना यदि बृहस्पति शामिल न हों तो नैमित्तिक कहना यदि मंगल हो तो उधार लियाहुआ भूषण कहना यदि मंगल न हो तो घरका जेवर कहना इति धातुकांडः॥ इति श्रीपवाँरवंशावतंस श्री महाराजशम्भुसिंहसुठालियाधीश कृतेभाषानुवादे जिनेन्द्रमालाग्रन्थे धातुकांडं नामद्वितीयोऽध्यायः॥ २॥

अध्याय तीसरा ३.

अथ मूलप्रकरणम् ।

(१–२) सूर्य वृक्ष है, चंद्रमा लता याने बेलड़ी है, मंगल क्षुद्र धान्य है, बुध और शुक्र बृहद्धान्य है, गुरु सांटा है, शनि राहु कंटक वृक्ष हैं, बुध कंटकहीन वृक्ष है, शुक्र सांटा है ॥

(३–४) सिंह धन वृक्ष है, वृष कर्क तुला लता और बृहद्धान्य है, मेष वृश्चिक क्षुद्र धान्य है, जैसे प्रियङ्गु अर्थात् कांगणी इत्यादि, मीन सांटा है, और इसी वर्गके वृक्ष, मिथुन कन्या कंटकहीन वृक्ष हैं, कर्क कुंभ कंटक वृक्ष हैं, सूर्य मंगल शनि राहु ये कांटेदार तथा जहरील वृक्ष हैं, और चंद्र बुध गुरु शुक्र इनके कंटकहीन तथा विषराहित वृक्ष हैं ॥

(५–६) सूर्य पहाड़का वृक्ष है, चंद्रमा केला है, गुरु नारियल है, शनि राहु ताड़के वृक्ष हैं बुध शुक्र केला हैं, मङ्गल पोदा है ॥

टिप्पणी ।

चंद्रमा पुष्पवृक्ष है, बुध लताहै, गुरु चंपक वृक्षहै, शुक्र पुष्पवृक्ष तथा लता और मूल है, शनि अदरख हलदी इत्यादि ॥

(७) सूर्य छाल है, चंद्रमा कंद है, मंगल फूल है, बुध पत्र है, गुरु पकाफल है, शुक्र कच्चा फल है, शनि मूल है, राहु लता है ॥

(८) मेष वृश्चिक फूल हैं, वृष तुला कच्चे फल हैं, मिथुन कन्या पत्र हैं, धन मीन पके फल हैं, मकर कुंभ जड़ है, सिंह छाल है, कर्क कंद है ॥

(९) शनि राहु टेढ़े कांटेके हैं, सूर्यका कांटा बड़ा और सरल है, मंगलका कांटा छोटा है, मकर कुंभके टेढे कांटे हैं, सिंहका कांटा बड़ा सीधा, है मेष वृश्चिकके कांटे छोटे हैं ॥

(१०) सूर्य चंद्र शनिके निष्फल वृक्ष हैं, और शेष ग्रहके सफल

वृक्ष हैं, इनमेंसे गुरु और शुक्रके फल अंतरस्थ हैं, और मंगल बुध राहुके फल बहिरर्थ हैं, और फलोंके रंग ग्रहानुसार कहना॥

(११) चंद्रमाका श्वेत धान्य है, मंगलका प्रियंगु तथा कांगणी है, शुक्रकी श्वेततिल्ली बुध गुरु शनिके उड़द ग्रहोंके रंग तुल्य कहना, चारों शुभग्रह तथा शनि इन्होंके धान्य दृढ़ संधिवाले कठोर कहना, और शेष तीन पापग्रहोंके धान्य बीजगुप्त याने फलीवाले कहना॥

(१२) सूर्यका धान्य निष्पाव है, चंद्रमाकी श्वेत तिल्ली है, मंगलका चना है, बुधका मूंग, गुरुकी लाल तूअर, शुक्रकी सफेद तूअर, शनिके काले तिल, और राहुके काले उड़द हैं॥

(१३) सूर्य बुध ऊंची जमीन है, चंद्र शुक्र जल है, मंगल गुरु पथरीली जमीन है और शनि मरुस्थल है; राहु सर्पोंकी बामी तथा चींटीके बमीसे युक्त भूमि है॥

टिप्पणी।

किसीके मतसे मंगल ऊंची भूमि है, बुध जलमय भूमि है और किसीके मतसे बुध सर्पोंकी बामीयुक्त भूमि है॥

(१४) वर्ण, स्वाद, रत्नोंके कुल, शस्त्र तथा इनकी सजातीय धातु वृक्ष, लता इत्यादि मूल पदार्थ और छाल, जड़ इत्यादि जो जिन ग्रहोंके हैं वेही उन ग्रहोंकी राशियोंकेभी हैं॥ ३॥ इति श्री पवाँरवंशावतंस श्रीमहाराजशंभुसिंहसुठालियाधीशकृते भाषानुवादे जिनेंद्रमालाग्रंथे मूलकाण्डंनाम तृतीयोऽध्यायः॥ ३॥

अध्यायचौथा ४.

अथ जीवप्रकरणम्।

(१-२) पांचों ग्रहोंका सूर्य पिता है और चंद्र माताहै, गुरु पृथ्वी है, शुक्र जल है, मंगल अग्नि है, बुध हवाहै और शनि आकाशहै शनिमें स्पर्श गुण है, बुधमें स्पर्श और स्वाद है, मंगल स्पर्श

स्वाद और रूप अर्थात् दृष्टि है शुक्रमें स्पर्श स्वादरूप और गंध है और गुरुमें स्पर्श स्वादरूप गंध और शब्द अर्थात् श्रवण शक्ति है ॥

(३) बुधका शंख है, और कौड़ी तथा सींप और ऐसे पदार्थ जिनमें स्पर्श और स्वाद हो, मंगलकी चींटी, खटकीड़ा, जूं, लीख मक्खी, शुक्रकी बरड़ भँवरा है और वे पदार्थ जिनमें स्पर्श स्वाद दृष्टि और गंधके गुण हों ॥

(४) बृहस्पतिका देव, मनुष्य, पशु, पक्षी हैं, जिनके पंचज्ञा-नेन्द्री हैं, शनिका मूल है जिनमें एक गुण स्पर्श है ॥

(५) जीवधारियोंके चार विभाग हैं १ वे जो पांवसे चलते हैं २ वे जो उड़ते हैं ३ वे जो रिंगते हैं ४ वे जो जलमें रहते हैं ॥

(६) यदि प्रश्नकालमें मीन मकर लग्नमें चंद्र दृष्ट हों तो मोरकी चिंता कहना और भौम अथवा शनिसे दृष्ट हो तो मुरगा मुरगी काक कहना यदि यह ग्रह मीन मकर लग्नपर बैठे हों तोभी यही फल है, बुधसे तोता तथा शुक्रसे युत व दृष्ट हो तो श्वेत हंस ॥

(७) यदि मकर मीन् सूर्यसे युत वा दृष्टहो तो गरुड़पक्षी कहना बृहस्पतिसे श्वेत बगुला और राहुसे काक तथा भारद्वाज कहना अगर और पक्षी संबंधी प्रश्न हो तो उन ग्रहोंके रंगतुल्य पक्षी बतला देना ॥

(८) प्रश्नलग्न मेषपर सूर्य हो तो प्रश्न व्याघ्रसंबंधी कहना यदि चंद्रस्थित हो तो बैल कहना, मंगलसे मेंढा भेड़, बुधसे खरगोश, बृहस्पतिसे घोड़ा, शुक्रसे गाय, शनिसे गवय अर्थात् रोज, और राहुसे भैंसा कहना ॥

(९) प्रश्नलग्न वृषपर यदि सूर्य बैठे होंतो रोजसम्बन्धी प्रश्न कहना, चन्द्र और शुक्रसे गाय मंगलसे हिरन बुधसे वंदर गुरुसे घोड़ा शनिसे भैंस और राहुसे भैंसकहना ॥

(१०) प्रश्नलग्न सिंह हो और सूर्य अथवा चन्द्रमा उसपर स्थित हो तो प्रश्न सिंहसम्बन्धी कहना, मंगलसे व्याघ्र, बुधसे बंदर, गुरुसे घोड़ा, शुक्रसे कुत्ता, शनिसे भैंस, और राहुसे भैंसा कहना॥

(११) प्रश्नकालमें धन लग्न हो और सूर्यअथवा शनि उसपर स्थित हों तो प्रश्न हाथीसम्बन्धी कहना, चन्द्र मंगल अथवा शुक्र होंतो घोड़ा, बुध या गुरु हो तो बंदर और राहु होतो भैंसा कहना॥

(१२) प्रश्नलग्न कर्क हो और मंगल स्थित हो तो गधा कहना, यदि मंगल मकरस्थ हो तो भैंसा और मीनस्थ हो तो बैल कहना, यदि मिथुन कन्या तुला कुंभपर भौम होतो नकुल शृगाल और कुत्ता कहना, और शनि शुक्रसे भी यही फल कहना॥

(१३) प्रश्नलग्न तुला हो और उसपर चन्द्र स्थित होतो प्रश्न गायका कहना, शुक्र हो तो बछड़ा, और जितने ग्रह चन्द्रमा अथवा शुक्रको देखें उतनी ही संख्या पशुओंकी कहना, रंग, सींग, अवस्था दृष्टाग्रहसे पशुके कहना॥

(१४) प्रश्नकालमें जब ग्रहबलसे यह निश्चित होगयाहो कि, चिंतितपशु स्त्रीजाति है तो उसकी व्यवस्था इसतरहसे कहना कि, बुधसे वह स्त्रीकारक ग्रह दृष्ट होतो अवस्था पशु बालककी कहना, यदि वह सूर्य अथवा गुरुसे दृष्ट होतो पशु गर्भवती कहना, यदि चन्द्र और शुक्रसे दृष्ट होतो दूध देनेवाला पशु कहना, यदि शनि और राहुसे दृष्ट होतो वंध्या पशु कहना, और मंगलसे दृष्ट होतो दूध न देनेवाला पशु कहना॥

(१५) प्रश्नकालमें मेष लग्न हो और सूर्य उसपर स्थित हो तो भूपचिन्ता कहना, यदि सूर्य स्वक्षेत्रस्थ होतो सेनापतिकी चिंता कहनी और मित्रराशिस्थ तथा शत्रु व नीच राशिस्थ होतो उत्तरोत्तर कम दरजेका राज्याश्रित मनुष्य कहना यदि लग्नमें उच्चराशिस्थ

मंगल होतो कसेरा कहना स्वक्षेत्री होतो कुम्हार, मित्रक्षेत्री होतो तेली या चित्रकार वगैरह कहना ॥

(१६) यदि प्रश्नलग्नमें गुरु कर्कस्थ हो तो ब्राह्मण कहना, स्वक्षेत्रस्थ हो तो मन्त्री कहना, मित्रराशिस्थ होतो जैनी कहना, यदि बुध प्रश्नलग्नमें उच्चस्थ हो तो नाट्याचार्य्य कहना, यदि बुध स्वक्षेत्री हो तो पुजारी कहना, मित्रक्षेत्री हो तो व्यापारी कहना, यदि शुक्र प्रश्नलग्नमें उच्चराशिस्थ हो तो किसान कहना, स्वक्षेत्री होतो गाड़री और मित्रक्षेत्री हो तो बनिया कहना ॥

(१७) प्रश्नलग्नमें शनि उच्चस्थ हो तो नीचजातिका पुरुष कहना, स्वक्षेत्री हो तो चांडाल कहना, मित्रक्षेत्री हो तो चमार-कहना, यदि प्रश्नलग्नमें चन्द्रमा उच्चराशिस्थ हो तो वैद्य कहना, स्वक्षेत्री हो तो नट कहना मित्रक्षेत्री हो तो ज्योतिषी कहना, यदि राहु प्रश्नलग्नमें उच्चका हो तो कालबेलिया कहना, स्वक्षेत्री हो तो गवैया कहना, मित्रक्षेत्री हो तो चोरीपेशा जाति कहना ॥

(१८) सूर्य्य मंगल बुध गुरु यदि शत्रु या नीच राशिस्थ हो तो नीच जातिका पुरुष कहना, यदि चन्द्रमा शत्रु या नीच राशि-स्थ हो तो चूनाजलानेवाला कहना, शुक्र शत्रु या नीच राशिस्थ प्रश्नलग्नमें हो तो धोबी कहना, यदि शनि शत्रु या नीचराशिस्थ हो तो भाजी बेचनेवाला कहना, और राहु शत्रु या नीचराशिस्थ हो तो मछलीपकड़नेवाला कहना ॥

(१९) यदि प्रश्न द्विपद जंतु संबंधी हो और चन्द्रमा स्व-क्षेत्री उसपर स्थित होतो ज्योतिषी कहना, यदि बुध स्वक्षेत्री हो तो नाट्याचार्य याने नृत्यमास्टर कहना, यदि गुरु स्वक्षेत्री हो तो क-वि तथा गायक कहना, और शुक्र स्वक्षेत्री हो तो जुलाहा कहना, यदि चतुष्पद जीवसंबंधी प्रश्नहो और सूर्य लग्नमें स्वक्षेत्री स्थित

हो तो सिंह या व्याघ्र कहना, भौम स्वक्षेत्री हो तो मेंढ़ा भेड कहना, शनि राहु स्वक्षेत्री हो तो हस्ती कहना॥

(२०) यदि प्रश्नलग्नमें बृहस्पति कुम्भराशिस्थ हो और चन्द्रमा पञ्चम सप्तम या नवें घरमें बैठा हो तो राजाकी चिन्ता कहना, यदि उन्हीं पञ्चम सप्तम नवम घरमें कोई शुभग्रह हो तो हस्ती कहना, इसी योगमें यदि बृहस्पति कुम्भके न होकर धन मीनके हों तो बन्दर कहना ॥ ४ ॥

इति श्रीपवाँरवंशावतंसश्रीमहाराजशंभुसिंहसुठालियाधीशकृते भाषानुवादे जिनेन्द्रमालाग्रन्थे जीवप्रकरणनाम चतुर्थोऽध्यायः।४।

अथ नष्टमुष्टि तथा चिन्ताप्रकरणम्।

(१) पृच्छककी चिन्ता आरूढ़लग्नके द्रष्टाग्रहोंसे विचारना जब किसी जीतेहुए देहधारीके द्विपद चतुष्पद बहुपद जलचर पक्षी इत्यादि जाननेकी चिन्ता हो तो यह सब द्रष्टाग्रहसे कहना ॥

(२) पृच्छककी चिन्ता आरूढ़लग्नके बलसे तथा द्रष्टाग्रहके बलसे कहना, और नष्टद्रव्य उदयलग्न तथा उसके द्रष्टाग्रहसे कहना, और छिपाहुआ द्रव्य अर्थात् मुष्टि इत्यादिके प्रश्नकी चिंता छत्रलग्न और उसके द्रष्टा ग्रहसे कहना, प्रगट हो कि यदि द्रष्टा ग्रह बली हो तो फलदेंगे अन्यथा नहीं ॥

(३) जिनग्रहोंको केन्द्रबल प्राप्त हो उनग्रहोंको देखना, यदि ये ग्रह मित्रराशिस्थ हों तो इनसे मुष्टिगत पदार्थका विचार करना, यदि स्वक्षेत्री हों तो नष्ट पदार्थका विचार करना, और उच्चस्थ हों तो पृच्छककी मूकचिंताका विचार करना ॥

टिप्पणी।

केन्द्रस्थ ग्रहोंके बलज्ञानार्थ १ अध्यायका ३२ वां श्लोक देखा इसमें ग्रहोंके केन्द्रबल कहे गए हैं ॥

(४) उदयारूढ़ छत्रलग्नोंसे तथा इनपर स्थित ग्रहोंसे जो धातुमूल जीवके लक्षण पहँचाने हैं उन्हीं लक्षणोंसे नष्टमुष्टि चिंताकी लक्षणाकृति कहना ॥

(५) ऐसा भी है कि, चिंता याने मूकविचार दशमघरसे, और स्वप्नचतुर्थसे, मुष्टि छत्र लग्नसे, भूतवृत्तान्त सप्तम घरसे, और भविष्य वृत्तांत उदयलग्नसे, नष्ट याने चोरीगया पदार्थ आरूढ़ लग्नसे कहना ॥

(६) उदयलग्नसे पृच्छकका विचार कहना, द्वितीयघरसे उसके कुटुम्बका, तृतीयसे भाइयोंका, चौथेसे माताका, पंचमसे पिताका, छठेसे शत्रुका, सप्तमसे पत्नीका, अष्टमसे आयुका, नवमसे पितामहादिका, दशमसे रोजगार धंधेका, ग्यारहवेंसे लाभका और बारहवें घरसे पृच्छकके हानिव्ययका विचार करना ॥

(७) यदि आरूढ़लग्न द्विपदराशि हो और उसपर सूर्य चंद्र बुध गुरु अथवा शुक्र बैठे हों तो प्रश्न मनुष्यसंबंधी कहना, यदि यह ग्रह शनि या राहुसे युत हों तो चोरसंबंधी अथवा चोरीगया हुआ पुरुषसंबंधी प्रश्न कहना ॥

(८) यदि प्रश्नकालमें सूर्य उदय लग्नस्थ हो तो प्रश्न राजासे भीति संबंधी कहना, यदि चंद्र बुध गुरु या शुक्र हो तो संपत्तिसंबंधी प्रश्न कहना, मंगलसे लड़ाई शनिसे नष्ट हृत्त पदार्थ, और राहुसे रोग या विषसंबंधी प्रश्न कहना ॥

(९) यदि उदयलग्नमें अशुभ ग्रह हों तो मृत्युसंबंधी प्रश्न कहना, यदि वे अशुभ ग्रह आरूढ़ लग्नमें हो तो रोगसम्बन्धी प्रश्न कहना, आरूढ़ या उदयलग्नसे दूसरे घर यदि वे अशुभ ग्रह हों तो नष्ट हृत्त द्रव्यसंबंधी प्रश्न कहना ॥

(१०) यदि पापग्रह अष्टम घरमें हों तो प्रश्न नष्ट हृत द्रव्य सम्बन्धी कहना यदि वे छठे घरमें हों तो प्रश्न इसके विरुद्ध कहना, यदि बारहवें घर हों तो प्रश्न रोगसम्बन्धी कहना, यदि शुभग्रह अष्टम घरमें हों तो लाभ छठे घरमें हों ता कार्य्यसिद्धि और बारहवें घरमें हों तो स्वास्थ्यसम्बन्धी प्रश्न कहना॥

(११) यदि आरूढ़ लग्न तीसरे छठे नवें बारहवें घर हों तो भूतसम्बंधी प्रश्न कहना। और प्रथम चौथे सातवें दशवें घर हों तो भविष्य सम्बन्धी, दूसरे पांचवें आठवें ग्यारहवें घर हों तो वर्त्तमान सम्बन्धी प्रश्न कहना यह सब उदयलग्न कुंडलीमें देखना॥

(१२) तुला उदयलग्नहों और मेष आरूढ हों तो चोरीगया धन मिलेगा परन्तु मेष उदय और तुला आरूढ़ हों तो नहीं मिलेगा इसी तरह वृश्चिक धन ये उदयलग्न हों और इनके क्रमानुसार वृष मिथुन आरूढ हों तो धन मिलेगा और इससे विलोम हों तो नहीं मिलेगा॥

(१३) मकर उदयलग्न हो और कर्क आरूढ़ हो तो मिलेगा तथा इससे विलोम हो तो नहीं मिलेगा, सिंह कन्या उदयलग्न हों और कुम्भ मीन क्रमानुसार आरूढ़हों तो चोरीगया धन मिलेगा और इससे विलोम हो तो न मिले॥

(१४) उदयलग्न शिरोदय हो और आरूढ पृष्ठोदय हो तो चोरीगया धन मिलेगा विलोमसे नहीं मिलेगा, शुभग्रह आरूढ़ व उदयलग्नमें हो तो तत्काल हृत द्रव्य मिलेगा॥

(१५) उदयलग्नसे तीसरे घर पाप ग्रह हो तथा आरूढ़ व छत्रमें हों और पापग्रहोंसे दृष्ट हों तो हृत द्रव्य मिलेगा परन्तु वे पाप ग्रह शुभग्रहसे दृष्टहों तौ नहीं मिलेगा॥

(१६) मेष कन्या मकर राशि सप्तम घरमें हों तो नहीं मिलेगा और वृष, तुला, धन, कुंभ सप्तम घरमें हो तो मिलेगा इनसे पृथक् अन्य राशियां हों तो विलंबके बाद मिलेगा, बृहस्पति सप्तम घरमें हो तो हृत द्रव्य मिलेगा यदि और कोई ग्रह सप्तम घरमें हो तो नहीं मिलेगा ॥

(१७) यदि पृष्टोदय राशिको चन्द्र देखे या बैठा हो तो हृत द्रव्य मिलेगा परन्तु वह चन्द्र शनिसे वीक्षित हो तो नहीं मिलेगा ये मंगल उपरोक्त चन्द्रसे दशम घरमें हो तो मिलेगा ॥

(१८) यदि सूर्य और चन्द्र बुध गुरु सप्तम घर हों तो मिलेगा ॥

(१९) शुभ ग्रह पांचवें सातवें नवें घर हों तो मिलेगा पाप ग्रह हो तो नहीं मिलेगा ॥

(२०) उदयसे या आरूढ़से तृतीय, पंचम, नवम शुभ ग्रह हों तो धन मिलेगा और पाप ग्रह हो तो नहीं मिलेगा चीजके चोरीजानेकी दिशा ग्रहोंसे कहना ॥

(२१) आरूढ़ या उदयलग्नमें इंद्रधनुप रिवेष धूम्र या सूक्ष्म हों तो नष्ट द्रव्य मिलेगा ग्रहकी जो दिशा है उसदिशाको चीजगई है ॥

(२२) आरूढ़ या उदय लग्नसे तीसरे घर पाप ग्रह हों और उन पापग्रहोंसे चौथे या पांचवें शुभ ग्रह हों तो कोई पुरुष नष्ट द्रव्यको खुदबखुद लादेगा ॥

(२३) उदय या आरूढ़लग्नसे दशम घरमें सूर्य मङ्गल और शनि हो तो खोयाहुआ चौपाया स्वयं घरको आजावेगा ॥

(२४) जो चतुष्पद राशिमें स्थित राहु सप्तम घर हो तो खोयेहुए चौपायेका प्रश्न जानना, उदयलग्नमें राहु हो और सप्तम घरमें चतुष्पद राशि हो तो चौपाया बँधा हुआ या कहीं रुका हुआ है, राहु उदयलग्नमें हो और द्विपद राशि सप्तमस्थ हो तो खोया आदमी कैद या बन्धनमें है ॥

(२५) जो गुरु उदयलग्नमें हो तो खोयाहुआ सोना नाशको नहीं प्राप्त होगा, शुक्र चौथे घर हो तो खोई चाँदी नाशको नहीं प्राप्त होगी और यदि शनि सप्तम घर हो तो खोया हुआ लोहा विनाशको नहीं प्राप्त होगा, यदि मङ्गल दशम घर हो तो खोया हुआ तांबा नाश नहीं होगा॥

(२६) यदि बुध उदय लग्नमें हो तो खोया हुआ कथीर नष्ट नहीं होगा, यदि चन्द्र चतुर्थ घर हो तो खोई हुई कांसी नष्ट नहीं होगी, यदि राहु सप्तम घरहो तो खोयाहुआ शीशा नष्ट नहीं होगा, यदि सूर्य दशम घर हो तो खोया हुआ पीतल नष्ट नहीं होगा॥

(२७) यदि उदय लग्नमें कर्क या वृश्चिक हो तो पदार्थ घरके भीतर छिपाया गया है यदि मकर मीन हों तो बाहरकी दालान या दीवालके नजदीक है यदि और कोई राशि हों तो घरकी ओलादी छत, या कैंचीपर रक्खी है॥

(२८) उदय लग्नमें सूर्य या बुध हो तो दीवालके सिरेपर चीज रक्खी है, यदि चन्द्र या शुक्र हो तो जल पात्रमें, और मंगलसे दीवालके समीप या घरके बरामदेमें, और गुरुसे रसोई घरमें, शनिसे चूल्हा या भट्टीमें, राहुसे छिद्रमें रक्खी कहना॥

(२९) यदि प्रश्नकालमें अश्विनी नक्षत्रका उदय हो तो चोरीगई चीज गाँवके भीतरही धरीहै, भरणीसे गलीमें, कृत्तिकासे जंगलमें, रोहणीसे सिरके या लवण पात्रमें, मृगाशिरसे खाटतले, आर्द्रासे मन्दिरमें, पुनर्वसुसे नाजके बन्डेमें, पुष्यसे घरमें, आश्लेषासे धूलके ढेरमें॥

(३०) मघा नक्षत्रसे चावल रखनेके पात्रमें, पूर्वाफाल्गुनीसे शून्य घरमें, उत्तराफाल्गुनीसे जलाशयमें, हस्तसे तालाबमें, चित्रासे जलके किनारे, स्वातिसे चावलके खेतमें, विशाखासे रुईके खेतमें, अनुराधासे लता बेलड़ीकी जगहमें, ज्येष्ठासे मरुस्थलमें॥

(३१) मूलसे पायगामें, पूर्वाषाढ़ासे छप्परमें, उत्तराषाढ़ासे धोबीके धोनेके बरतनमें, श्रवणसे व्यायामभूमि यानि कवायद करनेकी जगहमें, धनिष्ठासे घट्टीके नजदीक, शतभिषासे गलीमें, पूर्वाभाद्रपदसे आग्नेय कोणके घरमें, उत्तराभाद्रपदसे दलदलमें, रेवतीसे पुष्पवाटिकामें कहना ॥

(३२) मंगलसे छोटापात्र, बुधसे शक्करकी चासनीका पात्र, अथवा कड़ाय, गुरुसे बड़ा जलपात्र, शुक्रसे जलपात्र, शनिसे बड़ा बरतन, राहुसे छिद्रवाला बरतन, सूर्यसे सिरकेका पात्र, चन्द्रसे पतले बरतनमें चोरीगई चीज धरी कहना ॥

(३३) जब यह जाननाहो कि चोरी जानेके पेश्तर चीज किस दिशामें रक्खीथी तो प्रश्नकालिक उदय लग्नका स्वामी जिस राशि पर बैठाहो उसके तुल्य दिशा कहना, जैसे वृषसे पूर्व, मिथुन कर्कसे आग्नेय, सिंहसे दक्षिण, कन्या तुलासे नैर्ऋत्य, वृश्चिकसे पश्चिम, धन मकरसे वायव्य कुंभसे उत्तर और मीन मेषसे ईशानकोणमें कहना ॥

(३४) जो राशिकी आरूढ़ छत्र लग्नको देखै उसीकी दिशामें हत द्रव्य गयाहै और उस दृष्टा राशिकी जितनी किरणें हैं उतनी संख्या चोरी गई चीजकी कहना, और जितने ग्रह छत्रारूढ़ लग्नको देखते हैं उतनीही चीज चोरी गई कहना ॥

(३५) यदि उदय व आरूढ़ विषमराशि हों तो पुरुष चोरहै, समहों तो चोर स्त्रीहै ॥

(३६) जिसको अतिपूर्ण बली ग्रह देखे उसीकी दिशाके तुल्य चोरीकी दिशा कहना, और जो ग्रह अति पूर्ण बली ग्रहसे दृष्टि है उस तुल्य द्रव्यका रंग कहना, और जो ग्रह अतिपूर्ण बली ग्रहसे दृष्ट है उसीसे चोरका रंग जाति इत्यादि सब कहना ॥

(३७) जो सबमें बली ग्रहहै और उसकी जो अवधिहै उसी की अवधिमें चोरी मिलेगी अवधिका वर्णन १ अध्यायके ७७ श्लोकमें देखो ॥ इति श्रीपवाँर वंशावतंस श्रीमहाराजशंभुसिंह सुठालियाधीशकृते भाषानुवादे जिनेन्द्रमालाग्रंथे नष्टमुष्टिचिंताकांडं संपूर्णम् ॥

अथ शुभाशुभप्रकरणम्।

(१) इस अध्यायमें मैं उन बातोंको लिखूंगा जो विवाह, परस्परप्रीति, यात्रा संबंधी जो १२–१३–१९ इन कांडोमें वर्णन-करनेसे रहगई हैं ॥

(२) यदि प्रश्नकालमें उदयलग्न शिरोदय होतो कार्य सिद्ध होगा और पृष्ठोदयहो तो नहोगा, जो शिर पृष्ठोदय अर्थात् मीन लग्न हो तो बड़े कठिन उद्योगके बाद कार्य सिद्ध होगा ॥

(३) यदि उदय लग्न चर हो तो चोरीगया धन नहीं मिलेगा और रोगीका रोग चलाजायगा शत्रु आकर संधि करेगा ॥

(४) उदय लग्न चर होतो चोरीगया धन मिलेगा शत्रुका आगमन नहीं होगा मृत्यु नहीं होगी न रोगसे निवृत्ति होगी कार्य सिद्ध होगा और बहुतसी पारितोषकका लाभहोगा ॥

(५) यदि उदय लग्न द्विस्वभावहो तो गयाधन नहीं मिलेगा न यात्रा न रोगनिवृत्ति न शत्रुसे संधि न विद्या सम्पन्नता और कार्य नष्ट होगा ॥

(६) यदि चाहे उदय लग्न चरहो वा द्विस्वभावहो परंतु शुभग्रह मित्रक्षेत्री स्वक्षेत्री उच्चस्थानी होकर लग्नपर बैठे हों तो सब दोषोंका निवारण करते हैं कार्य सिद्धि होगी जो पापग्रह शत्रुक्षेत्री या नीच-स्थानी होकर लग्नपर बैठे तो अशुभ कहना नेष्टफलके ये बढाने वालेहैं ॥

(७) यदि उदयलग्नमें आरूढ़हों तो चोरीगया धन मिलेगा रोग जावेगा यदि चौथेघर आरूढ़हो तो चोरीगया धन मिलेगा उद्योग सिद्धिहोगा यदि सातवेंघर हो तो चोरीका धन भी नहीं मिले और आयंदाको नुकसान हो, यदि दशवें घर हो तो द्रव्यकी वृद्धि होगी ॥

(८) यदि आरूढ़लग्न दूसरे, छठे, आठवें, या बारवें घरहो तो कार्य्य नष्टहोवे द्रव्यकी हानि, शत्रुका जय होगा ॥

टिप्पणी ।

जो तीसरे, पांचवें, नवें, और ग्यारवें घर आरूढ़लग्न हो तो वही फल होगा जो इन स्थानोंमें छत्र लग्नके जानेसे होताहै ॥

(९) यदि छत्रलग्न दूसरे या चौथे घर हो तो शत्रुसे संधि नहीं होगी परन्तु जो यह छत्र गुरुसे युत हो तो कष्टके साथ शत्रु नम्र होगा ॥

(१०) जो छत्रलग्न तीसरे घर हो तो निरंतर कार्य्य सिद्धि और संपत्ति प्राप्त हो और यदि शुभग्रह इस छत्रपर बैठेहों तो विशेष वृद्धि जो पापग्रह बैठेहों तो किंचित् दुष्टफल कहना यदि छत्रलग्न ग्यारवें घर हो तो निरंतर दुष्टफल और कार्य्य नाश होगा यदि इसपर अशुभग्रह बैठेहों तो विपत्ति विशेष कहना यदि शुभग्रह बैठेहों तो किंचित् सिद्धिकहना ॥

(११) यदि छत्रलग्न पंचम या नवम घर हो तो यात्री लौटेगा कार्य्यसिद्धि होगा शत्रुसे संधि होगी और संपत्ति सुफलता सब प्रकारकी होगी ॥

(१२) यदि छत्रराशि लग्नमें हो या छठे, आठवें, बारवें, घर हो तो चोरीगया धन नहीं मिलेगा रोगी रोगसे अच्छा नहीं होगा

कार्य्यसिद्धि नहीं होगा मगर ये छत्रलग्न शुभग्रहोंसे युत हो तो किंचित् सिद्धि कहना ॥

(१३) यदि छत्रलग्न सप्तम या दशम घर हो तो सिद्धि होगी यदि ऐसे छत्रलग्नमें मित्रक्षेत्री, स्वक्षेत्री, और उच्चक्षेत्री शुभग्रह बैठेहों तो विशेष सिद्धि कहना ॥

(१४) यदि गुरु उदय आरूढ़ या छत्रलग्नमें हो तो द्रव्यकी प्राप्ति होगी द्रव्यसहित परदेशी लौटेगा रोगनिवृत्ति होगी शत्रुसे सन्धि होगी ॥

टिप्पणी।

जितना माहात्म्य गुरुके उदय लग्नपर बैठनेकाहै उतना आरूढ़ व छत्र लग्नपर बैठनेका नहीं है यही फल और ग्रहोंकाहै ॥

(१५) जो चन्द्र उदय आरूढ़ छत्रपर स्थितहो तो द्रव्यकी प्राप्ति और दूरदेशके दुर्लभ पदार्थोंकी प्राप्ति कार्य सिद्धि होगी ॥

(१६) जो शुक्र आरूढ़ उदय छत्रमें हो तो यश और द्रव्यकी प्राप्ति शत्रुपर जय रोगसे निवृत्ति स्त्रीकी प्राप्ति और हरएक प्रकारके ऐश्वर्यकी वृद्धि कहना ॥

(१७) यदि बुध उदयारूढ़ छत्र लग्नमें हो तो शत्रु नष्ट कार्यहो रोगसे निवृत्ति शत्रुसे सन्धी और कार्य सिद्धि हो ॥

(१८ यदि सूर्य मंगल शनि उदयारूढ़ छत्र लग्नमें हो तो द्रव्य नाश रोगोत्पत्ति मृत्यु और विपत्ति होतीहै ॥

(१९) यदि राहु उदयारूढ़छत्रमें हो तो घात, चोरी, विषजन्य तथा अग्निजन्य पीड़ा और मृत्यु तथा अनेक विपत्तियाँ हों ॥

(२०) जो उच्चक्षेत्री ग्रह उदयारूढ़ छत्र लग्नको देखै तो कार्य सिद्धि दुर्लभ पदार्थोंका लाभ होगा परन्तु जो शत्रुक्षेत्री व नीचक्षेत्री होकर पूर्वोक्त लग्नोंको देखै तो कार्यहानि और स्त्रीलाभ तथा दुर्लभ पदार्थोंकी प्राप्ति न हो ॥

(२१) स्वक्षेत्री मित्रक्षेत्री उच्चक्षेत्री ग्रह उदयारूढ़ छत्रको देखै तो शत्रु सन्धि करेगा जो उदयारूढ़ छत्रदृष्टा ग्रहोंके मित्र स्वक्षेत्र उच्चक्षेत्र हो तो शत्रुभी मित्र होजावेंगे स्त्रीलाभ कई प्रकारके ऐश्वर्य्य प्राप्त होंगे ॥

(२२) जो शत्रुक्षेत्री ग्रह उदयारूढ़ छत्रलग्नमें बैठे तो उसका फल अधो लिखितहै. मृत्यु, शत्रुके बंधनमें पड़ना, यात्रीका पीछा लौटना न होवे, गयाधन नहीं मिलै और जितनी बातोंकेप्रश्न किये जावें उन सबकी अप्राप्तिहो ॥

(२३) चन्द्र गुरु केन्द्रमें बैठे तो मृत्यु नहीं होगी नष्ट हृत द्रव्य पीछा मिलेगा यदि पापीग्रह केन्द्रमें बैठे तो मृत्यु होगी द्रव्य नहीं मिलेगा विपत्ति उठाना पड़ेगी ॥

(२४) यदि पापीग्रह सम्पूर्ण केन्द्रमें बैठे अथवा शुभग्रह दशवें या ग्यारहवें घर बैठे तो सब कार्य्योंकी सिद्धि होगी ॥

(२५) जो राहु केन्द्रमें बैठे तो बेड़ियाँ पड़ें यात्री नहीं लौटे द्रव्यलाभ नहीं होवे विष या रोगसे मृत्यु होवे यात्रा नहीं होगी और न कार्य्य सिद्धि होगी ॥

(२६) जो चन्द्र उदयलग्नमें होवे शुक्र दशवें घर अथवा गुरु उदय लग्नमें व सूर्य्य दशवें घर हों तो सब कार्य्योंकी पूर्णसिद्धि कहना ॥

(२७) जो शुक्र सप्तम या दशम हो तो स्त्री व द्रव्यका लाभ तथा राजकृपा होवे जो इनस्थानोंमें चन्द्रमा होवे तो स्त्रीका लाभ कहना ॥

(२८ जो शुभग्रह केन्द्रमें बैठे तो पृच्छकको आधिपत्य प्राप्त होगा सुखी होगा परन्तु जो केन्द्रमें पापीग्रह हों तो द्रव्यहानि, शत्रु रोग विपत्तिसे पीड़ा होगी ॥

(२९) मित्रक्षेत्री व स्वक्षेत्री ग्रह मैत्री व ऐश्वर्यकी प्राप्ति कराते हैं और उच्चक्षेत्री द्रव्य लाभ इत्यादि बातें कराते हैं शत्रुक्षेत्री ग्रह विपत्ति और शत्रु पैदा करते हैं नीचक्षेत्री ग्रह द्रव्यहानि इत्यादि दुष्टफल करते हैं ॥

(३०) सारांश यहहै कि, जो प्रश्न कालमें शुभग्रह आरूढ़ छत्र व केन्द्रमें हो तो कार्यसिद्धि द्रव्यप्राप्ति होगी जो शुभग्रह बलवान् होगा तो पूर्वोक्त फलमें आधिक्यता होगी जो यह बलवान शुभ ग्रह मित्रक्षेत्री शुभक्षेत्री उच्चक्षेत्री हो तो अत्यन्त कार्यसिद्धि व अनन्त द्रव्य लाभ कहना ॥

(३१) जो पापग्रह आरूढ़छत्र और केन्द्रमें हो तो विपत्ति होगी जो यह पापग्रह बलवान हो तो आपत्तिको बढ़ावेंगे और जो यह बलवान पापग्रह शत्रु या नीच क्षेत्री हो तो विपत्तिकी अत्यन्त वृद्धि कहना ॥

इति श्रीपवाँरवंशावतंस श्रीमहाराजशम्भुसिंहसुठालियाधीश कृते भाषानुवादे जिनेन्द्रमालाग्रंथे शुभाशुभकांडं सम्पूर्णम् ॥

अथ रोगप्रकरणम्।

(१) उदय लग्नसे षष्ठस्थान रोगका है और आठवां स्थान मृत्युकाहै यह दैव सम्मतिहै ॥

टिप्पणीं।

भाष्यकारके मतानुसार छठेघरसे छठाघर अर्थात् लग्नसे ग्यारहवां घर रोगका है और अष्टमसे अष्टमघर अर्थात् लग्नसे तीसरा घर मृत्युकाहै ॥

(२) जो रोगभवनमें आरूढ़ राशि हो अथवा शत्रुक्षेत्री या नीच क्षेत्री पापी ग्रह, रोग घरको देखताहो तो बीमारी नहीं जायगी।

टिप्पणी ।

जो यह पापीग्रह रोगस्थानमें बैठे तौभी रोग नहीं जायगा परन्तु जो यही ग्रह मित्रक्षेत्री स्वक्षेत्री उच्चक्षेत्री हो तो रोगसे कुछ फुरसत हो जावेगी ॥

(३) रोगस्थानमें अथवा आरूढ़ लग्नमें राहु, धूम, इन्द्रधनु हों तो रोगसे निवृत्ति नहीं होगी और शत्रुके आक्रमणसे छुटकारा नहीं होगा, अग्नि तथा विष बाधासे भी नहीं बच सकेगा ॥

(४) यदि आरूढ़ या छत्र अधो दृष्टि राशियां हों और उनको अधो दृष्टि ग्रह तथा पापग्रह देखें तो रोगसे छुटकारा नहीं होगा ॥

टिप्पणी।

कर्क वृश्चिक अधोदृष्टि राशियां हैं और बुध शुक्र अधोदृष्टि ग्रह हैं पाहिले अध्यायका ९–१० वां श्लोक देखो ॥

(५) यदि रोग घर या उससे सप्तम स्थानमें पाप ग्रह हों अथवा रोगभवनसे षष्ठ स्थानमें चन्द्रमा हो अथवा पाप ग्रहोंसे दृष्ट चन्द्रमा कहींभी स्थित हो तो रोगसे छुटकारा न होगा।

(६) जो शुभ ग्रह उदय लग्नमें तथा नवम दशम घरमें हो तो रोग जायगा और यह शुभग्रह शत्रुक्षेत्री नीचक्षेत्री होकर पूर्वोक्त स्थानमें बैठे तो किंचित् रोग निवृत्ति होगी परन्तु सम्पूर्ण रोग नहीं जायगा जो मंगल शत्रुक्षेत्री अथवा नीचक्षेत्री होकर दशम घर बैठे तो रोग चला जायगा। परंतु जो स्वक्षेत्री मित्रक्षेत्री उच्चक्षेत्री हो तो देखनेमें फुरसतसी जानपड़े परंतु पूर्ण रोगकी निवृत्ति न होगी ॥

(७) जो दशमघरमें इन्द्रधनु या परिवेषहो तो रोग नहीं जायगा और यदि इनग्रहोंमेंसे जो दशमस्थानी चंद्र बुध गुरु शुक्रसे दृष्ट हो और यह द्रष्टा ग्रह मित्रक्षेत्री स्वक्षेत्री उच्चक्षेत्री हो तो देखनेमें ऐसा मालूमपड़े कि, फुरसत न होगी परंतु अंतमें पूर्ण रूपसे फुरसत होजावेगी ॥

(८) रोगभवन या मृत्युभवन पाप ग्रहोंसे युत वा दृष्ट हो तो आराम न होगा और शुभग्रहोंसे युत वा दृष्ट हो तो आराम होगा यह सामान्य मतहै ॥

(९) रोगभवन अथवा चन्द्रराशि ऐसे पापग्रहोंसे युत वा दृष्ट हो जो स्वक्षेत्री मित्रक्षेत्री उच्चक्षेत्री हो तो रोग चला जायगा और सबसे बलिष्ठ ग्रहकी जो अवधिहै उस अवधिमें रोग जायगा ॥

(१०) जो रोगभवन या चन्द्र राशि शुभग्रहोंसे युत वा दृष्ट- हो और वे स्वक्षत्री मित्रक्षेत्री उच्चक्षेत्री हों तो रोगीको उतनेही दिन घड़ीमें आराम होगा जो पहिले अध्यायके ७७-७८ श्लोक में कहीहैं. यहां जो घटिकायें लिखीहैं ये नियत नहीं हैं घटीके दिन और दिनके महीनेभी हो सक्तेहैं यह ग्रहोंकी अवधिपर हसर रखताहै ॥

(११) मेष शिरहै वृष चेहराहै मिथुन कंधे हैं कर्क छातीहै. सिंह स्तन मुखहै. कन्यापेटहै तुला काखें हैं वृश्चिक पीठहै धन जोघेहैं मकर घुटनेहैं कुम्भ टकनेहैं मीन पांवहैं किसी किसीका यह मतहै कि, धन पिछला भागहै मकर पुट्ठे हैं कुम्भ जांघेहैं और मीन पांवहैं ॥

(१२) मङ्गल मस्तकहै शुक्र चेहराहै बुध गर्दन और कंधेहैं चन्द्रमा छातीहै, सूर्य्य उदरहै गुरु नितंब याने पुट्ठेहैं शनि जांघे और राहु टांगेहैं किसीका यह मतहै कि बुध चेहराहै और शुक्र कंधेहैं ॥

(१३) उदयलग्नमें जो राशि व ग्रहहै उसका जो अंग ऊपर कहा गया तदनुसार उसी अंगमें बाधा कहना यदि यह ग्रह अथवा उदय लग्नेश शत्रु यानी चरराशिपर बैठे तो रोग सख्त याने भारी कहना जो यदि यह ग्रह स्वक्षेत्री मित्रक्षेत्री उच्चक्षेत्री हो तो रोग स्वल्प कहना ॥

(१४) कृत्तिका शिर है रोहिणी कपाल आर्द्रा नेत्र पुनर्वसु नाक मृगशिरा भौंह पुष्य चेहरा आश्लेषा कान मघा होठ और ऊपरी भाग मुखका पूर्वाफाल्गुनी दक्षिण बाहु उत्तराफाल्गुनी वाम बाहु, हस्त अंगुलियां, किसीका यह मतहै कि पुनर्वसु चेहराहै, पुष्य ऊपरका होठ आश्लेषा नीचेका होठ ॥

(१५) चित्रा गर्दनहै स्वाति छाती विशाखा स्तन मुखहै अनुराधा उदरहै ज्येष्ठा दक्षिणपार्श्व मूल वामपार्श्व पूर्वाषाढ़ा पीठ, उत्तराषाढ़ा पुट्ठे श्रवण मूत्रेन्द्रि धनिष्ठा गुदा शतभिषा दक्षिणजांघ पूर्वाभाद्रपदा वाम जांघ ॥

(१६) उत्तराभाद्रपद घुटने रेवती टकुने अश्विनी पांवका ऊपरी भाग भरणी पांवका तलुवाहै, जिस नक्षत्रका प्रश्नकालमें उदयहो इसी नक्षत्रके कथित अंगमें पीड़ा कहना और जिस राशिका वह नक्षत्रहै उस राशिका स्वामी जो शत्रु क्षेत्री या नीच क्षेत्री हो तो बीमारी भारीहै और जो स्वक्षेत्र मित्रक्षेत्र उच्चमें हो तो बीमारी स्वल्पहै ॥

(१७) शिरोरोगका और फेनिल अतिसारका याने संग्रहणी का मंगल स्वामीहै छातीका दर्द तथा सर्दी जुखामका चन्द्रमा स्वामी है कांख बिलाईका स्वामी बुधहै सूर्य्य उदररोगका स्वामीहै ॥

(१८) वात और पंगुताका स्वामी शनि है, फेफड़ेका क्षयरोग तथा विषजन्य बाधाका स्वामी राहु है नेत्र रोगका स्वामी शुक्र है, और बवासीररोगका स्वामी गुरु है ॥

(१९) कुष्ठका स्वामी परिवेष है, बालकोंका क्षयरोग तथा सूखी रोगका स्वामी धूम है, उद्वेष्टन रोग अर्थात् बांवठाका स्वामी राहु है पिशाचजन्य पीड़ाका स्वामी सूर्य है, क्षय रोगका स्वामी शनि है, और जिस रोगसे खाल निकल जाती है उस रोगका स्वामी

मंगल है ॥ इति श्रीपवांरवंशावतंस श्रीमहाराजशंभुसिंहसुठालिया धीशकृते भाषानुवादे जिनेन्द्रमालाग्रंथे रोगप्रकरणं संपूर्णम् ॥

अथ मृत्युप्रकरणम्।

(१) जो वृष सिंह वृश्चिक कुंभ आरूढ़ व छत्र लग्न दोनों होवें तो मृत्यु नहीं होगी जो तुला आरूढ़ हो और उसका छत्र धन हो तो भारी रोगसे पीड़ा होगी जो धन आरूढ़हो और उसका छत्र तुलाहो तो मृत्यु होगी ॥

(२) मेष आरूढ़हो मिथुन छत्र हो तो सख्त बीमारी होगी जो मिथुन आरूढ़हो व मेष छत्रहो तो मृत्यु होगी कर्क आरूढ़हो और कन्या छत्रहो तो सख्त बीमारी होगी जो कन्या आरूढ़हो और कर्क छत्रहो तो मृत्यु होगी मकर आरूढ़हो और मीन छत्रहो तो सख्त बीमारी होगी जो मीन आरूढ़हो और मकर छत्रहो तो मृत्यु होगी आशय यहहै कि आरूढ़ लग्नसे छत्र तीसरा होगा तो सख्त बीमारी होगी और आरूढ़से छत्र ग्यारहवाँ होगातो मृत्यु होगी ॥

(३) जो प्रश्नकालमें आरूढ़ अष्टमघरमें हो और चन्द्रमा उससे अष्टमहो अथवा मृत्युघर या चन्द्रराशि या अंगस्पर्शसे जो राशि ज्ञाति हुईहो इनपर केवल पापग्रहोंकीही दृष्टि हो तो रोगसे आराम नहीं होवेगा ॥

(४) आरूढ़ या मृत्यु घरको जो ग्रह देखते हैं उनकी जो अवधि वर्ष मास दिन घटीकी है उसी अवधिमें मृत्यु कहना ॥

(५) यदि प्रश्नकालमें चन्द्रमा उदय लग्नमें हो और पापग्रहोंसे युतहो अथवा उदय लग्नसे छठे आठवें घरमें चन्द्रमा बैठाहो और सातवें घरमें पापग्रह हो तो जो ग्रह चन्द्रमाको देखते हैं उन दृष्टा ग्रहोंकी जो वर्ष मास दिनकी अवधिहै तत्परिमिति अवधिमें मृत्यु होगी ॥

(६) उदय लग्नसे दशम घरमें पापग्रहहों और तीसरे घरमें सूर्य हो तो दश दिनमें मृत्यु होगी यदि तीसरे घरमें गुरु या शुक्र हो तो मृत्यु सात दिनमें होगी ॥

टिप्पणी।

किसीका यह मत है कि दशम घरसे तीसरा जो घरहै उसका यहां ग्रहणहै ॥

(७) प्रश्नकालमें सूर्य मङ्गल शनि अथवा राहु आरूढ़से अष्टम घरमें हो तो मृत्यु आठदिनमें होगी यदि इनमेंसे कोई भी लग्नमें, आरूढ़में हो तो मृत्यु चौथे दिनमें होगी ॥

(८) दूसरे घर, सप्तम घर, अथवा दशम घरमें सूर्य मङ्गल शनि या राहु हो तो मृत्यु तीन दिनमें होगी दशम घरमें सूर्य या राहु हो और इससे सातवें घरमें मंगल या शनि हो तो प्रश्नकिया उसी दिन मृत्यु होगी ॥

(९) अष्टम घरमें सूर्य हो तो मृत्यु आगसे होगी, चन्द्रसे जल, मंगलसे शस्त्र, बुधसे अतिसार, गुरुसे उदररोग, शुक्रसे हवा ओस या सरदी, शनिसे भूखे मरना, और राहु विषसे मृत्यु करताहै ॥

(१०) अष्टम घरमें स्थिर राशि हो तो स्वदेशमें मृत्यु कहना, चर राशि हो तों परदेशमें मृत्यु होगी, और द्विस्वभाव राशि हो तो निकटस्थ देशमें मृत्यु होगी ॥

(११) जो सबमें बलिष्ठ ग्रह उच्चस्थ हो तो मरनेके बाद देव योनिमें जन्म होगा, जो स्वक्षेत्री मित्रक्षेत्री हो तो मनुष्य योनिमें जन्म होगा, और शत्रुक्षेत्री हो तो पशु योनिमें जन्म होगा, नीच-क्षेत्री हो तो पक्षी कीड़ा, जलचरमें जन्म होवेगा ॥

टिप्पणी ।

जो सबमें बलिष्ठग्रह अपने उच्च वर्गमें होगा तो माक्ष होजायगी और फिर जन्म होगा नहीं ॥ इति मृत्युकांडं सम्पूणम् ॥

अथ भोजनप्रकरणम्।

(१) जो कोई यह प्रश्न करे कि मैंने क्या भोजन कियाहै उस समय अधोलिखित बातोंका विचार करना चाहिये भोजन बनानेका समय, भोजनकी किस्म स्वाद, जो पुरुष संग भोजन करने बैठे, पात्र जिनमें भोजन परोसागया, और वह आदमी जो परसनेवालेहैं इत्यादि॥

(२) जो उदय लग्न मेष हो तो बकरेका भोजन वृष हो तो पत्ते दूध गव्य रसादिका भोजन कहना, जो मिथुन धन या सिंह हो तो मच्छीका मांस कहना जो उदय लग्न कर्क वृश्चिक मकर मीन हो तो फल कहना उदय लग्न तुला हो तो साग कढ़ी कहना, जो कन्या या कुंभ हो तो केवल अन्न कहना और तरकारी रहित कहना॥

टिप्पणी।

किसीका यह मतहै कि मेषसे पत्र कहना और वृषसे दूध छाँछ कहना॥

(३) उदय लग्नमें जो सूर्य बैठा हो तो स्वाद खट्टा और कडुआ कहना जो बुध हो तो ठंढे व्यञ्जन कहना अथवा दूसरी बार उबाला हुआ भोजन कहना गुरुहो तो उत्तम भोजन, राहुसे ज्यादा पका हुआ भोजन, शनिसे पत्तोंकी तरकारी और तेल, मङ्गलसे मांस कहना॥

टिप्पणी।

किसीका मत यहहै कि बुधसे फल कहना, गुरुसे वहुत प्रकारके व्यञ्जन, शनिसे दलिया, मङ्गलसे गरमकढ़ी या तरकारी और छोंकीहुई तरकारी कहना, और जिस ग्रहका जो स्वाद पहिले अध्यायके ५८ वें श्लोकमें कहाहै वही स्वाद कहना और जो रंग ग्रहोंका है वही रंग भोजनके धान्यका कहना, वा सबमें बलिष्ठ ग्रहसे फल कहना॥

(४) जो उदय लग्नमें सूर्य और मङ्गलहो तो मांसोदन याने मांस चावलका भोजन कहना जो चन्द्र शुक्र राहु इकट्ठे किसी राशिपर बैठकर सूर्यको देखें वा युतहों तो भोजन चावल दही दूध घीका मिलाकर कियाहै ॥

टिप्पणी ।

किसीका यह मतहै कि जो सूर्यको चन्द्र देखे तो दही मिले चावलका भोजन कहना और शुक्र देखे तो दूध मिले हुए चावल, राहु देखे तो घी मिले चाँवलका भोजन कहना घृतमें तेलका भी ग्रहणहै ॥

(५) गुरु उदय लग्नको देखता हो तो काला उड़द, पत्ते, मच्छी, और दाल, यदि चन्द्र देखे तो शाक कन्द मच्छी; शुक्र देखता हो तो मधु, दूध और इमलाना, शनिसे ठण्ढा भोजन व ठण्ढे चावल कहना ॥

टिप्पणी ।

किसीका यह मतहै कि मकर कुम्भमें जो ग्रह बैठेहों उनसे पूर्वोक्तफल कहना ॥

(६) जो उदयलग्न विषम राशि हो तो केवल भोजन कहना और सम हो तो तरकारीसहित भोजन कहना और जो लग्नमें विषम ग्रह हो तो केवल भोजन कहना और समहो तो तरकारी सहित पूर्वोक्तफल कहना, जो शनि और राहु या तो विषम राशिस्थ हों या विषम ग्रहके संयुक्त हों तो भोजन तरकारी सहित कहना जो सम राशिस्थहों और सम ग्रहसे युक्त हों तो केवल चावल या भोजन कहना ॥

(७) जो जल राशियां कर्क तुला मकर कुम्भ मीन इनमें सूर्य मंगल बुध शनि और राहु हो तो तैल संयुक्त भोजन कहना यदि

इन राशियोंमें चन्द्र या गुरु बैठेहों तो घृतयुक्त भोजन कहना जो शुक्र बैठाहो तो मक्खन सहित भोजन कहना ॥

टिप्पणी।

किसीका यह मत है कि, जो फल जलराशियोंका है वह चर राशिकाहै ॥

(८) जो पापीग्रह सबमें बली हो तो भोजन चावल तैल संयुक्त कहना और जिस पात्रमें भोजन परसा गया वह खण्डितहै जो शुभग्रह बली हो तो घृत सहित भोजन कहना और पात्र साबित कहना परसनेवालेका रंग ग्रहतुल्य कहना ॥

टिप्पणी।

भाष्यकारका यह मतहै कि पापग्रह अतिबलीहो तो भोजन करनेवाले पुरुष या स्त्री दुर्जनहैं और परसनेवाले उनके सम्बन्धी नहीं हैं और भोजन स्वादिष्ठ न होगा परन्तु जो शुभग्रह बली हो तो सब फल इसके विरुद्ध कहना. किसीका यह मत है कि जो सबमें बलीग्रह पुरुष राशिमें हो तो घृत तरकारी सहित भोजन कहना, यदि स्त्री राशिमें स्थितहो तो तरकारी सहित भोजन कहना और भोजन दिनको कियाहोगा ॥

(९) जो सूर्य मंगल शनि और राहु सबमें बलीग्रह हों तो बरतन पुराना कहना और खण्डित कहना तथा मिट्टीका कहना शनिसे पात्रका रंग काला कहना, जो चन्द्र बुध गुरु शुक्र सबमें बली ग्रह हो तो बरतन नया कहना भाष्यकारका यह मतहै कि पीतल चांदी सोनेका कहना ॥ इति श्रीपवाँरवंशावतंसश्रीमहारजशम्भुसिंहसुठालियाधीशकृतेभाषानुवादेजिनेन्द्रमालाग्रंथेभोजनप्रकरणंसम्पूर्णम् ॥

अथ स्वप्नप्रकरणम् ।

(१) प्रश्नलग्न मेष हो तो स्वप्नमें देवदर्शन देवगृहका देखना तथा राजगृहका दर्शन कहना, वृष हो तो पूर्वोक्त मकानोंमें चलना फिरना होगा, मिथुनसे देव ब्राह्मण तथा तपस्वीका दर्शन होगा ॥

टिप्पणी ।

दर्शनसे सुनना बात चीत करना इत्यादिबातोंका ग्रहणहै चलने फिरनेमें निवास आवागमनका ग्रहणहै ॥

(२) प्रश्नलग्न कर्क हो तो स्वप्नमें कीचड़में घुसकर दरख्तकी डाली तोड़ता देखे और सूखी व हरी खेतीको देखेगा, यदि सिंह हो तो पहाड़ीके आदमी व पहाड़ तथा पत्थर देखेगा, कन्या हो तो मुंडा स्त्रीके साथ जलपान व क्रीड़ा करेगा, तुला हो तो नृप ब्योपारी स्वर्णका दर्शन होगा ॥

टिप्पणी ।

किसीका यह मतहै कि प्रश्नलग्न सिंह हो तो युद्ध व भैंसाका दर्शन हुआ होगा और तुलासे कन्याका दर्शन कहना ॥

(३) प्रश्नलग्न वृश्चिक हो तो बैल घोड़े प्यादेके दर्शन कहना, धन हो तो पुष्प सुगंध रत्न इनका दर्शन कहना, मकरसे मनुष्य स्वर्ण का दर्शन होगा, कुंभसे नदियोंका दर्शन और मीनसे दर्पणका दर्शन कहना ॥

टिप्पणी ।

किसीका यह मतहै कि जो प्रश्नलग्न वृश्चिक हो तो स्वप्नमें विच्छू और पशु देखेगा धन हो तो विधवा स्त्री तथा मनुष्योंको देखेगा मीन हो तो मच्छीका स्वप्न आयगा ॥

(४) जो उदयलग्नमें शुक्र हो तो सुपेद मकानात देखेगा बुध हो तो देवदर्शन होगा इसी तरह आरूढ़ छत्र तथा उनपर स्थित ग्रहोंसे स्वप्नका फल कहना ॥

टिप्पणी।

किसीका यह मतहै कि जो बुध प्रश्नलग्नमें हो तो स्वप्न राक्षस तथा राजपुरुषोंका कहना बुध शुक्रको छोड़कर अन्य ग्रहलग्नमें हो तो जो स्वक्षेत्री लग्नस्थ ग्रहका फलहै वही जानना ॥

(५) उदय लग्न तथा उसपर स्थित ग्रहसे जो फल कहाजाताहै वह भूत स्वप्न तथा भावी स्वप्न दोनोंका समझना चाहिये ॥

(६) लग्नसे चतुर्थस्थानमें शुक्र हो तो स्वप्न चाँदीके जेवर तथा मोती इत्यादिका देखैगा जो राहु या मंगल हो तो मांसदर्शन गुरुसे फल तथा राजपुरुषोंका दर्शन शनिसे पशुओंका दर्शन, बुध हो तो प्रवाहमें तेरना तथा वृक्षोंकी कोचरका देखना और उपवास करना इतनी बातें कहना स्वक्षेत्री ग्रहका भी यही फलहै ॥

(७) जो चतुर्थ घरमें सूर्य्य हो तो स्वप्नमें यह देखेगा कि सूखा वृक्ष खुद पर गिराहै और मृतक पुरुष जी उठा है और खुद मृतकके सामने, जो जी उठा है सो रो रहा है जो चन्द्रमा हो तो ऐसा स्वप्न आय कि देखनेवाला खुद मरगया है और तृषावंतहै या निद्रा आरही है सूर्य्य चन्द्रके चतुर्थ होनेमें जो इन्होंकी राशिका फलहै सो इनका भी कहना ॥

(८) जो कोई यह पूछे कि हमको कौनसा स्वप्न आवेगा तो इसका फल प्रश्नलग्न तथा उसपर स्थित ग्रहसे कहना और जो यह पूछे कि हमको कौन स्वप्न आयाहै तो उसका फल चतुर्थ घर व उस पर स्थित ग्रहसे कहना और जो स्वप्न बहुत दिन हुये तब आया है और अब उसका स्मरण भी नहीं रहा तो उसका उत्तर सप्तम घर व उसपर स्थित ग्रहसे कहना जो स्वप्न जाग्रत अवस्थामें आया है उसका फल दशमघर तथा दशमस्थ ग्रहसे कहना ॥

इति स्वप्नकाण्डं सम्पूर्णम् ॥

अथ शकुनप्रकरणम् ।

(१) जो प्रश्नलन द्विस्वभाव हो तो कोई शकुन नहीं मिलेंगे यदि स्थिर हो तो विरुद्ध शकुन मिलेगा और चर लग्न हो तो अनुकूल शकुन मिलेंगे जो प्रश्नलग्न स्थिर हो तो यात्रा न होगी ॥

टिप्पणी ।

जो लग्न चर हो तो यात्रा होगी और द्विस्वभाव हो तो थोड़ी दूर यात्रा होकर पुनः लौट आना होगा यह भाष्यकारका मतहै ॥

(२) सूर्य्य अतिबली हो तो श्येन और गरुड़पक्षीका शकुन होगा चंद्र हो तो उल्लूका दर्शन होगा व कपोत और नीलकंठका, बुधहो तो खूसर बंदर, बिल्ली, खरगोश, सूअर, हिरन, खंजन, काक, कुररी, तोता, मैना, इत्यादिके शकुन कहना जो शनि या राहु हो तो कौवा, लाल सांप, बंदर, शृगाल, कुत्ता, बिल्ली, खरगोश, सूअर, हिरन, गधा, घोड़ा, खंजन इनके दर्शन कहना ॥

(३) यदि मंगल सबमें बली हो तो भारद्वाज और खंजनके दर्शन कहना जो बृहस्पति हो तो तीतर ककणपक्षी, कपोत कहना शुक्रहो तो तीतर बगुला, और किलकला कहना ॥

(४) जो प्रश्नलग्नमें सूर्य्य हो तो लालगरुड़का शकुन होगा चंद्रसे मच्छी मंगलसे शृगाली और बुध हो तो बिनाजमा दहीका पात्र, गुरु हो तो घृतका पात्र, शुक्रसे दूधपात्र, शनिसे आग्नि और शत्रुके दर्शन और राहुसे नपुंसक और सर्पके दर्शन कहना ॥

टिप्पणी ।

किसीका मतहै कि यदि प्रश्नलग्नमें चन्द्रमा हो तो काकबलि, बृहस्पति हो तो सुनहरीरंगका पक्षी, शनि हो तो चोर नीचपुरुष तेली और राहु हो तो गृह छिपकली अथवा श्वानके दर्शन कहना ॥

(९) जो सबमें बली ग्रह हो उनसे शकुन कहना और वे ग्रह जो इनको देखें अथवा प्रश्नलग्न जिन ग्रहोंसे युत व दृष्ट हो उनसे शकुन बताना दक्षिण लांछन भागी ग्रह हो तो दाहिनी तरफ शकुन मिलेंगे जो वाम लांछन भागी ग्रह हो तो वाम तरफ शकुन मिलेंगे॥

टिप्पणी।

पहिले अध्यायका ६० वां श्लोकदेखो भाष्यकारका यह मत है कि, मनमें विचारेहुए शकुनको प्रगटकरना हो तो आरूढ़ लग्नसे कहना और होनेवाले शकुनोंको उदय लग्न कहना॥ इति श्रीपवांरवंशावतंस श्रीमहाराजशम्भुसिंहसुठालियाधीशकृते भाषानुवादे जिनेन्द्रमालाग्रंथे शकुनकाण्डं संपूर्णम्॥

अथ विवाहप्रकरणम्।

(१) जो प्रश्नलग्नमें सूर्य्य या मङ्गल हो तो जिसके निस्बत प्रश्न हुआहै वह विधवा हो जायगी जो चन्द्रमा हो तो बाल्यावस्था में मरेगी यदि बुध गुरु शुक्र हों तो वह सुमङ्गली होगी शनिसे वंध्या और राहुसे मृतप्रजा होगी॥

टिप्पणी।

किसीका यह मत है कि शनि और राहु लग्नस्थ हों तो दीर्घ कालतक वन्ध्या रहकर फिर सन्ततिहोगी और वह सन्तति नष्ट होजावेगी॥

(२) दूसरे घरमें सूर्य्य मङ्गल शनि या राहु हो तो स्त्री विपत्ति ग्रस्त रहेगी चन्द्रसे बहु प्रजावान और बुध गुरु शुक्रसे सर्व सुखोंसे युक्त रहेगी॥

(३) यदि तीसरे घरमें सूर्य्य या राहु हो तो दीन और वन्ध्या होगी बाकीके छः ग्रहोंमेंसे कोईभी लग्नस्थहो तो सब प्रकारसे सुखी होगी मङ्गल बुध गुरु शुक्रसे विशेष होगी॥

(४) जो चौथे घरमें सूर्य्य या चन्द्र हो तो स्त्री पाप कर्म करेगी मङ्गल बुध गुरु शुक्र हो तो सब प्रकार सुखी रहेगी शनि हो तो दुग्ध रहित होगी और राहु हो तो उसपर सौत आवेगी चाहे वह सौत धृता हो या व्याहता ॥

(५) जो पंचम घरमें सूर्य चन्द्र हों तो वह पतिसहवास न करेगी यदि मङ्गल हो तो मृतप्रजा होगी और बुध गुरु या शुक्र हो तो बहु प्रजावान होगी। शनि हो तो रोग पीड़ित होगी और राहु हो तो युवावस्थामें मरजावेगी ॥

(६) छठे घर सूर्य मङ्गल गुरु शनि या राहु हो तो स्त्री द्रव्यवान सुखयुक्ता होगी चन्द्र हो तो विधवा होगी बुध हो तो कलह प्रिया होगी शुक्र हो तो दीर्घजीवी और सुमंगली रहेगी ॥

(७) सप्तम घरमें सूर्य्य या चन्द्र हो तो स्त्री रोगी रहेगी और मङ्गल हो तो कारागार वास करेगी बुध और गुरु हो तो भाग्यवान होगी शुक्र हो तो युवावस्थामें मरेगी शनि और राहु हो तो विधवा होगी ॥

(८) अष्टम घरमें सूर्य्य मङ्गल हो तो विधवा होगी चन्द्र हो तो युवावस्थामें मरेगी बुध शनि हो तो कुटुम्ब वाली होगी और गुरु शनि राहु हो तो मृतप्रजा होगी ॥

(९) नवमघरमें सूर्य्य मङ्गल हो तो स्त्रीके दूध नहीं निकलेगा चन्द्र या गुरु हो तो उसके पुत्र पुत्री दोनों होंगे बुध हो तो रोगी रहेगी शुक्र हो तो उसके पुत्र होगा शनि या राहु हो तो वंध्या रहेगी॥

(१०) दशम घरमें सूर्य्य या बुध हो तो स्त्री सबप्रकार सुखी रहेगी चन्द्र हो तो निरपत्य रहेगी मंगल शनि या राहु हों तो विधवा रहेगी गुरु हो तो निर्धन रहेगी शुक्र हो तो वेश्या होगी ॥

(११) जो ग्यारहवें घरमें सूर्य्य हो तो स्त्री समृद्धिवान होगी जो चन्द्रं गुरु शुक्र शनि या राहु हो तो वह ऐश्वर्य्यवान तथा वह पुत्र कन्यावती होगी और जो मंगल या बुध हो तो दीर्घ कालतक सुमंगली रहेगी॥

(१२) जो बारहवें घरमें सूर्य्य या राहु हो तो स्त्री निरपत्य रहेगी चन्द्र हो तो शीघ्र मरेगी मंगल या शनि हो तो वह शराबी होजायगी, बुध हो तो उसके पुत्र होंगे, गुरु हो तो द्रव्यवान होगी और शुक्र हो तो सर्व सुखसे सम्पन्न रहेगी ॥

टिप्पणी ।

विवाह प्रश्नोंके कहनेमें जो प्रश्नलग्न आरूढ़भी हो तो उक्तफल अत्यंत दृढ़ताके साथ कहना क्योंकि प्रश्नलग्न आरूढ़ होनेसे और भी बली होजावेगी ॥

इति श्रीपवाँरवंशावतंस श्रीमहाराज शंभुसिंहसुठालियाधीशकृते भाषानुवादे जिनेन्द्रमाला ग्रंथे विवाहकांडं सम्पूर्णम् ॥

अथ दंपातिप्रीतिप्रकरणम् ।

(१) इस प्रकरणमें हम इतनी बातोंका विवरण करेंगे परस्पर प्रीति दंपतियोंमें स्नेहभंग, स्त्रीका पातिव्रत्य, उसका व्यभिचार, इत्यादि बातें॥

(२) जो भार्याके आचरणसम्बंधी प्रश्नकरे उस समय केन्द्र राहुसे वा युत दृष्ट हो तो स्त्री व्यभिचारिणी होगी चाहे देवांगना क्यों न हो ॥

(३) जो चन्द्रमा सूर्य मंगलसे दृष्ट या युत हो तो स्त्री परपुरुषोंमें आसक्त होवेगी ॥

(४) जो प्रश्नलग्नसे चंद्रमा तीसरा सप्तम, दशम, एकादश, स्थितहोकर गुरुसे युत वा दृष्ट हो तो भार्य्या पतिव्रता होगी ॥

(५) पूर्वोक्त अशुभ योगोंमें जो चंद्रमा नीच क्षेत्री वा शत्रु क्षेत्री होकर शत्रु क्षेत्री या नीच क्षेत्री ग्रहसे दृष्ट हो तो स्त्री अतिशय न व्यभिचारिणी होगी जोपूर्वोक्त शुभयोगोंमें चंद्र मित्र उच्च स्वक्षेत्री होकर उच्चमित्र स्वक्षेत्री ग्रहसे दृष्ट हो तो अतिश य न पतिव्रता होगी ॥

(६) जो अशुभग्रहसे चंद्रमा युत वा दृष्ट हो तो भार्या पतिसे स्नेह नकरेगी जो वे अशुभग्रह नीच या शत्रु क्षेत्री हों तो भार्या बिलकुलही स्नेह न करेगी जो शुभग्रहसे चंद्रमा युत वा दृष्ट हो तो भार्य्या पतिसे प्रेम करेगी जो वे शुभग्रह मित्र उच्च स्वक्षेत्री हों तो अत्यंतही स्नेह रक्खेगी ॥

(७) जो चंद्रमा गुरुके क्षेत्रमें तथा स्त्री ग्रहोंके क्षेत्रमें हो तो स्त्री पतिसे प्रेम करेगी ॥

(८) जो आरूढ़लग्न बारहवें या छठे घर हो तो जिस भार्याके निस्बत पूछा गयाहै वह विधवा होजायगी और जो पतिके निस्बत पूछा गयाहो तो वह पुरुष विधवाका पुत्रहोगा जो आरूढ़ लग्न या उससे सातवांघर शुक्रका क्षेत्र हो तो पुरुष शूद्र होगा और बुधका क्षेत्र हो तो वैश्यहोगा ॥

टिप्पणी।

जो और अन्य ग्रहोंका क्षेत्र हो तो उस ग्रहकी जाति कहना १ अध्यायका ४२ वाँ श्लोक देखो ॥

(९) प्रश्नकालमें शुक्र मंगल शामिल हों तो पृच्छकने सजातिकी विधवाके साथ गमन किया है और दुःखित हुआ है यदि सूर्य शुक्र इकट्ठे हों तो राजपत्नीसे गमन कियाहै ॥

(१०) जो चन्द्रमा शत्रु क्षेत्री हो तो पृच्छकने शत्रु सम्बन्धीस्त्रीसे गमन किया है यदि मित्र क्षेत्री हो तो मित्र सम्बन्धी स्त्रीसे गमन कियाहै यदि नीच क्षेत्री हो तो नीच जातिकी स्त्रीसेगमन किया है ॥

(११) जो चन्द्रमा स्वक्षेत्री हो तो स्वकुटुम्बकी स्त्री या स्व भार्यांसे गमन कहना जो उच्च क्षेत्री हो तो उच्च कुलकी स्त्रीके साथ गमन कहना जो चन्द्र नीच या शत्रु क्षेत्री हो तो वेश्यासे समागम कियाहै ॥

(१२) जो उदयलग्न या उसपर स्थितग्रह विषम हों तो एक बार समागम हुआहै जो सम हों तो दो बार समागम हुआहै अथवा लग्नस्थ ग्रहोंकी संख्या तुल्य रतिगणना कहना या जो सबमें बली ग्रह हो और उसकी जितनी किरणे हैं उतनी बार समागम कहना ॥

(१३) यदि चन्द्र और मंगल उदय लग्नमें हों तो पृच्छकने वेश्याके साथ सकलह मैथुन कियाहै जो चन्द्र उदय लग्नस्थ शुक्र या शनिसे युक्त हो तो पृच्छकने स्वभार्यांसे सकलह रति किया है ॥

(१४) जो उदय लग्नमें तृतीय, चतुर्थ, सप्तम, घरमें चन्द्र और शुक्र हो तो पृच्छकने स्व स्त्रीके साथ कलह कियाहै और उसके वस्त्र फाड़ेहैं ॥

(१५) जो उदय लग्न या पञ्चम सप्तम नवम घर चन्द्र और शनिसे युत वा दृष्ट हो तो स्वप्नमें किसी स्त्रीसे रति कियाहै ॥

(१६) जो चन्द्रमा उदयलग्नमें और मंगल दूसरे घरहो अथवा मङ्गल लग्नस्थ चन्द्र वा द्वितीय घरको देखे तो चोरके डरसे सारी रात्रि निन्द्राभंग रहीहोगी ॥

(१७) सातवें घरमें पापग्रहहों दशम मंगल और तृतीय बुध हो तो पृच्छक अव्यवधान बिछोनारहित कोरीजमीन भूमिपर किसी वादग्रस्त प्रश्नपर वादविवाद करके मनोद्वेग सहित सोयाहै ॥ इति पवाँरवंशावतंस श्रीमहाराजशम्भुसिंहसुठालियाधीशकृते भाषानुवादे जिनेन्द्रमालाग्रंथे दम्पतिप्रीतिकाण्डं सम्पूर्णम् ॥

अथ सन्तानोत्पत्तिप्रकरणम् ।

(१) जब स्त्री यह प्रश्न करे कि मेरे पुत्र होगा या नहीं उस समय उदय लग्न या आरूढ़लग्न (भाष्यकारके मतानुसार चौथा पाँचवाँ नवां) घरमें राहुहो तो स्त्री गर्भवती कहना चाहे गर्भ एकरात्रिकाही हो गर्भ अवश्यहै ॥

टिप्पणी ।

कई आचार्य्योंका ऐसा मतहै कि जो राहु सूर्य्य संयुक्तहो तो स्त्रीके आगामी किसी कालमें गर्भ रहैगा जो मंगलसे युक्तहो तो जब मङ्गल दूसरी राशिपर प्रवेश करेगा तब आधान रहेगा ॥

(२) प्रश्नकालमें जो चन्द्रमा उदयलग्नमें (टीकाकारके मतानुसार आरूढ़ लग्नमें भी) शुभग्रहोंसे युक्त बैठे तो सन्तानोत्पत्ति होगी परन्तु जो चन्द्रमा तीसरे पांचवें नवें घर सूर्य या शुक्रसे युक्त बैठे तो सन्तानका जन्म नहीं होगा ॥

(३) जो गुरु उदय लग्नमें या आरूढ़ अथवा पांचवें सातवें घर बैठे तो सन्तान होगी और जो गुरु मित्र उच्च स्वक्षेत्री हो तो सन्तान चिरजींवी होगी जो गुरु शत्रु या नीचक्षेत्री हो तो सन्तान युवा अवस्थामें मरजावेगी ॥

(४) जो उदय लग्न (भाष्यकारके मतसे आरूढ़लग्न) पर परिवेष, राहु चन्द्र गुरु इनसे युक्त होकर बैठे तो सन्तान होवेगी साथ बैठनेवाला ग्रह पुरुषग्रह हो तो पुरुष सन्तान और स्त्रीग्रह हो तो स्त्री सन्तान होगी ॥

टिप्पणी ।

संख्या रंग और अन्य बातें संतति सम्बन्धी इन्ही ग्रहोंसे कहना ॥

(५) जो सूर्य उदय लग्नसे तीसरे छठे सातवें दशवें ग्यारवें घर हो तो पुत्र जन्म होगा जो इन पांचों घरोंमें किसी घरमें चन्द्रमा

बैठे तो कन्याका जन्म कहना सातवें घरमें चन्द्रको छोड़कर शेष शुभ ग्रह बैठें तो पुत्र जन्म होगा और सूर्यको छोड़कर शेष पाप ग्रह बैठें तो कन्याका जन्म होगा॥

टिप्पणी।

जो विषम राशि शुभग्रह या विषम ग्रह युक्त हो तो पुत्र जन्म होगा और समराशि अशुभग्रह या समग्रहसे युक्त हो तो कन्या होगी॥

(६) जो प्रश्नकालमें विषम नक्षत्रका उदय हो तो पुत्र जन्म और सम नक्षत्रका उदय हो तो कन्या जन्म कहना अश्विनीसे एक एक नक्षत्र बीचमें छोड़कर जैसे अश्विनी कृत्तिका मृगाशिर इत्यादि ये नक्षत्र विषम हैं और भरणीसे एक एक नक्षत्र छोड़कर जैसे भरणी रोहिणी आर्द्रा इत्यादि नक्षत्र समहैं॥

टिप्पणी।

किसीका यह मतहै कि चन्द्र व शनि और उदयलग्नेश विषम राशिस्थहो तो पुत्रजन्म होगा जो सम राशिस्थहो तो कन्या जन्म होगा॥

(७) जिस दिन और जिस घड़ी पलमें चन्द्रमा आरूढ़ लग्नसे सप्तम घरमें प्रवेशकरेगा उसी दिन व उसी घड़ी पलमें सन्तान का जन्म होगा॥

टिप्पणी।

यह प्रश्न सन्तान होनेवाले मासमें करना चाहिये॥

(८) जो गर्भवती स्त्री गर्भसम्बन्धी प्रश्न आकर करे उस समय उदय लग्न या आरूढ़ लग्न परिवेष ग्रहसे युक्त हो तो गर्भपात होगा और जो उदय या आरूढ़ लग्नसे अष्टम घरमें परिवेष चन्द्र दोनों हों तो उसीके साथ स्त्रीका मरण भी होगा॥

टिप्पणी ।

भाष्यकारका यह मत है कि जो केवल चन्द्रमाही शत्रुक्षेत्री नीच क्षेत्री हो तो स्त्रीका मरण होगा जो चन्द्रमा मित्र उच्च स्वक्षेत्री हो तो स्त्री मरे नहीं केवल प्रसव यातनाही भुगत लेवे ॥

(९) प्रश्नकालमें जो अशुभग्रह उदय लग्न, सप्तम, अष्टम, दशम, द्वादश घरमें हों और गुरु तथा अन्य शुभग्रह केन्द्रवर्तियों से दृष्ट न हों तो बालक उत्पन्नहोतेही मर जायगा ॥

टिप्पणी ।

भाष्यकारका यह मतहै कि उपरोक्त ग्रह शत्रु या नीच क्षेत्री हों तो केन्द्रवर्तियोंका मतलब यहहै कि द्रष्टाग्रह बलवान होना जो शुभग्रह पापग्रहको देखे तो बालककी मृत्यु न होगी ॥

(१०) प्रश्नमें या जन्म कालमें सूर्य अष्टम घरमें हो और मंगल या शनि सूर्यसे अथवा उदय लग्नसे सप्तम घरमें हो तो ऐसे योगमें बालक जन्मते ही मर जायगा परंतु योगकारी ग्रह जो बली शुभ ग्रहोंसे न देखेगएहों तो पूर्वोक्त योग कहना ॥

(११) जो चन्द्रमा उदय लग्नमें होय मंगल अष्टम होय चन्द्रमासे और इसी लग्नस्थ चन्द्रसे शुक्र या शनि नवम हाय और योग कारक इसी बली शुभ ग्रहोंसे दृष्ट न होंय तो बालक जन्मतेही मरेगा ॥

(१२) जो चन्द्रमा पापग्रहोंसे दृष्ट होय अथवा लग्न अथवा आरूढ़ लग्नसे शनि छठा आठवाँ होय तो बालक चारदिनमें मरेगा ॥

टिप्पणी ।

भाष्यकारके मतसे जैसे उदय और आरूढ़से कहा इसी तरह चन्द्राक्रांत राशिसे कहना ॥

(१३) जो चन्द्रमा उदय लग्नमें होय और बुध अष्टम होय पापग्रह चतुर्थ अष्टम होय तो बालक चार आठ दिनमें मरेगा॥

(१४) जो पापग्रह छठे आठवें बारवें होय और बुध गुरु शुक्रसे अदृष्ट होंय तो बालक एक महीनेमें मरेगा॥

(१५) जो पापग्रह उदय लग्नसे आठवें बारहवें होय और शुभ ग्रहोंसे दृष्ट न होय तो बालक एकवर्षमें मरेगा और उसके माता पिता सगोत्रियोंको तकलीफ होगी॥

(१६) चन्द्रमा लग्नमें होय पापग्रह केंद्रमें अथवा दूसरे आठवें होंय तो बालक एक वर्षमें मरेगा॥

(१७) जो शुभग्रह चन्द्रको न देखें पाप ग्रह उदय लग्नमें अथवा सप्तम होवें अथवा वे पापीग्रह चन्द्रके साथ होंय तो बालक एकवर्षमें मरेगा॥

(१८) उदय लग्नसे अष्टम मंगल अथवा नवम सूर्य होय या बारहवां शनि होय और ये पापग्रह शुभ ग्रहोंसे दृष्ट न होकर शत्रु क्षेत्र नीचक्षेत्र में होंय तो दो वरसमें बालक मरेगा॥

(१९) जो तीन पापग्रह शत्रुक्षेत्री नीचक्षेत्री होकर दूसरे घर होंय तो बालक मरेगा चाहे योगकारक ग्रह शुभग्रहोंसे दृष्ट होंय चाहे न होंय॥

(२०) जो पापग्रह उदय लग्नसे तीसरे आठवे होंय तो बालक मरेगा जो ये ग्रह षष्ठाष्टम गृहमें स्थित चन्द्रको देखें तो बालक मरेगा॥

(२१) मंगल या शनि सूर्यको देखें तो बाप मरे या बीमार पड़े भौम अथवा शनि चन्द्रको देखे तो मा मरे या बीमार होय जो बृहस्पति सूर्य या चन्द्रको देखताहोय तो मा बाप मरनेसे बचें॥

टिप्पणी. ।

जो सूर्य्य मित्रक्षेत्र स्वक्षेत्री भी उच्चक्षेत्री होय तो बाप फकत बीमार होवे मरे नहीं, इसी प्रकार चन्द्रका भी जानना चाहिये ॥

(२२) जन्म कालमें उदय लग्नसे पांचवें घरमें सूर्य्य होंय तो उस बालकका बाप मरेगा चन्द्रमा पंचम होवें तो मा मरेगी शनि होय तो बालक मरेगा शुक्र पंचम होंवे तो बालकके सम्बन्धी मरेंगे ॥

टिप्पणी ।

ग्रह्म श्री सीताराम जोशीके मतानुसार ये सब बातें प्रश्नसे कहना और इन्ही ज्योतिषीका यह मतहै कि जो पंचम घर खाली होय तो आरूढ़लग्नसे पंचम देखना, उससे भी खाली होय तो छत्र लग्नसे देखना सो वास्तवमें ज्योतिषीके मतानुसार बहुतसे ऐसे योगहैं कि इस अध्यायमें जन्मकाल तथा प्रश्नकालसे सम्बन्ध रखतेहैं ॥

(२३) उदयसे छठे या दशम घरमें क्षीण चन्द्र अथवा शत्रु क्षेत्री चन्द्र वा नीच क्षेत्री चन्द्र होय तो बालककी माता मरेगी जो सूर्य्य होवे तो बालकका पिता मरे शनि होय तो बालक मरे और मंगल होय तो बालकका भाई मरेगा परन्तु ये ग्रह नीच या शत्रुक्षेत्री होंय तो उक्त फल कहना ॥

(२४) जो मंगल और शनि चन्द्रमासे सप्तम हों तो मा मरेगी जो सूर्य्यसे सप्तम मङ्गल शनि होवें तो पिता मरे उदय लग्नसे दूसरे बारहवें मंगल शनि और राहु होवें तो बालक मरे ॥

(२५) मंगल शनि चन्द्रसे सप्तम होंय तो मा बीमार पड़े शनि मंगल सूर्य्यसे सप्तम होंय तो पिता बीमार होय चन्द्रसे शनि मंगल दूसरे बारहवें होंय तो मा मरेगी तथा सूर्य्यसे शनि मङ्गल दूसरे बारहवें होंय तो पिता मरे ॥

(२६) जो जन्मकालमें वा प्रश्नकालमें पुष्य अथवा पूर्वांषाढ़ा नक्षत्रके दूसरे या तीसरे चरणका उदय होय तो पिता मरेगा जो उत्तराफाल्गुनी या चित्राका प्रथम द्वितीय चरणका उदयहोय तो मा मरेगी जो सूर्य्य शुक्र या शनि पूर्वांषाढ़ाको या पुष्यको देखें तो बालक पिताके पूर्व मरे यही ग्रह उत्तराफाल्गुनी या चित्रा को देखें तो माताके प्रथम बालक मरे ॥

टिप्पणी।

भाष्यकारका यह मतहै कि पूर्वोक्त चार नक्षत्रोंके पहिले चरणका उदय होय तो बालकका बाप मरेगा जो दूसरे चरणका उदय होय तो बालककी मा मरेगी तीसरे चरणका उदय होय तो खुद बाल-क मरे चौथे चरणका उदय होय तो बालकके कुटुंबी मरें ॥

(२७) जन्म या प्रश्नकालमें पुष्य या पूर्वांषाढ़ा उदय होय और ये सूर्यसे दृष्ट होंय तो बालकका पिता मरै, बुधसे दृष्ट होय तो मा मरै शुक्रसे दृष्ट होयतो बालक मरै मंगलसे दृष्ट होय तो बालकके मामा आदि कुटुंबी मरें ॥

टिप्पणी।

भाष्यकारका मतहै कि उदय लग्न सिंह होयतो और सूर्यसे दृष्ट होयतो बालकका बाप मरे मिथुन कन्या लग्न होय और बुधसे दृष्ट होय तो बालककी मा मरे वृष या तुला लग्न होय और शुक्रसे दृष्ट होय तो बालक मरे मेष या वृश्चिक लग्न होय और मंगलसे दृष्ट होय तो बालकके कुटुम्बी मरें ॥

(२८) राहु गुरुसे दृष्ट न होकर लग्नमें होय तो बालक मरे चन्द्र गुरुसे दृष्ट न होकर दूसरे छठे आठवें बारवें घरहोय और उस चंद्रसे सप्तम घर पापग्रह होंय तो बालक और मा दोनों मरें ॥

टिप्पणी ।

भाष्यकारका मतहै कि सूर्य गुरुसे दृष्ट न होकर दूसरे छठे आठवें बारहवें घर होंय और सूर्यसे सप्तम पापग्रह होंय तो बालक तथा उसका पिता मरे ॥

(२९) चन्द्र लग्नमें होय मंगल सप्तम होय या मंगल लग्नमें चन्द्र सप्तम होय या चन्द्र लग्नमें शुक्र सप्तममें हो या शुक्र लग्नमें चन्द्र सप्तमहोय तो माता और बालक दोनों मरें परन्तु ये ग्रह गुरु या अन्य शुभ ग्रहसे दृष्ट न हों तो उक्तफल कहना ॥

(३०) सूर्य लग्नमें शनि सप्तम होय या शनि लग्नमें सूर्य सप्तममें होय और सूर्य लग्नमें और शुक्र सप्तम होय तथा शुक्र लग्नमें और सूर्य सप्तम होय गुरुसे दृष्ट न होय तो बालक तथा उसका पिता मरे ॥

(३१) जो उदय लग्नमें चन्द्रमा किसी तीन पापग्रहोंसे (सूर्यको छोड़कर) युक्त हो और वे पापग्रह शत्रुक्षेत्री या नीचक्षेत्री होंय तो मा और लड़का दोनों मरें ॥

टिप्पणी ।

भाष्यकारका मतहै उदय लग्नमें सूर्य तीन पापग्रहोंसे युक्तहो और वे पापग्रह नीचक्षेत्री या शत्रुक्षेत्री होंय तो बालक और उसका बाप मरे ॥

(३२) जो चन्द्रमा लग्नसे छठा होय उस चन्द्रमासे सप्तम पापग्रह होंय तो मा और लड़का दोनों मरें चन्द्रमा उदय लग्नसे पञ्चम होय उससे पञ्चम घर पापग्रह होंय तो उसका हात टूटेगा जो लग्नसे बारहवाँ चन्द्र होय तो बालक अन्धा होय ॥

टिप्पणी ।

भाष्यकारका मत है कि जो सूर्य छठा होय उससे पापग्रह सप्तम होय तो बालकका पिता मरे तथा बालकभी मरे ॥

(३३) जो सूर्य बारहवें घरमें होय तो बालक दक्षिणनेत्रसे काणा होय चन्द्रमा बारवें घर होय तो वाम नेत्रसे काणा होयगा जो दोनों ग्रह बारवें होंय तो अन्धा होय ॥

(३४) उदय लग्नमें शनि और सप्तम मङ्गल होय अथवा बुध लग्नमें होय और शनि सप्तम होय तो बालक वामन (अर्थात् छोटे कदका) होयगा पूर्वोक्त योगकारक ग्रह पापग्रहोंसे दृष्ट होय तो बालक दूषित अङ्गका होय ॥

टिप्पणी।

दूषित अंग आठहैं अर्थात् छोटा कद १ अन्धा २ लँगड़ा ३ कूबड़ा ४ बहरा ५ गूँगा ६ अशक्त अंगोंका ७, अकालजन्म अर्थात् जो नवम मासके पहिले जन्माहै ८, (बामन उसका नामहै कि जिसकी उँचाई दो हाथसे जादे न होय)

(३५) उदय लग्न अथवा आरूढ़ लग्न गुरु या शुक्रसे दृष्ट न होय और चन्द्रमा सूर्य मंगल शनि राहु इन ग्रहोंसें युक्त होय तो बालक अपने पितासे पैदा नहीं है ॥

टिप्पणी।

भाष्यकारका मतहै कि उदय लग्न या आरूढ़ लग्न गुरु या शुक्रसे दृष्ट न होय चन्द्रमा चाहे सूर्य मंगल शनि राहुसे युक्त होय चाहे न होय तो भी जार जात है ऐसा जानो, जो पूर्वोक्त चन्द्र सूर्यसे युक्त होय तो जार ब्राह्मण या क्षत्रिय है, मंगलसे युक्त होय तो जार वैश्य और शूद्र होय, शनि होय तो शूद्रसे भी नीच जात जारहै, राहु होय तो जार चांडालहै ॥

(३६) जो शुभ ग्रह उच्चक्षेत्री होकर उदय लग्नसे दोनों बाजू बैठे होंय या चौथे सातवें दशवें घरमें होंय एको योगः ॥ और पापग्रह स्वक्षेत्री होकर छत्र लग्नमें होय या शुभग्रह उच्चक्षेत्री या स्वक्षेत्री उदय लग्नमें होय तो बालक भाग्यवान होय ॥

टिप्पणी ।

पापग्रह नीचक्षेत्री होकर लग्न दूसरे या बारवें अथवा चतुर्थ सप्तम दशम होय तो या शुभग्रह शत्रुक्षेत्री छत्र लग्नमें होंय अथवा पापग्रह शत्रुक्षेत्री नीचक्षेत्री होकर लग्नमें बैठें तो बालक अभागी होगा जो लग्नका फल है वोही चन्द्र और आरूढ़ लग्नका है ॥

(३७) जो शुभग्रह उच्चक्षेत्री चन्द्रके आगे होय तो बालक धनवान होय और ऐसेही ग्रह चन्द्रमाके आगे पीछे होंय तो अपरिमित धनवान होय ॥

(३८) उच्चक्षेत्री शुभग्रह आरूढ़ लग्नके अगले घरमें होय तो बालक गांवका अधिपति जन्मा, जो ऐसे ग्रह दोनों तरफ बैठे होंय तो प्रान्तका अधिपति होयगा जो ये योग कन्याके होय तो प्रांताधिपतिकी स्त्री होयगी ॥

(३९) जो तीन ग्रह उच्चक्षेत्री होंय या तीन ग्रह शुभ, उदय लग्नमें होंय तो सेनापती होय जो चार ग्रह उच्चक्षेत्री या चार शुभग्रह लग्नमें होंय तो प्रांतका शासक हाकिम होय ॥

(४०) आरूढ़लग्नसे उदयलग्नतक गिने जो संख्या आवे उस को दूनी करे और उदयलग्नके दूसरे घरसे मेष राशितक गिने और वृषभसे आरूढ़के बारहवें घरतक गिने तीनों संख्याओंको जोड़े उस योगमें सत्ताईसका भाग देवे शेष अंक आवे उतनी संख्या अश्विनीसे गिने जो नक्षत्र आवे वही जन्मनक्षत्र है ॥

टिप्पणी ।

भाष्यकार कहतेहैं इसतरहसे जो नक्षत्र आवेगा उसीसे दशा उपदशा देखीजायगी ॥ इति विवाहकांडं समाप्तम् ॥

अथ क्षुरिकाप्रकरणम् ।

(१) प्रश्नकालमें चन्द्रराहुसे संयुक्त होय अथवा चन्द्र पापग्रहोंसे दृष्टहोय अथवा नीचक्षेत्री शत्रुक्षेत्री ग्रहोंसे दृष्टहोवे तो क्षुरिका भंग होयगा ॥

(२) चन्द्राक्रान्तराशि (आ) लग्नमें होय या सप्तममें होय तो छुरीकी मूठ टूटेगी ॥ जो पांचवें घरमें या नवममें होय तो मूठके नीचेसे टूटेगी जो चौथे या दशम घर होय तो बीचमेंसे टूटेगी तीसरे ग्यारहवें घर होय तो अंतसे टूटेगी ॥

टिप्पणी ।

(अ) राहुसे चन्द्रमा युक्त होय अथवा पापग्रहोंसे दृष्ट होय तो पूर्वोक्त योग पूर्ण जानना ॥ जो दूसरे घरमें छठे आठवें बारहवें चन्द्रमा होय तो छुरी टूटे नहीं ॥

(३) शत्रुक्षेत्री नीचक्षेत्री पापग्रह उदयलग्न या आरूढ़को देखें तो छुरी हाथसे खो जावेगी ॥ जो मित्रक्षेत्री उच्चक्षेत्री स्वक्षेत्री शुभ ग्रह उदय या आरूढ़ लग्नको देखें तो छुरी हाथसे नहीं जायगी ॥

(४) उदयलग्न या आरूढ़चन्द्र गुरु सूर्य्य तीनोंमेंसे किसी ग्रह दृष्ट होय तो छुरी पृच्छककी है ॥ जो उदय आरूढ़ मंगल शनिसे दृष्ट होय तो छुरी दूसरेकी हैं ॥ जो बुध या शुक्रसे दृष्ट होय तो सार्वजनिक छुरी है ॥ और छुरीके मालिककी मृत्यु होयगी ॥

टिप्पणी ।

जो द्रष्टाग्रह मित्रक्षेत्रमें होय तो छुरी मित्रकी है ॥ स्वक्षेत्री होय तो अपनी है उच्चक्षेत्री होय तो बड़े हाकिमकी है जो शत्रुक्षेत्री होय तो शत्रुकी है नीचक्षेत्री होय तो नीच पुरुषकी है ॥

(५) आरूढ़लग्नमें पापग्रह होय तो आदमीको घाव आवेगा। आरूढ़में केवल शुभग्रह होय तो घाव नहीं आवेगा ॥

टिप्पणी ।

जो शुभ पाप दोनों होंय तो थोड़ा घाव आवेगा ॥ इ० पवाँरवं० श्रीम० सु० धी० कृ० भा० जि० क्षुरिकाप्रकरणं सम्पूर्णम् ॥

अथ शल्यप्रकरणम् ।

प्रश्नकालमें जितने पांवडे मनुष्यकी छाया होय उसमें अट्ठाईस मिलाना और उससे । तात्कालिक उदयलग्नकी संख्या मिलाना सर्व योगको बारहसे गुणना और सोलहका भाग देना जितने बचें उससे फल कहना ॥ जमीनमेंसे खोदनेसे निकले उसका नाम शल्यहै ॥ १ बचे तो जमीनमें कपाल निकलेगा २ बचें तो हड्डी ३ बचें तो ईंट ४ बचें तो ठीकरी ५ बचें तो लकडी ६ बचें तो मूर्ति ७ बचें तो राखोड़ी ८ बचें तो कोयला ९ बचें तो मृतकशरीर १० बचें तो नाज ११ बचें तो धन १२ बचें तो पाषाण १३ बचें तो मेंडक १४ बचें तो सींग १५ बचें तो मरा कुत्ता १६ बचें तो मनुष्यके बाल कहना ॥

(३) जो शेष बचें उसीके अनुसार शल्य कहना जैसे ४ शेष बचें तो ठीकरीका टुकड़ा कहना, इन सोलह शल्योंमें धान्य धन सींग ये तीन शुभहैं बाकीके अशुभहैं ॥

टिप्पणी ।

जो सोलह बचें अर्थात शून्य बचेतो मनुष्यके बालहैं ऐसा कहना दूसरा अर्थ यहभी है कि शून्य बचेतो जमीनमें कोईशल्य नहींहै ऐसा कहना, परंतु पूर्वका मतही श्रेष्ठ है क्योंकि शल्य नहींमिलनेका योग आगे लिखाहै ॥

(४) इस शल्यचक्रमें २८ नक्षत्रोंके २८ कोठेहैं प्रत्येक उत्तरसे दक्षिणजानेवाली रेखामें सात सात कोठेहैं और पूर्वसे पश्चिम

जानेवाली प्रत्येक रेखामें चार चार कोठेहैं जिस नक्षत्रपर चंद्रमाहो उस नक्षत्रके कोठेके नीचेकी जमीनमें शल्यहै ॥

(८-६) सूर्योदयसे दूसरे सूर्योदयतक ६० घड़ी होतीहैं इन साठ घड़ियोंमें २८ का भागदेना जो लब्धि आवे वही प्रत्येक नक्षत्रका प्रत्येक कोठेमें ठहरनेका कालहै अब सूर्योदयके समयका चक्र बनानेकी विधि कहते हैं कि पूर्वकेतरफ मुख करके बैठना और पूर्वसे पश्चिम जानेवाली ऐसी आठरेखा खेंचना और इन रेखाओंपर उत्तरसे दक्षिण जानेवाली पांच रेखा खेंचना ऐसा करनेसे २८ कोठेका एक चक्र बनजावेगा, अब इस कोठेमें नक्षत्र धरनेकी रीति यहहै कि पूर्ववाली प्रथम रेखामें आदिके दो कोठे जो दक्षिणोत्तरक्रमसे एक दूसरेपर बनेहुएहैं छोड़कर तीसरे कोठेमें कृत्तिकानक्षत्र लिखना उस के आगे दक्षिणदिशावाले कोठेमें रोहिणी लिखना इस रोहिणीके आगेके कोठेमें इसीतरह मृगशिर लिखना मृगशिरके नीचे पश्चिमदिशावाले कोठेमें आर्द्रा लिखना फिर आर्द्रासे उत्तरके कोठोंमें पुनर्वसु, पुष्य, आश्लेषा ये तीन नक्षत्र क्रमानुसार लिखना फिर आश्लेषा के नीचे मघा पश्चिमके कोठेमें लिखना फिर मघासे आगे दक्षिणके कोठेमें पूर्वा, उत्तरा, हस्त, चित्रा ये चार नक्षत्र लिखना फिर चित्रासे ऊपर पूर्वदिशाके कोठेमें स्वाति, बिशाखा ये दोनक्षत्र लिखना फिर विशाखाके आगे दक्षिणदिशामें अनुराधा लिखना, फिर अनुराधासे आगे शेष तेरह कोठोंमें बाकीके तेरह नक्षत्र प्रदक्षिण क्रमसे स्थापन करना ये चक्र सूर्योदयसे लगाकर २$\frac{1}{7}$ घड़ीके भीतरतकका है-आशय यहहै कि ६० घड़ीमें २८ का भाग देनेसे २$\frac{1}{7}$ घड़ी लब्धि आई जो अपनी इष्टघटीहोय उसमें २$\frac{1}{7}$ का भाग देना जो लब्धि-आवे उतनेही नक्षत्र कृत्तिकासे गिनना और इसतरह गिननेसे जो नक्षत्रआवे उस नक्षत्रको उक्तचक्रके उस तीसरे कोठेमें लिखना कि

जिसमें अभी हमने कृत्तिकानक्षत्र स्थापित कियाथा और फिर सब-नक्षत्र पूर्वोक्त क्रमसे चक्रमें स्थापितकरदेना ॥

उदाहरण—जैसे किसीने सूर्योदयात् इष्ट घटि २५ पर शल्यका प्रश्न किया अब पूर्वोक्त रीत्यनुसार $२\frac{१}{७}$ का भाग २५ घड़ीमें दिया तो ११ खंड व्यतीत होकर १२ खंडमें यह २५ घड़ी आई अतएव कृत्तिकासे बारहवां नक्षत्र चित्राआया अब इस चित्राको तीसरे कोठेमें रखकर नक्षत्र भरना प्रारंभकिये तो यह चक्र बना जो आगे लिखा जाता है ।

अथ सूर्योदयात् इष्टघ०२५ पर शल्यज्ञानार्थ नक्षत्रचक्रम् ॥

उ.	ह.	चि.	स्वा.	वि.	उ.भा.	रे.
पू.	पू.षा.	मूल.	ज्ये.	अ.	पू.भा.	अ.
म.	उ.षा.	अभि.	श्र.	ध.	श.	भ.
अ.	पुष्य.	पु.	आ.	मृ.	रो.	कृ.

जो किसीने सूर्योदयात् इष्टघटी $२\frac{१}{७}$ के भीतर प्रश्न किया तो उस समयका चक्र इसप्रकार बनेगा ॥

अ.	भ.	कृ.	रो.	मृ.	वि.	अ.
रे.	अ.	पुष्य.	पुन.	आ.	स्वा.	ज्ये.
उ.भा.	म.	पू.	उ.	ह.	चि.	मू.
पू.भा.	श.	ध.	श्र.	अभि.	उ.षा.	पू.षा.

इस तरहसे सम्पूर्ण दिनरात्रिमें २८चक्र बनतेहैंनित्यप्रति प्रातःकालको उक्त तीसरे कोठे में कृत्तिकानक्षत्र आताहै और सूर्योदयात् $२\frac{१}{७}$ घटीतक ठहरता है फिर इसके आगेका नक्षत्र रोहिणी इसके स्थानपर आताहै और वह भी $२\frac{१}{७}$ घटी उस कोठेमें ठहरताहै इसीतरह सब नक्षत्र क्रमसे आते रहतेहैं यहां अभिजित् नक्षत्रभी लिया गयाहै अतएव इस चक्रका नाम २८ नक्षत्रोंका कोष्ठक है ॥

(७) प्रश्नकालमें जिसनक्षत्रपै चन्द्रमाहै और वो नक्षत्र जिस कोष्ठकमें है उसीजगह शल्यहै यहबात पहिलेभी कहदीगईहै ॥

(८) शल्यबतानेका दूसरा प्रकार—प्रश्नकालमें जिस नक्षत्रका उदयहोय उस नक्षत्रको आदिमानकर कृत्तिकाके स्थानपर लिखे और पूर्वोक्त क्रमसे चक्रको भरदे—जिस नक्षत्रपर चन्द्रमाहै वो नक्षत्र जिस कोष्ठकमेंहै उसी स्थानपर शल्यहै उदाहरण जैसे प्रश्नलग्नमें सिंहके बीस अंश गयेहैं तो पूर्वाफाल्गुनी का उदयहै इसकारण इस नक्षत्रको तीसरे कोठेमें रखकर उक्तविधिसे चक्र भरना प्रारंभ किया तो चक्र इस तरहसे बना जो आगे लिखाहै ॥

अ.	म.	पू.भा.	उ.भा.	ह.	ध.	श.
पुष्य	अ.	वि.	स्वा.	चि.	श्र.	पू.भा.
पुन.	ज्ये.	मू.	पू.षा.	उ.षा.	अभि.	उ.भा.
आ.	मृ.	रो.	कृ.	भ.	अ.	रे.

अब उदयनक्षत्रको जानकर चक्रतो भरादिया परंतु यह नहीं मालुम कि चन्द्रमाइसवक्त किस नक्षत्रपरहै अब पंचांग देखनेसे मालुम हुआ कि चन्द्रमा उस समय अनुराधा नक्षत्रपर है अतएव मालुहुआ कि चक्रमें जहां अनुराधाहै उसी कोठेके नीचे शल्यहै ऐसा कहना ॥

(९) प्रश्नकालमें शुभग्रह केंद्रमें होयँ और पापग्रहोंसे युक्त वा दृष्ट होंय तो शल्य पृथ्वीमें है जो चन्द्रमा केंद्रमें मंगलसे युक्त वा दृष्ट होय तो भेडकी हड्डी उस कोष्ठकमें है कि जिस कोष्ठकमें मंगलहै ॥

टिप्पणी।

जो पूर्वोक्त शुभग्रह पापग्रहोंसे युक्त वा दृष्ट न होंय तो शल्य नहीं ऐसा कहना ॥

(१०) चन्द्रमा गुरुसे युक्त वा दृष्ट केंद्रमें होय तो ब्राह्मणकी अथवा गायकी हड्डी है या ईंटका टुकडा या सुवर्ण कहना कि जिस कोठेमें गुरु है उस कोठेके नीचें ये वस्तुहैं ॥

(११) जो चन्द्रमा केंद्रमें सूर्यसे युक्त वा दृष्ट होय तो देवमूर्त्ति कहना जिस कोष्ठकमें सूर्यहै उस स्थानमें देवमूर्तिका शल्य कहना परंतु चन्द्रमा शनिसे युक्त होय या दृष्ट होय तो शनि जिस कोठेमें है उस नक्षत्रके नीचे भैंसाकी हड्डीहै ॥

(१२) जो चन्द्र केंद्रमें राहुंसेयुक्त वा दृष्ट होय तो सांप या सांपकी हड्डी या उसकी बामी उस नक्षत्रके नीचेहै जिस नक्षत्रके कोठेमें राहु बैठाहै ॥

(१३) जो चन्द्रमा केंद्रमें बुधसे युक्त वा दृष्ट होय तो बुधके नीचे कुत्तेकी हड्डी कहना यानी उस नक्षत्रके नीचे हड्डी कहना जिसपर बुध स्थितहै जो चन्द्रमा केंद्रमें शुक्रसे युक्त वा दृष्ट होय तो शुक्र कोष्ठकके नीचे चांदी कहना ॥

(१४) शुभग्रह पापग्रहोंसे युक्त वा दृष्ट केंद्रमें होयँ तो जिस घरके निस्बत शल्यका प्रश्नहै उस घरके स्वामीको शल्य नहीं मिलेगा और कार्य्यहानि तथा धन नाशहोगा ॥

(१५) प्रश्नकालमें केंद्र पापग्रहोसे युक्त वा दृष्ट होय तो बिपत्ति पडेगी राहु मंगल सूर्य शनि ये पापग्रहहैं यदि केंद्र शुभग्रहोंसे युक्त वा दृष्टहोय तो ऐश्वर्य प्राप्त होयगा ॥

टिप्पणी।

जो केंद्रमें शुभ पाप निश्चित होयँ तो विपत्ति और प्रसन्नता दोनो होयँ ॥

(१६) केंद्रघर गुरु शुक्र चन्द्र बुध इनसे युक्त वा दृष्ट होय तो द्रव्य ऐश्वर्य सुख सबकी वृद्धिहोय ॥

(१७) इष्टकालमें दशमघर शुभग्रहोंसे युक्त वा दृष्ट होय तो मालिक मकानको इसस्थानसे सौख्यहोय और जो पापग्रहोंसे युक्त वा दृष्ट होय तो उस मकानमें देव पिशाच राक्षस आदिका वास होयगा ॥

(१८) शल्यसूचक ग्रहोंकी जो किरणें कहींहैं उतने बीता गहरा पृथ्वीमें नीचा शल्यहै ॥

टिप्पणी ।

प्रथम अध्यायके चौवनवें श्लोकमें ग्रहोंके किरणोंका वर्णनहै वो ग्रह उच्चक्षेत्री होय तो उसके जितने किरणें हैं उतनेही बीता गहराई जानना, स्वक्षेत्रीग्रह होय तो जितनी किरणेंहों उतने हांथ गहरा शल्यहै और जो मित्रक्षेत्री होय तो एक किरण एक पुरुषके बराबरहै शत्रुक्षेत्री नीचक्षेत्री ग्रह होय तो बहुत गहराईहै ॥

(१९-२०) शंका स्थलकी लम्बाई और चौड़ाई दोहाथके गजसे नापना लम्बाई वा चौड़ाई परस्पर गुणना गुणनफलमें अट्ठाईसका भागदेना जो लब्धिआवे हाथहै शेषरहें उनको दोसे गुणना और अट्ठाईससे भागदेना लब्धिहोय सो बीताहैं फिर शेषरहे उसको चारसेगुणकर अट्ठाईसका भागदेना लब्धिहोवे वो गिरहहै ॥

टिप्पणी ।

इस तरहसे जितने हाथ बीता गिरह लब्धि आवे उतनाही गहरा पृथ्वीमें शल्य है ॥ इति शल्यप्रकरणम् ॥

अथ कूपखातनिर्णयः ।

(१) उदयलग्न आरूढ़लग्न और प्रश्नलग्नसे चतुर्थस्थानमें वृष कर्क तुला वृश्चिक मकर कुंभ मीन इनमेंसे कोई होयतो झिरन निकलेगी जो ये राशियां आरूढ़लग्न और चतुर्थघर ये चन्द्र या शुक्रसे युक्त वा दृष्ट होंय तो जलकी आमद बहुतहै ॥

परन्तु जो ये स्थान बुध या गुरुसे युक्त वा दृष्ट होयँ तो जलकी आमद मध्यमहै ॥

(२) उदयलग्न आरूढ़ चतुर्थघर इनमें सूर्य मङ्गल शनि होंय या देखें तो पृथ्वीमें जलनहीं ॥ जो राहुसेयुक्त वा दृष्ट ये स्थानहैं तो अपारजलहै ॥ जो जलग्रह आरूढ़लग्नमें होय तो झिरन गहरी नीचे निकलेगी ॥ छत्रमें होयतो नजदीक झिरन निकलेगी ॥

टिप्पणी ।

झिरनसम्बन्धी विशेषवातें योगकारक ग्रह जिस राशिपै बैठेहैं उन राशियोंके स्वभावानुकूल कहना ॥ योगकारकग्रहोंके दिशाके तुल्य झिरनके आनेकी दिशा कहना ॥

(३) राहु उदयलग्नमें होय जलग्रह आरूढ़में होय और शेषग्रह छत्रलग्नमें होंय तो झिरन ऊपरही निकलेगी ॥ जो इसके प्रतिकूलहोय अर्थात् जलग्रह छत्रलग्नमें होंय बाकीके ग्रह आरूढ़ लग्नमें होंय तो झिरन बहुत दूर नीचे निकलेगी ॥

(४) उदय और आरूढ़ और चौथाघर इनमें जलराशियां होंय और इन राशियोंमें जलग्रह होंय तो थोड़े खोदनेसे बहुतजल निकलेगा ॥ जो जलग्रहोंसे पृथक्ग्रह जलराशियोंपर होंय तो बहुत खोदनेसे जल निकलेगा ॥

(५) चन्द्रमा केन्द्र गुरुसेयुक्त वा दृष्ट हो तो जलकी आमद अपरिमित होयगी परन्तु चन्द्र शुक्रसे युक्त वा दृष्टहोय तो परिमित जल निकलेगा ॥

टिप्पणी ।

झिरन उसकोठेमें निकलेगी जिस नक्षत्रकोष्ठकमें गुरु या शुक्र प्रश्नकालमें होंय ॥

(६) चन्द्रमा परिवेषग्रहसे युक्त वा दृष्ट केन्द्रमें हो तो अपरिमितजल निकलेगा जो बुध या गुरुसे वो चन्द्र दृष्टहोय या युक्त होय तो पुराना बेकामका जिसे अभीतक किसीने नहीं देखा ऐसा कूवा निकलेगा ॥

(७) केन्द्रमें शुक्र या चंद्र होय तो जल बहुत निकलेगा जो इनग्रहोंपर परिवेष धूम्र सूक्ष्म इन्द्रधनुष्य इनकी दृष्टि होयतो पुरानी खाई वा थोड़ेपानीका तालाब निकलेगा ॥

(८) केन्द्र सूर्यसे युक्त वा दृष्ट होय तो नोनवाली खारी जमीन निकलेगी परंतु वोही केन्द्र परिवेषसे युक्त वा दृष्ट होयतो जमीन कड़ी निकलेगी चंद्र या शुक्रसे युक्त वा दृष्ट होयतो शुद्धजल निकलेगा और यह केन्द्र ग्रहोंसे युक्त वा दृष्ट होय तो कीचड़मिला जल निकलेगा ॥

(९) केन्द्र मंगलसे युक्त वा दृष्ट होय तो सफेदरंगकी मट्टी निकलेगी जो यह बुधसेयुक्त वा दृष्ट होय तो कूवेके तटकी मिट्टी खसरीली निकलेगी जो केन्द्रघरोंमें मिथुन कन्या सिंह ये राशियां होंय तो जमीनमें अगलबगलकी झिरनें और कोचरें निकलेंगी ॥

टिप्पणी।

भाष्यकारका मतहै कि जो ये केन्द्रघर बुधको छोड़ अन्यकिसी ग्रहसे युक्त वा दृष्ट होंय तो कूवेके किनारे दृढ़होंगे और पानीकास्वाद ग्रहोंके स्वादमाफिक कहना ॥

(१०) जो केन्द्र शनि वा राहुसे युक्त वा दृष्ट हो तो एक ऐसी झिरन निकलेगी जिसमें बहुतसा जल निकलेगा जो केन्द्र गुरुसेयुक्त वा दृष्ट हो तो पत्थर या चांठ कूआमें निकलेंगी जो अन्यग्रहोंकी स्थिति दृष्टि केन्द्रमें हो तो हड्डियां निकलेंगी ॥

(११) आगेके श्लोक १२ वेंमें कथितानुसार विधिसे झिरनेकी गहराई मालूम करना और उस गहराईके तीन खण्ड करना चन्द्रमासे जल प्रथमखण्डमें है यह कहना, बुधसे तीसरे खण्डमें जल है कहना, शेष ग्रहोंसे दूसरे खण्डमें जल निकलेगा ऐसा कहना, सूर्यसे ८ हाथ नीचा जलहै और कन्याराशिस्थ राहु हो तो चांठ निकलेगी शनिसे छोटी पहाड़ी निकलेंगी एसा कहना ॥

(१२) जिस ग्रहसे झिरनेका निर्णय हुआहै उस ग्रहकी जितनी किरणेहैं उनको उस राशिकी किरणोमें जोड़ना जिसपर यह ग्रह बैठा है अर्थात् ग्रह तथा तदाक्रांत राशिकी किरणोंको जोड़ना जो योगसंख्या आवे उतनेही बीता नीचे जलहै इनबीताके हाथ कर लेना ॥

टिप्पणीं ।

पहिले कहचुकेहैं कि उच्चक्षेत्री ग्रहसे बीता स्वक्षेत्रीसे उतनेही हाथ मित्रक्षेत्री ग्रहसे उतनेही पुरुष और नीच या शत्रुक्षेत्रीग्रहसे अगाध नीचाजलहै ऐसा कहना और शल्यकी गहराई भी इसीत रहसे मालूम करलेना ॥

(१३) योगकारक ग्रह सूर्य हो तो जिस स्थानपर कुआ खोदना विचाराहै उसजगह जंगलहै मंगल का शनि हो तो वहस्थान काँटोंसे ढकाहुआहै राहु हो तो वहस्थान चींटीकी तथा सर्पोंकी बामियोंसे आच्छादितहै चंद्र हो तो उस जगह केलाके वृक्षहैं बुध हो तो वहां कटहरके वृक्षहैं गुरु हो तो नारियल, ताड़, सुपारी, आम, इनके वृक्ष कहना, शुक्र हो तो उसजगह लता बेलहीहै ॥

(१४) वह लग्न जिससे कुआकी झिरन निर्णीत हुईहै यदि वह उच्चक्षेत्री स्वक्षेत्री मित्रक्षेत्री शुभग्रहोंसे युक्त वा दृष्ट हो तो कुआं मालिकके कब्जेमें रहेगा जो शत्रु नीचक्षेत्री पापग्रहोंसे युक्त वा दृष्ट हो तो कुआ दूसरेके कब्जेमें चलाजावेगा ॥

(१५) पूर्वोक्त राशि या चर या द्विस्वभाव हो तो मालिकके कब्जेमें कुआ रहेगा और वह मालिक सुखी रहेगा परंतु इन राशियोंपर उच्चक्षेत्री स्वक्षेत्री मित्रक्षेत्री शुभग्रहोंकी दृष्टि आवश्य होनी चाहिये जो ये राशियां इसतरह शुभग्रहोंसे दृष्टि न हों तो स्वामी दुःखी होगा और कुआ किसी दूसरेके अधिकारमें चलाजावेगा । जो स्थिरराशियां योगकारक हों तो मालिक सुखी रहेगा ॥

(१६-१७) मालिकके घरसे जो कुआ पूर्व आग्नेयकोण या दक्षिणदिशामें हो तो उसकी संतति नष्ट हो जायगी जो कूप नैर्ऋत्यकोणमें हो तो सेवकोंकी प्राप्तिहो पश्चिमदिशामें हो तो शाखा बिगड़े वायव्यकोणमें हो तो कुटुम्बकी वृद्धिहो उत्तर दिशामें हो तो धान्यकी वृद्धिहो ईशानकोणमें हो तो द्रव्यकी प्राप्ति हो जो घरके मध्यमें कुआहो तो अनंतसुख और लक्ष्मीकी प्राप्ति हो यही फल गांवके तालाबका कहना॥

(१८) पृच्छकसे कहाजावे कि तुम उस जमीनकी शकल हमें बतलाओ उस वक्त जो वह अपनी कनिष्ठिका अंगुलीसे बतावे तो कन्याओंकी प्राप्तिहोगी जो अनामिका अंगुलीसे बतावे तो द्रव्यकी प्राप्तिहो मध्यम अंगुलीसे बतावे तो फिरना होवे तर्जनी अंगुली अथवा अंगूठेसे बतावे तो बिपत्ति पड़ेगी॥

(१९) मेष वृष मिथुनके सूर्य्यमें जो कुआ खोदना आरंभकरे तो जल बहुतानिकले लक्ष्मीकी प्राप्तिहो जो कार्तिकमासमें अथवा सिंहस्थ सूर्य्यमें आरंभकरे तो जल थोड़ा निकले बाकीके महिनोंमें जो खोदना आरंभकरे तो थोड़ा जल निकले और विपत्ति आवे भविष्यकहनेमें ग्रहोंका योगायोगभी विचारलेना॥ इति श्रीपवाँर वंशावतंस श्रीमहाराजशंभुसिंहसुठालियाधीशकृते भाषानुवादे जिनेन्द्रमालाग्रंथे कूपखातकांड संपूर्णम्॥

॥ अथ शत्रुआगमनम्॥

(१) जो उदयलग्न चरहो और पंचमघर पापग्रहोंसे युक्त व दृष्ट हो तो शत्रुआगमन कहै अगर उदयलग्न स्थिर हो तो शत्रु अपनी जगह नहीं छोड़ेगा अगर उदयलग्न द्विस्वभाव हो और पंचमघर मङ्गलसे दृष्ट हो तो शत्रु आधीदूर आकर वापस स्वस्थानको लौट जावेगा॥

(२) यदि उदयलग्न चर हो और जो सूर्य्य मङ्गल गुरु या शनिसे युक्त या दृष्ट हो तो एको योगः ॥ अथवा उदयलग्नसे छठे या सातवें स्थान आरूढ़ होय तो शत्रुका आना होगा यदि कर्क वृश्चिक कुंभ मीन ये राशियां लग्न वा चौथे घर आवेंतो आधीदूर शत्रु आकर वापस लौटजायगा ॥

(३) उदयसे छठे घरमें अथवा आरूढ़लग्नमें सूर्य्य या बुध हो तो शत्रु आवेगा परन्तु चौथे घर या छठे घर अथवा आरूढ़में गुरु हो तो शत्रु नहीं आवेगा ॥

(४) प्रश्नकालमें शनि उदयलग्नसे दूसरे घर या आरूढ़से दूसरे घरमें होय तो शत्रु आवेगा परन्तु शनि तीसरे पांचवे छठे ग्यारहवें बारहवें घरोंमें होय तो शत्रु लूटके माल सहित और स्त्रियोंको अपनी दासी बनाकर संगलियेहुए लौटजायगा ॥

(५) आरूढ़ या उदयलग्नसे शुक्र चौथे या पांचवें घर होय तो शत्रु अपनी संपत्ति खोकर और स्त्रियोंको बन्धनमें छोड़कर वापस घरको जाय जो इनराशियोंसे शुक्र छठे घर होय तो संधि होयगी सातवें घर शुक्र होय तो कोई भय नहीं होगा ॥

(६) प्रश्नकालमें शनि आरूढ़ अथवा उदयसे दूसरे तीसरे चौथे आठवें घरमें होय तो शत्रु नहीं आवे जो दशवें ग्यारहवें बारहवें होय तो लूटके माल सहित और स्त्रियोंको अपनी दासीबनाकर संगलियेहुए लौटजायगा और शनि पांचवें घर होय तो शत्रु बलवान होगा ॥

(७) प्रश्नकालमें सूर्य्य उदय वा आरूढ़से ग्यारहवां होय तो शत्रु अपने भाई बंद तथा फौजका नुकसान उठाकर तथा अपनी स्त्रियोंको दूसरेकी दासी बनाकर घरको लौटजायगा यदि सूर्य्य नीचक्षेत्री या शत्रुक्षेत्री होकर लग्नमें बैठे तो फौजका मुखिया मारा जायगा ॥

(८) प्रश्नकालमें सूर्य्य और शुक्र उदय या आरूढ़से छठे घर हौंय तो शत्रु आवेगा जो ये मित्रघरपै बैठें हौंय तो संधि होय जो शत्रुकेघरमें हौंय तो लड़ाई होय जो उदय या आरूढ़से गुरु चौथे या छठे घर होय तो शत्रु नहीं आवेगा॥

(९) प्रश्नकालमें जो चन्द्रमा चरराशिवर्त्ति लग्नमें होय तो जाहिरीमें शत्रु मित्रता करेगा परन्तु गुप्तरीतिसे उस मुलुकको उसदेश को लेनेकी इच्छा रखेगा जो चन्द्रमा द्विस्वभाव उदय लग्नमें होय तो शत्रु आधीदूर आकर वापस लौट जायगा॥

(१०) जो प्रश्नकालमें मित्रक्षेत्री उच्चक्षेत्री स्वक्षेत्री ग्रह आरूढ़ लग्नमें होय तो स्थाई जीतेगा जो येही ग्रह छत्रलग्नमें हौंय तो चढ़ कर आनेवाला जीतेगा॥

(११) प्रश्नकालमें शत्रुक्षेत्री नीचक्षेत्री ग्रह आरूढ़लग्नमें होय तो चढ़कर आने वाला जीतेगा जो ये ग्रह छत्रलग्नमें हौंय तो जिसपर चढाई हुईहै वो जीतेगा॥

टिप्पणी।

जो चढ़कर आताहै वो यायीहै और जिसपर चढ़कर आताहै वो स्थायी है॥

(१२) प्रश्नकालमें आरूढ़ लग्नस्थ ग्रह बली हौंय तो स्थायी जीतेगा जो छत्रलग्नस्थ ग्रह बली हौंय तो यायी जीतेगा॥

टिप्पणी।

जो फल आरूढ़ लग्नेश या छत्रलग्नेश बलवान होय तो भी पूर्वोक्तफल जानना अर्थात् यायी जीतेगा॥

(१३) जो प्रश्नकालमें आरूढलग्नसे छः लग्नोंकेभीतर बुध होय और सूर्य छः पीछेके लग्नोंपर होय तो स्थायीकी जय होयगी जो इसके प्रतिकूल याने लग्नसे आगेकी छः राशितक सूर्य होय और पीछेकी छःराशियोंमें बुधहोय तो यायीकी जयहोगी॥

(१४) प्रश्नकालमें शीर्षोदय उदयलग्न होय और उस्में शुभग्रह बैठे हों य तो स्थायीकी जय हो जो पृष्ठोदय उदयलग्न शुभग्रहोंसे युक्तहोय तो यायीकी जयकहना उदयलग्नमें द्विपदराशि होय और पापग्रहोंसे युक्त होय तो युद्ध होयगा जो शुभग्रहोंसे युक्त होय तो संधि होयगी ॥

(१५) प्रश्नकालिक उदयलग्न बहुपद या चतुष्पद होय और उस्पै पापग्रह बैठे होंयतो युद्ध होय जो वही शुभग्रहोंसे युक्तहोय तो संधि होतीहै ॥

(१६) प्रश्नकालमें मंगल तीसरे सातवें आठवें और नवें हो तो यायी धन देवेगा परंतु जो मंगल चौथे पांचवें छठे दशवें ग्यारवें बारवें दूसरे पहिलेघरमें हो तो स्थायी यायीको कर (स्वराज्य) देवेगा ॥

(१७) सूर्य तीसरे या पांचवें घर उदयारूढ़ लग्नोंसे हो तो स्थानाधिप युद्धमें हारेगा परंतु रवि मित्रक्षेत्री हो तो स्थानाधिपति संधिकी याचना करेगा जो उक्त रवि शत्रुक्षेत्री हो तो वह लड़ाई करेगा जो रवि चौथे घर हो तो वह स्वराज्य भेट करेगा जो रवि बारवां हो तो शत्रुके शस्त्र छीनेजावेंगे ॥

(१८) जो प्रश्नकालमें उदयलग्न रवि, मंगल, शनिसे युक्त वा दृष्ट हो तो यायीकी जयहोगी जो उदयलग्न गुरुसे युक्त वा दृष्ट हो तो यायी हारकर भागजावेगा जो उदयलग्न बुध या शुक्रसे युक्त वा दृष्ट हो तो शत्रु संधिकी याचना करेगा ॥

(१९) उदयलग्न या आरूढ़लग्नसे गुरु तीसरे पांचवें दशवें बारवें घर हो तो शत्रुका बल नष्टहोगा जो गुरु दूसरेघर हो तो वह संधिकी प्रार्थना करेगा जो चन्द्र और बुध ग्यारवें घर हों तो वह सर्वस्व खोकर रणभूमिमेंसे भाग जावेगा ॥

(२०) प्रश्नकालमें बुध पांचवें घर हो तो स्थायी यायीको स्वराज्य देवेगा बुध दूसरे या तीसरेघर हो तो यायी स्वराज्य देवेगा बुध बारवें हो तो स्थायी जीतेगा बुध ग्यारवें हो तो यायी जीतेगा ॥

(२१) प्रश्नकालिक उदयलग्नसे या आरूढ़से चन्द्र छठा हो तो शत्रुके आगमनके समाचार सुने जावेंगे चौथे पांचवेंघर हो तो कोई डर नहीं है पूर्वोक्त छठेघरका चन्द्रमा जो मित्रक्षेत्री उच्चक्षेत्री स्वक्षेत्री होय तो शत्रु अपने आनेकी खबर प्रसिद्धकरेगा परन्तु आवेगा नहीं. जो चतुर्थ पंचम राशिस्थ उक्तचन्द्र शत्रुक्षेत्री या नीच-क्षेत्री होय तो किंचित् हानि होगी ॥

(२२) प्रश्नकालमें सूर्य मङ्गल विषमराशिमें हों तो स्थायी जीतेगा जो समराशिमें हों तो वह हारेगा, सूर्य उदयलग्नमें हो चन्द्र बारहवें हो तो स्थायी जीतेगा. जो चन्द्र लग्नमें रवि बारहवें हो तो स्थायी हारेगा ॥

(२३) उदयलग्नके चौथे घरसे ६ घर यायीके हैं और शेष ६ घर पौर जिसपर चढ़ाई युद्धकी हुई है उसके हैं, यदि यायीके घरोंमें मित्र स्व उच्चक्षेत्री शुभग्रह हों तो यायी जीतेगा जो स्थायीके ६ घरोंमें मित्रक्षेत्री स्वक्षेत्री उच्चक्षेत्री शुभग्रह हों तो स्थायी जीतेगा जिसके घरों में नीच शत्रुक्षेत्री पापग्रह हों उसकी हार होवेगी ॥

(२४) जो प्रश्नकालमें यायी और पौर इन दोनोंके घरोंमें समानबलवाले पापग्रह हों तो लड़ाई दोनों ओरसे छिड़ेगी जो दोनों ओरवाले पापग्रहोंके बल समान न हों तो जिसके घरमें विशेष ग्रहबलीहैं उसीकी ओरसे पहिले लड़ाई प्रारम्भ होगी ॥

(२५) धनिष्ठाके उत्तरार्द्धसे १३॥ साढ़े तेरह नक्षत्र अर्थात् आश्लेषा नक्षत्रके अन्ततकके नक्षत्र चन्द्र नक्षत्रहैं और मघानक्षत्रसे

१३॥ साढ़े तेरहनक्षत्र अर्थात् धनिष्ठाके पूर्वार्द्धतक सूर्यनक्षत्रहैं अर्थात् कुंभराशिसे कर्कराशितकके संपूर्णनक्षत्र चन्द्रके हैं और सिंहराशिसे मकरराशितकके संपूर्णनक्षत्र सूर्य्यके हैं ॥

(२६) जब लड़ाई प्रारम्भ हो उससमय चन्द्रमा उपरोक्त चन्द्रनक्षत्रोंमें हो और रवि सूर्य्यनक्षत्रोंमें हो तो सन्धिहोवे जो इसके प्रतिकूलहो तो युद्धहोगा, लड़ाईके प्रारम्भकालमें रवि चन्द्रके नक्षत्रोंमें हो तो और (स्थायी) की जय होगी जो चन्द्र सूर्य्य नक्षत्रमें हो तो यायीकी जय होगी॥ इति श्रीपवांर वंशावतंस श्री महाराज शम्भुसिंहसुठालियाधीशकृते भाषानुवादे जिनेन्द्रमाला ग्रन्थे शत्रुआगमनप्रकरणं समाप्तम् ॥

अथ यात्राप्रकरणम् ।

(१) इस कांडमें यात्रीका लौटना द्रव्यसहित आगमन उसका शुभाशुभ भावी तथा किन किन पुरुषोंसे उसका मिलना होगा इत्यादिबातें लिखी जातीहैं–

(२) उदयलग्न आरूढ़ और दशमस्थान इनको देखनेवाले मित्रक्षेत्री ग्रह हों तो यात्रीका मिलना अपने इष्टमित्रोंसे होगा जो वे ग्रह नीचक्षेत्री हों तो नीचपुरुषोंसे मिलना होगा जो उच्चक्षेत्री हों तो कुलीन उच्चपुरुषोंका मिलाप, स्वगृही हों तो अपने घरके पुरुषोंसे मिलना और द्रष्टा ग्रह शत्रुक्षेत्री हों तो शत्रुओंसे भेंटहोगी॥

(३) उदयलग्न आरूढ़लग्न और दशमघर इनमें पुरुषराशि होय और ये पुरुष ग्रहोंसे दृष्ट हों तो यात्रीका पुरुषसे मिलाप होगा जो उक्तस्थानोंमें स्त्रीराशियां हों और स्त्रीग्रहोंसे वे दृष्ट हों तो यात्रीका मिलना स्त्रियोंसे होगा यात्राकरनेका तात्पर्य राशिभाव और द्रष्टा ग्रहोंसे कहना ॥

(४) उदयलग्नमें चरराशिस्थग्रह चर हों वा लग्नेश चरराशिस्थ हों इन योगोंमें जो ग्रह यां राशि बलवान होगी उसीकी दशा में यात्री जावेगा ॥

टिप्पणी ।

लग्नेशका चरराशिस्थ होनेका जो फलहै वोही आरूढ़लग्न और दशमघरके स्वामीका चरराशिस्थहोनेका फलहै ॥

(५) उदयलग्न आरूढ़ दशमस्थान इनमें चरराशि हों और ये स्थान चन्द्र बुध गुरु शुक्र इनमेंसे किसीएक ग्रहसे युक्त या दृष्ट हों तो यात्रा होगी जो उक्तस्थानोंमें द्विस्वभाव राशियां पापग्रहोंसे युक्त हों तो यात्री आधीदूर जाकर वापस लौट आवेगा ॥

(६) प्रश्नकालमें उदयलग्न आरूढ़लग्न और दशमघर इनमें स्थिरराशियां हों ये सूर्य्य मंगल यां शनि इनसे युक्त वा दृष्ट हों तो यात्रा नहीं होगी यात्री बिलकुल जानेको तैयार होगयाहो तो भी यात्राको बंद करदेगा ॥

(७) प्रश्नकालमें उदयलग्न शीर्षोदय हो तो यात्री स्वस्थानमें सुखी रहेगा परदेशमें दुःखी रहेगा जो उदयमें पृष्ठोदयलग्न हो तो यात्री परदेशमें सुखी रहेगा स्वस्थानमें दुःखी रहैगा ॥

टिप्पणी ।

उभयोदय उदयलग्न हो तो यात्रीस्वदेश परदेश अर्थात् घर और यात्रामें दोनों जगे समान सुखी दुःखी रहेगा ॥

(८) उदयआरूढ़ दशमस्थानसे दूसरे तीसरेघर द्विपदराशियां द्विपदग्रहोंसे युक्त हों तो यात्रीके लौटनेके पहले आगेके समाचार घर आजावेंगे ॥

टिप्पणी ।

जो द्विपदग्रहोंको छोडकर उक्तस्थानोंमें अन्यग्रह हों तो यात्रीके आनेके बाद समाचार आवेंगे ॥

(९) उदयलग्न दूसरे तीसरे दशमघरमें चन्द्र बुध गुरु शुक्र हों तो तत्काल यात्री घरआवेगा ऐसा कहना ॥

(१०) उदयलग्न आरूढ़ और दशमघर इन स्थानोंसे पांचवें या छठेघरमें शुभग्रह होय तो यात्री नैरोग्य आवेगा जो पापयुक्त होवें तो यात्री रोगयुक्त आवेगा ॥

(११) प्रश्नकालमें चन्द्रमा वृष कर्क सिंह धनराशिका होय तो यात्री तत्काल आवेगा जो चन्द्रमा अन्यराशिका होय तो कालान्तरमें आवेगा चन्द्र और गुरु चौथे घरमें होय तो यात्री उसीदिन एक तरुणस्त्रीसहित आवेगा ॥

(१२) दशमस्थानमें चन्द्र बुध गुरु या शुक्र हों तो इन ग्रहोंका जो काल निर्णीतहै उसकालके व्यतीतहोनेपर यात्रा होगी जो सातवें घरमें बुध चन्द्र गुरु या शुक्र हो तो इनग्रहोंका काल जो पूर्व कहचुकेहैं उतनेही काल व्यतीत होनेपर यात्री लौटेगा ॥

टिप्पणी ।

कालजाननेवास्ते पहलेअध्यायका सत्रहवां श्लोकदेखो ॥

(१३) प्रश्नकालमें शुभग्रह नीचक्षेत्री या शत्रुक्षेत्रीहोकर दशमघरमें बैठेतो कार्यसिद्धि और रोगपीड़ा होगी और घावलगेगा जो पापग्रह शत्रुक्षेत्री नीचक्षेत्री दशमस्थानमें हो तो कार्यसिद्धि नहीं होगा और रोग तथा घावसे पीड़ाहोगी ॥

(१४) शुभग्रह दशमघरमें हो अथवा उपरोक्त अन्यघरोंमें हो तो कार्यसिद्धि होगी सामान्यतः यात्रासंबन्धी जितनीबातें होंय उनका विचार दशमस्थान तथा दशमस्थानास्थितग्रहोंसे करना ॥

(१५) प्रश्नकालमें उदयलग्न वा दूसरेस्थानमें पापग्रह हों तो

यात्री अपना धन खोदेगा और निर्धनताके कारण पीछानहींलौट-सकेगा चौथेघर पापग्रह हों तो यात्रीको शत्रुसे पीड़ाहोगी और कालांतरसे लौटेगा॥ इति श्रीपवाँरवंशावतंस श्रीमहाराजशम्भुसिंह सुठालियाधीशकृते भाषानुवादेजिनेन्द्रमालाग्रंथे यात्राप्रकरणं समाप्तम्॥

अथ नद्यागमः अर्थात् नदीका चढना।

(१) जो उदयलग्नसे सातवेंघरमें जलराशि होय तो नदी शीघ्र ही पूरआवेगी जो जलराशि जलग्रहोंसे युक्त सप्तमस्थानमें हो तो नदी बहुतचढ़ेगी और किनारोंसे बाहर होजायगी जो सातवें घर पापग्रह हों तो नदी पूर नहीं आवेगी॥

टिप्पणी।

जो सप्तमस्थानमें जलराशि न होय तो नदी पूर नहीं आवैगी जो सप्तमस्थजलराशियोंमें जलग्रहोंके अतिरिक्त अन्यग्रह होंय तो पूर थोड़ी आवेगी आरूढ़लग्न बलवान हो तो नदी पश्चिमसे पूर्व को बहतीहै जो छत्रलग्न बली हो तो पूर्वसे पश्चिमको नदी बहतीहै॥

(२) सप्तमस्थानमें कर्क मीन राशि हो तो नदी बहुत पूर आ-वेगी जो मकर कुंभ राशि हो तो पौनाहिस्सा ऊपर आवेगी जो तुला हो तो आधी पूर आवैगी जो वृषभ या वृश्चिक हो तो चौथा हि-स्सा पूर आवैगी॥ इति श्रीपवाँरवंशावतंस श्रीमहाराजशम्भुसिंह सुठालियाधीशकृते भाषानुवादे जिनेन्द्रमालाग्रंथे नद्यागमनप्रकरणं समाप्तम्॥

अथ वृष्टिप्रकरणम् ।

(१) उदयलग्नमें जलराशि होय और वह जलग्रहोंसे युक्त दृष्ट हो तो वृष्टि होगी—उदयलग्नमें जलराशि न हो अथवा वो जलराशि जलग्रहोंके अतिरिक्त अन्यग्रहोंसे दृष्ट वा युक्त हो तो वृष्टि नहीं होगी ॥

(२) उदयलग्न चन्द्र या शुक्रसे दृष्ट अथवा युक्त हो तो बहुत-जल बरसेगा परंतु उदयलग्नमें बुध या गुरु बैठे या उदयलग्नको देखे तो थोड़ी वर्षा होगी ॥

टिप्पणी ।

उदयलग्नमें कर्क मकर कुंभ मीन राशियां हों तो वृष्टि बहुत होगी जो वृष तुला, वृश्चिक उदयलग्नमें हों तो वर्षा थोड़ी होगी ॥

(३) छत्रलग्न पृष्ठोदय होवे अथवा आरूढ़लग्न पृष्ठोदयग्रहोंसे दृष्ट हो अथवा आरूढ़लग्नमें, परिवेष, सूक्ष्म, इंद्रधनु इनमेंसे कोई ग्रह बैठा होवै तो बहुत वृष्टिहोगी ॥

(४) जो चन्द्र, बुध गुरु या शुक्र, स्वक्षेत्री, मित्रक्षेत्री उच्चक्षेत्री हों वा ये ग्रह केंद्र त्रिकोणके स्वामी हों तो तत्काल वृष्टि होगी, जो चन्द्र या शुक्र चौथे घरमें हो तो जिसदिन प्रश्नकियाहै उसीदिन जल गिरेगा जो बुध या गुरु दूसरेघर हो तो दो दिनमें जल आवेगा जो तीसरेघर बुध या गुरु हो तो तीनदिनमें पानी आवैगा ॥

टिप्पणी ।

उक्त बुध गुरु चन्द्र शुक्र नीचक्षेत्री शत्रुक्षेत्री हो वा षष्ठाष्टम द्वादशघरके स्वामी ये हों तो वृष्टि कालान्तरमें होवेगी ॥

(५) उदयलग्न, सूर्य मंगल शनि राहु इनमें किसीसे युक्त हो वा दृष्ट हो तो वृष्टि नहीं होगी, इन्हींग्रहोंसे आक्रान्त उदयलग्न जलराशि हो तो ठण्डी और जलार्द्र (दरयाई) हवा चलेगी जो उक्त सूर्य मंगल शनि राहु इन ग्रहोंमेंसे किसीके साथ जलग्रह बैठ-

जावे तो सूक्ष्मवर्षा (बूँदाबाँदी) होगी ॥ इति श्रीपवाँरवंशावतंस श्रीमहाराजशम्भुसिंहसुठालियाधीशकृते भाषानुवादे जिनेन्द्रमाल-ग्रंथे वृष्टिप्रकरणं समाप्तम् ॥

अथ अर्घप्रकरणम्।

(१) उदयलग्न और दशमघर उच्चक्षेत्री ग्रहोंसे दृष्ट होयतो धान्य-आदिवस्तुओंका भाव सस्ता रहैगा। जो शत्रुक्षेत्री नीचक्षेत्री ग्रहोंसे पूर्वोक्तग्रह दृष्ट होय तो भाव महँगा होयगा। जो उदयलग्न दशम-घर स्वक्षेत्री और मित्रक्षेत्री ग्रहोंसे दृष्ट होय तो भाव मध्यम होगा अर्थात् महँगाभी नहीं जादा सस्ताभी नहीं ॥

(२) जो शुभग्रह उदयमें और दशमघरमें होंय तो भाव सस्ता होगा। जो ये शुभग्रह सप्तमघरमें होंय तो भाव तेज रहेगा। पापग्रह नीच-क्षेत्री अथवा शत्रुक्षेत्री होंय तो कर उदयलग्न और दशमस्थानमें बैठे तो भाव तेज होगा ॥

टिप्पणी।

जो स्वक्षेत्री मित्रक्षेत्री उच्चक्षेत्री पापग्रह लग्न और दशमस्थानमें बैठे तो भाव सम रहेगा अर्थात् सस्ताभी नहीं महँगा भी नहीं इसी-तरह शत्रुक्षेत्री नीचक्षेत्री शुभग्रह लग्नमें और दशमस्थानमें बैठे तो भाव सम रहेगा जिस ग्रहकी जो वस्तुहै उस ग्रहसे उस वस्तुकी तेजाई सस्तापन कहना। तीसरे अध्यायके ग्यारहवें और बारहवें श्लोकमें ग्रहोंके वस्तुका वर्णनहै ॥ इति श्रीपवाँरवंशावतंस श्री-महाराजशम्भुसिंहसुठालियाधीशकृते भाषानुवादे जिनेन्द्रमालाग्रंथे अर्घकांडं समाप्तम् ॥

अथ नौकाप्रकरणम्।

(१) उदयलग्न या आरूढ़लग्नमें जलराशि हो अथवा तीसरे पांचवें घरमें जलराशि हो तथा नवमें घरमें जलराशिहो और चन्द्र

गुरु या शुक्रसे युक्त हो तो नौकाका आगमन वक्ष्यमाणरीतिसे कहना ॥ जो जलराशीय उदयलग्न स्थिर या द्विस्वभाव हो तो नाव सीधी चलीआवेगी । जो चरराशिहोय तो नाव मार्गमें ठहरकर अथवा अपनामार्ग छोड़कर अन्य किसीमार्गसे आवेगी ॥

टिप्पणी ।

उदयलग्न या आरूढ़लग्नमें जलराशि न होय और वो सूर्य मङ्गल बुध शनि राहु इनग्रहोंमेंसे किसी ग्रहसे युक्त होय तो जो नाव गई है सो वापस लौटके नहीं आवेगी ॥

(२) जो उदयलग्न या आरूढ़लग्न पापग्रहोंसे युक्त होय तो नाव अपनेमार्गसे हटकर अन्य किसी दूसरे तटपर चलीजायगी । परन्तु जो वे पापग्रह शत्रुक्षेत्री होंय तो नाव कभी नहीं लौटेगी जो नीचक्षेत्री होंय तो पोत भंगहोगा अर्थात् नाव टूटजायगी और बेकामकी होकर आवेगी ॥

(३) उदयलग्न आरूढ़लग्नमें अप्रकाश ग्रहोंमेंसे कोई एक ग्रह होय तो नाव डूब जायगी जो प्रश्नकालमें इन अप्रकाशग्रहोंमेंसे कोई एकग्रह आकाशमें नजर आवे तो नाव अपनारस्ता छोड़कर कुछ समयकेबाद आवेगी ॥

टिप्पणी ।

अप्रकाशग्रह जाननेके वास्ते पहलेअध्यायका चौरासीवाँश्लोक देखो ॥

(४) आरूढ़लग्न छत्रलग्न दोनों चरराशिहोंय तो नावने अपनारस्ता छोड़दिया है और अब नहीं आवेगी, जो उदयलग्न वा आरूढ़लग्नसे तीसरेघर शुक्र होय तो नावने रस्ता तो छोड़दिया परन्तु शीघ्रआवेगी ॥ इति नौकाकांडं समाप्तम् ॥

अथ चेष्टाप्रकरणम्।

(१) इस प्रकरणमें जो पुरुष ज्योतिषीसे प्रश्नकरने आते हैं वे ग्रहतुल्यहैं और उन्हींके शब्द आरूढ़लग्न उदयलग्नहैं उनोंकी इन्द्रियां राशि हैं और उनकी चेष्टा उच्च स्वक्षेत्र मित्रक्षेत्र नीचक्षेत्र शत्रुक्षेत्र इत्यादि ग्रहोंके स्थान हैं॥

टिप्पणी।

प्रश्नकर्ताके शब्द कृत्य इत्यादिकी अर्थबोधनासे ज्योतिषी सब फलित कहसकताहै जैसा कि उदय आरूढ़ मित्र स्वक्षेत्र उच्चनीच शत्रु क्षेत्रको देखकर पूर्वोक्त अध्यायोंमें फलित कहना लिखाहै वैसाही इस अंगविद्यासे फलित कहा जासक्ताहै वराहमिहिरने बृहत्संहिता के इक्यावन ५१ अध्यायमें ये श्लोक लिखाहै-

देवज्ञेन शुभाशुभं दिग्गुदितस्थानाहतानीक्षता
वाच्यं प्रष्टुनिजापरांगघटनां चालोक्यकालंधिया॥
सर्वज्ञोहि चराचरात्मकतयासौ सर्वदर्शी विभुश्चेष्टा-
व्याहृतिभिःशुभाशुभफलं संदर्शयत्यर्थिनाम्॥१॥

अर्थ-ज्योतिषीको चाहिये कि, प्रश्नकरता तथा अन्यपुरुषके अंग लक्षण स्थानादिशा हृत् पदार्थ (उठाई हुई चीज) इत्यादिके देखकर शुभाशुभफल कहे क्योंकि सर्वज्ञ चर अचरात्मक सर्बदर्शी सर्वव्यापी परमात्मा शुभाशुभफलको चेष्टा और शब्दोंद्वारा अर्थी को सूचित करता है॥

(२) यह चेष्टा विद्याप्रारम्भमें बृहस्पतिजीसे उत्पन्न हुई है जो इन्द्रकी सभामें देवताओंके आचार्य्य हैं इसलिये इसविद्याको बड़ी समझना चाहिये मेरीसामर्थ्य नहीं है कि मैं इसविद्याका वर्णन पूर्णतया करसकूं जो कुछ मैंने पुस्तकोंसे और अध्यापकोंसे सीखाहै उसके अनुसार वर्णन करताहूं॥

अथ जातिज्ञानप्रकारमाह ।

(३) जब जाति पहँचानना हो तो यह देखना कि प्रश्नकर्ता ने कौनसे अंगका स्पर्श कियाहै जो मस्तकसे गर्दनके भीतरके अंगका स्पर्शकिया हो तो पृच्छक ब्राह्मणहै जो गर्दनके नीचे और नाभीके ऊपरके अंगका स्पर्शकरै तो पृच्छक क्षत्रीहै नाभीके नीचे घुटनाके ऊपर स्पर्शकरै तो वैश्यहै घुटनाके नीचे और गुल्फके (टकना) ऊपर स्पर्शकरै तो शूद्रहै जो चरण या बालोंको स्पर्श करै तो चांडालहै ॥

(४) अब रंग जाननेका प्रकारलिखते हैं, जो पांव अथवा गुप्तेंद्रिय इनको खुजावे या स्पर्शकरै तो हरारंग कहना, हाथ या मुखका स्पर्शकरै तो लालरंग कहना, बाल अथवा पेट स्पर्शकरै तो कालारंग जानना, स्फिक् (कूला) का स्पर्शकरै तो सुनेरीरंग है, अन्य किसी अङ्गका स्पर्शकरै तो श्वेत रंग है, वा पूर्वोक्तअङ्ग खुजावे तो भी येहीफल हैं ॥

(५–६) जो वर्ष मास तिथी घटी जाननेका प्रश्न होय तो ये देखना, मस्तकका स्पर्शकरै तो वो संख्या सौ है मुखका स्पर्शकरै तो ९० है गर्दन कन्धा छातीका स्पर्शकरै तो ८० है, उदरका स्पर्शकरै तो ७० हैं, नाभि अथवा कूलेका स्पर्शकरै तो ६० कूलेसे हाथतकका स्पर्शकरै तो ५० जंघाका स्पर्शकरै तो ४० घुटनाका स्पर्शकरै तो ३० घुटनेसे नीचे पाँवके तलुवेतक अंगोंका स्पर्शकरै तो १० और संख्याको जानना होय तो अनुमानसे जानलेना ॥

(७) प्रश्नकालमें हाथमें कोई चीज लेकर भुजा फैलावे तो धातुहै, जो भुजाको समेटके रक्खे तो मूलहै, जो भुजाको फैलावे नहीं और समेटेभी नहीं तो जीवहै, जो उच्चारितशब्द अकारादि होय तो धातुहै, इकारादि होय तो मूलहै, उकारादि होय तो जीव है ॥

(८) कपालका स्पर्शकरै तो मुकुट पात्र इत्यादिधातुओंका चिंतन कहना, जो कानको हाथलगावे तो कर्णभूषण इत्यादि कहना, दांतका स्पर्शकरै तो खाद्यवस्तुका चिंतना कहना, गर्दनका स्पर्शकरै तो विवाह अथवा उसकी अँगूठीका चिंतना, हाथका स्पर्श करै तो हस्तभूषणकी चिंतना कहना, उदरका स्पर्शकरै तो गर्भकी चिंतना कहना। जांघका स्पर्शकरै तो वस्त्रोंकी चिंता कहना ॥

(९-१०) गुप्तेंद्रियका स्पर्शकरै तो विवाहकी चिंतना कहना कण्ठका स्पर्श करैतो विद्याकी चिंतना कहना, नाकका स्पर्शकरै तो विवाह विद्या अधिकारकी चिंतना कहना, पांवका स्पर्श करै तो क्रोध या कलहसम्बधी चिंताकहै, जो दीपक या पुष्पका स्पर्श करै तो महत्कार्यकी चिन्ताहै जो स्पर्श करनेवाला शुभ आरूढ़ग्रहके दिशामें बैठेतो कार्यसिद्धि और द्रव्यकी प्राप्ति होय जो वो पापी आरूढ़ग्रहोंके दिशामें बैठे तो कार्यहानि और विपत्तिको प्राप्त होय। शुभग्रह शत्रुक्षेत्री नीचक्षेत्री होय तो उनोंका फल अशुभहै पापग्रह उच्चक्षेत्री स्वक्षेत्री मित्रक्षेत्री होंयतो परिणाममें शुभफल होय आरूढ़ग्रहोंकी जाननेकी रीति प्रथमाध्याय ८३ श्लोकमें देखो ॥

(११) प्रश्नकर्ता ज्योतिषीके दाहिने बाजू बैठे तो कार्यसिद्धिहो जो ज्योतिषीके वाम भागमें बैठे तो कार्यकी हानि होय जो प्रश्नकर्ता ज्योतिषीके बिलकुल समीप बैठे तौ कार्यकी सिद्ध न होगी जो समीप बैठे तो कार्यसिद्धिहोगी जो बहुतदूर बैठे तो कार्यकी हानि होगी ॥

(१२) जो प्रश्नकर्ता अपने मस्तकका दक्षिणभाग तथा दक्षिणनेत्र दक्षिणभ्रुकुटी दक्षिणस्कंध अथवा कान मुख स्तनका अग्रभाग उदर दक्षिणपांव इनमेंसे किसीका स्पर्श करै तो कार्य सिद्धिहोगी जो अन्य अंगका स्पर्श करै तो कार्य सिद्ध नहीं होगा ॥

(१३) जो प्रश्नकर्ता सीधा मुखकीतरफ देखै तो तत्काल सिद्धि होगी । जो नीचे देखै तो कालान्तरमें सिद्धि होगी, जो ऊपर देखै तो कार्यसिद्धि न होगी ।। जो किसी वस्तुको झुककरके देखै तो शुभकार्यकी सिद्धि और अशुभकार्यकी हानि होगी ॥

(१४) प्रश्नकर्ता जो कपड़ेको अपने गर्दनके आसपास लपेटे तो कार्यसिद्धि और धनका लाभ होगा ॥ जो कपड़ेको कमरके आसपास तथा पांवके आसपास प्रश्नकरनेके समय लपेटे तो कार्यकी हानि होगी जो प्रश्नकर्ता उच्चस्थानमें बैठकर प्रश्न करै तो कार्यकी सिद्धि होगी जो प्रश्नकर्ता ऊँची भूमिसे नीचीभूमिपर खिसलकर आवै वा उठकर आवै तो कार्यहानि होगी ॥

(१५) प्रश्नकरतेसमय जो प्रश्नकर्ता किसीचीजको लंबी कर्त्ता-हुवा और बढ़ाताहुवा दिखावै तो संपात्ति और उपभोग प्राप्त होगा जो प्रश्नकालमें विवाहकार्य मैथुन भोजनकर्त्ताहुवा कोई पुरुष नजर आवे तो कार्यकी सिद्धि होगी, जो इसके प्रतिकूल कोईपुरुष किसी वस्तुको तोड़ता फोड़ता छिद्रकरता हुवा या कम करताहुवा नजर आवे तो कार्यसिद्धि नहीं होगी नुकसान होगा ॥

(१६) प्रश्नकर्त्ता आकाशको देखै और अपने हाथ मसले ज्योतिषीके पांवपकडे तथा झुकजावे तथा हाथजोडकर खडारहे तो खोयाहुवा द्रव्य नहीं मिलेगा बालकका जन्म नहीं होगा द्रव्यकी हानि होगी ॥

(१७) प्रश्नकालमें प्रश्नकर्त्ता कंकरफैंके वा किसी पदार्थको तिरछी दृष्टिसे देखै या गद्गदकंठसे बोले अर्थात् सफा नहीं बोलै या अपने बाल खोले अथवा उंगली चटकावे वा पाँवके अँगूठेसे पृथ्वीपै रेखाकरै तो कार्यकी हानि होचुकीहै ऐसा कहना ॥

(१८) जो प्रश्नकालमें ज्योतिषी और प्रश्नकर्त्ताके बीचमेंसे कोई मनुष्य अथवा ढोर निकलजावे अथवा काष्ठभार लेजाताहुवा नजरआवे वा कठोर शब्दोंको प्रश्नकर्त्ता बोलै वा शिर ढांककर प्रश्न-करै तो कार्यसिद्ध नहीं होगा ॥

(१९) जो तलवार चक्र बाणआदिशस्त्र या जंगली वा जहरी-लावृक्ष प्रश्न करनेकेसमय कोई लावे अथवा कपास वा अग्नि पृथ्वीपै गिरतीहुई दीखै वा जिससमय ज्योतिषी क्रोधमें होय उस समय प्रश्नकरै तो इनसब कारणोंसे कार्यकी आसिद्धि तथा हानि होतीहै ॥

(२०) प्रश्नकालमें पृच्छक अथवा अन्यपुरुष नाकछिनके अथवा मुख संकोचकरै या निशासलेवे तुतलाकर बोले वगासीलेवे तो रोगी रोगसे नहीं छूटेगा खोया हुआ धन नहीं मिलेगा बल्कि गांठका जायगा ॥

(२१) प्रश्नकालमें जो पृच्छक बांहें जानूको स्पर्श करै तो कार्य्यसिद्ध नहीं होगा द्रव्यलाभ नहीं होगा खोई हुई चीज नहीं मिलेगी प्राप्तवस्तुकी हानि होगी रोग बढ़ेगा आराम नहीं होगा॥

(२२) कमरका वामभाग अथवा बायें कूलेको स्पर्श करै तो विवाहित पुरुषोंको तकलीफ पहुंचेहै तथा विवाह और पदार्थके उपभोगमें बाधाहोय और पृच्छककी स्त्रीमरे परन्तु जो दक्षिणशिरो भाग दक्षिणछाती दक्षिणपादको स्पर्श करै तो पूर्वोक्त हानि नहीं होगी ॥

(२३) प्रश्नकालमें जो पुरुष पृथ्वीपै वृत्त खींचे अथवा मुख वदन स्कंध उदर इनका स्पर्श करै तो गयाद्रव्य मिलेगा मन्या (अर्थात्) गर्दनके पीछेकी नसोंका या कांखोंका स्पर्श करै वा पीठका कूलोंका कमरका पांवका स्पर्श करै तो चोरी गया धन नहीं मिलेगा ॥

(२४) जो प्रश्नकरते समय ये वाक्य बोले ओहोहो ये क्या दुःखहै सह्यनहीं क्या ये बचजायगा ये बड़े रंजकी बातहै ऐसे शब्द बोलैतो रोगी रोगसे मुक्त नहीं होगा ॥

टिप्पणी ।

जो इसके प्रतिकूल इसतरह वाक्य बोले उसको दो दिनमें आराम होजायगा उम्मेदहै कि उसको फ़ुरसत होगी तो इनसंकेतों से रोगकी निवृत्ति ज़ानना ॥

(२५) जो मृत्युसम्बन्धी प्रश्न होय उस समय कालबहलिया नजर आवे या लँगड़ा आदमी दुःखितपुरुष निर्लज्जपुरुष तथा पृच्छकका शत्रु विधवा संन्यासी शस्त्रधारी ये नजर आवें तो मृत्यु अवश्यहै ऐसा कहना ॥

(२६) जो प्रश्नकालमें कोई आदमी रस्सी अथवा ऊनी सूत बटताहुवा नजर आवे या रस्सी बनाताहुवा अथवा टांगोंको पकड़-ताहुवा अथवा नेत्र मिसलताहुवा काष्ठभारलियेहुवे अथवा हाथमें लकड़ी लियेहुवे नजर आवे वा जिमीनपे पड़ेहुवे प्रश्नकरे अथवा प्रश्नकरके सोजावे तो प्रश्नका फल मृत्युहै ऐसा कहना ॥

(२७) ऐसेसमय ये प्रश्नकरे कि जिससमयमें पृच्छक तेल शरीरको लगारहाहै अथवा दांत घिसरहाहै वा हजामत करारहाहै अपने नेत्रको बंदकरके वा किवाड़ बंदकरके अथवा जिस समय गाय दौडरहीहै वाछरोंका समूह तितर बितर होरहाहै तो ऐसेसमय प्रश्न करनेसे मृत्युकी सम्भावना होतीहै ॥

(२८) जो प्रश्नकालमें चावलके आटेसे मांड़ना मांड़े या इस प्रकारकी और वस्तुसे मांड़ना मांड़े किसी पुरुषपै छत्री लगी देखे या बालोंको बांधताहुवा अथवा पुष्पमाला गलेमें धारण करताहुवा प्रश्नकरे तो जिसपुरुषकी निसबत प्रश्न कराहै वो पुरुष ग्रामाधिपति देशाधिपति वा नृपति होयगा ॥

(२९) प्रश्नकालमें जिमीन हंकीजाती होय हाथमें तसवीरहो या हाथपै चित्र लिखाजाताहोय अथवा प्रश्नकरता अत्यंत प्रसन्नहो या किसीपदार्थको छातीसे लगारहाहो या मधुरवाणी बोलरहाहो तो इनसब लक्षणोंसे द्रव्यकी प्राप्ति होतीहै ॥

(३०) प्रश्नकालमें दूध, नवनीत, ब्राह्मण, घोड़ा, बैल, भैंस गर्भवतीगाय, गर्भिणीस्त्री, पूर्ण जलसेभरापात्र, रजस्वला युवतीस्त्री इनमें से कोई एक नजर आवे तो कूपमें जल बहुत निकलेगा ऐसाकहना ॥

(३१) प्रश्नकालमें दोपदार्थ संयुक्त नजर आवें तो संधि होगी जो संयुक्त पदार्थोंमेंसे एक कोई अलग होजावे तो संधिनहीं होगी, जो टूटेहुवे व फटेहुवे पदार्थ जोड़ेजातेहुवे नजर आवें तो सन्धि होगी और प्रश्नकालमें कोई पदार्थ फटजावे टूटजावे तो संधि नहीं होगी ॥

(३२) प्रश्नकालमें गवय(रोज)बन्दर घोड़ेका सवार, कन्या, उदारचित्तवालेपुरुष, राजा, यात्री, इनका दर्शन होय तो यात्रा होगी॥

(३३) प्रश्नकालमें शोकाकुलपुरुष असाध्यरोगी घातक लँगड़ा कलहप्रियपुरुष मतवाला निर्व्यापार अर्थात् आलसी बेकार पुरुष अहंकारी इनका दर्शन होवे तो यात्रा नहींहोगी ॥

(३४) जब वृष्टिका प्रश्नहोय उससमय कोई थूकता वा लार-गिराता नजर आवे और नेत्र मीचताहुवा बालोंको नीचे करताहुवा और नेत्रोंसे आँसू बहाता नजर आवे मुकुट नीचेकरताहुआ नजर आवे तो वृष्टि तत्कालहोगी प्रगटहो कि इस चेष्टाध्यायमें जो चर्या लिखी है वो स्वयं प्राकृतिकहोना चाहिये जो जानके कोई चर्या या लक्षण करै तो वो निष्फलहै ॥

इति श्रीपवाँरवंशावतंस श्रीमहाराजशम्भुसिंहसुठालियाधीशकृते भाषानुवादे जिनेंद्रमालाग्रंथे चेष्टाप्रकरणं समाप्तम् ॥

इति प्रथमभागः समाप्तः।

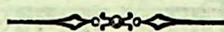
सूचना।

विदितहो कि इंग्रेजी जिनेंद्रमालासे यह भाषानुबाद मैंने अक्षर प्रत्यक्षरका कियाहै अतएव नागरीभाषाकी वाक्यधारामें कहीं अन्तर आगयाहो तो पाठकगण क्षमाकरैंगे क्योंकि इंग्रेजीभाषा बहुतदूर देशकी होनेसे नागरी भाषासे बिलकुल नहीं मिलसक्ती और मूलग्रंथ जिनेंद्रमालाका सम्पूर्ण भारतवर्षमें ढूंढागया परन्तु नहीं मिला एन चिदाम्बर मअय्यार जिन्होंने इस ग्रंथको इंग्रेजीमें प्रकाशित कियाथा उनके यहांभी अब येग्रंथ संस्कृतमें नहीं है शोकहै कि उक्तमहाशयका देहांत होगया नहींतो उनसे इसके मूलग्रंथका विवर्ण पूछते, हमने उक्तमहाशयके छोटेभाई पं० विश्वनाथ अय्यार मदूरानिवासीसे इसग्रंथका व्योरा पूछाथा तो उन्होंने उत्तरदिया कि ये मूलग्रंथ तामीली लिपिमें लिखाहुआ सिंहलद्वीप (CEYLONE) से आयाथा उसीका इंग्रेजी भाषांतर छापागयाहै परंतु अबवहग्रंथ खोगया ढूंढनेसे नहींमिलता इति अतएव हमने लाचारहोकर उक्तग्रंथका भाषानुबादमात्र लिखा है जो मूलग्रंथ मिलजाता तो अवश्य आकाशी पातालीटीका सहित मूलग्रंथको प्रकाशित करते ॥

ग्रंथकर्त्ता–



निवेदन ।



वर्त्तमानभागमें जो फलितके योग लिखे हैं इन्होंको जन्मकुंडली, वर्षकुंडली, प्रश्नकुण्डली तीनोंमें देखनाचाहिये, और ये योग भारतवर्षीयपुरुषोंके लिए फलदाताहैं यूरोपानिवासीपुरुषों को फल पूरा नदेंगे उनके वास्ते दूसरेयोगहैं ॥

प्रथम ज्योतिषका कुछ अभ्यास करके फिर पाठकगण इस ग्रंथको पढ़े तब समझमें ठीक आवेगा क्योंकि मैंने फलितमात्र इसमें लिखे है, जो लग्न बनाना इष्टलिखना इत्यादि ज्योतिष सीखनेकी विधि प्रारंभसे लिखता तो ग्रंथ बहुत बढ जाता और विस्तृत ग्रंथको प्रेसाध्यक्ष लोग कदाचित छापना स्वीकार नकरते ।

निवेदक ग्रन्थकर्त्ता-



द्वितीय भागकी प्रस्तावना।

सबसे पूर्वमें श्री पं० गंगाप्रसादजी महाराज सिरोजनिवासीको हार्दिक धन्यवाद देता हूँ जिनकी अनुग्रहसे मेरा ज्योतिषविद्यामें पदार्पणहुआ. आजकल भारतवर्षमें गुणछिपानेकी परिपाटी प्रचलितहै और उसका कारण यही विदित होता है कि प्राचीन संस्कृत विद्याकी गुणज्ञता इस देशमें कमहोगई है जो विद्या जीवन निर्वाह काहेतु होतीहै उसीको सर्वसाधारण ग्रहण करतेहैं वर्त्तमान कालिक शासकोंकी दृष्टि फलित ज्योतिषपर कमहोनेके कारण इस विद्याकी दिनप्रतिदिन अवनति होती जातीहै और विदेशीयविद्याका प्रचार बहुधा देखनेमें आताहै जो कुछ इने गिने ज्योतिषी रहेहैं वे अपनी विद्या दूसरेको सिखानेमें जीवन निर्वाहका मूलोच्छेदन समझ जो प्रत्यक्ष चमत्कारिक फलितके योगायोगहैं वे किसीको नहीं बतलाते हैं और ज्योतिषके जो उत्तमोत्तम ग्रंथथे वे महाभारतके पश्चात् नष्ट होगये आजकल जो ग्रंथ फलितके प्रकाशितहैं उन्होंकी बिधि प्रायः कम मिलतीहै और जो नए ग्रन्थ इसविषयमें प्रकाशित होतेजातेहैं उनके प्रकाशक ग्रन्थकर्त्तालोग इधर उधरके ग्रन्थोंका सार लेकर नया ग्रन्थ रचतेहैं और नामअपना जाहिर करदेतेहैं ऐसे ग्रन्थोंके छपनेसे वस्तुतः इसदेशको कुछभी लाभ नहीं केवल पिष्टपेषण करनाहै॥ मेरीरुचि प्रायः ज्योतिषविद्यापर रहतीहै और जो ज्योतिषी आतेहैं उनका सत्कार यथासम्भव होता रहताहै इस कारण बहुतसी फलितकी चमत्कारिक बातें मुझे मिलीहैं और मैंने स्वयंभी अनुभव ले लेकर कुछ नवीन योग रचेहैं जो बर्त्तमान समयके देश कालानुकूल होनेसे अखिल प्रभावोत्पादक हैं। यद्यपि विद्वानोंके समक्ष ऐसे योगोंका प्रकाशित करना सूर्य्यको आदर्श दिखानेकी भाँतिहै तथापि सज्जनोंकी परिचर्य्या कि जिसके करनेसे इस शरीरका धारण करना सार्थक होताहै अपना कर्तव्यकर्मजान यह ग्रन्थ निर्माण कियाहै॥

इस ग्रन्थके प्रथमभागमें मैंने जिनेन्द्रमाला नामक ग्रन्थ सरल नागरी भाषामें प्रकाशित कियाहै और वर्त्तमान भागमें मैंने वे विषयलिखेहैं जिनकी मैं कईबार परीक्षा करचुकाहूं इसलिये इस ग्रन्थका नाम "स्वानुभूतज्योतिष" रक्खा गयाहै किसी छपे ग्रन्थसे कोई विषय उद्धृत करके मैंने इसभागमें नहीं लिखाहै और न किसी दूसरेकी इसग्रन्थमें सहायता लीगईहै बहुधा लोग दूसरोंसे ग्रन्थ बनवाकर कीर्तिके वास्ते अपने नामसे ग्रन्थ छपवादेतेहैं ऐसा मैंने कभी नहीं कियाह जितने ग्रन्थ मैंने अभीतक छपवाये हैं उन्होंको स्वयं रचकर आविष्कृत कियेहैं जो विषय मेरा अनुभूत नहीं है वहां वैसा जतलादिया गयाहै ॥

फलितका सम्बन्ध कुण्डली चक्रोंसे विशेषहै जितनीअधिक कुण्डलियां देखनेमें आवेगी उतनाही अभ्यास विशेष होवेगा इसलिये इस भागमें मैंने भूमण्डलके महत्पुरुषोंकी जन्मकुण्डलियां स्वयं शोधकर प्रकाशित कीहैं जिनका जन्मसमय मालूम नहीं हुवाहै उन्होंकी केवल चन्द्रकुण्डलीही लिखदीहै ॥

जोजो विषय मुझे याद आतेगये लिखता गयाहूं इसलिये बहुतसे विषयोंका प्रकरण असंबद्ध होगयाहै सो सज्जन क्षमाकरेंगे इसग्रंथमें लिखेहुए योगोंको पाठक अल्प स्वल्प न समझें जब इनकी परीक्षा होगी तब हाल मालूम होजावेगा ॥

ऐसे २ गोप्ययोग कि जिनको ज्योतिषी किसीको नहीं बतलातेहैं मैंने इसग्रंथमें सन्निविष्टकरादिये हैं उस सर्वान्तरयामी अखिल जगदाधार प्रभुके अनुहग्रसे जो यह शरीर बनारहाहै तो इसीतरहसे अनेक नवीन ग्रंथोंके प्रादुर्भावसे सज्जनोंकी परिचर्य्या होतीरहेगी. किं बहुना बुद्धिमत्सु ॥

सज्जनोंका अनुग्रहीत-
महाराज शम्भुसिंह सुठालियाधीश-
स्थान सुठालिया.
(मध्यभारत)

मिती द्वितीय ज्येष्ठ
बदी ११ गुरुवार
सम्वत् १९६१

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

ज्योतिषकल्पद्रुम।

अर्थात्

स्वानुभूत ज्योतिष प्रारभ्यते।

द्वितीयभाग।

मूर्तिस्थानमें सूर्य अथवा मंगल पड़े तो मूत्र द्वारमें रोगकरे और मस्तकमें चोट न चिह्न करें और उसीघर सूर्य शनि भौमकी राशि व सूर्यकी राशिपर शनि संयुक्त और मङ्गल रहितहो अथवा कुम्भ, मकर, मेष, वृश्चिक, सिंहराशि, ७ वें घरपड़े और इनपर सूर्य शनि बैठें या देखें तो उसके मूत्रकृच्छ्र रोग होय और उसीसे मरेगा और सातवें घरपर जितने ग्रह बैठे होंय उतनेही विवाह निस्संदेह होंगे और बुध वा सूर्य,सप्तम कन्या वा मिथुन राशिपर दोनों एकत्र स्थित हों तो कन्यासे ६ बिवाह और मिथुनसे ३ विवाह कहना दूसरे घर सूर्य अथवा मङ्गल पड़े तो मुख वा दंतमें रोग होय दंत आधी उमरमें गिरें मुखमें दुर्गंध आवे गालपर गूमड़ाका चिह्नहो शनिसे तिल कहना और राहुसे मस कहना तीसरे घर क्रूर वा पाप ग्रह पड़ें तो भ्रातृका सुखनेष्टकरें और दक्षिण भुजामें पूर्वोक्त ग्रहानुमान चिह्न कहना पराक्रम अच्छाहो और नौकरोंका सुखहो चौथे घरपर यही अशुभ ग्रह पड़ें तो पेटपर पूर्वोक्त ग्रहानुसार चिह्न हो और पेटमें कष्ट रखे और इसी घरपर शनिकी राशी पड़े वा शनि देखे अथवा बैठे तो

वह लोभी होताहै जमीनसे फायदा चौपायोंसे नुक्सानहो ५ वें घरपर सूर्ययुक्त मंगल अथवा इकेला शनिपडे व शनिसे वातगुल्मरोग हो फारसी विद्या अच्छी हो संतान नेष्टहों सूर्य हो तो बुद्धिमान क्रोधी नेत्रोंके डोरेलाल मंदबुद्धि गर्भपतन गुरुकरके रहित शुभग्रह सन्तानकी वृद्धि करे और गुरुका माहात्म्य विद्यामें श्रेष्ठ है वेदादि अध्ययनकरे ॥

६ स्थानमें सूर्य मंगल शनि स्थित हों व पूर्णदृष्टिसे देखें तो क्रूर-कर्म कर्त्ता कहे दक्षिणपादमें चिन्ह व रोगकरे रुधिर विकार करे मातुलानां हानि रोग व शत्रुका नाश और अरिष्ट दूर करे ॥

७ स्थानमें सूर्य बुध बुधकी राशिपर होंय तो मूत्रेन्द्रीमें रोग सुजाक करे राशिके अंक समान स्त्री प्राप्त होय तथा उद्वाह होय और सप्तम भावमें जितने ग्रह बैठें तथा देखें उतनेही विवाह करावें मिथुन राशिके ७ वें होनेसे, और शत्रु घरका सप्तम स्थानमें कोई ग्रह बैठे और विशेषतः बुध व सूर्य शत्रुकी राशिमें बैठे तो अवश्य व्यभिचारी होगा और सप्तमेश शनि व सूर्य नवमघर व अष्टम व छठे अथवा बारहवें सूर्य युक्त बैठें तो जन्म क्वारा रहे अथवा सप्तमेश नवम शत्रु राशिपर बैठे तो स्त्रीसम्बंधी क्लेश रहे ॥

८ घरमें मंगल व सूर्य मेष वृश्चिक अथवा सिंहके एकत्र पड़ें व इनमेंसे कोईभी पड़े तो ऊंचेसे गिरे बवासीरकी बीमारी होवे दो विवाह होवें और सूर्य मंगलकी दशामें शस्त्रसे भय होवे मकर के भौमसे २८ वर्षकी उमरमें दस्तोंकी बीमारी होतीहै ॥

९ स्थान धर्म व तपका घरहै इसमें शुभग्रह पड़ें तो अच्छा और शनिपड़े तो अच्छे लोकसे आताहै मीठा बोलने वाला मनका पापी और म्लेच्छविद्या पढ़ने वाला होता है तथा

'जीवेप्रयागमरणं विधुना च काश्यां द्वारावती बुधासितौ यदि धर्मभागे द्रेष्काणपेप्यथ कुजे परदेशमृत्युर्जीवे स्वभूमिमरणं प्रवदंति संतः' ॥

१० घरमें मङ्गल व सूर्य पड़े तो राज्य घर अच्छा कर्कका व मीनका, वृषका तथा शुभचन्द्रहो तो राज्यश्रेष्ठ परन्तु चन्द्रमा शुक्ल पक्षका होनाचाहिये, बुध व गुरु होतो राज्यभवन ठीक परन्तु राज्यमें ठोकरलगे दशम शनि स्वगृही पड़ेतो भैंसोंका सुख हो और राहु केतुं उच्चके पड़े तो अच्छे शनिवत् फलकहना, राहु मिथुनका और केतु कन्याका उच्चका होताहै और शनि व राहु मूर्तिको देखें व बैठेतो नशाबाज कहना, शनिसे भाँगका राहुसे अफीमका नशा कहना और मूर्तिपर मङ्गल व सूर्य पड़ें अथवा नवम पञ्चम होय तो तीक्ष्ण वस्तुपर इच्छा कहना. दशमेश छठा आठवाँ बारहवाँ जाय वा अशुभग्रह बैठें तो पितासे सुख न होगा चौथे छठे व सप्तम अष्टम द्वादश व प्रथम स्थानमें शुक्र पड़े अथवा मंगल व सूर्य व इनमेंसे कोई पड़ेतो विस्फोटक खता होवे और शुक्र जिस राशिका इन घरोंमें पड़े जन्मसे गिनकर उसी महीनेमें खता गूमड़ा होवे और आठवे मंगल स्वराशिका पड़े तो तीनखने परसे तीन वक्त गिरे पर मरेनहीं न अंग भंग हो और कर्कके बृहस्पति अष्टम पड़े तो निर्जल कूपमें पड़े और मूत्रेन्द्रीमें दो छिद्र होवें ॥

११ वें घर गुरु व शुक्र वर्गोत्तमी पड़ें तो सुवर्ण हाथी घोड़ा व लक्षोंका लाभ हो परन्तु धन रंडीबाजीमें खर्च हो सूर्यादि अन्य ग्रह पड़े तो लाभ अच्छा न हो और स्वगृही शनि पड़े तो लाभ ठीकहो ॥

१२ वें शनि पड़े तो सदा कर्जदार रहे और कर्ज मिलताभी रहे उसका धन राजदण्डमें जावे बुढापेमें नेत्रोंकी दृष्टि क्षीण होवे और राहु आठवां होवे तो किसी वक्त भूतलगे राशिसे व

लग्नसे १२ वाँ बृहस्पति जिसके पड़े वह तीर्थाटनमें व मंगलीक कार्य्यमें धन खर्चकरे तीर्थाटनकरे परन्तु कृपण होवे और मूर्तिमें कर्क, धन, मीन, व सिंहकी बृहस्पति पड़े तो वह जाली पण्डित होता है माथेमें खल्वाट हो और एकपुत्र व सातकन्या होवें पञ्चममें यही योग होवे तो मंत्र विद्यामें निपुणहो और एकपुत्र कठिनसे होवे ॥

अब जो सन्तानार्थ प्रश्न करे उस प्रश्नका फल लिखा जाताहै जो पञ्चम घरमें गुरु व शुक्र बलिष्ठहो व येही नवममें हों तो सन्तति योग करतेहैं शुक्रसे व चन्द्रसे कन्या व गुरुसे पुत्र यदि ये ग्रह मंगल व सूर्य युक्तहों तो गर्भपात कहना जो लग्नसे दशम पर्य्यन्त बलिष्ठ ग्रह होंय तो वह जिस स्थानमें बैठे उतनेही महीनेका गर्भ कहना और जिस लग्नमें बलिष्ठ ग्रह बैठे उसी लग्नमें जन्म कहना ॥

अथ उपासना विषय ।

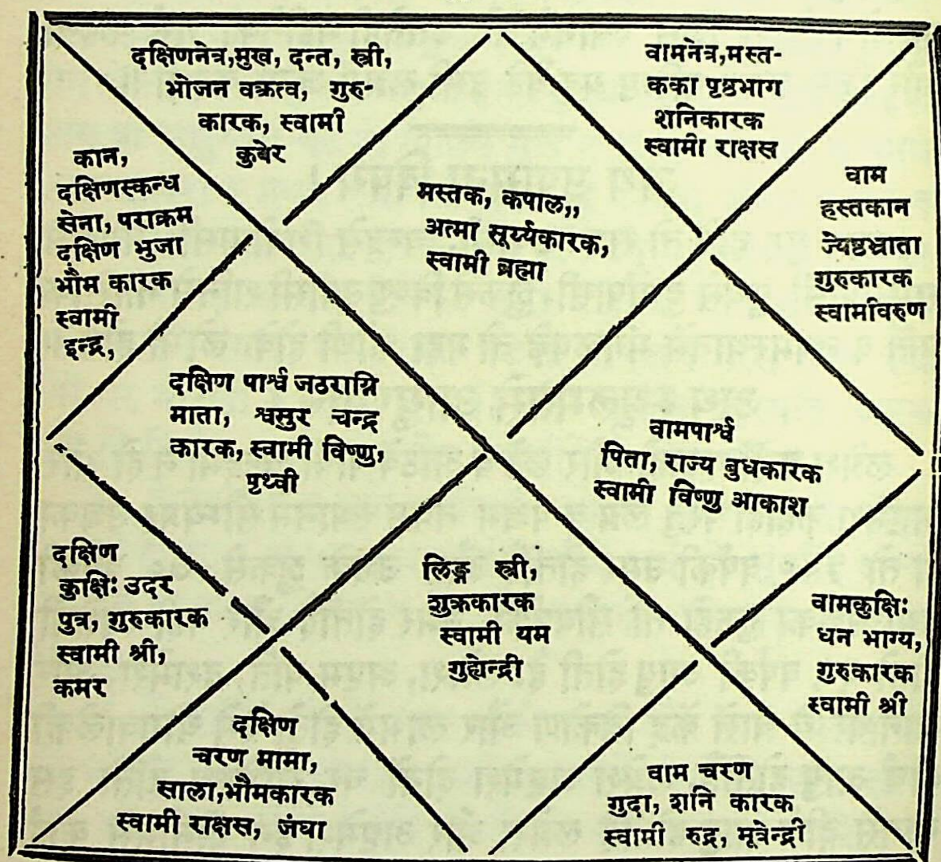
नवम गुरु होवे तो राम उपासी, चन्द्रसे शिवोपासी, मंगलसे राम उपासी, बुधसे दुर्गोपासी, शुक्रसे विष्णु उपासी शनिसे नास्तिक मूर्ति व नवमस्थानमें मंगलपड़े तो महा क्रोधी होवे लोभी होवे ॥

अथ स्थूलमतसे आयुष्मान ।

लग्नेश कहीं पड़ाहो और छठे व आठवें पापी चन्द्रमा न हो और अष्टमेश कहीहो परंतु लग्न व पञ्चम नवम स्थानमें सौम्यग्रह उच्चका हो तो १०० वर्षकी उमर होतीहै और उच्चके शुक्रसे ७० वर्षकी तथा उच्चका गुरुहो तो सौवर्षकी उमर होतीहै और यही स्वक्षेत्री होतो ६५ वर्षकी आयु होती है. लग्नेश, अष्टम पति, दशमेश, और शनिश्चर ये चारों केंद्र त्रिकोण और लाभमें होतो ऐसे योगवालेकी दीर्घ आयु होतीहै, लग्नेश अष्टमेश दोनों चर राशिस्थ होंतो इस योगसे दीर्घ आयु होतीहै लग्नेश और अष्टमेश इन दोनोंमेंसे कोई

एक स्थिर राशिपर हो और दूसरा द्विस्वभाव राशिपर हो तो इस योगसेभी दीर्घायु होतीहै, लग्नेश और अष्टमेश दोनों इकट्ठे वा पृथक् पृथक् स्थिर राशिपर हों तो इस योगसे अल्पायु होतीहै लग्नेश और अष्टमेश इन दोनोंमेंसे कोई एक चर राशिस्थहो और दूसरा द्विस्वभाव राशिस्थ हो तो इसयोगसे अल्पायु होतीहै, लग्नेश और अष्टमेश इन दोनोंमेसे कोई एक चर राशिस्थहो और दूसरा स्थिर राशिस्थ होतो इस योगसे मध्यायु होतीहै लग्नेश और अष्टमेश दोनों द्विस्वभाव राशिस्थ हों तो इस योगसेभी मध्यायु होतीहै ॥

अथ अङ्गविचार ।



लग्नमें मङ्गल, मेष, वृश्चिक वा, मकर राशिका हो तो मुखपर चेचकके दागहोंवे,नेत्र छोटे हों कृशतनूहो दीर्घ नासिका होवे,जोफल मूर्त्तिवर्त्ती भौमकाहै वही सूर्यकाहै परन्तु इन दोनोंमें अन्तर यहहै कि सूर्यसे चेचकके चिह्न न होवेंगे प्रत्युत शिरमें चोट होगी, तथा भौमसे, चोट, विस्फोटक, चेचक, इत्यादि सबकुछ कहना, परन्तु उपरोक्त राशिका मंगल होना चाहिये अन्यथा फल सामान्य देगा, सूर्यका चिह्न गोल और छोटा होताहै, तथा मंगलका चिह्न बड़ा और तिरछा होताहै बुध मिथुन व कन्यका लग्नमें हो तो रंग गोरा नाजुक मिजाज होताहै अथवा मूर्त्तिवर्त्ती मिथुन कन्या लग्न को बुध देखें तोभी यही फल कहना जो बुध सूर्य युत हो तोभी उपरोक्त फल होगा,बुध नवम या पञ्चम स्व राशिका होतो वह पुरुष तुतलाके बोलताहै नवम पञ्चम द्वादश और तनुमें बुध गुरु शुक्र एकत्र हों तो बालापनमें तीर्थकरे. कर्क धनु मीनका चन्द्रमा पूर्णिमासीका लग्नपर होतो ऐसे योग वाले पुरुषका कपाल गोल, सम विभक्तांग, गर्दन मोटी, गोधूम रंग और रूपवान होताहै शिरके चिह्न खल्वाट सरीखे होतेहैं रीढ़की हड्डीकी बगलसे दोनों ओर पीठपर बाल होतेहैं वक्षस्थल पुष्ट होताहै उदर बड़ा होताहै और कपालपर तीन रेखा होतीहैं जिनमेंसे नीचेकी रेखा खण्डित होतीहै नस्तरका चिह्न सूर्यसे होताहै सप्तम शुक्रसे स्त्री स्थूल होतीहै सप्तमेश ग्यारहवें घर जावे तो उस पुरुषकी स्त्री आमरण पर्य्यन्त जीवित रहतीहै और स्वभाव व रंग भार्य्याका पतिके सप्तमेशके तुल्य होताहै लग्नमें वा त्रिकोणमें शुक्रहो अथवा ये स्थान शुक्रसे दृष्टहों और उन स्थानोंमें वृष तुला मीन ये राशियां हो तो ऐसे योगसे पुरुष गायन विद्यामें निपुण होताहै पञ्चम चन्द्रसे बुद्धि शीतल होतीहै पापी चन्द्र हो तो कुन्द बुद्धि होवे, शुभचन्द्र पञ्चम हो तो जिस संख्या

वाली राशिपर चन्द्र होवे उतनीही कन्या उस पुरुषके होवें बुध व शनि सप्तम घरको देखे वा सप्तम घरमें इन ग्रहोंकी राशियां हों अथवा बुध शनि सप्तमस्थ हों, और मंगल व सूर्य्यसे दृष्ट हो तो ऐसे योगवाला पुरुष अपनी गुदाका भञ्जन परपुरुषसे हमेशा करवाता रहताहै ॥

शरीर देखकर ग्रह बतानेकी रीती ।

प्रथम मनुष्यका मुख देखना जिसके गाल बैठे हुएहों उसके लग्नमें सूर्य वा मंगल अवश्यहै जिसके नेत्र बड़े हों उसका वृष, तुला, धनु मीन और कर्क इन लग्नोंमेंसे कोई एकमें अवश्य जन्महै अथवा लग्नमें शुक्र या गुरु स्थितहै अथवा लग्नको देख रहेहैं जिसकी नासिका ऊँची नेत्र और भौं बड़े हों नेत्र बड़े क्रूर और चहुँ ओर श्वेत हो तो उसके नवम शुक्र कहना जिसकी छाती पतलीहो उसकी जन्म कुंडलीके चौथे घरमें पापग्रह मौजूदहै तथा वक्षस्थल पुष्ट व चौड़ा हो तो चौथे घरमें सौम्य ग्रह होगा जो सुस्त चित्तहो शांतस्वभावहो बुद्धि मंदहो और आवाज बड़ीहो उसके चतुर्थ गुरु पडेहोंगे जो बालापनसे कंगालहो उसके ग्यारवें घर सूर्य होंगे जिसके एकादश घरमें मंगल वा सूर्य्य हो उसकी भुजा पतली और कंधे ऊंचे होतेहैं जिसके शनि लग्नस्थहो उसके शिरपर बालोंकी भँवरीहोतीहै और किसीके तिलभी होतेहैं यदि केवल तिलहीहो तो शनिकी राशि लग्नपर कहना जिसके मंगल तीसराहो उसके भाई न कहना यदि शनि तीसरा हो उसके पीठके भाई न जियेंगे और रविसे बड़े भाई न जियें गुरुसे भाई होना बुधसेभी भाईहों और शुक्रसे बहिन कहना राहुका फल शनिवत् कहना जिसके पांचवें घर रवि होगा उसके पेटपर अग्नि दग्ध होगा मंगलसे विस्फोटादिक वा चिह्न एकही लंबा चौडा और अग्निकाभी एकही लंबा चौडा

निशान होगा शनिसे पेटपर तिलके बहुत चिह्न कहना बुधसे अकलपर चंचलता गुरुसे पांडित्य शुक्रसे गायक राहु केतुसे कमरमें दाद गोलाकी बीमारी पेटकी खाल पतलीहो. ६ घर सूर्य मंगल शुक्र पड़े हों तो दाहिना पांव टूटा कहना बाकी चिह्न पूर्वोक्त कहना ७घर सूर्य हो तो अंडवृद्धि कहना व्यभिचारी कहना मंगलसे इन्द्रीमें बीमारी बुध गुरुसे स्वरूपवान् व शनिसे इन्द्रीपर तिल व रूपवती भार्याकी प्राप्तिहो राहु केतुसे स्वरूप भयंकर और बेडौल कहना अष्टम सूर्यसे गुदारोग डेरे पांवमें सूर्यका पूर्वोक्त चिह्न मंगलसे ऊंचेसे गिरना और जिसके पांवमें ज्यादे बालहों उसके अष्टम घर शनि या पापग्रह कहना गुरुसे वह अंगपुष्ट बुधसे अच्छा शुक्र विस्फोटकादिक व गूमडे करताहै शनि डेरेपैरमें चोट लाताहै ॥ नवम गुरुसे भजनानन्द व कुछ स्वरूपवान कहना शुक्रसे मंदभागी और शुक्र स्वराशिकाहो व सौम्यराशिकाहोतो उग्रभागी परंतु आवाज भरीटेदार मन संकुचित शांतिवृत्ति रविसे क्रोधी आंखे तीक्ष्ण,मंगलसे दुर्बल शुष्क, नेत्रोंमें कुछ लाल डोरे, डेरे स्कंधपर विस्फोटकका चिह्न शनिसे डेरे कपोलपर तिलादि चिह्न होतेहैं दशम रवि हो तो वामपार्श्वमें विस्फोटक व अग्निका चिह्न कहना यदि सूर्य पापाक्रांत हो तो पिताका सुख कम भाग्य,मध्यम सुदीका चन्द्रमा हों तो भाग्य अच्छा यदि पापाक्रांत हो तो पिताका सुख नेष्ट, मंगलसे राज्यमान डेरे पार्श्वमें चिह्न ज्यादे और पेटपर कम क्योंकि मंगलकी दृष्टि पेटपर पडतीहै बुध गुरु शुक्रसे फल अच्छा कुछ भाग्यहीनता गुरुसे होतीहै ॥

शनिसे वाम पार्श्वपर तिलादि और शनि स्वगृही हो तो भैंसोंकी आजीविका ग्यारहवें सूर्य्य हो तो भुजा पतली स्कंध भुजासे ऊँचे भुजा नीची कुहनीके नीचे मोटा, हाथ लम्बा अंगुली पतली नसें दीखतीहैं मिहनतसे लाभ बमुश्किल हो, मङ्गल हो तो लाभ

सूर्य्यवत् स्कंधपर विस्फोटकादि चिह्न बुधसे भुजा पतली रूपवान एकसी शुक्रसे मोटी गुरुसे बहुत अच्छी शनिसे तिलादि चिह्न ऐसेही राहु केतुसे जानना॥

बारहवें सूर्य्य हो तो नेत्र रोग सूर्य्य राहु हों तो वाम नेत्रमें फुली कहना वाम कनपटी आँखके नीचे विस्फोटकादिका चिह्न कहना चन्द्रसे आँखका रोग और उसके सींग लगे शीतकी बाधारहै मङ्गलसे स्त्री मरे स्त्री कर्कशा, नेत्रके समीप विस्फोटकादिचिन्ह डेरे नेत्रके समीप कहना मिथुनका बुध हो तो नेत्र चंचल अच्छे, गुरुसे पुष्टता अच्छी, शुक्र हो तो कान बहें स्वक्षेत्रीसे कान फटे; शनिसे मंद दृष्टि रतोंधसी डेरी तरफ कर्णके आगे तिलके चिह्न दाहनी तरफ कर्मचिह्न, व्यय अधिक हो और राजभय हो ॥

अथ राशि लक्षण ।

मेष लग्नसे मस्तक अर्थात् ललाटके सिरेपर विस्फोटकके चिह्न व चोटका चिह्न होगा ऊँचा कद माथा छोटा कुछ कपालमें झील कृश तनुहो वृष लग्नसे गठीला वदन गाल फूले हुए, कद मध्यम, कपाल चौड़ाहो मिथुन लग्न हो तो ह्रस्व आकार खूब सूरत वदन, कमरसे नीचे पतला, चिकने गाल, स्त्रीके तुल्य डाढ़ी कम कर्क लग्न हो तो ऊँचा पुरुष, वदन सामान्य, कंधे ग्यारहवें सूर्य्य के तुल्य कहना सिंह लग्न हो तो मस्तकपर चोट, क्रूर स्वभाव ऊंचा कद, माथा बड़ा नेत्र कुछ छोटे हों कन्या लग्नसे ह्रस्व आकार दुर्बल स्वरूप तुला लग्नसे मस्तक बड़ा;कद मियाना,अंगपुष्ट वृश्चिक लग्नसे मस्तकमें विस्फोटक व चोटका चिह्न कद मध्यम,वदनमध्यम मुखपर कुछ लंबाई स्वभाव अच्छा धन लग्नसे रंग गोरा मुखपर तिलके चिह्न कद लंबा, शरीर दुर्बल मकर लग्नसे ऊंचा, रंग सांवला, स्वरूपवान, मुखपर तिलादि चिह्न मुख छोटा, नेत्र छोटे, कुम्भ लग्नसे

देह मध्यम, दुर्बल धनी मुख फीकासा, गाल बैठे हुए मीन लग्नसे पस्ताकद स्वरूप गठीला वर्ण ठीक बुद्धि अच्छी, वक्षस्थल अच्छे॥

जिसका मुख चिकना हो नाक नुकीली हो उसके कर्कके गुरु लग्न में कहना, जिसके पेटपर खताका चिह्न हो उसके निश्चय पंचम मंगल कहना, जिसके मूर्तिमें मंगल हो उसका शरीर निश्चय दुबला होगा, पंचम मंगल मकर कुम्भ हो तो निस्सन्तान कहना, माथेमें चोटका चिह्न हो वा खताका चिह्नहो तो लग्नमें मंगल कहना, जिसके पञ्चम गुरु उच्चका व स्वक्षेत्री हो तो वह निश्चय झूंठा होताहै, जो बहुत वकवायकरे उसके पञ्चम बुध कहना॥

अथ भावविचार।

श्लोक–सूर्याद्दशमे तात चन्द्रान्माता चतुर्थके।
भौमात्तृतीये भ्राता च बुधात् षष्ठे च मातुलः॥
गुरवः पञ्चमे पुत्रः शुक्रात् सप्तमके स्त्रियम्।
शनितः अष्टमे मृत्युर्जन्मकाले विचिंत्यते॥

अर्थ–पिताका कारक सूर्य है इसलिये सूर्यसे दशम घर पिताका विचार करना, और मातृकारक चन्द्रमा है इसलिये चन्द्रसे चौथे घर माताका विचार करना, भ्रातृकारक मंगलहै इसलिये मंगलसे तीसरे घर भाईका विचार करना, और मामाका कारक बुधहै इस लिये बुधसे छठे घर मामाओंका विचार करना पुत्रकारक गुरुहै इसलिये गुरुसे पञ्चम भावमें पुत्रका विचार करना, स्त्रीकारक शुक्र होनेसे शुक्रसे सप्तम भावमें स्त्रीका विचार करना, मृत्युका कारक शनिहै इसलिये शनिसे अष्टम घरमें मृत्युका विचार करना ये सब बातें जन्म कुण्डलीसे विचारना॥

अथ ग्रहोंकी शुभाशुभ अवधिज्ञान ।

श्लोक–द्वाविंशो दिननाथवर्षकथितः चन्द्रे चतु. विंशतिः अष्टाविंशतिकः कुजस्य कथितो दंते बुधस्य स्मृताः ॥ जीवेषोड़शपञ्चविंशभृगुजेषष्ठात्रिसौरिर्वदेत् उच्चस्था यदि केन्द्रगाः शुभखगाः कुर्वन्ति भाग्यो दयम् ॥ १ ॥

अर्थ–सूर्य अपना शुभाशुभ फल जन्म कालसे २२ वें वर्षमें देतेहैं चन्द्रमा २४ वें वर्षमें मङ्गल २८ वर्षमें बुध २६ या ३२ वें वर्षमें गुरु १६ और ३२ वें वर्षमें शुक्र २६ और ४ २वें वर्षमें शनि ३६ वें वर्षमें तथा राहु और केतु ४२ वें वर्षमें अपना शुभाशुभ फल देतेहैं ।

अथ मूकप्रश्न तथा मानसचिंता वाहन पुष्पादि प्रकार लिख्यते ।

मेष लग्नमें चरका नवांशा याने १ । ४ । ७ । १० हो तो घोड़ा मनमें लियाहै ऐसा कहना चरलग्नमें स्थिर राशिका नवांशा हो तो हाथी कहना और द्विस्वभावका नवांशाहो तो इच्छा हाथीपर जायगी पर कहेगा घोड़ा, वृष लग्नहो और उसमें नवांशा मेष सिंह धन मकरका हो तो वाहन रथ कहना और नरराशि मिथुन कन्या तुल और कुंभ लग्नहोयँ और इनमें इन्हींका नवांशा होय तो नर वाहन पालकी वगैरह कहना, और वृष लग्नमें वृषका नवांशा होयतो गज कहना, और चर लग्नमें मकर वृश्चिक धनका नवांशा हो तो ऊंट कहना और इन्हीं लग्नोंका द्विस्वभाव राशिमें नवांशा हो तो ऊंट कहना ॥

अथ पुष्पचिंता ।

मेष लग्नमें मेषका नवांशा हो तो लाल कनेर सुगन्धहीन कहना, मेष लग्नमें वृश्चिकका नवांशा हो तो अनारका फूल कहना

मेषमें वृषका नवांशाहो तो गुलाब और कर्क व सिंहके नवांशासेभी गुलाबका फूल कहना, मेषमें मिथुका नवांशाहो तो तोरईका फूल और मेषमें कन्याका नवांशाहो तो गुलबाँस, तवज्या, चित्रविचित्र फूल कहना, मेषमें धनका नवांशाहो तो रायचम्पा सुगन्ध युक्त कहना, और वृषमें वृषका नवांशाहो तो मोगरा, वृषमें कर्कका नवांशाहो तो चमेली, वृषमें सिंहका नवांशाहो तो श्वेत चम्पा, वृषमें कन्याका नवांशा हो तो कमल, वृषमें तुलाका नवांशा हो तो केवड़ा, वृश्चिकका हो तो गुलाब, धनका हो तो श्वेत चम्पा, मकरका हो तो गिरिमल्लिका याने मालचमेली, कुम्भका हो तो धतूरा मीनका हो तो गुलदावली, और वृषमें मेषका नवांशा हो तो कमलका फूल कहना। मिथुनमें मिथुनका नवांशा हो तो मकारादि तीन अक्षरका फूल कहना, मिथुनमें वृश्चिकका नवांशा हो तो गकारादि तीन अक्षरका फूल कहना, वृषमें वृषका नवांशा हो तो मकारादि तीन अक्षरका फूल कहना, सिंहमें सिंहका नवांशा हो तो जकारादि तीन अक्षरका फूल, सिंहमें कुम्भका नवांशा हो तो तकारादि तीन अक्षरका फूल, कन्यामें कन्याका नवांशा हो तो जकारादि दो अक्षरका फूल, तुलामें तुलाका व वृषका नवांशा हो तो मकारादि तीन अक्षरका फूल, वृश्चिकमें वृश्चिकका नवांशा हो तो ककारादि तीन अक्षरका फूल, वा मेषका नवांशा हो तो ककारादि तीन अक्षर व तकारादि चार अक्षरका फूल, धनमें धनका नवांशा हो तो अकारादि दो अक्षरका फूल, कहना॥ जो कुम्भ राशिमें मकर कुम्भका नवांशा होय तो महिष वाहन कहना, चतुष्पद राशि लग्नमें नीच राशिका नवांशा हो तो और मिथुनका व धनका उत्तरार्द्ध होय तो गर्धभ बाहन कहना, और अग्नि तत्त्वकी लग्न तथा नवांशा होय तो रेल वाहन कहना मकरमें मकरका नवांशा हो तो लकारादि

अक्षरका फूल कहना, लग्न राशि तथा नवांशा राशि इन दोनोंका स्वामी एक हो तो एक रंगका फूल कहना, और लग्न राशि नवांश राशि इन दोनोंका स्वामी अलग अलग हो तो मिश्रित रंगका फूल कहना, लग्न राशि बलवान हो तो लग्न रंग तुल्य रंग कहना, और नवांशा राशि बलवान हो तो नवांशा राशि तुल्य रंग कहना॥

द्वादश राशिनां तत्वज्ञानं लिख्यते।

मे.	वृष.	मि.	क.	सिं.	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी.	राशि
अ.	क्षि.	वा.	ज.	अ.	क्षि.	वा.	ज.	अ.	क्षि.	वा.	ज.	तत्व
पु,	स्त्री.	न.	पु.	स्त्री.	न.	पु.	स्त्री.	न.	पु.	स्त्री.	न.	स्त्रीपुरुषादि

लग्नका वर्ण और नवांश राशि वर्ण दोनोंसे रंग जानना पृथ्वी तत्त्वकी लग्न होय तथा नवांश होय तो पृथ्वी तत्त्वकी राशिकी सुगन्ध युक्त वस्तु जानना, और पुरुष स्त्री नपुंसक इनके भेदसे वस्तुकी पुरुष स्त्री नपुंसक जाति जानना, और लग्नमें तथा नवांशमें जलचर राशि होय तो जलसे उत्पन्न वस्तु जानना, और पृथ्वी तत्त्वकी लग्न तथैव नवांश होय तो पृथ्वी जनित मूल वस्तु जानना, और ग्रामचारी राशि व नवांशा होय तो बगीचा-जनित वस्तु जानना, बनचारी लग्न व नवांशा होय तो अरण्य जनित वस्तु जानना; लग्न व नवांशमें जो बलवान होय उसीके तुल्य ह्रस्व दीर्घ मध्यम वस्तु जानना, वृक्ष चिन्तामें नपुंसक राशि होय तो अफल वृक्ष कहना॥

अथ सूत्रः।

(लग्नेशो ब्रह्मा, सुखकर्मेशो विष्णुः, धीधर्मेशा श्रीः, गुह्येशो रुद्रः, धनेशो धनदः नगेशो यमः, सहजेशो देवेन्द्रः, रिपुव्ययेशो राक्षसः, लाभेशो वरुणः, ब्रह्मालक्ष्मीनारायणाभ्यां राज्यश्रीः, सुखंच)

अर्थ—लग्न चौथे, दशवें पांचवें और नवें घरके स्वामी इकट्ठे होकर केन्द्र त्रिकोणमें बैठे तो सारभूमि राजा होकर महाराज्य लक्ष्मीका भोग करे और उसको स्वप्नमें भी किसी प्रकारका दुःख नहीं व्यापे॥ (विष्णुना राज्यसुखम्) लग्नेश चौथे,दशवें घरके स्वामी इकट्ठे होवें तो राज्यसुख होवे (लक्ष्म्या धनसुखम्) लग्न, पंचम और नवम के स्वामी केन्द्र त्रिकोणमें होवें तो धनका पूर्ण सुखहो॥ (राक्षसेना रोगदरिद्रो) छठे बारहवें और लग्नके स्वामी इकट्ठे होकर छठे आठवें बारहवें हों तो जन्मरोगी और महादरिद्री होवे॥ (यमेन मृत्युः) सप्तमेश और लग्नेश इकट्ठे होकर छठे आठवें बारहवें बैठे तो थोड़ी उमर याने अल्पायु होवे (रुद्रेन धनधान्यदेहलयम्) अष्टमेश और लग्नेश इकट्ठे होकर छठे आठवें बारहवें बैठे तो राज्य धन दौलत और शरीर इन सबका थोड़ी उमरमेंही नाश होवे॥ (धनदेन धनम्) लग्नेश और दूसरे घरका स्वामी नवम पंचम हो और उनका स्वामी भी वहीं हो तो दिनपरदिन राज्यलक्ष्मी बढ़े॥ (वरुणेन व्यापारलक्ष्मीः) लग्न और लाभके स्वामी इकट्ठे होकर केन्द्र त्रिकोणमें बैठें तो व्यापार करनेसे ज्यादहसे ज्यादह धन बढ़े (केन्द्रत्रिकोणलाभेषु पूर्णम्) ऊपर लिखे योग केन्द्र त्रिकोण और लाभमें हों तो पूर्ण फल होवे॥ (स्वामी शुभयुतदृष्टे श्लाघनीयम्) केन्द्र त्रिकोणमें पूर्ण लिखे योग होवें और उसका स्वामी भी साथ होवे तो तारीफ करनेके लायक अच्छा फल हो॥ शुभे शुभं त्रिस्थे सुखं दुखं सर्वत्र योजनीयम्) ऊपर लिखे योग शुभ स्थानमें होवें तो शुभ फलकरे और छठे आठवें बारहवें होवें तो सुखदुःख दोनों देवें॥ (पुत्रेशो इन्दुना केन्द्रकोणे दत्तपुत्रसुखं व्ययेशेनायुतम्) पुत्र घरका स्वामी चन्द्रमाको लेकर लाभमें

अथवा नवम पञ्चम होवे और व्ययेश न मिलाहोवे तथा उच्च और स्वक्षेत्रीहोवे तो अपने जीतेजी राज्य धन सुख भोगकर अन्तमें दत्त पुत्रको देवे ॥ (पुत्रेशेलग्नेशे नायुते दत्तपुत्र योगः केन्द्रे कोणे राजलक्ष्मी दास्यति त्रिस्थे सुतेशे लग्नेशे नायुते त्रिकेशेनापि) पञ्चम और लग्नके मालिक इकट्ठे होवें तो दत्तपुत्र योग जानना और यह दोनों केन्द्र त्रिकोणमें होवें तो राजलक्ष्मी दत्तपुत्रको देवें, और वह दोनों छठे आठवें बारहवें होवें तथा उनका मालिक भी वहीं होवे तो दत्तपुत्र राजलक्ष्मी जबरन ले लेवे ॥

अथ व्यभिचारयोगः ।

लग्नेश लग्नमें व सप्तमहो और सप्तमेश शनि शुक्रकी राशिपर केन्द्रमें हो और चतुर्थ शुभग्रह हो तो यह योग प्रथम श्रेणीके व्यभिचारका है, सप्तमेश शुक्र शनि राहु करके युक्त हो और शुक्रपर मंगलकी दृष्टि हो तो यह योग व्यभिचारका है, जिसके अष्टम चन्द्रमा हो वह व्यभिचारी होताहै, सप्तमेश और चन्द्र लग्नेश शनिसे पूर्णदृष्ट हो तो यह योगभी अव्वल दरजेके व्यभिचारका है, सप्तमेश सप्तम भवनमें शुक्र बुध केतु करके संयुक्त बैठा हो और लग्नेशसे दृष्ट हो और अष्टममें कोईग्रह हो तो प्रथम श्रेणीके व्यभिचारका योग है उसके दो स्त्री अवश्य हों, पञ्चममें धनके बृहस्पति हो और सप्तमेश करके युक्त हो तो ऐसे योगमें पैदाहुआ मनुष्य ब्रह्मचारी व बहुत सन्तानवाला होता है, जिसके पञ्चमेश और सप्तमेश दोनों इकट्ठे होकर पञ्चम घरमें बैठें उसके बहुपुत्र योग कहना, जिसके सप्तम सिंहके सूर्य हों उसकी जठराग्नि अत्यन्त प्रबल होगी भोजनका इच्छुक व सूपशास्त्री होगा ॥

जिसके चौथे घर मीनका शुक्र हो और पञ्चम मेषका सूर्य हो तो उसके अक्षर अच्छे होते हैं यदि सूर्यके साथ शनि, और शुक्रके

साथ मंगल हो तो हिन्दी फारसी दोनोंके अक्षर अत्युत्तम कहना, यदि शुक्रके साथ चन्द्र और सूर्यके साथ बुध हो तो केवल हिन्दीके अक्षर अत्युत्तम कहना फारसीसे अज्ञ है॥

जिसके मेषका शनि सूर्य सहित पञ्चम बैठे व दशमबैठे और सप्तमेश छठा हो तो उसके पथरीका रोग कहना, शनि सहित यदि मंगल हों तो भी यही रोग कहना॥

अथ निस्सन्तानयोगः।

जिसके मेष और वृश्चिक राशिपर इकेला शुक्र किसी स्थानमें बैठा हो और विशेषतः पञ्चम घरमें हो तो उस पुरुषकी धातु निर्जीव होतीहै और जिसके मंगल शुक्रकी राशि याने वृष तुलाका हो तो स्त्रीके रजमें गर्भाधान शक्ति न कहना, और स्त्रीकी कुण्डलीमें इससे विलोम कहना और इकली कुण्डलीमें दोनों योग हों तो स्त्री पुरुष दोनोंका रज वीर्य्य शक्तिहीन कहना॥

जिसके जन्म कुण्डलीमें शुक्र मंगलके क्षेत्रमें हो और मंगल शुक्रके क्षेत्रमें हो तो उस पुरुषका वीर्य्य निस्तुष होवे स्त्रीका रक्त गर्भपिण्ड अच्छीतरहसे न बनावें शुक्र मंगल एकत्र होवे व शुक्र कुज क्षेत्रमें होवे तो अन्य क्षेत्रमें गर्भपिण्ड बने योगी राजका भी वीर्य्य परक्षेत्रमें पड़े गर्भ रहे स्त्री पुत्रवत् प्रीति होवे अति प्रिय होवें॥

मंगल और चौथे घरका स्वामी जिस कुंडलीमें परस्पर संबंध किसी प्रकारका करते होवें तो माता तीन आवृत्ति जीतीहै और चौथे घरका स्वामी सूर्य हो तो माता १२ वर्ष चन्द्र होवे तो २४ वर्ष मंगल होवे तो ३६ वर्ष बुध हो तो ४८ वर्ष माता का सुख उसी योगमें होता है॥

अथ अंध योग ।

द्वितीयेश और द्वादशेश दोनों इकट्ठे या पृथक् २ हों और सूर्य या चन्द्र अथवा दोनोंमेंसे किसीके साथ हो तो उसी नेत्रमें विकार कहना, सूर्यसे दिवांध और चन्द्रसे रात्र्यंध कहना यदि शुक्र इनके साथ योगकरे तो नेत्रमें फुली, जाला, तिरछापन, कहना जो लग्नेश सूर्य या चन्द्र दोनों नेत्रपति सहित मय शुक्रके हों तो अन्ध योग हो परन्तु देवी या औषधिसे नेत्रोंमें आराम होसक्ताहै यदि इन सबका संगम छठे आठवें बारहवें घर हो तो जन्म अन्ध कहना ॥

बारहवें या सप्तम राहु हो तो ४२ वें वर्ष स्त्रीका वियोग कहना, गुरु बुध और दसरे घरका स्वामी इकट्ठे होकर छठे आठवें बारहवें घर बैठे तो मूकता या कम बोलना कहे पापग्रह या नीचके हों तो मूकता हकलाना होता है ॥

अथ गोचरफलम् ।

मनुष्यके चन्द्र राशिसे जब गुरु प्रथम नवम पंचम या सप्तम आवे तो उस वर्षमें भार्य्याके आधीन रहकर उसीमें अथवा अगले वर्षमें पुत्रप्राप्ति होतीहै यह योग वर्षलग्नमें भी हो तो निश्चये-से पुत्रप्राप्ति होतीहै यह योग वर्ष लग्नमें भी हो तो निश्चयेन पुत्र प्राप्ति हो इसी तरह चतुर्थ गुरु विवाहादि मङ्गलकार्य्य करावें अष्टम गुरु तीर्थ करावें द्वादश गुरु शुभ कार्य्य तीर्थादिमें खर्च करावें ॥

अथ मतभेद ।

श्लोक–द्वादशदशमचतुर्थे जन्मनि षष्ठाष्टमे तृतीये च ॥व्याधिर्विदेशगमनं मित्रविरोधं सुरगुरुः कुरुते॥१॥ द्वितीयः पंचमः सप्तः नवमैकादशो गुरुः ॥अन्नं विविध भोगांश्च रत्नानि कुरुते गुरुः ॥ २ ॥ द्विजन्मनि पंचम

सप्तमगाश्चतुराष्टम द्वादश धर्मयुताः ॥ धनधान्य हिरण्यविनाशकराः रविराहुशनैश्चरभूमिसुताः ॥ ३ ॥

अर्थ–बारहवें, दशमें, चतुर्थ, पहले, छठे, आठवें, तीसरे गुरु जन्मराशिसे हों तो रोग प्रदेश यात्रा मित्रसे विरोध कराते हैं॥ १ ॥ दूसरे, पांचवें, सातवें, नवें, एकादश गुरु नानाभाँतिके सुख देते हैं ॥ २ ॥ जन्म राशिसे दूसरे, पहले, पांचवें, सातवें, चौथे, आठवें, बारहवें, और नवें, स्थानमें सूर्य राहु शनि और मङ्गल धनधान्यका विनाश करते हैं ॥

अथ अन्धयोगः ।

कर्क लग्नका स्वमी चंद्रमा शनि भौमसे दृष्ट हो तो अन्धयोग करे लग्नमें सूर्य्य हो और शनि भौमसे दृष्ट हो तो अन्धयोग करे लग्नमें चंद्रमा हो और शनि भौमसे दृष्ट हो तो अन्धयोग करे दूसरे घर सूर्य्य हों और शनि भौमसे दृष्ट हो तो ऐसे जन्मग्रहोंसे मनुष्य वाम नेत्रसे अंधा होता है, बारहवें घर सूर्य हों और शनि भौमसे दृष्ट हो तो ऐसे योगसे मनुष्य दक्षिण नेत्रसे अन्धा होताहै, दूसरे घर चन्द्रमा हो और शनि भौमसे दृष्ट हो तो इस योगसे भी मनुष्य दक्षिण नेत्रसे अंधा होताहै, और जो बारहवें चन्द्रमा शनि भौमसे दृष्ट हो तो वाम नेत्रसे अंधा होता है ॥

अथ पतनयोगः ।

लग्नमें सूर्य्य या मंगल हो तो मनुष्य वाहनसे या किसी ऊंचे स्थानसे गिरताहै, जो सप्तममें सूर्य मंगल हो तो भी ऊंचे स्थानसे गिरेगा, अष्टमेश षष्ठ हो तो भी पतन योग कहना, लग्न सप्तम अष्टम घरको सूर्य्य या शनि भौम देखें तो इस योगसे मनुष्य ऊपरसे गिरताहै, चतुर्थ षष्ठ अष्टम द्वादश चन्द्र हो तो जलमें डूबकर बच जाता

है अष्टमेश चन्द्रमा जल राशिस्थ हो और जलग्रह करके युक्त हो तो ऐसे योगसेभी जलमें डूबकर मनुष्य बचजाताहै, जिसकी जन्म कुण्डलीमें चतुर्थेश मूर्तिवर्ती हो वह पालकीमें बैठताहै, जिसके मर्त्तिमें गुरु हो वह हाथीपर अवश्य बैठता है, तृतीय गुरुहों या बारहवें मंगल हो अथवा चौथे या नवम राहु या शनि हों तो ऐसे योगसे मनुष्य कृपण याने कंजूस होता है ॥

जिसके तुलाके गुरु पञ्चम हों अथवा मेष राशिके गुरु ग्यारहवें घर हो तो इस योगसे मनुष्यके प्रथमपुत्र होय और पुत्रहोकर मर जावे फिर आयंदा पुत्र न होय जो कुंभ राशिका गुरु इकेला पञ्चम होय तो अपुत्रयोग करताहै, व्यापार योगकी प्राप्तिमें शुक्रसे वस्त्रका व्यापार मंगलस से धान्यका व्यापार शनिसे अफीमका व्यापार चन्द्रसे ढोर गायबैलोंका व्यापार कहना ॥

अथ चोरप्रकरणम् ।

चतुर्थेश लग्नमें हो और शुभग्रहसे दृष्ट हो तो तत्काल नष्ट वस्तु मिले, लाभेश धनेश शुभग्रहसे युक्त वा दृष्ट हो और शुभ घरमें हो तो नष्ट वस्तुका लाभ कहना. लग्नमें चन्द्र हो तो प्राप्ति कहना और गमनागमन प्रश्नमें इससे जलदी आगमन कहना तनुमें सूर्य अष्टम राहु हो तो नष्ट वस्तु नहीं मिलेगी केवल अष्टम राहु हो वा केतु हो और लग्न खाली हो तो चोरके बेड़ी पड़े और पदार्थ मिले, चतुर्थेश पापाक्रान्त हो और चौथे घर पापी ग्रह हो वा चतुर्थेशको देखे तौ अप्राप्ति कहना, सप्तमेशसे चोरकी जाति कहना, वा सप्तममें बली ग्रह हो तो उससे जाति कहना, संयुक्तग्रहसे उसके साथीकी जाति कहना, उच्चका वक्री सप्तमेश हो तो चोरे संख्या द्विगुण वा पंचगुण कहना, चन्द्रके नवांशसे उस वस्तुके धरे जानेका स्थान कहना, मकरके नवांशमें हो तो पृथ्वीमें गढ़ाहै

कुंभके नवांशसे घड़म, कर्कके नवांशसे जलके भीतर मकर चन्द्रमासे वस्तुका स्थान कहना, चन्द्रमा जिस दिशाको जानेवाला है यानी जिस राशिमें जावेगा उसके तुल्य दिशा कहना॥

श्लोक–मूर्तिपो नष्टधनपो जायेशश्चौरपोगतः ॥ चंद्रार्कौ नष्टधनपौ तदेभ्योत्र विनिर्णयः ॥ १ ॥ द्यूनपेन सहैकत्र बलीलग्नपतिर्भवेत् ॥ सप्तमे वाथ लग्ने वा बली लग्नेश्वरोर्थदे ॥ २ ॥ होरां स्थिता पूर्णतनुः शशांको जीवेन दृष्टो यदि वा सितेन॥ क्षिप्रं प्रणष्टस्य करोति लाभं लाभोपयातो बलवान् शुभश्चेत् ॥ ३ ॥ लग्ने लग्नेशजायेशो द्यूनपो वा थ लग्नपाः ॥ नष्टलाभकरो द्यूने लग्नपो नाप्यते धनम् ॥ ४ ॥ लग्नात्त्रिलाभधर्मेषु सुतसप्तचतुर्थगौ ॥ अन्योन्यदृष्टौ सूर्येन्दू हृतप्राप्तिकरौसुखात् ॥ ५ ॥ स्त्रीग्रहे द्यूनपे स्त्रीस्यात्स्वकीयान्तर्बहिःपरा ॥ एवं पुंसांशद्रेष्काणे पुमांश्चैव विनिर्दिशेत् ॥ ६ ॥ कीटकर्कटमीनेषु चतुर्थे तोयसन्निधौ ॥ मेषासिंहहये भूमौ हयस्येव विनिर्दिशेत् ॥ ॥ ७ ॥ मन्मथे च तुलाकुंभे नानाकारग्रहे भुवि ॥ क्षेत्रमध्ये तु कन्यायां मकरे वृषभे भुवि॥८॥वृषभछागयोर्गेहे संज्ञाध्यायेन्यदूहयेत् ॥ शुक्रे चन्द्रे जलाधारे देवता वसतिर्गुरौ॥ ९ ॥ रवौ चतुष्पदस्थानमिष्टिकानिचयो बुधे॥ दग्धं स्थाने कुजप्रोक्तं शनौ राहौश्च वाह्यभूः ॥१०॥अमीभिर्हिबुके स्थाने नष्टभूमिविलोकयेत्॥ विस्मृतिं यं मया वस्तु तत्प्राप्तिं यदि पृच्छति ॥ ११ ॥ वास्तुस्थानं तृती

यं तु ग्राहकः सुखवेश्मगः ॥ शीघ्रगस्तुग्रहस्तत्र यदा त
ल्लब्धिरुच्यते ॥ १२ ॥ सूर्यर्क्षतोष्टे द्रनखत्रिविंशे धंबंध
मीनाष्टशरेथषोढा ॥ ओजे समे च तरुणे च नष्टे स्थाने
स्थितो तस्य फलं नलाभः॥ १३ ॥ सूर्यभाद्दिनभं यावत्
तस्य संज्ञानुरूपफलम् ॥ ८ । १४ । २० । २३ अंधसंज्ञा
स्वस्य स्थलपार्श्वे हतं लाभं ११ ।१७।५ बंधसंज्ञं स्वस्थ
लेस्थितम् १ । ३ । ७ । ९ । १३ । १५ । १९।२१।२५ ।
२७ । षोढासंज्ञं यत्नात् लाभः २ । ४ । ६ । ११२ । १६
१८ । २२ । २४ । २६ । तरुणसंज्ञायेषु भ्रष्टेनलाभः ॥

चोरीके प्रकरणमें यह ग्रंथान्तरोंके श्लोक लिखे गएहैं परन्तु इनकी परीक्षा अभीतक हमने नहीं कीहै इसालिये इनका अर्थ नहीं लिखा गयाहै । इस खण्डमें वहीबातें लिखी गईहैं जो अनेक बार परीक्षित होनेसे सच्ची साबित हो चुकी हैं ॥

सभाचौर बतलानेकी तरकीब ।

जितने आदमी बैठेहों उनकी संख्यामें वर्त्तमान लग्नके अंक जोड़ना और उसमें चीजके नामाक्षर जोड़ना सबको दूने करना और फिर तीन जोड़ना पुरुष संख्याका भागदेना जो शेष बचे उसी संख्याके पुरुषने चीज चोरीहै शुक्ल पक्षमें आदिसे गिनना और कृष्ण पक्षमें अंतसे गिनना ॥

अथ संक्षिप्त ताजकफलम् ।

जन्म लग्न वर्ष लग्न एक आवेतो वह वर्ष कष्ट दायक कहना और वर्ष लग्नसे छठे आठवें बारहवें जन्म लग्न हो तो वह वर्ष कष्ट दायक कहना वा जन्म लग्नेश वर्ष लग्नेश ६–८–१२ वें पड़े तो वह वर्ष कष्टके देनेवाला होताहै वर्ष लग्नसे छठे स्थानमें सूर्य शुक्र हों तो

दाहिने पांवमें शस्त्र भय करताहै, लग्नका स्वामी सूर्य और चन्द्रमा करके युक्त हो तो इस योगसे मनुष्यको दम और खाँसीकी बीमारी होती है, लग्नेश अस्तंगत हो अथवा लग्नेश चन्द्रमासे दृष्ट हो तो इस योगसे भी मनुष्यको शर्दी और खाँसीकी बीमारी होतीहै जिसके जन्मकालमें अष्टमेश लग्नस्थ हो और शुक्र और शनि ग्यारहवें और बारहवें भावमें हो तो ऐसे योगवालेकी हैजेकी बीमारीसे मृत्यु होतीहै. ग्रंथातरोंमें ताजिक सम्बंधी बहुत उत्तमोत्तम योग लिखेहैं जो आजतक किसी छपे हुए ग्रंथमें देखनेमें नहीं आते जो कि उन श्लोकोंका मैंने कभी अनुभव नहीं किया है इसलिये ग्रंथ विस्तार भयसे वे सम्पूर्ण योगायोग इस ग्रंथमें नहीं लिखे जावेंगे तथापि दिग् दर्शनकी भाँति पाठक गणोंके अवलोकनार्थ कुछ श्लोक लिखे जाते हैं ॥

यथा-यदा छिद्रनाथो तनुस्थानगो वा तथा लग्नना-थेऽरिभावे यदि स्यात्॥तदावर्षमध्येनराणां हि मृत्युर्भवे-त्तस्य चायुर्ध्यतोदैवयोगात्॥१॥ चंद्रो यदा मंदयुतोऽष्ट मस्थः लग्नाधिपेनैव युतश्चदृष्टः ॥तदा च रोगं कुरुतेन-राणां विषूचिकाभिश्च गदाद्यरिष्टम् ॥ २ ॥ वर्षाधिपे शशिसुतेयदिमृत्युभावेसूर्यात्मजावनिसुते द्युनगे च पापे॥ चन्द्रेक्षिते प्रकुरुते मरणं नराणां कण्ठादिरोगवशतः प्रवदंतिसंतः ॥ ३ ॥ जन्मनि यदारंध्रगतेऽर्कपुत्रे वर्षेस राशियदिमृत्युभावे ॥ शौरेण युक्ते कुरुतेनराणां भुजंग मस्य स्पृशतेनरिष्टम्॥ ४॥मन्दो यदा चन्द्रपदे मृगांक श्चन्मंदराशौखलुपापयुक्ते ॥ लग्नाधिपेमृत्युगतेसवर्षे क रोतिरिष्टं च जलोदराश्च॥मृत्युस्थितो जन्मनि भूमिपुत्रः

वर्षेबलाढये दशमेप्रपन्नः ॥ चतुष्पदास्यात्पतनं तथैज्ये
स्यादीक्षितेचेच्चहनंतिरिष्टम् ॥ ६ ॥ वर्षेशे सुरपूजिते
सुतगते नवमे च पुत्रात्सुखं धीनाथे भृगुजे तथाबलयुते
सप्तस्थिते भाग्यभुक् ॥ कुर्याच्चेच्च कबूलकं शुभखगैः
सौख्यं सुताद्दारतो ज्ञेयं वा सहमाधिपे शुभखगैर्युक्ते
तथालोकिते ॥ ७ ॥ षष्ठाष्टमे जन्मकाले यदि स्याद्रवि
चन्द्रमाः ॥पापयुक्ते तदा मृत्यू राजदोषान्न संशयम् ८॥
सहजभावपतीरिपुभावगे रिपुपतिः सहजे रिपुसंयुतः॥
तदीयवर्षगते स्वभ्रातृतो भवति शस्त्रहतोः शिरनाश
नम् ॥ ९ ॥ क्रूरे विलग्ने च कलत्रगेहे व्ययास्थिते भूमि-
सुते विलग्ने ॥ सन्तानहीनं प्रथमं स्त्रियाच बिन्देत्सुखं
युग्मकृतं च भार्या ॥ १० ॥ लग्नाधिपे भौमगते च रंध्रे
रंध्राधिनाथे व्ययगे रिपुस्थे॥करोति कष्ट रिपुणां विबादो
भित्तादिपातेन करोतिरिष्टम्॥ ११ ॥ कन्यालग्ने भास्करे
मूर्तिसंस्थे जायाभावे चार्कजे पापयुक्ते ॥ तस्मिन् वर्षे
मानवानां हि कष्टं भार्यामृत्युर्निंधितं तत्रयोगे ॥ १२ ॥
ताजिकरोमे निधनभुवननाथेद्रव्यभावे नराणां व्ययभुव-
ननाथो मृत्युभावे यदि स्यात्॥तनुभुवनपतिः स्यान्निर्बले
चापि वर्षे भुजगदशनमृत्युः शङ्करश्चापि रक्षेत् ॥ १३ ॥
मन्दे द्वितीये सुखगे हिमांशुपापार्दिते कर्मगते कुपुत्रे ॥
लग्नाधिपे मृत्युगते सवर्षे मृत्युं विशेभ्यः प्रवदन्ति
तज्ज्ञाः ॥ १४ ॥ कर्मस्थिते सूर्यसुते दिनेशः रंध्रे स्थिते

छिद्रपचन्द्रयुक्ते ॥ जन्माधिपे शत्रुगतेत्रवर्षे करोति कष्टं लकुटप्रहारैः ॥ १५ ॥ लग्नेभौमे पापयुक्तेथ चन्द्रे पुत्रस्थाने जन्मपो मृत्युभावे ॥ मन्दे युक्ते क्रूरदृष्टे सवर्षे विद्युत्पातात्मानवानां हि मृत्युः ॥ १६ ॥ स्वस्थानस्थे कर्मगे भूमिपुत्रे क्रूरैर्युक्ते वीक्षिते वा तदाब्दे ॥ लग्नस्वामीरन्ध्रगे ऊर्ध्वपातान्नूनंरिष्टं मानवानां च तत्र ॥ १७॥ चन्द्रेशो यदि केन्द्रसौम्यसहितो जन्मेशयुक्तो दृशो कर्मेशश्चणु कर्मगो शुभयुते संम्राज्ययोगप्रदः ॥ तद्योगे रविमण्डले रिपुगृहे शौरी च युक्ते क्षिते तत्काले मरणं ध्रुव नृपजने शस्त्राभिघातप्रदः ॥ १८ ॥ मन्दपतिर्मदगे सवलो यदा खलखगैः सहितो न च वीक्षितः ॥ मुनिवरैर्गदितं बहुलं सुखं युवतिगर्भ भवं विभवं तदा ॥ १९ ॥ देवार्चितो जन्मनि यत्र राशौ वर्षेसराशिर्यदिपंचमस्थः॥ तत्रास्थिते वर्षपतो बुधौ वा भौमोथवा पुत्रसुमद्भवः स्यात् ॥ २० ॥ यद्राशिगो जन्मनि सूर्य्यपुत्रो वर्षे च तद्राशिभवं विलग्नम् ॥ संतानकष्टं च कुजः सुथस्थो विलोमगः पुत्रहरो निरुक्तः ॥ २१ ॥

अथ जन्मपत्रकी दक्षिणाके जाननेका प्रकार।

पूरी जन्मपत्री होय उससमयकी तात्कालिक लग्न बनाना सूर्यसे लग्नके बीचमें जितने ग्रह हों उतनी मुद्राकी प्राप्तिकहना प्रश्नलग्न गुरु तथा स्वस्वामिसे दृष्ट हो तो निश्चय यह योग होगा, लग्नसे पहले दूसरे बारहवें घर राहु केतु शनि हो तो बिलकुलदक्षिणा न मिले

मकसूमसे मिलभी जाय मगर भरोसा नहीं. लग्न केन्द्रमें क्रूरग्रह हों तो निष्फल जानना, लग्नमें क्रूरग्रह हों अस्त होय क्रूरक्षेत्री होय तो उधार करे और लग्नमें सूर्यका होरा हो तो वह उधारभी न पटे चन्द्रका होरा हो तो कालान्तरसे मिले लग्नेश वक्र हो तो यजमान न मिले या नष्टबुद्धि पायाजावे, लग्नसे सूर्यके मध्य कोई ग्रह वक्री होय तो निर्णीत दक्षिणामेंसे कुछ रखलेवे अतिचार ग्रह होवे तो मुश्किलसे प्राप्ति होवे, यजमान राश्येश अस्तंगत होय तो कुछ न मिले अपनी राश्येश अस्त हो तो प्रारब्धमें प्राप्तिनहीं, लग्नेश क्रूराक्रान्त वा अस्तंगतसे युक्तहोय तो दक्षिणामें कोई भांजीमारे टंटा-बखेड़ा करनेको उद्यत हो वे, लग्न सूर्यके बीचमें जितने ग्रह अस्त वक्रीहोवें उन्हें न गिनना मगर राहु केतु गिनना उत्तम मध्यम कनिष्ठ स्थानसे मुहर रुपया चौन्नी स्वतर्कसे मुद्रास्थानी जानना॥

दूसरा प्रकार ।

(तन्नामवर्णसंख्याकैः युतानंदहतार्शरैः ॥ मुंनिभिस्तुहरेद्भागं शेषं दक्षिण मुच्यते ॥ शेषं पञ्चगुणं कृत्वा दशभिः शोधयेत्पुनः) दाताके नामाक्षर गिनना उननामाक्षरमें ९मिलाना और सर्वयोगको ५ से गुणना उस गुणनफलमें ७ सातका भाग देना लब्धिसे कुछ कामनहीं शेषको पञ्चगुणा करना वही दक्षिणा मिलेगी ॥

अथ जलघटिस्थापनाविधि ।

श्लोक-कुंभार्द्धाकृतिशुद्धताम्रदशभिः पात्रं पलैर्निर्मितं शंकोर्ध्वोन्नति शंकुविस्तृतिमिदं मासांगुलैर्नापितम्॥विद्धा हेमशलाकया सुसलिले उन्मज्ज्य तस्मिन्न् घटी उन्मज्ज्याखलुषष्टिवारपठिते श्लोकेन सा पूर्यते ॥

अर्थ-दशपल तांबा लेकरके उसकी एक कटोरी कुंभार्द्ध (आधा-

घड़ा) के आकारकी इसतरहसे बनाना कि ऊपरका व्यास इसका १२ अङ्गुल चौड़ाहो और वह कटोरी ६ अङ्गुल गहरी हो ऐसी कटोरीमें $१\frac{१}{३}$ मासे सोनेकी४अङ्गुल लम्बी सींकसे बीचमें छेद करना और जलके भरेपात्रमें इसकटोरीको डालदेना इसकटोरीके जलमें डूबनेमें ६० पल लगेंगे इसको जलघटी कहते हैं और घटीनाम घड़ीकाहै इसीलिये यह घड़ी१ घड़ी अर्थात् २४ पलको बतलानेवालीहै. यहां कविने इस श्लोकके बनानेमें यह चातुर्य्य कियाहै कि इस श्लोकको धीरेधीरे ६० बार पढ़नेमें जितना समय लगेगा उतने समयमें कटोरी जलमें डूबजावेगी सोनेकी सींकका प्रमाण इसश्लोकमें लिखाहै (यथा माषमात्र त्र्यंशयुता स्वर्णवृत्तशलाकया ॥ चतुर्भिरंगुले राप तयाविद्धमितिस्फुटम्) प्रगट हो कि ९ रत्तीके बराबर १ माष होताहै और ६४ माषका १ पल होताहै ॥

अथ छायासे इष्टजाननेका प्रकार।

श्लो०–परं दिनं दिनमानविहीनं सप्तभिराहतं पञ्चविभक्तम् ॥ आर्यभटेन विनिर्मितया भासा च भवेद्दिनमध्यमछाया॥१॥या यत्रकाले भवतीह छाया मध्याह्नहीना स्फुटशंकुयुक्ता ॥ तयादिने षट्गुणितं विभाज्यं पूर्वां परार्द्धे गतगम्यनाड्या ॥२ ॥

अर्थ–सबसे बड़ेदिनमानमेंसे इष्टदिनका दिनमान घटादेना और जो कुछ शेषबचे उसको ७ से गुणना और गुणनफलमें ५ का भागदेना जो कुछ लब्धिआवे उसकानाम मध्याह्न कालकी छायाहै इस मध्याह्न छायाको उससमयकी १२ अङ्गुल लम्बी शंकुकी छायामेंसे घटाना और उसमें शंकुकी लम्बाई मिलादेना और इसका भाग ६ से दिनमानको गुणना और उसगुणनफलमें इसका

भागदेना जो कुछ आवे उतनेही घटि दिन दोपहर पहले चढ़ा कहना और दोपहरके उपरान्त उतनेही घटी दिन शेषकहना ॥

अथ उदाहरण–जैसे परमदिनमान३५।२० है इसमेंसे इष्टदिनका दिनमान ३० घटाया तो रहे ५ ।२० इनको सातसे गुणा तो हुए ३७।२० इनमें ५ का भाग दिया तो हुए ७।२८ यह मध्याह्न छायाहै अब मध्याह्नकालके उपरान्त किसीने १२ अंगुल शंकुसे छाया नापी तो १० अंगुल हुई इसे १० अंगुलमेंसे मध्याह्न छाया घटाई तो रहे २ । ३२ इनमें शंकुके १२ अंगुल जोड़े तो हुए १४। ३२ इसका भाग उसदिनके दिनमान६छसे गुणेहुएमें देना अतएव भाज्यभाजक दोनोंके पल किये इसलिये १४–३८को ६० से गुणा तो हुए ।८७२ ० यह भाजकहुआ और दिनमान ३० को ६ से गुणा तो हुए १८०। ० इसको ६० से गुणाकर पलकिये तो हुए १०८०० यह भाज्य हुआ इस भाज्यमें उक्त भाजक का भाग दिया तो १२ घ० १६ प० लब्धि आई जो कि मध्याह्नके उपरान्त छाया नापी थी इसलिये १२ घ० १६ प० दिन बाकी है अब इस को उसदिनके दिनमान ३० घड़ीमेंसे घटादिया तो मालूम हुआ कि इष्टसमयपर १७ घ० ४४ पल दिन चढ़ाहै ॥

अथ इष्टकालपरसे पादछाया जाननेकाप्रकार ।

श्लोक–द्युमानमग्निसंगुणं गतैष्यघटिकाहृतम् ॥
द्विभानुतरोन्नितं पदं प्रभानिजेष्ट कालजा ॥

अर्थ–दिनमानको त्रिगुणकरना और इष्टघटीका भागदेना लब्धि को अलगस्थापन करना फिर दिनमानका व २७ का अन्तर करना जो अन्तर आवे उसका और अलग स्थापित हुए अंकका अन्तर करना जो अन्तर आवे उतनेही पाद छाया जानना और भी दिवेष्टकाल जाननेके बहुतसे श्लोकहैं ॥

श्लोक–वेदाब्धिरूपाऽश्विनिचैत्रमासे वैशाखभाद्रे शरंवह्निरूपाः॥ज्येष्ठे तथाश्रावणत्र्यंशंमेकं बाणं भुजारूपमषाढके च ॥ १ ॥ खंबाणरूपं फाल्गुने ऊर्जमासे माघेषु मार्गे खरसेन्दुलिप्ताः ॥ शून्यं मुनिः रूपतथा च पौषे एवं ध्रुवाङ्कं कथितो मुनीद्रैः ॥ २ ॥ सप्तांगुलभवेच्छंकुछायाशंकुसमान्वितः ॥ ध्रुवाङ्के दीयते भागं लब्धाङ्के घटिकापलः ॥ ३ ॥

अर्थ–कुवांर और चैत्रके १४४ ध्रुवांकहैं वैशाख और भादों के १३५ ज्येष्ठ और श्रावणके १३० आषाढ़के १२५ फाल्गुन और कार्तिकके १५० माघ और अगहनके १६० और पौषके १७० ध्रुवांकहैं. अब बराबर जमीनमें ७ अंगुलकी छड़ी खड़ीकरके छाया नापना जितने अंगल छाया हो उसमें ७ अंगुल जोड़ना और इसयोगफलका भाग उक्तध्रुवांकमें देना जो लब्धिआवे वही इष्टघटी पल है ॥ इसतरह बहुतसे श्लोक छाया नापकर इष्टजाननेके हैं परंतु आजकलकी इंग्रेजीघड़ीके मुकाबलेमें ये सब विधि अशुद्ध हैं सबसे उत्तम इंग्रेजी घडीका टाइम है कि जिसमें कभीभी अंतर आना संभव नहीं है ॥

अथ निषेककुंडली निर्माणप्रकार।

आजकल ज्योतिषीलोग जन्मकुंडलीके साथमें निषेककुंडलीभी बनाते हैं यद्यपि यहविधि सर्वथा सत्यनहीं है तथापि पाठकोंके अवलोकनार्थ उक्तविधिका प्रकाशितकरना उचितजान निषेककालके कुछ श्लोक नीचे लिखताहूँ यथाः–

जन्मलग्ने समेब्जेंगे जन्मेंदुसममत्रतु॥ग्लौसमं जन्मलग्नं

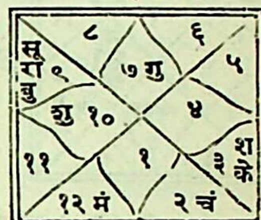
स्यात् तस्मात् कालात् ततोविद्रुः ॥ (अथ आधानकाले चन्द्रवशात् प्रसवज्ञानमाह) आधानं यदिदृश्यते स्थिर गते चंडीशचूणामणौ नारीणां प्रसवस्तदाखलुभवे युग्मां कपक्षै २९२० ।दनैः ॥ सप्ताशीत्यधिकैश्चपक्षसहितै २८७ स्तस्मिंश्चरक्षेत्रगे चन्द्राष्टाश्वि २८१ दिनै रसात लभुजै २७६ र्वाद्विस्वभावे विधाविति ॥ व्यंगस्पष्टवि धोर्लवा [१४]र्मनुहतास्वाष्ट[१६८]यांशयुक्ता रसां[२४६]द्व्यश्व्याढ्याश्च निषेकजन्मसमयांतर्वासरौघो भवेत् ॥ [६३]स्वाश्यंगेन लवा न्वितोत्रतिथयोथाश्वाप्तशेषाद्गणाद्धीनो जन्मदिने निषेक दिनपश्चैवं तिथिभ्यस्तिथिरिति ॥

इन सब श्लोकोंका सार यह है कि, आधानकालका चन्द्रमा और जन्मकालकी लग्न और जन्मकालका चन्द्रमा तथा आधानकालकी लग्न यह सदा राशि अंश कला विकलामें एकहोती हैं जैसे किसीके जन्मकालमें लग्न ८ । ४ । २७ । १९ और चन्द्रमा ५ । ९ । ४४ । २८ और सूर्य १ । १८ । ४३ । ३९ हैं अब इनसे आधानकुंडली बनानेकेलिये नवम अथवा दशममासमें ऐसा समय तजबीज करनाचाहिये कि उस-दिनका चन्द्रमा और जन्मकालकी लग्न और उसदिनकी लग्न व जन्मकालका चन्द्रमा एक होजावे. अब देखनेसे मालूम हुआ कि सूर्योदयात् इष्टघटी ६ पल ५ और स्पष्ट रवि ४। २२।५६।५६ इस इष्टपर गणित करनेसे चन्द्रमा ८ । ४ । २७ । १९ और लग्न ५ । ९ । ४४ । २८ आई बस यही निषेककालका समय है परंतु यह विधि सर्वथा सत्य नहींहै सज्जनोंके मनोरंजनार्थ लिखदीहै ॥

अब वर्तमानकालके कुछ नरेंद्रोंकी जन्मकुंडालियां लिखी जाती हैं कि जिनके अवलोकनसे राज्ययोग भाग्य योगादिका अनुमान पाठकोंको भली भाँति होजावेगा ॥

अथ कुंडलीचक्राणि ।

जन्मलग्न

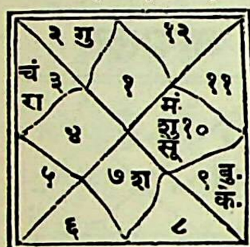


सं० ४६ जूलियनवर्ष तारीख २६ दिसम्बर शुक्रवार कृत्तिका नक्षत्र रात्रिको ११ बजकर ५९ मिनट ३८ सेकण्डपर हजरत ईसामसीह इंग्लिशधर्मसंस्थापक का जन्महुआ लग्न स्पष्ट ६।१ सायनरवि ९।१॥

यहूदिया प्रांतके बेतलहामनगरमें हजरत ईसामसीहका जन्म-हुआथा जन्महोनेके४०दिन उपरांत ये ईजिप्त (मिसर) नगरमें यहूदियोंके भयसे लेजाये गएथे१२वर्षकी उमरमें जेरुसलेमके मंदिरमें डाक्टरोंकेसाथ इनका शास्त्रार्थ हुआ वहां इन्होंकी विज-यहुई तबहींसे इन्होंकी कीर्ति बढने लगी २६वर्षकी वयमें इन्होंको आचार्य्यपद प्राप्तहुआथा २९वर्षकी वयमें इन्होंका इंग्रेजीरीत्यनु-सार नामकरण संस्कार हुआ और ये उसदेशके दीवानपदपर आरूढ़ किए गए तबहीसे इनसे और मनुष्योंसे शत्रुता बढी इन्हों-का स्वभाव बड़ासौम्य और मृदु था मातापिता इन्होंके बहुतका-लतक जीतेरहे. यहूदियोंके भयसे ये छिपेहुए लोगोंको उपदेश देतेरहे अंतमें३२वर्ष३महीने११दिनकी वयमें यहूदियोंकी कपट सलाहसे दोचोरों सहित ये शूलीपर चढ़ाएगए और उसीशूलीपर इन्होंकी मृत्युहुई उसदिन रात्रिको चन्द्रग्रहण हुआथा हजरतईसा-मसीहका शरीर स्त्रीके आकारमेंथा विंशोत्तरी मतानुसार इनका जन्म सूर्यकी महादशामें हुआथा और राहुकी महादशामें इनकी

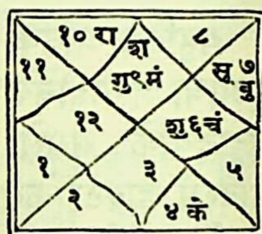
मृत्युहुई बाईबिलमें लिखा है कि इन्होंने कई मृतकपुरुष जीवित किएथे और आमरणपर्य्यंत ये ब्रह्मचर्य्य धर्मसे रहे इनका कोई विवाह नहीं हुआथा ॥

जन्मलग्न



माघसुदी १३ गुरुवारको कंसराजाका जन्म ॥

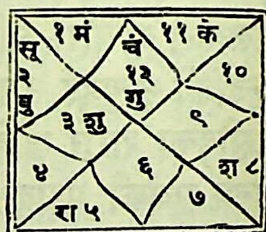
सं० १८९८ कार्तिक वदी ११ मंगलवार ता. ९ नवंबर सन् १८४१ को प्रातःकाल १० बजकर ४८ मिनटपर हुजूर राजराजेश्वर श्रीसप्तमएडवर्ड भारतेश्वरका जन्म रवि ६।२४ लग्न ८।५ ॥

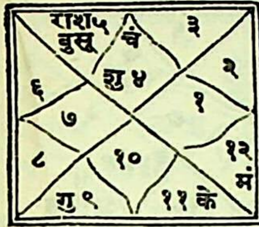




सं० १९२८ प्रथम भाद्रपद वदी १४ मगंलवार ता० १५ अगस्त सन् १८७१ पुष्यनक्षत्र १०।० समये श्रीमती महाराणी वर्त्तमान राज्य कर्त्ता चीनकस्य जन्म तस्य जन्मचंद्रकुंडलीयम् रवि ३।२९ ॥

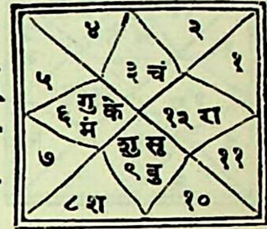
सम्वत् १९२५ ज्येष्ठवदी ११ चंद्रवार १०।० रेवती ५५।० ता. १८ मई सन् १८६८ को आलाहजरतने कोलस दूसरे शाहनशाह मोज्जम रूसजमानेहालका जन्म रवि १।५ तस्य जन्म चंद्र कुंडली ॥

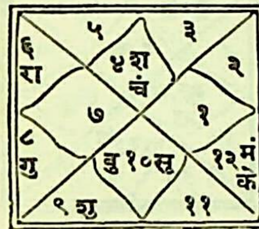




सम्ब० १८८७ भादों बदी ३० बुधवार आश्लेषानक्षत्र १४। ० ता० १८ अगस्त सन् १८३० आलाहजरत फ्रान्सिस जोसेफ वर्त्तमान शाहनशाह आस्ट्रीयाकस्य जन्म तस्य चंद्रकुंडलीयम् रवि ४। ३॥

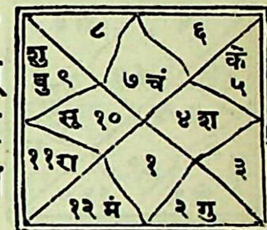
सम्व० १८९५ माघबदी १ चन्द्रवार५५।० आर्द्रानक्षत्र ७।० ता० ३१ दिसम्बर सन् १८३८ को श्रीमान् इमाइललौवेट बहादुर बर्त्तमान् फ्रांसनरेशका जन्म तस्य चन्द्रकुण्डलीयम् रवि ८। १७॥

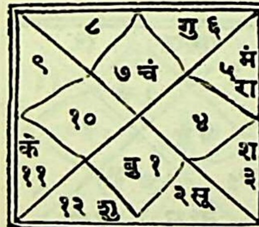




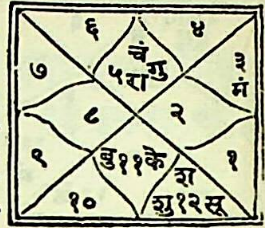
सम्वत १८८५ माघवदी२बुधवार ५८।० आश्लेषा ३५।० ता०२१ जनवरी सन् १८२९ को आलाहजरत दूसरे ओस्करबहादुर वर्त्तमान शाहस्वीडन और नोरवेका जन्म तस्य चन्द्र कुण्डलीयम् रवि ९। ९॥

सम्बत् १९१५ माघवदी ९ गुरुवार २९।० विशाखानक्षत्र २७। ता० २७ जनवरी सन् १८५९को आलाहजरत दूसरे विलियम बहादुर वर्त्तमानशाहन्शाह जर्म्मनीका जन्मः तस्य चन्द्रकुण्डलीयम् रवि ९। १४॥

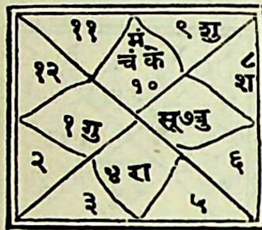




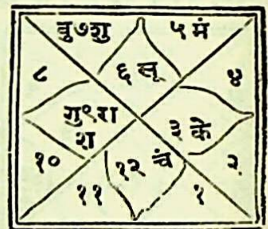
सम्वत् १९४३ वैशाखसुदी १५ चन्द्रवार६०।० विशाखानक्षत्र ५८। ० ता० १७ मई सन् १८८६ को आलाहजरत तेरवेंअलफोन्सोबहादुर बर्त्तमान शाहइस्पेनका जन्म तस्य चन्द्र कुण्डलीयम् रवि १।४ ॥



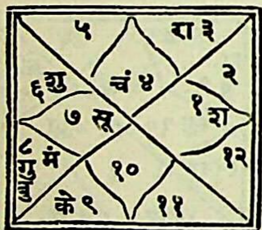
सम्व० १९०७ चैत्रसुदी १२ चन्द्रवार ३० । ० मघानक्षत्र ५० । ० ता० २५ मार्च सन् १८५० को आलाहजरत मुजफरुद्दीन बहादुरवर्त्तमान शाहईरानका जन्मः तस्य चन्द्रकुंडलीयम् रवि ११ । १२ ॥



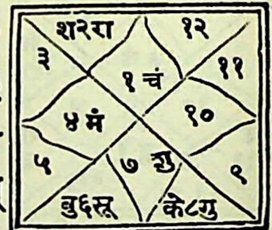
सम्व० १९२६ कार्तिकसुदी ८ गुरुवार ४३ । ० धनिष्ठा ५९ । ० ता० ११ नवंबर सन् १८६९ को श्रीमान् बिक्टरएमेन्युएल तीसरेवर्त्तमान-शाह इटेलीका जन्मः तस्य चन्द्रकुंडलीयम् रवि ६ । २६



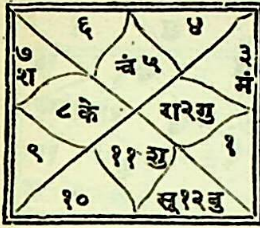
सम्व० १८९९ कुवांरवदी २ बुधवार ४५ । ० रेवती ४० । ० ता० २१ सितम्बर स० १८४२ को आलाहजरत दूसरे अब्दुलहमीदखां बहादुर वर्त्तमानसुलतानरूमका जन्म तस्य जन्मकुण्डलीयम् रवि ५ । ५ इष्ट ० । १० समये जन्म ॥



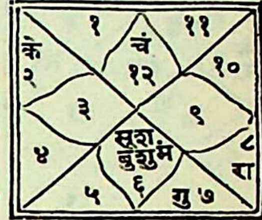
सम्ब० १९०९ कार्तिकवदी ६ बुधवार १३ । ० पुनर्वसु २६ । ० ता० ३ नवम्वर सन् १८५२ को आलाहजरत मिकादोबहादुर वर्त्तमान शाहन्शाह जापानका जन्मः तस्य चन्द्रकुण्लीयम् रवि ६ । १८



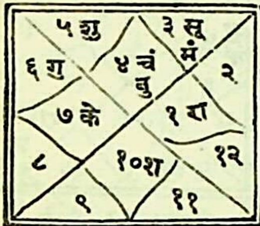
सम्बत् १९१० कुवांरवदी ४ बुधवार २१ । ० भरणी २७ । ० ता० २१ सितम्बर सन् १८५३ को श्रीमन्त खोललौनकोर्न बहादुर वर्त्तमान-श्यामनरेशका जन्म तस्य चन्द्रकुण्लीयम् रवि ५ । ६ ॥



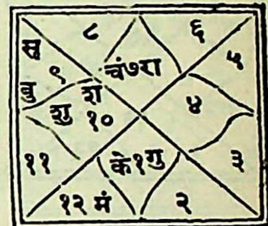
सम्वत् १८९२ चैत्र सुदी ११ गुरुवार मघानक्षत्र ५० । ० ता० ९ अप्रेल सन् १८३५ को आलाहजरत लेपोल्ड दूसरे बहादुर वर्त्तमान बेलजियम नरेशका जन्म तस्य चंद्रकुण्लीयम् रवि ११ । २७



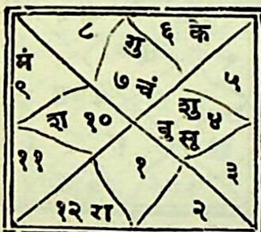
संवत् १९२० कुवांरवदी १ चंद्रवार ९ । ० रेवती ३४ । ० ता० २८ सितंबर सन् १८६३ को श्रीमंतकालों बहादुर वर्त्तमान पोर्तुगाल नरेशका जन्म तस्य चन्द्रकुण्डलीयम् रवि५।१२



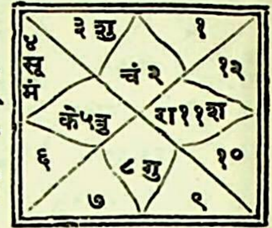
सम्वत् १९३१ द्वि० आषाढ़ सुदी १ मंगलवार ३८ । ० पुष्य ६० । ० ता० १४ जोलाई सन् १८७४ को आलाहजरत अब्बास दूसेर बहादुर वर्त्तमान मिशरनरेशका जन्म तस्य चन्द्रकुण्डलीयम् रवि २ । २९ ॥



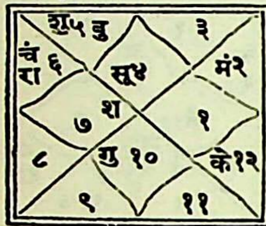
सं०१९०२ पौषवदी १० बुधवार १३।० स्वाति ५३।० ता०२४ दिसम्बर सन् १८४५ को श्रीमन्तजोर्जनरेश वर्त्तमानशाहन्शाह यूनानका जन्म तस्य चन्द्रकुण्डलीयम् रवि ८।१० ॥



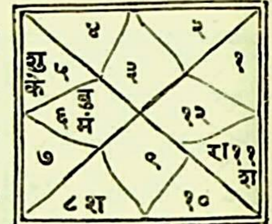
सं०१९३२ श्रावणसुदी ७ रविवार ३८।० स्वाति ५३।० ता०८ अगस्त सन् १८७५ को श्रीमन्त हुजूर महाराजा शमशेरजंग बहादुर वर्त्तमान नैपाल नरेशका जन्म तस्य चन्द्रकुण्डलीयम् रवि ३।२२ ॥



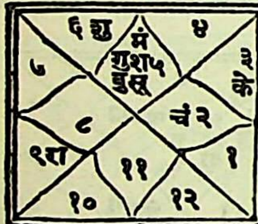
सं०१९३३ भादोंवदी ९ चन्द्रवार ११।० रोहिणीनक्षत्र ३४।० ता०१४ अगस्त सन् १८७६ को श्रीमन्त एलेकजेन्डर बहादुर बर्त्त-मनशाहसरालियाका जन्म तस्य चन्द्रकुण्डली यम् रवि३।२९ ॥



सं०१९२३ आषाढ़सुदी६ बुधवार ६।०हस्त नक्षत्र २४।० ता०१८ जोलाई सन् १८६६ को श्रीसूर्योदयात् इष्ट ११।० समये हुजूरनिजाम हैद-राबाद दक्षिणका जन्म रवि ३।३ लग्न ३।८ ॥



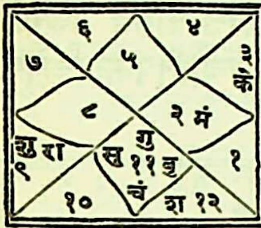
सं०१९३३ कार्तिकसुदी ४ शनिवार ज्येष्ठा नक्षत्र ६०।० श्रीसूर्य्योंदयात् इष्ट ३९।१० ता० ३१ अक्टूबर सन् १८७६ समये श्रीमन्तआली जाह महाराजा माधोराव सेंधिया बहादुर वर्त्त-मान गवालियर नरेशका जन्म रवि । ६।६।१७।० लग्न २। १७ ॥



सं०१९१८ भादोंवदी ९ गुरुवार रोहिणी न० ८।० श्रीसूर्य्योंदयात् इष्ट ०।१९ समये राज राजेन्द्र श्रीमहाराजाधिराज सवाईसर माधोसिंह बहादुर वर्त्तमान जैपुरनरेशका जन्म रवि ४।१३ लग्न ४।१९ ॥



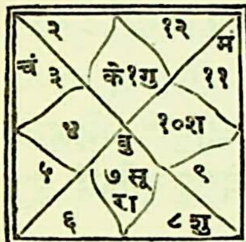
सं०१९१६ मार्गशीर्षकृष्ण २ शनिवार २८।७ रोहिणी ३९।२० परिघयोग ३।३१ इष्ट ५८।५७ समये श्रीमन्तमहाराजाधिराज राज राजेश्वर सवाई श्रीशिवाजीराव हुल्करबहादुर इन्दोरका जन्म रवि ६।२७ लग्न ६।२२ ॥



सं० १९३६ माघसुदी १ बुधवार २१।० शतभिषा ५५।० इष्ट ३२।१० समये श्रीमरुमहेन्द्र राजराजेश्वर महाराजाधिराज सरदारसिंह बहादुर वर्त्तमान जोधपुर नरेशस्य जन्म रवि १०।०।२३।१०। लग्न ४।२४ ॥



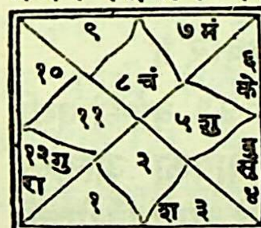
सं० १९३० भादोंसुदी १३ गुरुवार श्रवण नक्षत्र ६० श्रीसूर्य्योदयात् इष्ट ५२।५४ समये कर्कलग्नोदये हिज हाईनेस महाराव सर उमेदसिंह बहादुर वर्त्तमान कोटानरेशका जन्म रवि ४।१९ ॥



सं० १९०२ कार्तिकवदी ६ मंगलवार आर्द्रा नक्षत्र २०।० को हिज हाईनेस करनेल सर प्रतापसिंह बहादुर वर्त्तमान ईडरनरेशका जन्म ॥

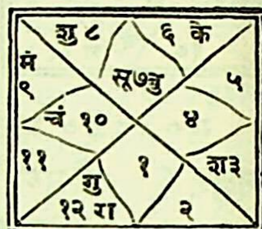


सम्बत् १९०६ मार्गशीर्षवदी ९ गुरुवार ५१।२२ मघा ५४।५५ वृद्धियोग ३५।३५ इष्ट २।३५ समये एच. एच. अमीरुद्दौला वजीरुल मुल्क नब्बाबसर इब्राहीमअलीखां वहादुर सोलतजंग वर्त्तमान टोंकनरेशका जन्म रवि ६।२३लग्न ७।१५ ॥



सं० १९१३ श्रावणसुदी ८ शनिवार ३१।४७ विशाखा ३३।२८ इष्ट २१।५ समये हिज हाइनेस पवांर कुल कमल दिवाकर महाराज श्रीराजा रावतविनैसिंह साहव बहादुर वर्त्तमान राजगढ़ नरेशस्य जन्म रवि ३।२४।५२।३४ लग्न ७।१७ ॥

इसके आगे कुछ कुण्डलियां संक्षिप्त इतिहास सहित लिखी जाती हैं जिनके अवलोकनसे पाठकोंको फलित ज्योतिषका विशेष परिज्ञान होगा ॥



सम्वत् १९१२ कार्तिकसुदी ८ बुधवार ४६।४१ श्रवण ३६।५६ गण्डयोग ३१।२६ श्रीसूर्य्यो दयात् इष्टम् १।० समये श्रीयुतसेठखेम राजजी श्रीवेङ्कटेश्वर प्रेसाध्यक्ष बम्बईका जन्म रवि६।२०।५३।३९ लग्न ६।२६।४१।१ ॥

उक्त सेठसाहब बम्बईमें निवास करते हैं आपका स्वभाव मृदु और चित्त उदारहै इस भारत वर्षमें आपके तुल्य नागरी प्रेसका इतनाबड़ा कारखाना और दूसरा नहीं है ३० वर्षके उपरान्त आपके भाग्यकी अत्यन्त वृद्धि हुई है आपके तीन पुत्र दोपुत्री मौजूदहैं आप सनातनधर्मके अचल प्रतिपादक और विष्णुभक्तिमें पूर्ण परायण हैं ॥



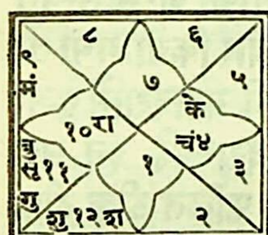
सं० १८७९ भादोंवदी ९ बुधवार ५६।० उत्तराभाद्रपद १६।२९ श्रीसूर्य्योदयात् इष्ट १३।० समये महाराज श्रीमहाराजा साहब श्रीशिवदानसिंहजी साहब बहादुर वैकुण्ठ वासी सुठालियानरेशस्य जन्म रवि ३।२३। लग्न६।२ ॥

१७ वर्षकी वयमें आप राजसिंहासनपर विराजे ३१ वर्षकी वयमें आपके महाराजकुमारका जन्म हुआ स्वभाव आपका अत्यन्त मृदु था ४२ वर्षतक आपने राज्यकिया ५९ वर्षकी वयमें विंशोत्तरी दशायां चन्द्र महादशामध्ये आपने स्वर्गवास किया ॥



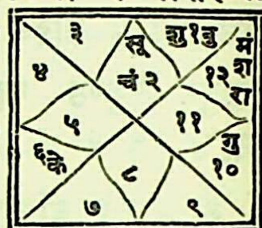
सं०१९१० भादों वदी ४ चन्द्रवार ५३। ४७ उत्तराभाद्रपद ११। २७ शूलयोगे ३८। १४ श्रीसूर्य्यादयात् इष्ट ४।४ समये महाराज श्रीमहाराजा साहब श्रीमाधोसिंहजी साहब बहादुर वैकुण्ठ वासी सुठालियानरेशस्य जन्म रवि ४।६ लग्न ४।२९ ॥

आप बड़े बुद्धिमान प्रबंधकर्त्ता नीति विचक्षण सरदारहुए बहुतसे सन्तानादि हुए उनमें केवल औरसपुत्र एक मैं मौजूदहूँ आपके चार विवाह हुए माताका सुख आजन्म पर्य्यंत रहा २८ वर्षकी उमरमें राजसिंहासनपर विराजे "श्लोक-भृत्यारिभवं राशीशःमार्कस्थःकुजे क्षितः॥ तद्दशांतरगतभौमा करोति निधनं ध्रुवम् ॥ इस श्लोकानुसार विंशोत्तरी दशाकी महादशा शुक्र तथा अन्तार्दशा भौमकी में ३३ वर्षकी वयमें आपने वैकुंठवास किया ॥



सं०१९३५ फागुन सुदी १२ बुधवार ४०।२१ पुष्य ३९। ३३ शोभन योग २७। ४६ता० ५ मार्च सन् १८७९ श्रीसूर्य्योदयात् इष्ट ३६।५ समये सज्जनोंका परिचर्य्यापरायण मुझ शम्भूसिंह सुठालियाधीश इस क्षुद्र ग्रन्थके कर्त्ताका जन्म हुआ रवि १०।२२।४५।३५ लग्न ६०।१२ वर्षकी वयमें अत्यन्त बीमारी हुई ८ वर्षकी वयमें पूज्यपिताका बैकुंठवास हुआ १६ वर्षकी वयतक इंग्रेजी फारसी संस्कृत आदि विद्याओंका अध्ययन रहा १७ वर्षकी वयमें प्रथम विवाह हुआ १७ वर्ष ६ मासके वयमें भारतगवर्नमेन्टसे राज्यशासनके अधिकार प्राप्त हुये शरीर सरोग रहताहै १९ वर्षकी वयमें माताका स्वर्गवास हुआ

ज्योतिष व फोटोग्राफीका अभ्यास रहताहै नेत्रसमीप दृष्टिहै अर्थात् " Short sighted " हूँ मस्तिष्क निर्बलता और शिरभ्रमकी बाधा प्राय रहतीहै हारमोनियम सितार आदि बाजे बजानेकाभी अभ्यासहै ॥

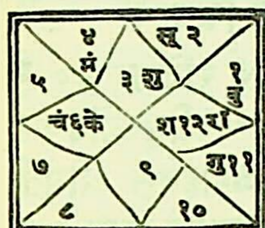


सं०१८७६ ज्येष्ठसुदी १ चंद्रवार ता०२४ मई सन् १८१९ श्रीसूर्य्योदयात् इष्ट ० । ४० समये श्रीमती राजराजेश्वरी भारतेश्वरी श्रीमहाराणी बिक्टोरिया विजयीनीका जन्म रवि १। ११ लग्न १ । १४ ॥

श्रीमतीका आख्यान जगत् प्रसिद्धहै इसलिये विशेष लिखनेकी आवश्यकता नहीं टेहरी निवासी पंडित महीधरशर्म्माने जो श्रीमतीकी कुण्डली मेरेपास भेजीहै उसमें सम्बत् १८७७ ज्येष्ठसुदी ११ भौमवार हस्तनक्षत्र मिथुन लग्नमें श्रीमतीका जन्म होना लिखाहै अब नहीं मालुम होता कि इन दो इष्टोंमेंसे श्रीमतीका वास्तविक जन्मकाल कौनसाहै गवर्नमेन्ट दफ्तरोंमें श्रीमतीका जन्म सम्वत् १८७६ में होना लिखाहै अतएव इसी इष्टपर विचार किया गया तो मालुम हुआ किं श्रीमतीका परलोकवास शुक्रकी महादशामें हुआ है जो लग्नेश और षष्ठेशहै तथा पञ्चमेश द्वादशस्थहै इन सब कारणोंसे श्रीमतीकी वर्त्तमान जन्मकुण्डलीका फलित ठीक ठीक नहीं मिलताहै बल्कि सम्वत् १८७७ के जन्मेष्टकालपर बनी हुई जन्मकुण्डलीका फलित बहुत ठीक मिलताहै हमने इस विषयमें बहुत आन्दोलन किया परंतु वास्तविक सिद्धान्त कुछभी निर्द्धारित नहीं हुआ श्रीमतीके सम्वत् १८७७ के जन्मेष्ट कालके ग्रह ये हैं इनके देखनेसे पाठकोंको विदित होजायगा कि श्रीमतीका प्रत्यक्ष फलित किस जन्म कुण्डलीसे मिलता है सं० १८७७ ज्येष्ठ शुक्ल एकादश्यां भौमे ९ । १९ हस्तभे ४९।१९ वृषार्कगतांशाः १९

मिथुनोदये श्रीमती राजराजेश्वरी महाराणी विक्टोरियाका मतांतरेण जन्म ॥

अथ मतांतर जन्मकुण्डली।



इसी जन्म कुंडलीमें भाग्येश राज घरमें है और राज्येश भाग्यघरमें है ज्योतिषमतानुसार यह बहुत बड़ा राजयोग है पाराशरीमें लिखा है कि-

भाग्यकर्माधिनेतारौ अन्योन्याश्रयसंस्थितौ ॥ राजयोगावितिप्रोक्ता विख्यातो विजयी भवेत्॥ १ ॥

"इसी योगका माहात्म्य भावकुतूहलमें इसतरह लिखाहै कि"

यदा पुण्यस्वामी दशमभवने पुण्यभवने बली कर्माधीशो भवति भवितामेव जनने॥समुद्रांतं कीर्तिर्विजयगमने वैरिपटली धनुर्ज्याटंकारैर्भजति चकिता भीतिपदवीम् ॥

अर्थ-जिनके नवमेश दशमस्थ हो और दशमेश नवमस्थहो तो ऐसे योगवाले राजाकी कीर्ति आसमुद्रांत फैलतीहै और जब उस राजाकी चढ़ाई शत्रुपर होतीहै तब धनुषके शब्दसेही शत्रु समूह चकित होकर भयभीत होते हैं ॥



सं०१९०२ फागुन सुदी१३ मंगलवार ५६। १९ आश्लेषानक्षत्र ३३ ।१७ सुकर्मायोग ५५। २७ श्रीसूर्य्योदयात् इष्टम्० । १ समये आला हजरत मलिकमोअज्जम तीसरे आलेकजेन्डर भूतपूर्व शाहनशाह जाररूसेशस्य जन्मः रवि १० । २१ ॥

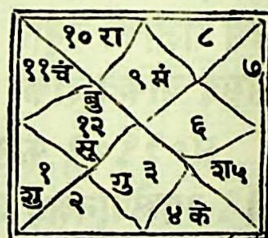
२३ वर्षकी उमरमें आपके पुत्रजन्म हुआ जो वर्तमान रूस नरेशहैं ३६ वर्षकी वयमें आप राजसिंहासनपर बिराजे और १३ वर्षराजकरके तारीख १ नवम्बर सन् १८९४ को ४९ वर्ष ७ महीना २२ दिनकी वयमें आपने परलोक वास किया ॥



सं० १८९५ श्रावणसुदी ७ रविवार घ० २ पल ८ स्वाति नक्षत्र ६०। ० श्रीसूर्य्योदयात् इष्ट १३। ४५ समये हिजहाइनेस श्रीमती नव्वाबशाहजहां बेगमसाहबाभूतपूर्व रईसाभूपालेशाया जन्म ॥

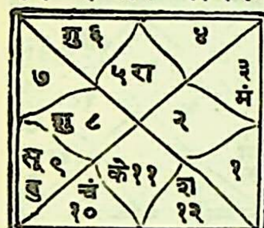
१७ वर्षकी वयमें श्रीमतीका विवाह हुआ २० वर्षकी वयमें कन्या उत्पन्न हुई जो वर्त्तमान रईसाभूपाल हैं २९ वर्षकी वयमें पतिका देहान्त हुआ और ३३ वर्षकी वयमें श्रीमतीने पुनर्विवाह किया ३० वर्षकी वयमें राजसिंहासनपर बिराजी और तैंतीस वर्ष राज करके तारीख १६ जून सन् १९०१ को ६३ वर्षकी वयमें आपने इसजहांनसे रहलत फरमाई श्रीमतीका स्वभाव बड़ा कोमल और उदार था आपको तामीरात (शिल्प) का बड़ाशौक था ॥

सं०१९१६ चैत्रकृष्ण १३ भौमवार २१।० शततारका नक्षत्र ४९।० साध्ययोगे २३।० श्रीसूर्य्योदयात् इष्ट ४५।२९ समये श्रीमन्त राजारावतवल बहादुरसिंह साहब बहादुर भूत पूर्वराजगढ़ नरेशस्य जन्म रवि ११।९ ॥



आप २३ वर्षकी वयमें राजसिंहासन पर विराजे, छे विवाह आपके हुये थे श्रीमानका स्वभाव कोमल उदार और विनोदप्रिय

तथा मृगयाशील था श्रीमानके कई सन्तान होकर नष्ट होगये अतएव आपके कोई पुत्र बली अहद नहीं था ता० १९ जनवरी सन् १९०२ को आपने १९ वर्ष राज करके ४२ वर्षकी वयमें बैकुण्ठवास किया उसवक्त बिंशोत्तरी मतेन बुधमहादशामें शुक्र का अन्तर आपको था ॥



सं० १९०६ पौष सुदी ३ सोमबार उत्तराषाढ़ नक्षत्र ३४।० को सिंह लग्नोदये हिजहाइनेस महाराजाधिराज महारावल वेरी सामलजी बहादुर भूतपूर्व जेसलमेरनरेशस्य जन्म रवि ८।३ ॥

आपके तीन विवाह हुये थे १९ वर्षकी वयमें राजासिंहासन पर विराजे २४ वर्षकी उमरके उपरान्त शरीर रोगार्त रहा सन्तान कोई नहीं था ४१ वर्षकी वयमें ता० १० मार्च सन् १८९१ को परलोकवास किया ॥

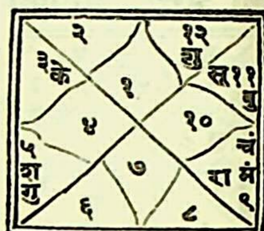


सं० १९०४ क्वार वदी ६ गुरुवारको श्रीविक्रमाजीतजी साहब वर्तमान राज्यच्युत राघोगढ़ नरेशकस्य जन्म रवि ६।१३।१९।४९ ॥

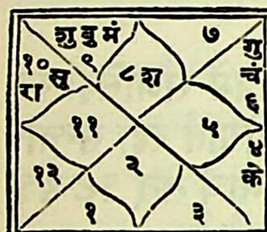
आपका शरीर स्थूलहै दो बिवाह हुये ९३ वर्षकी उमरतक आप कुँवरपदवीमें रहे और राजका काम करते थे ता० २९ जोलाई सन् १९०० को आपके पिताके परलोकवास होनेके बाद कछु ऐसे विघ्न उपस्थित हुये कि आप राजसे अधिकार हीन होगये यह राज बहुत पुराना है और रेजीडेन्सी गवालियरके आधीन है आपके अर्श (बवासीर) की बीमारी अत्यन्त रहती है और कोई औरस सन्तान नहीं है ॥



सं० १८ ९० माघ बदी २ को कविराजा मुरारदानजी मेम्बरकौंसल जोधपुरका जन्म ॥



सं० १९ १७ फाल्गुन बदी १०को पण्डित सुखदेव प्रसादजी सेक्रेटरी मुसाहिब आला जोधपुरका जन्म ।

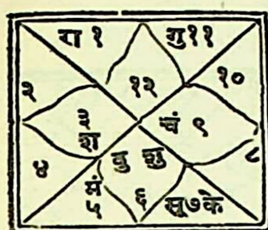


सं० १९५४ माघबदी ६ गुरुवार ५७ । १८ उत्तरा फाल्गुणी ४१ । ३९ शोभनयोग २२ । ५४ श्रीसूर्योदयात् इष्ट ५३ । २ समये श्रीमहाराजकुमार श्रीसुमेरसिंहजी साहब बहादुर वर्तमान वली अहदराजजोधपुरकस्य जन्म रवि ९ । ० । ३८ । ५८ ॥



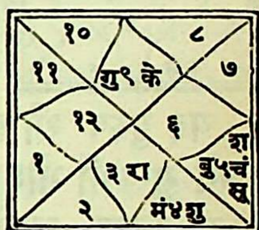
सं० १९०७ भाद्रपद शुक्ल ३ चंद्रवार ता० ९ सितम्बर सन् १८५० को आधी रातके अनन्तर ४ घण्टा ३७ मिनट पर श्रीबाबू हरिश्चंद्रजी काशीस्वर्गबासीका सिंह लग्नोदये जन्म हुआ ॥

बाबू हरिश्चंद्रजी बनारसवालेका नाम विद्वानोंसे छिपा नहीं है उक्त कुण्डली आपहीकी है आपकी अवस्था जितनी गणित ज्योतिष पर थी उतनी फलित ज्योतिष पर नहीं थी काव्य अलंकारका आपको पूरा शौक था शोकहै कि तरुणावस्थामेंही आपने इस संसारको त्याग परलोकका मार्ग लिया ॥



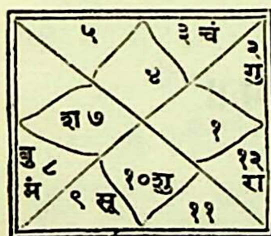
सं० १९१२ क्वार सुदी ६ भौमवार ३६।२४ मूलनक्षत्र २९। १२ शोभन योग २७।२९ इष्ट २९। २९ समये सुप्रसिद्ध पण्डित भीमसेन शर्म्मा इटावानिवासीकस्य जन्म ॥

आप संस्कृतके पूर्ण विद्वान हैं और स्वामीदयानंद सरस्वतीके पट्ट शिष्य रहे आपने वेद उपनिषदादिके अनेक भाष्य रचे हैं और व्याकरण आपको अच्छा प्रखर है कई वर्षोंतक आपने "आर्य्य सिद्धांत" मासिक पत्र निकाला अब आर्य्य समाजसे आप अलग होकर सनातनमतका प्रतिपादन करते हैं संतानादिक आपके मौजूद हैं शरीर आपका यदा कदा रोगार्त रहता है आप इस देशमें भारत भूषण हैं द्रव्यका संचय मामूलीहै ॥



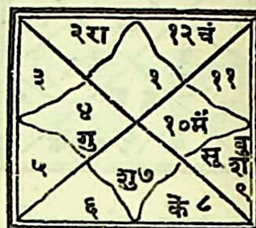
सं० १९४६ भादों वदी ३० चन्द्रवार मघा नक्षत्र ४२।२० दिनमान ३१।२३ इष्ट २९।३ समये श्रीसेठ खेमराजजी श्रीवेङ्कटेश्वर प्रेसाध्यक्ष बम्बईकस्य श्रीरंगनाथजी ज्येष्ठपुत्रः तस्य जन्म रवि ४।१०।४४।३२॥

उक्त कुंडलीके ग्रह बहुत उत्तम हैं राजयोग भाग्ययोग सुख योग सब अच्छे पड़े हैं।



सं० १९५० पौष सुदी १ रविवार २।४ पुनर्वसु नक्षत्र ४८।५४ ब्रह्मयोगे ६।४ दिनमानम् २७।२२ इष्टम् ३२।३९ समये श्रीसेठ खेमराजजी श्रीवेङ्कटेश्वर प्रेसाध्यक्ष बम्बईकस्य श्रीनिवासजी कनिष्ठ पुत्रः तस्य जन्म रवि ८।१०।३८।४३ ॥

आपके भी ग्रह योग बहुत अच्छे हैं ॥



सं० १९२८ मार्गशीर्ष सुदी ८ भौमवार १८। ३० उत्तराभाद्रपदे ५२। ३३ व्यतीपात योगे २८। ५४ वृष्टि करणे श्रीसूर्योदयात् इष्टम् १८। १५ समये जन्म रवि ८। ५ लग्न ०। १६॥

इस पुरुषका वर्ण वैश्य रंग गौर था वस्त्रके व्यापारसे इसके अत्यन्त लाभ हुआ इसके एक पुत्र एक कन्या हुई और ३२ वर्षकी वयमें प्लेगके रोगसे इसपुरुषकी मृत्युहुई ॥



सं० १९२३ माघसुदी ४ भृगुवार ३९। ४० उत्तराभाद्रपदे ४४। ४३ सिद्धिनाम योगे श्रीसूर्योदयात् इष्टम् ५६। ५२ समये जन्म रवि ९। २७। ४९। ५ लग्नं ९। २५। ५४। २३

यह पुरुष शोभायमान और सभाचतुर तथा राजमान्य था इसने सुख भी भोगा और कारागृह वास भी किया अंतमें निस्संतान होकर अपने पिताकेही जीवनकालमें ३४ वर्षकी वयमें हैजेसे मरगया पाठकोंके अवलोकनार्थ दोनों कुंडलियां हैजे और प्लेगसे मृत्युयोगवाली लिखीगई हैं ॥

इति कुडणलीचक्रप्रकरणं समाप्तम् ॥

मौजूद पञ्चांगसे आगेकेपञ्चांग बनानेकी विधि।

दो०—तिथी बार इकबारमें, घड़ी अठारह घाल॥
तीननक्ष तेरह घड़ी, योगदोय पञ्चाल॥
पड़वांथी पांचोमिले, बीजथकी छठहोय॥
बारससे पड़वां मिले, शुद्ध पञ्चांग यह होय॥

अर्थ--वर्तमान पञ्चांगकी तिथिमें चारमिलाना और उसकीघड़ीमें अठारह मिलाना और उसदिनके नक्षत्रमें तीन मिलाना और नक्षत्र घटीमें तेरह मिलाना और उसदिनके योगमें दो मिलाना फिर योग घटीमें ४९ मिलाना ऐसा करनेसे आगामी चान्द्रवर्षके तिथि नक्षत्रादि मयघड़ियोंके स्थूलमानसे निकल आवेंगे पड़वांसे ५ निकलेगी दूजसे ६ निकलेगी और बारससे आगामी पड़वां प्रगटहोगी. मतलब यहहै कि चान्द्रवर्ष ३५८ दिनका होताहै अतएव वर्त्तमान दिनसे ३५८ दिन व्यतीत होनेपर पूर्वोक्त विधिसे पञ्चांग मिलजायगा और सूर्य्यके अंशमें ७ दिनकी कसर रहेगी क्योंकि सौरवर्ष ३६५ दिनका होताहै॥

उदाहरणम्॥ सम्बत् १९६०के चंडू पञ्चांगमें चैत्र सुदी ८ रविवार २४।५९ पुनर्वसु नक्षत्र ४५।४७ अतिगण्ड योग २१।५१ रवि ११।२१ हैं अब आगेका पञ्चांग बनानेके लिये तिथि ८ में चारजोड़े तो तिथि १२ हुई और घड़ी २४ में १८ मिलाए तो ४२ घटी हुई पुनर्वसु नक्षत्रमें ३ मिलानेसे मघा नक्षत्र आया और उसकी घड़ी ४५ में १३ मिलानेसे ५८ घटी हुई और अतिगण्ड योगमें २ मिलानेसे धृतिनाम योग आया अर्थात् आगामी वर्षकी तिथि १२ चन्द्रवार ४२ घड़ी मघा नक्षत्र ५८ घड़ी और धृति योग उसदिन होना चाहिये अब सम्बत् १९६१ का चण्डू पञ्चांग देखनेसे मालुम

हुआ कि चैत्र सुदी १२ को चन्द्रवारहै और तिथि घटी ४२।३१ है और मघा नक्षत्र ५८।३१ धृति योग और सूर्य्य ११।१४ हैं पेश्तर कहाजा चुकाहै कि चान्द्रवर्षके गणित होनेसे रवि सूर्य्यमें ७ अंशोंकी कमी होवेगी सो ऐसाही हुआ कि ११।२१ और ११।१४ रवि में ७ का अन्तर होताहै इसी तरह सम्पूर्ण आगामी पञ्चांग वर्त्तमान पञ्चांगसे बन सक्ताहै ॥

अथ यन्त्र बनानेका श्लोक ।

वांछाकृतार्धं कृतरूपहीनं धने गृहे षोडश सप्त चाष्टौ॥ तिथौ दशांके प्रथमे च कोष्ठे द्विसप्तषट्त्र्यष्ट कुवेदबाणाः ॥ १ ॥

अर्थ–सोलह कोठेका एक यन्त्र बनावे और जिस अंक संख्याका यन्त्र तयार करनाहो उस संख्याको आधी करना और उसमें एक घटाना जो कुछ रहे उसको यन्त्रके दूसरे घरमें रखना और उसमेंसे एक घटाकर शेषको नवें घरमें रखना उसमेंसे एक घटाकर शेषको सोलहवें घरमें रखना उसमेंसे एक कम करके शेषको सातवें घरमें रखना जो कुछ शेष बचे उसमेंसे एक कम करके आठवें घरमें रखना शेषबचे उसमेंसे एक कमकरके पन्द्रवें घरमें रखना उसमेंसे एक कम करके शेषको दशवें घरमें रखना उसमेंसे एक कम करके शेषको प्रथम घरमें रखना और फिर जितने घर बाकी बचेहों उन घरोंमें २–७–६–३–८–१ चार और ५ यह अंक क्रमानुसार रखदेना ऐसा करनेसे वांछित यन्त्र बन जावेगा और क्रमानुसार प्रत्येक चार कोठोंकी संख्या सदा एक रहेगी चाहे किधरहीके चार कोठोंके अङ्कस्थ संख्या जोड़ी जावे एक दूसरेसे मिलती रहेगी ॥

उदाहरण॥ जैसे किसीने ३४ का यंत्र बनाना चाहा तो १६ कोठेका यंत्र खींचलेना चाहिये अब ३४ के आधे १७ उसमें से गया १ तब रहे १६ इनको यंत्रके दूसरे कोठेमें स्थापित करना चाहिये अब एक एक कम करके नवें, सोलहवें, सातवें, आठवें, पंद्रहवें दशवें और पहले कोठेमें क्रमानुसार १५-१४-१३-१२-११-१०और ९ रखना चाहिये और खाली घर जो तीसरा, चौथा, पांचवा, छठा ग्यारहवां बारहवां तेरहवां और चौदहवां बचे इनमें २-७-६-३-८-१-४-५-क्रमानुसार रक्खेगये तो ऐसा करनेसे यह यंत्र बना॥

९	१६	२	७
६	३	१३	१२
१५	१०	८	१
४	५	११	१४

अथ यजमानके प्रति किसी ज्योतिषीका आशीर्वाद॥

श्लोक-इष्टं खचंन्द्रगुणितं शशिंना समेतं पक्षांहतं युगंहतं निहतं शरेंण। तच्छेषकं शरंकरेण वसुघ्नमब्दं त्वंजीव हे नृपवरेन्द्र सुखी नितांतम्॥ १॥

अर्थ-इस श्लोकमें ज्योतिषीने यजमानको १२० वर्षतक जीने की आशिष दीहै कोई सा भी इष्ट अंक लेलो उसको १० से गुणो और गुणनफलमें १ जोड़ो उसको दुगुना करो फिर उसे चतुर्गुण करो फिर गुणनफलको ५ से गुणो और जो कुछ आवे उसमें २५ का भागदो शेष को ८ से गुणो और जो अंक आवे उतनेही वर्ष तक हे नृपवरेन्द्र! आप सुखपूर्वक जीवें॥

उदाहरण॥ जैसे किसीने अपने मनमें दो लिये उनको १०से गुणातो २०हुए उसमें १जोड़ा२१हुए उसको२ से गुणा४२हुए इसको ४सेगुणा१६८ हुए इनको५से गुणा८४०हुए इनमें२५का भाग दिया तो शेष १५ बचे इनको ८ से गुणा तो १२० हुए इसी तरह कोई

सी इष्टसंख्या लीजावे उनका गणित करनेसे अन्तिम अंक १२० आवेगा यही ज्योतिषीका चातुर्य्यहै ॥

अथ संक्षिप्त संवत् फलम्।

जिस वर्षमें शनैश्चर मकर कुम्भके आवें और जहांतक ये सम्पूर्ण मकर राशि और पूर्वार्द्ध कुम्भ राशितक रहें उतनेही दिनोंतक मालवेमें अत्यन्त सुकाल रहेगा और गेंहूँ चना इत्यादि वसन्तऋतु की फसल बहुत अच्छी आवे जब शनि गुरुकी राशिपर आवें तो अकाल पड़े समस्त अन्न महँगे हों जब शनि अथवा गुरु वक्रीहोवें तो अन्नकी महर्घता करें और मंगल वक्री होवे तो ओले और पत्थर गिरें जब मंगल सूर्य्यके क्षेत्रमें हो और सूर्य्य मङ्गलके क्षेत्रमें हो तो अग्निका अत्यन्त उपद्रव होवे कई मकानात अग्निके लगनेसे नष्ट हो जावें यह योग प्रत्यक्ष अनुभव सिद्धि होनेसे यहां लिखे गएहैं वैसे तो ग्रन्थोंमें अनेक योगायोग लिखे हुएहैं जिनका पारावार नहीं ॥

अथ संक्षिप्त सिद्धान्तप्रकरणम्।

सिद्धान्त गणित बहुत बड़ाहै और अनेक ग्रन्थोंमें छप चुकाहै उसको पुनः प्रकाशित करना पिष्टपेषणहै हां अंग्रेजी रीत्यनुसार ज्योतिष संबन्धी जितना गणित जानना उचितहै उतना यहां लिखना आवश्यक समझकर कुछ बातें लिखी जातीहैं।

पृथ्वीके नकशेमें जो रेखाएँ उत्तरसे दक्षिणको जातीहैं उनका नाम देशांशहै और जो रेखाएँ पूर्वसे पश्चिमको जातीहैं उनका नाम अक्षांशहैं अपने स्थानका समय जानकर किसी दूसरे स्थानका समय मालुम करना हो तो देशांशका संस्कार देनेसे अभीष्ट नगरका टाइम मालुम होताहै जो स्थान अपने स्थानसे पूर्व दिशामेंहै वहां सूर्य

यहांके कालसे अधिक काल ठहरताहै और जो देश पश्चिममेंहै उनमें अपने यहाँके समयसे थोड़ा दिनमान होताहै पूर्व पश्चिम जाननेकी पहिचान यह है कि जो देशांश अपने स्थानके देशांशसे अधिक हो तो उस स्थानको सदा पूर्वमें समझना चाहिये और जो अपने स्थानके देशांशसे अभीष्ट स्थानके देशांश न्यून हो तो वह सदा पश्चिममें समझना चाहिये नक्शेमें दक्षिणोत्तर रेखाओंके आदि अन्तपर यह देशांश लिखे रहते हैं जैसे कलकत्ता ८२ देशांश पर स्थितहै और बम्बई ७३ देशांश पर स्थितहै और कलकत्तेके देशांश बम्बईके देशांशसे अधिकहैं इस लिये मालुमहुआ कि बम्बईसे कलकत्ता पूर्वमें है अब यदि कोई पूछे कि बम्बईमें दिनके ८ बजेहैं तो कलकत्तामें इस वक्त क्या टाइम होगा ? ऐसे प्रश्नोंके उत्तर देनेके लिये यह रीति सदा ध्यानमें रखना चाहिये कि स्वस्थान और अभीष्टस्थानके देशांशोंके अन्तरमें १५ का भागदेना लब्धिको घण्टा समझना चाहिये और शेषको ६० से गुणकर उसमें फिर १५ का भागदेना जो लब्धि आवै वे पलहैं अब स्वस्थान अभीष्टस्थानसे पश्चिममें हो तो स्वस्थानके समयमें उक्त १५ के भागसे लब्ध घंटा मिनट जोड़ देनेसे अभीष्टस्थानका समय मालुम हो जावेगा और जो स्वस्थान अभीष्टस्थानसे पूर्वमें हो तो उक्त घण्टा मिनट स्वस्थानके समयमेंसे घटानेसे जो शेष रहे वही अभीष्टस्थानका समयहै ॥

उदाहरण—कलकत्तेका देशांश ८२ है और बम्बईका ७३ है दोनों का अन्तर ९ है इनमें १५ का भाग दिया लब्धि ० आई शेष ९ को ६० से गुणा तो हुए ५४० इसमें १५ का भाग देनेसे ३६ मिनट आये अब कलकत्तेसे बम्बई पश्चिममें है इसलिये ८ घण्टेमें ३६ मिनट जोड़े तो मालुम हुवा कि जिस वक्त बम्बईमें ८ बजेंगे कल-

कत्तेमें ८ बजकर ३६ मिनट व्यतीत होंगे, १५ के भाग देनेका कारण यह है कि ३६० देशांशोंको सूर्य्य एक दिन रात अर्थात् २४ घण्टेमें तै करतेहैं तो १५ अंश चलनेमें सूर्य्यको १ घण्टा लगा अब १५ अंशमें तो चलनेमें सूर्यको १ घण्टा लगताहै तो इतने अंश चलनेमें सूर्यको कितना समय लगेगा इस त्रैराशिक अनुपातसे १५ भाजक होवेगा इसीलिये दो स्थानोंके देशांशांतरमें १५ को भाग दिया जाताहै एक घण्टेमें ६० मिनट होतेहैं इसलिये ६० मिनटमें १५ का भाग देनेसे मालुम हुआ कि ४ मिनटमें सूर्य १ अंश चलतेहैं ॥

दूसरा उदाहरण ।

प्रश्न–जहां हम जहाजमें थे वहां सबेरेके ७ बजेथे और लन्दनमें उस समय रातके ११ बजेथे तो बताओ हम लन्दनसे किस दिशा कितने देशांशके फासले पर थे ॥

उत्तर–ऐसे सवालोंमें सदा मध्याह्न कालसे गणना करना चाहिए अब मध्याह्न कालसे रात्रिके ग्यारह बजेतक ११ घंटे हुए और सबेरेकी ७ बजे तक १९ घंटे हुए ११ से १९ अधिक हैं इस लिए मालुम हुवाकि जहाज लन्दनसे पूर्वमें है क्योंकि पश्चिमके घंटेसे पूर्वका घंटा सदा आगे रहताहै अब फासला जाननेके लिए यह देखना चाहिए कि लन्दनके घंटे और अपने स्थानके समयमें कितना अंतरहै तो देखनेसे मालुम हुवा कि अपना घंटा लन्दनके घण्टेसे ८ घण्टा आगेहै और यह पाहिले कहचुकेहैं कि एक घण्टेमें सूर्य्य १५ देशांश चलते हैं अतएव ८ घण्टाको १५से गुणने से १२० देशांश आया बस मालुम होगया कि हम लन्दनसे पूर्व दिशामें १२० देशांशकी दूरीपर हैं यही उत्तरहै ॥

तीसरा उदाहरण ॥ लन्दन नगरमें दिनके ११ बजे हैं और हम जहांपर मौजूदहैं वहां कोई घण्टा नहीं है परंतु हमारे स्थानके पासही एक दूसरा शहरहै जो हमारे स्थान से ६० देशांश के फासले पर पश्चिममें है और उस शहरमें रात के १ बजेहैं तो बताओ हम जहां हैं वह स्थान लन्दनसे किस दिशाहै और वहां क्या टाइमहै ॥

उत्तर–मध्याह्नसे दिनके ११ बजे तक २३घण्टे होतेहैं और रातके १ बजे तक १३ घण्टे होतेहैं तो उस शहरसे लन्दनका घण्टा १० घण्टा आगेहै अतएव मालुम हुआ कि लन्दन उस शहरसे १५० देशांश के फासले पर पूर्वमें है और प्रश्नकर्त्ता उस शहरको ६० देशांश के फासले पर पश्चिममें बतलाताहै इस वास्ते ६० में १५ का भाग देनेसे ४ घण्टे हुए इन ४ को १० घण्टेमेंसे घटाए तो ६ रहे इन६ को १५ गुणाकिये तो ९० आए अतएव मालुम हुआ कि लन्दनसे ९० देशांशके फासले पर पश्चिममें प्रश्नकर्त्ताहै इन ६ घण्टेको लन्दनके टाइम ११ बजे दिनकेमेंसे घटाए तो प्रातःकालके ५ बजे उत्तर आया बस मालुम हुआ कि प्रश्नकर्ताके स्थानमें उस समय प्रातःकालके ५ बजे हैं ॥

शिष्य–महाराज चन्द्रग्रहण होताहै तब स्पर्शकालसे लगा मोक्षकालतक पूर्व पश्चिम निवासी लोक कितने कितने दरजे (दशांश) वाले देखतेहैं इसकी कोई रीति होवे तो कहैं ॥

गुरु–जितनी रात गये ग्रहण लगे और जितनी देर तक रहे दोनों कालको जोडकर उस कालके दरजे (देशांश) करलेना उतने दरजे (देशांश) पश्चिमवाले देखेंगे और जितनी रात गए ग्रहण लगे उतनी रातको १२ घण्टेमेंसे घण्टा देना जो रात बाकी बचे उन घण्टोंके दरजे (देशांश) करना उतने पूर्व दरजे वाले देखेंगे ॥

उदाहरण–जैसे रातके ९ बजे ग्रहण लगाहै और १ घण्टेतक

रहा तो कहो कितने कितने पूर्व पश्चिम दरजे (देशांश) वाले देखेंगे अब देखो रातके ९ बजे ग्रहण हुआ तो ३ घण्टे रात गई और १ घण्टेतक रहा ऐसे ३ और १ चार घण्टे हुए इन ४ को १५ से गुणा तो ६० दरजे (देशांश) पश्चिमकी दूरीवाले देखेंगे और ३ घण्टेको १२ घण्टेमेंसे घटाए तो बाकी ९ घण्टे रात रही इन ९ को १५ से गुणा तो १३५ दरजे (देशांश) पूर्वकी दूरीवाले देखेंगे ॥

शिष्य–हर एक महीनेमें सूर्य्य कितने कितने अंश चलतेहैं और दिन छोटे बड़े क्यों होतेहैं ऋतु भेद होनेका कारण क्याहै ॥

गुरु–सायन मेषादिसे याने मार्चकी २२ तारीखसे सूर्य्य उत्तर को जातेहैं पहिले महीनेमें १२ अंश दूसरे महीनेमें ८ और तीसरे महीनेमें ४ अंश ऐसे तीन महीनेमें २४ अंश उतर जातेहैं और इसी क्रमसे सूर्य्य पीछे फिर आते हैं याने चौथे महीनेमें ४ अंश पांचवें महीनेमें ८ अंश और छठे महीनेमें १२ अंश इसतरह पीछे विषुवत् रेखापर आ जाते हैं फिर पीछे सितम्बरकी २२ तारीखसे अक्टूबरकी २२ तारीखतक एक महीना हुआ उसमें १२ अंश फिर नवम्बरकी २२ तारीखतक ८ अंश और दिसम्बरकी २२ तारीख तक ४ अंश इसक्रमसे दक्षिण परमक्रांति २४ अंश जाते हैं और जिस क्रमसे जाते हैं उसीक्रमसे पीछे मार्चकी २२ तारीखको विषुवत्रेखा पर आते हैं। अब देखो सूर्य्यके उत्तर दक्षिण जानेके सबबसेही बसन्तादि छः ऋतु होते हैं और दिनरातभी बड़े छोटे होते हैं जब सूर्य्य उत्तर गोलमें जाते हैं तब विषुवत्रेखासे उत्तरवालोंको दिन बड़ा और रात छोटी होती है और दक्षिणवालोंको रात बड़ी दिन छोटा होता है उत्तरवालोंको यहांतक दिन बड़ा होता है कि उत्तर ६६ अक्षांशसे लेकर ध्रुवतक जो लोक हैं उनको कहीं ८ दिनका

दिन होता है याने आठदिनतक सूर्य्यको देखते हैं कहीं १६ दिनका कहीं एक महीनेका और उत्तर ध्रुवपर ६ महीनेका दिन होता है इसी क्रमसे दक्षिणगोलमें कहीं ८ दिनकी रात कहीं १६ दिनकी कहीं १ महीनेकी रात होतीहै और दक्षिण ध्रुवपर ६ महीनेकी रात होतीहै जब सूर्य्य दक्षिणगोलमें जाते हैं तब दक्षिणवालोंको दिन बड़ा रात छोटी होतीहै और उत्तरमें रात बड़ी दिन छोटा होताहै दक्षिणमेंभी एक दिनके दिनसे ६ महीनेका दिन होता है तब उत्तर में इसी क्रमसे ६ महीनेतककी रात होती है ये बातें अँग्रेजीगोलमें प्रत्यक्ष नजर आती हैं और समझी हैं ॥

शिष्य–वाह वाह महाराज मैंने यह बात पुराणोंमें सुनीथी कि देवताओंके ६ महीनेका दिन और ६ महीनेकी रात होती है परन्तु आपने एकमहीनेके दिनसे लगाकर छः महीनेका दिन पृथ्वीपरही बतलाया यह नई बात है ॥

अब यह बात कहें कि सूर्य पहिले महीनेमें १२ अंश दूसरेमें ८ और तीसरेमहीनेमें ४ अंश चलते हैं तो पहिलेमें दूसरेमें तीसरेमें एक अंशके भोगनेको कितने कितने दिन लगेंगे? ॥

गुरु–पहिलेमहीनेमें १ अंश भोगनेको अढ़ाईदिन लगते हैं दूसरेमें ३॥ दिन और तीसरेमें ७। दिन लगते हैं इसीतरह उत्तर दक्षिण जाने आनेमें यही रीति जानना चाहिये ॥

शिष्य–सिद्धांतशिरोमणिमें बांसकी पिंचीका गोल बांधा है और अँग्रेजीमें काष्ठका भूगोल बनाया है इनदोनोंमें विशेष कौन है? ॥

गुरु–सिद्धांतकी पिंचीके भूगोलमें तो क्रांतिक्षेत्र और अक्षक्षेत्र इन्होंकी जीवासे भुज कोटि कर्ण दिखानेके वास्ते हैं जैसे द्वादशअंगुलका शंकु कोटी है पलभा भुजहै अक्ष कर्ण है यह पहिला अक्षक्षेत्र है क्रांतिक्षेत्र और अक्षक्षेत्र मिलकर सैकड़ों क्षेत्र बनते हैं पिंचीका

गोल जितने अक्षांशका बांधते हैं वहींका होताहै और जगहका नहीं बनता अब अँग्रेजीके काष्ठके गोलपरतो सबबातें प्रत्यक्ष नजर आतीं हैं देखो पृथ्वीके मुख्य ५ भाग समुद्रके मुख्य ५ भाग विषुवत्रेखा क्रांतिवृत्त याम्योत्तर वृत्तक्रांति सायन निरयन राशिके चिह्न सब-बनाए हैं और लंकाका क्षितिज वृत्त जिसे उन्मंडल बोलते हैं इस चतुराईसे बनाया है कि उत्तर दक्षिण गोलमें जिसस्थानका गोल बनाना चाहो बन जाता है उसके बनानेकी यह रीति है कि जिस-जगहका गोल बनानेका है उसजगहके उत्तर दक्षिण अक्षांश देखलो जितने अक्षांश जिधर होवें उधरके ध्रुवको याम्योत्तर वृत्तपर उतनाही ऊंचा करदो तो उसस्थानका गोल बन जावेगा फिर उसपर दिन-मान रात्रिमान नत उन्नत इत्यादि देखलो ॥

शिष्य—महाराज प्रथम आपने कहाथा कि विषुवत्रेखासे दाक्षि-णोत्तर दोनों तरफ ६६ अंशसे लेकर ध्रुवतक महीनोंके दिन होते हैं इसके जाननेकी क्या रीति है ॥

गुरु—प्रश्नकर्त्ता कहे कि उत्तरदक्षिण ६६ अक्षांशसे ऊपर असुक अक्षांशपर कितने महीनेका दिन होगा जितने अक्षांश बतावे उनको ९० अंशमें घटाकर जो बाकीबचे उतनी गतक्रांति समझना याने सूर्य इतने अंशपरहै अब आगे देखना कि यहाँसे२४ अंशतक जानेको कितनेदिन लगेंगे जितनेदिन क्रांति देखनेसे आवे उनदिनोंको दूना-कर महीने करलेना जितने महीने का दिन होवे उस अक्षांशपर उतने महीनेके दिनका एकदिन कहना ॥

उदाहरण—जैसे प्रश्नकर्ता कहे कि उत्तर ७० अक्षांशके ऊपर कितने महीनेका दिन होगा अब ७० अंशको ९० में घटानेसे २० बचे तो समझना कि २० क्रांति गतहुई पाहिले महीनेकी १२ दूसरेकी ८ से बीस अंश उत्तरपर सूर्य ठहरे हैं अब २० से आगे २४ अंशतक

जानेको एकमहीना लगेगा क्योंकि तीसरे महीनेमें ४ अंश चलते हैं इसीतरह २४ से बीसतक पीछे फिर आनेको १ महीना लगेगा इसकारण ७० अक्षांशपर २ महीनेका दिन होवेगा ऐसे औरभी उदाहरण समझ रखना ॥

शिष्य–महाराज २ महीने ४ महीने ६ महीनेका दिन कौन कौन अक्षांशपर होताहै ॥

गुरु–इसके जाननेकी यह रीतिहै कि जितने महीनेका प्रश्नहो उसका आधा करना और उसमें देखना कि सूर्य्य परमक्रान्तिसे लौटकर जिसगतिसे चलतेहैं उस गतिसे इस अवधिको तै करनेमें सूर्य्यके कितने क्रान्ति अंश व्यतीत होंगे जो आवे उन अंशोंको ६६अंशमें मिलाना जो योगफल हो उतनेही महीनोंका दिनमान उसस्थानपर होगा ॥

उदाहरण–जैसे ३ महीनेका दिन कौन अक्षांशपर होवेगा तो तीन महीनेका आधा १॥ महीना हुआ अब देखना चाहिये कि परमक्रान्तिसे वापिस लौटनेकी गतिसे सूर्य्य १॥ महीनेमें कितने अंश चलतेहैं तो मालुम हुआ कि परमक्रान्तिसे लौटकर सूर्य्य प्रथम महीनेमें ४ अंश उससे आगेके महीनेमें ८ अंश फिर उससे आगेके में १२ अंश ऐसे पीछे विषुवत्‌रेखापर आ जाते हैं। अब इस गतिसे १॥ महीनेमें सूर्य्यके ८ अंश होतेहैं इन ८ को ६६ में मिलानेसे ७४ हुए बस मालुम हुआ कि ७४ अक्षांशपर ३ महीनेका दिन होवेगा ॥

शिष्य–६६अंशसे ऊपर साधारणसे उत्तर दक्षिण गोलमें दिनरात मालुम होजावे ऐसी कौनसी रीति है? ॥

गुरु–उत्तर दक्षिण क्रांति जितने अंश होवे उन अंशको ९० अंशमेंसे घटाना जो बाकी बचे उन अंशोंसे लेकर उत्तर ध्रुवतक

दिन जानना और दक्षिणमें उतनेही अंशसे लेकर दक्षिण ध्रुवतक रात समझना और दक्षिण क्रांति होवे तो दक्षिणमें दिन उत्तरमें रात समझना ॥

उदाहरण–जैसे १० क्रांति उत्तर है तो दिनरात कहो अब इन १० अंशको ९० मेंसे घटाये तो ८० अंश बचे ८०से लगाकर उत्तर ध्रुवतक १० अंशके बीच दिन होता है और दक्षिणमें ८० से लगा कर दक्षिण ध्रुवतक रात होती है इसीतरह दक्षिण १० क्रान्ति होवे तो दक्षिणमें दिन और उत्तरमें रात समझना ॥

शिष्य–घण्टेके सवालोंसे लन्दननगरसे अथवा और कोई स्थानसे पूर्व पश्चिम दरजे विषुवत्‌रेखापर निकलेंगे परन्तु अक्षांश जाननेकी कोई रीति होवे तो कहें ॥

गुरु–क्रान्तिनतांश व उन्नतांश जानकर अक्षांश जाननेकी यह रीति है कि क्रान्ति और नत एक दिशाके होवें तो दोनोंका अन्तर करना जो बाकी बचे वे अक्षांश क्रान्तिसे भिन्न भिन्न दिशाके जानना अर्थात् क्रान्ति उत्तर होवे तो दक्षिणके जानना और क्रान्ति दक्षिण होवे तो उत्तरके जानना और अन्तर करनेके समय यहभी याद रहना चाहिये कि जो नत क्रान्तिमें घटे तो जिसदिशाकी क्रान्तिहै उसी दिशाके अक्षांश जानना जब क्रांति और नत भिन्नदिशाके होवें तो दोनोंका जोड़ करना जो जोड़ आवे वेही क्रांतिकी दिशाके अक्षांश जानना याने क्रान्ति उत्तर है और नत दक्षिण है तो दोनोंका योग उत्तर अक्षांश होंगे ।

उदाहरण–जैसे क्रान्ति २० उत्तरहै और नतभी ५० उत्तरहै तो अक्षांश क्या होंगे यहाँ क्रांति और नत एक दिशाके हैं इसवास्ते अन्तर किया तो ३० बाकी बचे यही दक्षिण अक्षांश हुये ।

उदाहरण २रा जैसे क्रान्ति २० उत्तर और नत २५ दक्षिण हैं तो अक्षांश क्या होंगे यहाँ भिन्न दिशाहै इसवास्ते दोनोंका योग किया तो ४५ उत्तर अक्षांश हुये।

उदाहरणरा ३ जैसे क्रान्ति २० उत्तर और नतभी १५ उत्तरहैं तो अक्षांश क्या होंगे यहाँ अन्तर करनेसे ५ अक्षांश हुये परन्तु यहाँ नत क्रान्तिमें घटे हैं इसवास्ते ५ अक्षांश उत्तरके हुये दक्षिण क्रान्ति होवे तोभी यही रीति करना।

इस अध्यायमें क्रांति नत इत्यादि विषय प्रकरण वश लिखे गये हैं जो कि यह विषय अभ्यासाधीन है इसलिये समक्ष पृथ्वीका गोला देखे विना पाठकोंके ध्यानमें नहीं आवेगा अब इस गणिताध्यायको मैं यहीं समाप्त करताहूँ और संक्षिप्त शनिचार फल लिखना आरम्भ करता हूँ।

अथ शनिचारफलम्।

यद्यपि शनिचारफल कई ग्रंथोंमें लिखा हुआ है परंतु उसका फलित प्रत्यक्ष नहीं मिलता है हमको एक पुराने ग्रंथमें शनिचारफल मिला है जो प्रत्यक्ष अनुभव सिद्ध होनेसे बहुत सत्य है अतएव विद्यारसिकोंके बिनोदार्थ उक्तफल नीचे लिखा जाता है॥

अथ मेषस्थ शनिफलम्।

मेषराशिपर शनि आवे तब समस्त धान्यका विनाश होवे चांदी, तिल, तैल, कथीर, जुवार, धोलावस्त्र, कपास, रूई, बैल इतनी वस्तुका विनाश हो मारवाड़, मेवाड, मालवा इनदेशोंमें छत्रभंग हो प्रजासुखी रहे गंगापार सुख, चोरोंकी नास्ति॥

अथ वृषराशिस्थ शनिफलम्।

वृषराशिपर शनि आवे तब विरोधहो, सर्वदेश खुशी, चौपायों मेंपीड़ा, रोगोत्पत्ति धान्य व चौपाये महँगेहों॥

अथ मिथुनराशिस्थफलम् ।

जब मिथुनराशिपर शनि आवे तब भूकम्पहो, तिलतैल, लोह, नून, गुड़, मंजीठ सस्तेहों सर्वधान्य सस्तेहों, हाथी, घोड़े, चौपाये सस्तेहों और अजमेर, मारवाड़, चित्रकोट, जेसलमेर, बूंदी, गवालियर इत्यादिदेश सुखी और राजा सुखपूर्वक राज्य करें ॥

अथ कर्कराशिस्थफलम् ।

जब शनि कर्कराशिपर आवे तब प्रजामें रोगहो चोर और म्लेच्छोंकी वृद्धिहो, मध्यदेशमें धान्य सस्तारहे और गुजरात, सौराष्ट्र (काठियावाड़, द्वारका, वल्लभी जूनागढ़, भावनगर, गिरिनारपर्वतके समीपवर्ती स्थान) में और समुद्रकिनारे महर्घता हो घृत, गुड़, शक्कर यह सस्ते रहें । विवाह बहुतहोवें, मेवाड़, मारवाड़में राजबिग्रह हो ॥

अथ सिंहस्थ शनिफलम् ।

सिंहराशिपर शनि आवे तब चौपाये महँगे हों, गुड़, तैल, महँगे हों, छत्रभंग हो, सर्वदेश भयभीत हो, धान्यसंग्रह हो, घृत, रस, कस, हींग, लवण, रक्तवस्त्र, महँगे हों ॥

अथ कन्यास्थ शनिफलम् ।

जब कन्याराशिपर शनिआवे तो मेघ अल्प हो, काश्मीर व मध्यदेशमें हानिहो, बिग्रहहो, रसकस महँगेहों और सुभिक्ष हो ॥

अथ तुलास्थशनिफलम् ।

तुलाराशिपर शनिआवे तब अग्निभयहो, अन्न महँगेहों, सर्वत्र विपत्ति पड़े, धान्य उत्पन्न नहों, मेघ अल्पहों, प्रजानैरोग्यरहे, धान्यसंग्रहकरनेसे लाभहो, मुलतानदेशमें सुखरहे ॥

अथ वृश्चिकस्थ शनिफलम् ।

वृश्चिकराशिपर शनि आवे तो प्रजा भयभीतहो, भूकम्पहो, गुजरातका क्षयहो, मध्यदेशमें उत्पात, अग्निभय, राजविग्रह और मारवाड़में विपत्तिहो ॥

अथ धनस्थ शनिफलम् ।

धनराशिपर शनिआवे तो सम्पूर्ण चराचरमें दुर्भिक्ष फैलजावे, पिता पुत्रको बेचे, भर्ता स्त्रीको बेचे, दोमास उपरान्त अन्नकी अत्यन्तकमी आवे, विग्रहहो, चौपाये महँगेहों ॥

अथ मकरस्थ शनिफलम् ।

मकर राशिपर शनि आवे तब मेघ अत्यन्तहो धान्य बहुत निपजे, और सम्पूर्ण धान्य सस्तेहों, धातु सोना चांदी सर्व रसकस घृत तैल सस्ते रहें कोंकण (बम्बई प्रांत) दक्षिण, गौड़ (उत्तरीयबंगाला) चँदेरी (नर्मदा किनारा,) मालवा और समुद्र किनारा इनमें सुख हो और महनती मजदूर बहुत महँगे मिलें ॥

अथ कुम्भस्थ शनिफलम् ।

शनि कुंभराशिपर आवे तब मेघ अत्यन्तहो, सर्व धान्य उत्पन्न हो राजा प्रजा सुखी हों, रसकस सर्व सस्ते रहें, चौपायोंमें पीड़ा हो मँजीठ मोती ऊन वस्त्र और लाल वस्त्र तथा गेहूँ चना ये महँगे रहें, दक्षिण दिशामें म्लेच्छोंका युद्ध हो ॥

अथ मीनस्थ शनिफलम् ।

मीनराशिपर शनि आवे तब दुर्भिक्ष हो, घृत, तैल नून महँगे हों, मनुष्योंमें रोगोत्पात्ति, और पूर्व, पश्चिमके सम्पूर्ण देशोंमें अत्यन्त विग्रह और उत्पात हों ॥ इति शनिचारफलं समाप्तम् ॥

अथ दुर्भिक्षयोगाः ।

जिसवर्षमें एकराशिपर शनि, राहु, मंगल, सूर्य्य, गुरु, आदि नवग्रह होंय तो उसवर्षमें दुर्भिक्ष, छत्रभंग, राजविग्रह, वनस्पातिफले बिना समयमें मेघ बरसे ॥ १ ॥

जिसवर्षमें १३ महीनेहों और सूर्य्यकीराशिके आगे मंगल रहे सूर्य्य पीछे रहे यह योग वर्षाऋतु में होवे तो दुर्भिक्ष पड़े धान्य संग्रह करनेसे लाभ हो ॥ २ ॥

जिस वर्षमें राहु केतुका उदय हो तो भूकम्पहो तारा टूटे, पूँछल तारा ऊगे उस वर्षमें दुर्भिक्ष पड़े राजविग्रह छत्र भंगहो ॥ ३ ॥

जिसवर्षमें चैत्रमास ज्येष्ठमासमें मेघ बरसे और श्रावण भाद्रपदमें शीतपड़ै वायुचले उस वर्षमें मनुष्य व चौपायोंमें कष्ट राजविग्रह हो धान्य संग्रह करनेसे लाभहो ॥ ४ ॥

जिस वर्षमें रात्रिको काग बोले दिनको शियालबोले गाय स्त्री जोड़ले जने विपरीतउपजे उस वर्षमें दुर्भिक्षपड़े; मनुष्य चौपायों में कष्टहो अन्न तृण कमनिपजे ॥ ५ ॥

जिस वर्षमें आषाढ़की पूर्णिमा क्षयहो उस वर्षमें दुर्भिक्षपड़े राजविग्रहहो सियालू उनालू धान्य कमनिपजे सब कुवोंका पानी सूखजावे बड़े बड़े कुवोंमें जलमिले ॥ ६ ॥

जिस वर्षमें कर्क संक्रांति शनि, रवि या मंगल वारी होय और वर्षका राजा रवि शनि या भौम होय तो उस वर्षमें दुर्भिक्ष पड़े मनुष्योंमें पीड़ा, खुजली लोहू विकार हो ॥ ७ ॥

जिस वर्षमें दिवालीके दिन स्वाति नक्षत्र हो और शनि, रवि, मंगलवार होय आयुष्यमान योग होय तो दुर्भिक्ष पड़े, रसकस महँगेहों राज विग्रह हो प्रजा खुशीरहे ॥ ८ ॥

जिस वर्षमें माघसुदी ९ के दिन शनि, मंगलवार हो शुभवार न हो तो काल पड़े पृथ्वी चलायमानहो देश ऊजड़हो ॥ ९ ॥

जिसवर्षमें सूर्य्य, चन्द्रमाका ग्रहण एकमासमें हो दुर्भिक्ष पड़े मनुष्योंमें रोग बहुत हों विग्रह बहुतहो ॥ १० ॥

जिस वर्षमें मीनराशिपर शनि कर्कराशिपर गुरु तुलाराशिपर भौम हों उस वर्षमें दुर्भिक्ष राजविग्रह छत्रभंग हो पृथ्वी चलायमान हो ॥ ११ ॥

जिस वर्षमें कार्त्तिककी पड़वा बुधवारी हो तो दुर्भिक्षपड़े, धान्य, घृत, तैल, गुड़, रूई, कपास, सब किराना महँगा हो ॥ १२ ॥

जिस वर्षमें आषाढ़सुदी९के दिन बद्दल न हो सूर्य्य चन्द्र निर्मल उगे निर्मल अस्तहो तो काल पड़े राजविग्रह प्रजा दुखी ॥१३ ॥

जिस वर्षमें उत्तराभाद्रपद, रेवती, भरणी, मूल, मघा,इननक्षत्रों पर गुरु हो और विशाखा, स्वाति, पूर्वाषाढ़पर भौमहो उस वर्षमें राजविग्रह मृगी रोग हो पृथ्वीपर विग्रह हो ॥ १४ ॥

जिसवर्षमें पौष, माघ, फाल्गुनमें शीत थोड़ा पड़े और चैत्र व ज्येष्ठमें मेघ वर्षे तो धान्यका दुर्भिक्ष पड़े राजविग्रह हो ॥ १५ ॥

जिस वर्षमें चोटिल पूँछल तारा ऊगे उस वर्षमें अकाल पड़े मनुष्य चौपायोंमें कष्ट रोगोत्पत्ति हो ॥ १६ ॥

जिस वर्षमें आषाढ़ वदी ८ के दिन कृत्तिका मृगशिरनक्षत्र हो तो काल पड़ै धान्य संग्रह करनेसे लाभ हो ॥ १७॥

जिस वर्षमें सूर्य्यका नक्षत्र स्त्री नक्षत्र नपुंसक नक्षत्रसे लगे तो मेह थोड़ा बरसे धान्य महँगा होय ॥ १८ ॥

जिस वर्षमें अमावास्या भौमवारीहो सोमवती एकभी न हो तो काल पड़ै मनुष्य विकें प्रजाखुशी राजविग्रह हो ॥ १९ ॥

जिस वर्षमें ज्येष्ठसुदी १० तक मेघ न बर्षें तो सब देशोंमें काल पड़े मनुष्य चौपाये खुशी रहैं ॥ २० ॥

जिसवर्षमें शनि, गुरु राहु आदि नवग्रह इकट्ठे होयँ तो छत्रभंग हो राजविग्रह दुर्भिक्ष पडे ॥ २१ ॥

जिसवर्षमें आषाढ़में धुन्धपड़े बद्दल शीतलहोय खालीगर्जना होय पृथ्वी हले तो दुर्भिक्ष पड़े धान्य बहुत महँगा होय ॥ २२ ॥

जिसवर्षमें श्रावण, भाद्रपद शनि, गुरु मंगल वक्री हो तो काल पड़े रसकस महँगाहोय ॥ २३ ॥

जिसवर्षमें ज्येष्ठकी अमावस्याके दिन सूर्यास्तदेखना और दूज-केदिन चन्द्रमाका उदयदेखना जो चन्द्रमा सूर्यसे बायां अस्त हो तो कालपड़े मनुष्यमरे जो सूर्यसे दाहिना अस्तहो तो समय अच्छा हो जो सूर्यके मस्तकपर अस्त हो तो समय मध्यम होवे ॥ २४ ॥

जिसवर्षमें गाय भैंस रूप कुरूप जने और पौषके महीनामें बिना वद्दलके बिजली चमके तो अकालपड़े पृथ्वी चल बिचल हो ॥ २५ ॥

जिसवर्षमें श्रावण, भाद्रपदमें कोई ग्रह उदय न हो अस्त न हो तो सर्वधान्य संग्रह करना, रसकस महँगा होय ॥ २६ ॥

जिसवर्षमें श्रावण, भाद्रपदमें वायुचले मोटेवद्दल हों पानी नहीं बरसे तो कालपड़े सर्वदेश ऊजड़हो सर्वधान्य संग्रह करनेसे लाभ हो ॥ २७ ॥

जिसवर्षमें रोहिणी परवतपरपड़े राजा, मंत्री शनि, मंगल हो तो दुर्भिक्ष पड़े मनुष्यमरे राजामरे ॥ २८ ॥

जिसवर्षमें माघकी पड़वांका क्षयहो तथा बुध, शनि, भौमवारी-होय तो वह वर्ष मामूली हो धान्य संग्रह करनेसे लाभ हो ॥ २९ ॥

जिसवर्षमें आषाढ़सुदी ११ का क्षयहो तथा उसदिन रवि, शनि, भौमवार हो तो उसवर्षमें डाढ़का चालो बहुतहो याने सर्पोंसे पीड़ा टीड़ी, चूहा बहुत नुकसानकरें धान्य महँगा होय वर्षा मध्यम हो ॥ ३० ॥

जिसवर्षमें बारहोंसंक्रांति १५ मुहूर्तीहो तथा क्रूरवारी होय तो सर्वधान्य संग्रहकरना पैसेबराबर धान्य हो समय भयंकर हो राज-प्रजामें पीड़ाहो ॥ ३१ ॥

जिसवर्षमें समयका राजा अस्तहो तथा शनि, राहु मंगल, संयुक्त हो तो निश्चय काल पडे समयमध्यमहो धान्यसंग्रह करनेसे लाभहो राजाप्रजामें रोगहो ॥ ३२ ॥

जिसवर्षमें पौष, माघ, फागुन, चैत्र, बैशाख, ज्येष्ठ, कार्तिक, मार्गशीर्ष इतने महीनोंमें तारे फिरें तारामंडल फिरता दीखे तथा अग्निसरीखा दीखे तो पृथ्वीपर प्रलयकाल पड़े बड़ादुकालपड़े मनुष्यको मनुष्यबेचे तथा खावे उत्तम पुरुष मध्यम हो ॥ ३३ ॥

जिसवर्षमें चैत्र, वैशाख, कार्तिक, आश्विन, आषाढ़की पूर्णि-मासीकेदिन चन्द्रमाके बिम्बको रोहिणीको तारे बेधिकर निकले तो बड़ादुकालपड़े छत्रभंगहो राजविग्रहहो सर्वपृथ्वी रुण्डमुण्डहोय संग्रामहो हाहाकार होय ॥ ३४ ॥

जिसवर्षमें आषाढ़, चैत्र, फाल्गुन, कार्तिक, महीनेमें एक मासमें ही सूर्य चन्द्रमाका ग्रहणहो और २० विश्वा संपूर्णहो तो भयभ्रांत कालपडे धान्यसंग्रह करनेसे लाभ बहुतहो ॥ ३५ ॥

जिसवर्षमें धन, मीन, सिंह, कन्या, राशिऊपर क्रूरग्रह बैठेहोंय तो दुर्भिक्ष पडे किरानो महँगोहो सर्पोंसे पीडाहो चौपायोंमें पीडाहो मेघ कमवर्षे ॥ ३६ ॥

जिस वर्षमें रेवती, शतभिषा, आश्लेषा, मूल, इन नक्षत्रोंपर गुरु शनि राहु हो तो दुर्भिक्ष पड़े दोनों शाखाका विनाशहो कुवोंकी शाखाजाय चौपायें मरें छत्रभंग हो ॥ ३७ ॥

जिस वर्षमें शीतकालमें शीत न पड़े और गर्मीके दिनोंमें शीत-पड़े चैत्रमें मेहवर्षे तो दुर्भिक्ष पड़े प्रजा सब खुसी मनुष्य बहुत मरें ॥ ३८ ॥

जिस वर्षको राजा मंत्री अस्तहोय तथा वक्रहो तथा अतिचार हो तो वह वर्ष मध्यम हो धान्य महँगा होय राजा प्रजा दुखी ॥ ३९ ॥

जिस वर्षमें वर्षका राजा क्रूरग्रहसे युक्त हो तो महाविपात्ति पड़े छत्र भंग हो मनुष्य पर्वतोंपर जाकर रहें ॥ ४० ॥

जिस वर्षको राजा मंत्री कुतवाल तीनों क्रूरग्रह हों तो धान्यम हँगा हो रसकस महँगा हो ॥ ४१ ॥

जिस वर्षका क्रूरसम्वत्सर नाम हो और वर्षका राजा मंत्री भी क्रूर हो तो वर्षनेष्ट हो राजा प्रजा दुखी व्योपारी दुखी ॥ ४२ ॥

जिस वर्षमें तेरह महीने हों और एक महीनेमें दो तिथी टूटें तो अकाल पड़ै राजविग्रह बहुत हो लोग पर्वतपर वसें चौपायों का नाश हो और अन्न औषधि समान हो॥ ४३ ॥

जिस वर्षमें सुदीकी पंचमी शुभवारी न हो सोमवती अमावस्या न हो तो समय महामध्यम हो टीड़ी आवे मनुष्य दुखी हों॥ ४४ ॥

जिस वर्षमें तीन ग्रहण हों तो पूर्वदिशा और मेवाड़में विपत्ति पड़े सर्व पृथ्वी चलाचल हो ॥ ४५ ॥

जिस वर्षमें रोहिणीको तारौ वेधकरे तो घोर काल पड़े मनुष्य को मनुष्य खावें ॥ ४६ ॥

जिस वर्षमें शनि राहु मंगल एक राशिपर हों तो वर्ष भयंकर हो कालपड़े मनुष्य पुत्र पुत्री बेंचे ॥ ४७ ॥

जिस वर्षमें पाँचग्रह एक राशि ऊपर आवै गुरु शनि अस्त हों तो मृगीरोग हो धान्य महँगा हो राजाप्रजामें पीड़ाहो चौपायोंमें पीड़ाहो डाढ़ चालो हो ॥ ४८ ॥

जिसवर्षमें श्रावणमें नैर्ऋत्यकोणमें अगस्तऊगें और रातको ठंढी पवन चले तो समय खराब हो राजविग्रह हो फल फूलका नाश हो स्त्री चौपायोंमें गर्भपात हो धान्यका नाश हो ॥ ४९ ॥

जिस वर्षमें गुरु, शनि, राहु, भौम, एक नक्षत्रपर आवें तो छत्र पडे राजविग्रह हो हिन्दू मुसलमानोंमें लड़ाई हो ॥ ५० ॥

जिस वर्षमें तारे बहुत टूटे विनावद्दल बिजली चमकै तो बडा कालपडे राजा मरे ॥ ५१ ॥

जिस वर्षमें समयका राजा सम्वत्सरकी राशिको न देखे और क्रूर ग्रह संयुक्त हो तो चौमासेमें पवन चले मेघ अल्प हो दोनों शाखा का विनाश हो ॥ ५२ ॥

जिस वर्षमें सिंहराशिके गुरु हो कुम्भराशिपर राहु, मंगल हो तो निश्चय कालपडे राजविग्रह हो ॥ ५३ ॥

जिस वर्षमें दो श्रावण व दो भादों हों तो महँगा हो लोगदुखी पीपला आदि वस्तुखाकर जीवें ॥ ५४ ॥

जिस वर्षमें मीनराशिपर राहु, शनि, हो तो मृगीरोग हो पीडा हो धान्यअल्प निपजे राजविग्रह हो ॥ ५५ ॥

जिसवर्षमें एकमहीनामें तीनग्रह वक्रहों शनि, मंगल, गुरु, शुक्र, तो दुकाल पड़े राजविग्रहहोय युद्धहोय ॥ ५६ ॥

जिसवर्षमें समयकोराजा अस्तहो मन्त्री वक्र और कुतवाल क्रूरहो या इनसे युक्तहो तो छत्रपड़े अन्नजलकी नास्तिहो ॥ ५७ ॥

जिसवर्षमें तारामण्डल फिरैं चन्द्रमासे इकट्ठे ताराहों तो काल पड़े धान्य नहीं मिले ॥ ५८ ॥

जिसवर्षमें चैत्र, वैशाख, ज्येष्ठमें मेघवर्षे पौष माघमें तपन गर्मीहो और चौमासेमें पवन चले तो काल पड़े श्रावण भाद्रपदमें कुवोंमें पानी भरआवे ॥ ५९ ॥

जिसवर्षमें धुन्धबहुतपड़े राखीको श्रवण नक्षत्र न हो अक्षयतृतीया को रोहिणी न हो पौषवदी ३० को मूलनहो तो दुकालपड़े ॥६० ॥

इति दुर्भिक्षयोगाः ।

उक्तयोग हमारे परीक्षा कियेहुए नहीं हैं एक बहुतपुराने हस्तलिखित ग्रन्थसे उद्धृत किये गए हैं अब आगे वृष्टिके योग लिखे जाते हैं जो किसी अन्यग्रन्थमें अभीतक प्रकाशित नहीं हुए हैं ॥

अथ वृष्टियोगाः ।

शनि	सूर्य	मंगल	गुरु	शुक्र	बुध	चंद्र
चंड	वायु	अग्नि	सौम्य	नीर	जल	अमृत
कृ	रो	मृ	आ	पु	पु	अ
वि	स्वा	चि	ह	उ	पू	म
अ	ज्ये	मू	पू	उ	अ	श्र
भ	अ	रे	उ	पू	श	ध

यह चक्र नृपतिजयचर्य्यामें लिखा है सवग्रह अपने अपने नक्षत्रों पर देखकर चक्रमें नक्षत्रोंपर लिखेजावें तब इसका बिचार होता है जैसे सातकोठोंका यह चक्र है पहिलेका नाम चण्ड २ वायु ३ अग्नि ४ सौम्य ५ नीर ६ जल ७ अमृत इसचक्रके वामभागके तीन कोठे जलके हैं और दक्षिणभागके तीनकोठे अन्धहवा और तपन के हैं और बीचका कोठा जिसका नाम सौम्यहै वह हवा जल तपनका देनेवाला है जिसवक्त आश्लेषा, मघा, श्रवण, धनिष्ठा इनचारों नक्षत्रोंमें सबग्रह हों तौ १८ दिनकी झिड़लगे और झिड़ उसदिनसे

शुरूहोतीहै जिसदिन चन्द्रमा इन नक्षत्रोंपर आताहै और जब सब-ग्रह पुष्य, पूर्वाफाल्गुनी, अभिजित, शततारका नक्षत्रपर होते हैं तो १२ दिनकी झिड़ लगतीहै और जब पुनर्वसु, उत्तराफाल्गुनी, उत्तराषाढ़, पूर्वाभाद्रपदमें सबग्रह होते हैं तो ६ दिनकी झिड़लगती है इसीतरह आर्द्रा, हस्त, पूर्वाषाढ़, उत्तराभाद्रपद नक्षत्रोंमें सबग्रहे होते हैं तो ३ दिनकी झिड़लगती है मृगशिर, चित्रा, मूल, रेवती, में सबग्रह होवें तो ज्यादासे ज्यादा तपन पड़ती है रोहिणी, स्वाति, ज्येष्ठा, अश्विनीमें सबग्रह हों तो हवा ज्यादे चलती है और कृत्तिका, विशाखा, अनुराधा, भरणीमें सबग्रह हों तो अन्ध ज्यादेसे ज्यादे चलें वृक्ष टूट टूट कर पड़ें अब यह देखना कि सबग्रह इकट्ठे होकर एक जगह आना दुशवार है परन्तु दो, तीन, चार, ग्रहोंका संयोग भी फलदाई होता है । मगर पापग्रह पापग्रहका संयोग तपन हवा ज्यादे और छूछे बादल देनेवाले हैं और शुभ ग्रह शुभग्रह का संयोग ठंढी हवा, बद्दलछाया व फुहारोंके देनेवाले होते हैं और एक पापीग्रह व एक शुभगग्रह तथा चन्द्रमा सौम्य नीर जल अमृत नाड़ीमें हो तो थोड़ा जल बर्षता है और दो पापग्रह दो शुभग्रह और चन्द्रमा उक्त चार कोठोंमें इकट्ठे हों तो जल ज्याद वर्षता है और जबतक चन्द्रमा ग्रहोंके शरीक रहताहै तबतक जलका संयोग पूरा रहता है इसमें भी राजाओंके समक्ष सरतिया कहदेनेके लायक यह योग है मंगल, गुरु, बुध, शुक्र और चन्द्र अमृत नाड़ीमें हो तो मूसलधार पानी पड़े और जल नाड़ीमें हो तो रह रहकर पानी बरसे, नीर नाड़ीमें हो तो बारीक बारीक बूंदें पड़े, और सौम्य नाडीमें हो तो खुले और बरसे और यह ग्रह अग्नि हवा और अंधनाड़ीमें हो तो भी जल वरसावें ।

अतिवातं च निर्वातं अत्युष्णं शीतशीतलम् ॥
अत्यभ्रं च निरभ्रं च षड्विधं मेघलक्षणम् ॥

अर्थ--जल बरसनेके ये ६ लक्षण हैं अर्थात् बिलकुल हवा बन्द होजाना या बहुत हवा चलने लगना तो वारिश होतीहै बहुत बादल छाजावें अथवा बिलकुल बादल न रहे तो बारिश होती है बहुत गर्म पड़नेलगे अथवा बिलकुल गर्म मिटजावे तो वारिश होतीहै ॥ वृष्टिके योग बहुतसे ग्रंथोंमें प्रकाशित होगए हैं अतएव उन आविष्कृत योगोंको पुनः लिखकर मैं यह ग्रंथ बढ़ाना नहीं चाहता पाठकगण मयूर चित्रकादि ग्रंथोंमें उन योगोंको देखलेंगे गत दो तीन वर्षों में जब जब महती वृष्टि हुई है तब तब मैंने उस समयके ग्रह योगोंको लिखलिये हैं अतएव गुणी जनोंके विनोदार्थ उक्त योगों को नीचे प्रकाशित करताहूँ पाठकवृंद इनसे वृष्टियोगोंका अनुभव करलेंगे ॥

भादों वदी ११ चंद्रवार सं० १९६७ को बहुत भारी वृष्टि हुई उस दिनके ग्रह योग ये थे रवि ४ । ३ भौम २ । १४ बुध ३ । २० गुरु ७ । ११ शुक्र २ । २१ शनि ९ । २ और चंद्रमा मृगशिर उपरांत रोहिणी नक्षत्रपर था ॥

सं० १९६८ प्रथम श्रावण शुक्ल ४ शुक्रवारको बहुत वृष्टि हुई उस दिनके ग्रह योग ये थे रवि ३ । २ भौम ५ । १० बुध २।२० गुरु ८ । १९ शुक्र ३ । २६ शनि ८ । १८ और चंद्रमा मघा नक्षत्र पर था ॥

सं०१९६८ द्वितीय श्रावण वदी ३ शनिवारको बिजली गिरी और वृष्टि उत्तम हुई उस दिनके ग्रह योग ये थे रवि ४ । ० मंगल ५ । २७ बुध ३ । २१ गुरु ८ । १३ शुक्र ४ । २९ शनि ८ । १६ और चंद्रमा पूर्वा नक्षत्रपर था ॥

सं० १९५८ द्वितीय श्रावण वदी १० शुक्रवारसे वृष्टि शुरू हुई जो ८ दिन तक लगातार बराबर होती रही यह वृष्टि जबतक चंद्रमा रोहिणी मृगशिर आर्द्रा पुनर्वसु, पुष्य, आश्लेषा, मघा, पूर्वा नक्षत्रों पर रहा तब तक होती रही शेष सब ग्रहोंके योग पूर्ववत् थे इस श्रावणके शुक्ल पक्षमें भी बहुत वृष्टि होती रही ॥

सं० १९६० आषाढ़ सुदी ५ चंद्रवारको १ इञ्च ८१ सेन्ट वारिश हुई उस दिनके ग्रह योग ये थे रवि २। १३ मंगल ५। १६ बुध ३। २५ गुरु ११। १ शुक्र ३। २९ शनि ९। १२ और चंद्रमा मघा नक्षत्रपर था ॥

सम्वत् १९६० भादोंसुदी १० मंगलवारको १ इञ्च ९७ सेन्ट वारिश हुई उस दिन के ग्रहयोग ये थे रवि ४।१३ मंगल ६।२४ बुध ५।९ गुरु १०।२८ शुक्र ५।५ शनि ९।८ और चन्द्रमा मूल नक्षत्र परथा ॥

इस शताब्दीमें सम्वत् १९१८ व सं० १९२२ इन दो वर्षोंमें बहुतबड़ी वृष्टि हुई कि नदीकी बाढ़से कई गांव बहगए ॥

सम्वत् १९१८ की वर्षा ऋतुमें गुरु सिंहके शनि सिंहके ये दोनों मघा नक्षत्रपर थे और इसी मघा नक्षत्रपर मंगल बुध और शुक्र तथा चन्द्रमा भी शामिल होगएथे ॥

सं० १९२२ की वर्षा ऋतुमें गुरु धनके शनि तुलाके तथा बुध शुक्र सूर्य्य मंगल इनका परस्पर संयोग किसीका नहीं हुआ था॥

सं० १९५४ ज्येष्ठ सुदी १२ शनिवार मुताबिक ता० १२ जून सन् १८९७ दिनको ४॥ बजे इस भारतवर्षमें बड़ा प्रबल भूकम्प हुआ कलकत्तेमें इसके कारणसे कई मकानात गिरगए उस दिनके ग्रह योग ये हैं रवि १।२८ मंगल३।१९ बुध १।५ गुरु ४।१२ शुक्र ०।१५ शनि वक्री ७।० और चन्द्रमा विशाखा नक्षत्र पर था-इसी

तरह पाठकगण प्रत्येक दैवी घटनाका ज्योतिषके योगायोगसे अनुभव करते रहेंगे तो फलित ज्योतिषका उत्तम ज्ञानोपचय उन्होंको होगा ॥

अथ परिशिष्टप्रकणरम् ।

जो जो विषय प्रत्यक्षफल दाता तथा अन्य विषयक इस भागमें लिखनेसे रहगये हैं उन्होंको इस परिशिष्ट प्रकरणमें लिखकर समाप्त करताहूं ॥

जिस, वर्षकुण्डलीमें, लग्नसे, नवम या पञ्चम घरमें गुरु हो और जन्म राशिसे, पञ्चम, नबम, प्रथम, गुरु हो तो उस वर्षमें भार्य्याके गर्भ रहताहै और पुत्रकाही जन्म होता है ये योग मेरा परीक्षाकिया हुवा है ॥

जिस वर्ष कुण्डलीमें सप्तम या अष्टम मंगल हो तो उस वर्षमें मनुष्यका अपयश होताहै और मूत्रेन्द्रिय तथा शिरमें बाधा होती है ॥

जिसवर्ष लग्नकी कुण्डलीमें ११ या दूसरे घर स्वक्षेत्री शनि हो तो उस वर्षमें अफीमके व्यापारसे लाभ होताहै ॥

जिस वर्षमें जन्म राशिसे सप्तम, नवम, षष्ठ, एकादश, पञ्चम, गुरु हो और वर्षकुण्डलीमें सप्तमेश पञ्चमघरमें हो अथवा मूर्त्ति (लग्न) में हो तो उसवर्षमें निश्चय विवाह होताहै ॥

वर्षकुण्डलीमें नवम, द्वादश, या अष्टम गुरु हो तो उसवर्षमें तीथयात्रा होती है ॥

जिसवर्ष लग्नमें चतुर्थ घरपर स्वक्षेत्री चन्द्र या शुक्र हो तो उस वर्षमें नवीन घर बनता हैं—याने तामीरात इसयोगसे चलतीहै ॥

वषकुण्डलीमें पञ्चमभाव शनि, राहुसे युत वा दृष्टहो तो उस वर्षमें मनुष्यकी कमरदुखती है-उक्त पुत्रयोगमें तरुणावस्था दंप-

तिकी होनाचाहिये जो ये योग वृद्धावस्थामें या पत्नी रहित पुरुषके आवें तो उसके ज्ञानकी वृद्धिहो ॥

जिसवर्षमें चतुर्थेश अस्त होकर शत्रुक्षेत्री हो उसवर्ष, मकानमें आगलगे ॥

जन्म लग्नसे अष्टम लग्न वर्षलग्न हो उसपर मंगल बैठा हो, और जन्मलग्नेश वर्षकुण्डलीमें छठे घर हो और वर्षलग्नेश अस्त हो तो इसयोगसे उसी वर्षमें मनुष्यकी मृत्यु होती है।

अब जन्मकुण्डलीमें देखनेके योग लिखताहूँ।

जिसकी जन्मकुंडलीमें, कुम्भके गुरु अकेले बारहवें घर हो, या मीनके गुरु, राहु युत द्वादशघरमें हो अथवा मकरस्थ गुरु, भौमसे युत अष्टम घरमें हो तो इसयोगवाला पुरुष संस्कृत व्याकरण में निपुण होता है, जिसकी जन्म कुंडलीमें केंद्र,ग्रहोंसे रहित खाली हो तो वह पुरुष २९ वर्षके उपरांत सुखी, धनवान होता है। जिसके सप्तमेश तीसरे घर हो उसपुरुषकी भार्य्या रोगवती और उदर रोगकी सदा शिकायत करती रहती है जिसके सप्तमेश शनि हो उसकी भार्य्या रूपवती होती है। जिसके चौथे या सातवें शनि हो उसको भाँगपीनेका शौक रहता है जिसके अष्टमघर शनि हो उसके पुत्र आठवरसकी उमरका होकर मरजाता है, कोई ग्रह (कन्याका बुधको छोड़कर) स्वक्षेत्री अष्टममें हो तो उस पुरुषके सन्तान नहीं होता परन्तु उसी कुण्डलीमें जो पञ्चमेश उच्चक्षेत्री हो तो सन्तान होता है जिसके पंचम बुधहो उसकी भार्य्याके गर्भपात होता है जिसके पंचमेश अस्तंगत हो उसके पुत्रसन्तान होकर मरते रहते हैं। जिसके लग्नेश सूर्य युत हो उसको निद्रा थोड़ी आती है जिसके दशमघरमें केतु हो उसकी आठवरसकी उमरमें पिता मरता है और ऐसे योगवाला गंगामें स्नान अवश्य करता है जिसका जन्म

मकर, कुम्भ, मेष, वृश्चिक, मिथुन, कन्यामें होता है उसका स्वभाव क्रोधीहोता है, जिसका जन्म सूर्योदयके समय होता है वह भाग्यवान, क्रोधी, और आधासीसीका रोगवाला होता है धनलग्नमें जिसका जन्म होता है वह शांत स्वभाव होता है जिसका जन्म गुरुवारको होता है वह धूर्त स्वार्थ साधक तेज बुद्धिवाला होता है जिसका जन्म बुधवारको हो उसकी सौम्य प्रकृति होती है जिसका जन्म शनिवारको होता है वह मैले कपड़ोंका धारण करनेवाला मन्दबुद्धिका होता है, रविवारको जन्मनेवाला बुद्धिमान सुस्वभाव होता है चन्द्रवारको जन्मनेवाला कुछमंदबुद्धि उत्तम स्वभाव वाला होता है भौमको जन्मनेवाला बुद्धिमान शांतस्वभाव वाला होताहै भद्रा व्यतीपात,और वैधृति इनमें जिसका जन्म होता है वह पुरुष दीर्घजीवी होता है सम्पूर्ण बारह लग्नोंमें, मीन मेष ये बहुत छोटी लग्नें हैं अतएव इनमें जिन्होंका जन्म होता है उन्होंका कद छोटा होता है और कर्क वृश्चिक, सिंह मकर ये बड़ी लग्नें हैं अत एव इन लग्नोंमें जिसका जन्म होता है वह ऊँचे कदका होता है जिनका जन्म गुरु और शुक्रकी लग्नोंमें होता है वे तरुणाईमें भी वृद्ध पुरुष सरीखी वृत्ति रखते हैं और जिनका जन्म मंगलकी लग्नो में होता है उनका पुरुषार्थ बुढ़ापेमें भी तरुणतुल्य होता है जिन पुरुषोंके जन्म लग्नेश सूर्य्य और चंद्रसे युक्त हो तो वह पुरुष कास श्वास (दमा और खांसी) के रोगसे पीडित रहते हैं जिनके सिंह राशिका मंगल लग्नमें हो उनके शरीरमें अग्निसे कष्ट पहुँचताहै जन्म लग्नेश,शुक्र शनि युत और भौमसे दृष्ट होकर छठे घर बैठे तो ऐसे पुरुषको दिमागकी कमजोरी, शिरभ्रमकी बाधा सदा बनी रहती है जिस पढ़े हुवे पुरुषके लग्नमें शुक्र हो तो वह कलाकौशल्य, यंत्र निर्माण आदिमें कुशल होता है और उसके अक्षर अच्छे होते

हैं जिस स्त्रीका जन्म कर्क लग्नमें होता है उसके नेत्र अतीव सुन्दर होते हैं, जिस पुरुषके तृतीयेश द्वितीयस्थानमें बैठा हो और मिथुनका जन्म चंद्र हो तो इस योगसे वह आदमी परगुदा भंजन करता है और इसमें उसकी रुचि प्रायः रहती है जिसके जन्म कालमें अष्टमेश या अष्टम घर भौमसे युत वा दृष्ट हो तो ऐसे योगसे जातकको अतिसार संबन्धी गुदा संबंधी बाधा होती है जिस घरमें राहु बैठे वह घर जिस अंगका सूचक है उसी अंगमें वातका असर कहना एकादशेश लग्नमें, सप्तम, तृतीय, घरमें हो अथवा लग्नेश करके युक्त केन्द्रमें बैठा हो इसयोगसे मनुष्यको व्योपारमें लाभ होता है ॥

प्रश्न–आपने अंगबिचारमें गुह्येन्द्री और मूत्रेन्द्रीका एकही भाव बतलाया सो क्या ये दोनों इन्द्री एकही हैं जो एकही भाव लाया ॥

उत्तर–इस देहमें ऐसे बहुतसे अवयव हैं जिनका परस्पर घनिष्ट सम्बन्ध है अतएव एक अंगमें पीड़ा पहुँचनेसे दूसरे अंगमें भी बाधा पहुँच जाती है जैसे किसीके मस्तकमें अत्यन्त दर्द हो तो उसको देखनेमें व शब्दके सुननेमें भी तकलीफ होती है और मूत्रेन्द्री गुह्येन्द्रीका तो परस्पर घनिष्ट सम्बन्ध है जब आप मल त्याग करने जाते हैं तो उसी समय मूत्र त्याग भी क्यों करते हैं क्योंकि इन्द्रियां तो दोनों अलग अलग हैं, मूत्रवाहनी और मल वाहनी दोनों नाड़ियां परस्पर मिली हुई हैं और भी बहुतसे ऐसे अंग हैं जिनका परस्पर घनिष्ट सम्बन्ध है उन अंगोंके बतलानेके लिये ज्योतिषमें एकही भाव रक्खा है फलित बुद्धि पूर्वक कहना चाहिये जैसे दशम भाव पिता और राज्य दोनों का है अब जो दशम भाव किसीका सुधर गया तो वहां पिताकी वृद्धि कहना चा-

हिये कि राज्यकी वृद्धि यहां पिता सुख होनेसे राज्यकी वृद्धि नहीं हो सक्ती क्योंकि पिताके मरणोपरान्त पुत्रको राज्य मिलता है यहां दोनोंके सुखमें परस्पर विरोध है इस भावमें दशमेशसे राज्यका फल कहना और दशमस्थग्रह तथा दशमघरके देखनेवाले ग्रहसे पिताका फल कहना पंचमभाव विद्या और पुत्र दोनोंका है यहां ऐसा नहीं होसक्ता कि जो सन्तानहीन हो वह विद्याहीनभी हो तथा जो बहुत पुत्रवान है वह बड़ाविद्वानभी हो इस- जगह पंचमेशसे पुत्रका सुख और पञ्चमस्थग्रहसे विद्याका सुख कहना चाहिये इसतरह बहुतसे भाव हैं अभ्यासकरनेसे सबसंदेह निवृत्त होजावेंगे ॥

प्रश्न-मारकेश कौन कौन हैं ॥

उत्तर-द्वितीयेश, सप्तमेश, अष्टमेश, द्वादशेश, षष्ठेश और दश- मेश ये ग्रह मारक होते हैं इनमें एकमारक निश्चितकरना बहुत कठिन है ग्रंथोंमें १२ राशियोंके अलग अलग मारकेश लिखे हैं उन्हें नीचे लिखता हूं ॥

श्लोक-मन्दसौम्यसिताः पापाः शुभौ गुरुदिवाकरौ । नशुभं योगमात्रेण प्रभवेच्छनिजीवयोः ॥ १ ॥ परंतु तेन जीवस्य पापत्वमपि सिध्यति । कविस्साक्षान्न हन्तास्यान्मारकत्वेन लक्षितः ॥ २ ॥ मन्दादयो निहन्तारो भवेयुः पापिनो ग्रहाः । शुभाशुभफलान्येवं ज्ञातव्यानि क्रियाभुवः ॥ ३ ॥

अर्थ-जिसका मेषलग्नमें जन्महोता है उसको बुध, शनि और शुक्र अरिष्टदायक हैं गुरु और रवि शुभफलकारक हैं गुरु और

शनिका समयोग शुभदायक नहीं है और शुक्र मारकेश होकरभी मेषलग्न-वालेको नहीं मारेगा परंतु शनि वगैरह पापग्रह जातकको मारेंगे ॥

जीवशुक्रेन्दवः पापाः शुभौ शनिदिवाकरौ । राजयोग करस्साक्षादेक एवांशुमत्सुतः ॥ ४ ॥ जीवादयो ग्रहाः पापाः घ्नन्ति मारकलक्षणाः । बुधैस्तत्तत्फलान्येवं ज्ञेयानि वृषजन्मनः ॥ ५ ॥

अर्थ-वृषलग्नवालेको गुरु, शुक्र, चन्द्र अशुभग्रह हैं शनि, रवि शुभग्रह हैं शनि इकेला राजयोगकारक है गुरु वगैरा अशुभग्रह इस लग्नवालेकी मृत्युकरेंगे ॥

श्लोक-भौमजीवारुणाः पापाः एक एव शुभः कविः। शनैश्चरेण जीवस्य योगे मेषभुवो यथा॥६॥ कुजभानिबन्दवः पापाः एक एव शुभः कविः। राजयोगकरौ शुक्रसोमपुत्रौ शुभान्वितौ ॥ ७ ॥ शनिर्जीवसमायोगात्फलं मेषभुवो यथा। शनिस्साक्षान्नहन्तास्यान्मारकत्वेन लक्षितः॥ ८ ॥ भौमादयो निहन्तारो भवेयुः पापिनो ग्रहाः । शुभाशुभफलान्येवं ज्ञातव्यान्युगजन्मनः ॥ ९ ॥

अर्थ-मिथुनलग्नवालेको मंगल, गुरु अशुभ हैं शुक्र शुभ हैं शनि और गुरुका समायोग अशुभदायक है रवि और चन्द्रभी अशुभ हैं शुक्र और शुभग्रहयुक्त बुध दोनों राजयोगकारक हैं, मारकेशहोकर भी शनैश्चर नहींमारेगा मंगल वगैरह ग्रहोंकी दशामें मृत्यु होवेगी ॥

श्लो०–शुक्रमन्दबुधाःपापाः विद्धिषणभूसुतौ । राजयोगकरस्साक्षादेक एव धरासुतः ॥१०॥ भवेतां राजयोगस्य कारकौ गुरुभूमिजौ । रविस्साक्षान्नहन्ता स्यान्मारकत्वेन लक्षितः ॥ ११ ॥ शुक्रादयो निहन्तारो भवेयुः पापिनो ग्रहाः । कुलीरसम्भवस्यैवं फलान्युह्यानि सूरिभिः ॥ १२ ॥

अर्थ–कर्कलग्नवालेको शुक्र, शनि और बुध अशुभ हैं मंगल राजयोगदायक है और गुरु, मंगलका समायोग अत्यंत राजकारक है रवि मारकेश होकरभी कर्कलग्नवालेको नहीं मारेगा शुक्र वगैरा पापग्रह अपनीदशामें मारेंगे ॥

श्लोक–मन्दसौम्यसिताःपापाः कुज एव शुभावहः । प्रभवेद्योगमात्रेण न शुभं गुरुशुक्रयोः ॥ १३ ॥ गुरुभुक्तो यदा भौमो विशेषफलदायकः । बुधस्साक्षान्न हन्ता स्यान्मारकत्वेन लक्षितः ॥१४॥ घ्नन्ति सौम्यादयः पापा मारकत्वेन लक्षितः । एवं फलानि ज्ञेयानि सिंहजस्य मनीषिभिः ॥ १५ ॥

अर्थ–सिंहलग्नवालेको शनि, शुक्र, बुध अशुभ हैं मंगल शुभ है शुक्र, गुरुका समायोग फलदायक नहीं है परंतु भौम और गुरुका समायोग फलदायक है बुध मारनेवाला है शनि मारकेश होकर भी नहीं मारेगा ॥

श्लोक–जीवशुक्रेन्दवःपापा एको भृगुसुतश्शुभः । राजयोगकरस्सौम्यो भृगुपुत्रसमन्वितः ॥ १६ ॥

निहन्तिकविरन्यैर्युग्मारकाख्याः कुजदयः। घ्नन्ति पापाः शुभान्यूह्यान्येवं कन्याभुवो बुधैः ॥ १७ ॥

अर्थ-कन्यालग्नवालेको शुक्र, चन्द्र, गुरु, मंगल अशुभ है बुध और शुक्रका समायोग राजयोग कारक है सूर्य अकेला नहीं मारेगा मंगल वगैरा उक्तपापग्रह मारेंगे ॥

श्लोक-जीवार्कमहिजाःपापाः शनैश्चरबुधौ शुभौ। राजयोगकरस्साक्षादेक एवांशुमत्सुतः ॥१८॥ भवेतां राजयोगस्य कारका इन्दुतत्सुतौ। कुजः साक्षान्नह न्ता स्यान्मारकत्वेन लक्षितः ॥१९॥ जीवादयो न ह-न्तारो भवेयुः पापिनो ग्रहाः। शुभाशुभफलान्येवं ज्ञातव्यानि तुलाभुवः ॥ २० ॥

अर्थ-तुलालग्नवालेको गुरु, रवि, मंगल अशुभ हैं बुध, शनि शुभ है शनि इकेला और चन्द्र बुध संयुक्त राजयोगकारक हैं मंगल मारकेश होकरभी तुलालग्नवालेको नहीं मारेगा ॥

श्लोक-बुधशुक्रार्कतनयः पापास्सुरगुरुश्शुभः। सूर्याचन्द्रमसावेव भवेतां योगकारकौ ॥ २१ ॥ जीवोनहन्ता सौम्याद्या हन्तारो मारकाह्वयाः। तत्तत्फलानि विज्ञेयान्येवं वृश्चिकजन्मनः ॥ २२ ॥

अर्थ- वृश्चिकलग्नवालेको बुध, शुक्र, शनि, अशुभ हैं गुरु शुभ है रवि और चन्द्र राजयोगकारक हैं गुरु मारकेशहोकरभी नहीं मारेगा बुध वगैरा मारेंगे ॥

श्लोक-एक एव कविः पापः शुभौ भौमादिवाकरौ। योगोभास्करसौम्यायां स्यान्नहन्तांशुमत्सुतः ॥ २३॥

घ्नन्ति शुक्रादयः पापाः हन्तृलक्षणलक्षिताः। ज्ञातव्यानि फलान्येवं चापजस्य मनीषिभिः ॥ २४ ॥

अर्थ-धनलग्नवालेको शुक्र अशुभ है। रवि, मंगल शुभ हैं रवि और बुधका समायोग राजयोंगकारक है शनि मारकेश होकरभी नहीं मारेगा शुक्र वगैरा अन्यग्रह मारेंगे ॥

श्लोक-कुजजीवेन्दवः पापाः शुभौ भार्गवचन्द्रजौ।
राजयोगकरः साक्षा देक एव भृगोस्सुतः ॥ २५ ॥
चन्द्रा त्मजेन संयुक्तो विशेष फलदायकः।
स्वयञ्चैव न हन्तास्यान्मन्दो भौमादयः परे ॥२६ ॥
निहन्तारः पापिनस्ते मारकत्वेन लक्षिताः।
ज्ञातव्यानि बुधैरेवं फलानि मृगजन्मनः ॥२७ ॥

अर्थ-मकर लग्नवालेको मंगल गुरु और चन्द्र अशुभ हैं शुक्र बुध शुभ हैं शुक्र अकेला राजकारक है जो यह बुधयुक्त हो तो और भी उत्तम है शनि मारकेश होकर भी नहीं मारेगा मंगल वगैरह अन्य ग्रह मारेंगे ॥

श्लोक-कुजजीवेन्दवः पापाः एको दैत्यगुरुश्शुभः
राजयोगकरो भौमः कविह्येको बृहस्पतिः ॥ २८ ॥
न हन्ता घ्नन्ति भौमाद्या मारकत्वेन निश्चिताः।
ज्ञातव्यानि बुधैरेव फलानि घटजन्मनः ॥ २९ ॥

अर्थ -कुम्भ लग्नवालेको मंगल गुरु चन्द्र अशुभ हैं शुक्र शुभ है,शुक्र और मंगलका समायोग राजयोगकारक है। गुरु मारकेश होकर भी नहीं मारेगा मंगल वगैरह अन्य ग्रह मारेंगे ॥

श्लोक-मन्दशुक्रांशुमत्सौम्याः पापाभौमाविधू शुभौ। महीसुतगुरौ योगकारिणा नैव भूसुतः ॥३०॥ मारकामारकाभिक्या मन्दाद्याघ्नंति पापिनः। इत्यूह्यानि बुधैस्सम्यक्फलानि झषजन्मनः ॥ ३१ ॥

अर्थ-मीन लग्नवालेको शनि, शुक्र, रवि और बुध, अशुभ ह मंगल और चन्द्र शुभ हैं, गुरु और मंगलका समायोग राज-योगकारक है मंगल मारकेश होकर भी नहीं मारेगा शनि वगैरह अन्य ग्रह मारेंगे ॥ विंशोत्तरी दशामें जब उक्त मार्केश ग्रहोंकी दशा आती है तब मनुष्य की मृत्यु होती है लघुपाराशरी देखनेसे इसका पूरा हाल मालूम हो जावेगा "श्रीवेंकटेश्वर" स्टीम् प्रेस बंबईकी छपी हुई लघुपाराशरी भाषाटीका मँगाकर देखियेगा ॥

प्रश्न- दशम घरका स्वामी आपने मारकेश क्यों बताया दशम घर राज्यका है वह मारक नहीं होता इसमें कुछ युक्ति हो तो कहियेगा ॥

उत्तर-कार्य्यका लय कारणमें होता है, दशम घर पिताका है और पिता इस शरीरका कारण है कार्य्यका कारणमें लय होना न्यायसे सिद्ध है अतएव दशमेशकी दशा मारकेश किसीतरह असंगत नहीं है, हमने कई बार परीक्षा की है दशमेशकी दशामें प्रायः मृत्यु होती है और बृहत्पाराशरीमें भी लिखा है कि दशम घरसे आयुका चिन्तन करना ॥

प्रश्न-क्या कुण्डली देखकर यह कहसक्ता है कि ये स्त्रीकी है वा पुरुषकी ॥

उत्तर-स्त्री पुरुषका ज्ञान तथा जीवित मृतककी कुण्डली बताने के कई श्लोकं हैं परन्तु वे सब खिलोनेकी भांति हैं ग्रहोंकी स्थिति

परसे जो फल निर्णीत है सो पक्कारंग है जो कभी नहीं उड़ता और ये जो नामाक्षरको द्विगुण करना अमुक अंकका भाग देना आदि फलकथनकी विधि है सो कच्चे रंगकी भाँति शीघ्र उड़जानेवाली है, स्त्री पुरुष ज्ञानके कई श्लोक हैं जिनमें एक श्लोक ठीक मिलता है वह यह है "रविराहू लग्नभांकैः एकीकृत्वा युगोद्धृतम्" अर्थात् रवि जिस राशिपर है वह अंक, और राहुका अंक, तथा लग्नका अंक ये जन्म कुण्डलीके जोड़ना और तीनोंके योगमें ४ का भाग देना, एक या तीनबचे तो पुरुषकी कुण्डली है शून्य या दो बचे तो स्त्रीकी जन्मकुण्डली है जो ऐसा करनेसे फल न मिलै तो फिर गुरुकी राशिका अंक जो जन्म कुंडलीमें हो उसको भी इसीमें शामिलकर देना और चारका भाग देकर शेषसे फल कहना विषम बचे तो पुरुष सम बचे तो स्त्रीकी कुंडली कहना जीवित मृतककी कुंडली बतानेके लिये यह श्लोक कहते हैं ॥

श्लोक—भानुराहुशशीअंकं प्रश्नलग्नं च संयुतम् ।
अष्टभिः स्वामिना गुण्यं लग्ननाथविभाजितम् ॥ १ ॥
"अंकेन जीवितं शेषे शून्यं मृत्युर्नसंशयः" ।

अर्थात्—जन्मके सूर्य्यकी राशि, जन्मराहुकी राशि, और जन्मके चन्द्रकी राशि और प्रश्न लग्नका अंक इन चारोंको इकट्ठे जोड़कर जन्मलग्नसे अष्टमेश जो ग्रह हो उसग्रहकी संख्यासे इसे गुणना और जन्मलग्नेशका भाग देना जो कोई अंक शेष बचे तो कुंडली वाला जीवित है जो शून्य शेषबचे तो कुंडली मृतककीहै परन्तु ऐसे श्लोकोंका फल मिलता नहीं है विनोदार्थ लिखदिये हैं इसी तरह सभा चौर कहनेके कई श्लोक हैं जैसे ।

इष्टो दशघ्नोऽर्कयुतः शरघ्नः बाणेन्दुयुक्तः शरपक्ष भक्तः। लब्ध्वास्त्रिगुणितं दलितं च शेषं सभासु चौरं प्रवदन्ति संतः। इष्टमंकं द्विगुणितं चैकेन च समन्वितम्। त्रिभिश्चैव हरेद्भागं शेषं च फलमादिशेत्। विष मेजीवचिन्तास्यात् समेधातुः प्रकीर्तितः। शून्यं मूले विजानीयात् आचार्य्यैः कथितं हि तत्॥

परन्तु ये सत्यनहीं है न इनके सत्य होनेकी कोई युक्ति है॥

प्रश्न—आजकलके जो ग्रन्थ ज्योतिषके प्रचलित हैं उनमें कौन कौनसे उत्तम हैं और वे कहां मिलते हैं॥

उत्तर—वर्त्तमानकालिक ज्योतिषके ये ग्रन्थ उत्तम हैं यथा—बृहज्जातक, नीलकण्ठी, षट्पञ्चाशिका, भुवनदीपक, जातकाभरण, नरपतिजयचर्य्या, भावकुतूहल, होरारत्न, लघुपाराशरी, हायनरत्न, सर्वार्थचिन्तामणि, केशवीजातक, जातकसंग्रह, यवनजातक, जातकालंकार, मयूरचित्रक, श्यामसंग्रह, संकेतनिधि, ज्ञानप्रदीप, आदि समस्तग्रन्थ सेठ खेमराज श्रीकृष्णदासजीके "श्रीवेङ्कटेश्वर" स्टीम् प्रेसमें छपे हुए हैं जो उक्तयन्त्रालयमें मिलते हैं आजकल भारत वर्षमें "श्रीवेङ्कटेश्वर" स्टीम् प्रेसकी समानताका और दूसरा हिंदीका प्रेस नहीं है मैंने स्वयं उक्त प्रेस देखा है जहां अनेक उत्तमोत्तम संस्कृत तथा अँग्रेजीके विद्वान् मौजूद हैं जो सौ २ दो २ सौ रुपया मासिक वेतन सेठजीसे पाते हैं सेठजी जैसे सत्पुरुषोंसे इसभारतवर्षका गौरव बनारहेहैं और सत्यतो यह है कि सेठजी इसदेशमें भारतेन्दु हैं हमें अभिलाषा है कि इसदेशके सम्पूर्ण महपुरुष उक्तप्रेसकी अवश्य गुणज्ञता करेंगे॥

उक्त ज्योतिषके ग्रंथोंमें केशवीजातकोक्त ग्रहोंका बल श्लाघनीयहै, आयुष्यकी अवधि लघुपाराशरीमें अच्छी कही है, उसका फल मिलताहै, ताजकमें नीलकण्ठीग्रंथका फलित सर्वोपरिहै, जातकोंमें बृहज्जातक पुरानाहोनेपरभी उसका फलित आजभी बिलकुल नवीन है. प्रश्नमें ज्ञानप्रदीप षट्पंचाशिका भुवनदीपक उत्तम हैं इनके अलावा मेरे पुस्तकालयमें केरलप्रश्नरत्न आदि मूलग्रंथ हस्त लिखित मौजूद हैं जो बहुत उत्तम हैं ॥

इति श्रीपवाँरवंशावतंस श्रीमहाराज शंभुसिंहसुठालिया धीशकृते "ज्योतिषकल्पद्रुमग्रंथे" स्वानुभूत-ज्योतिषाख्यो द्वितीयो भागः समाप्तः ॥२॥



श्रीगणेशायनमः ।

ज्योतिषकल्पद्रुम ।

(सिद्धान्तप्रकरणम् ।)

प्रश्न–पृथ्वीका आकार कैसा है और वह चर है अथवा स्थिर है सब प्रमाण कहियेगा ॥

उत्तर–पृथ्वीका आकार गोलहै यह केवल अंग्रेजोंकाही सिद्धान्त नहीं है बरन् ब्रह्मसिद्धान्तमेंभी भूगोलको कपित्थाकार लिखा है ॥

शंका–पृथ्वी गोल है तो हमको चपटी नजर क्यों आती है? ॥

समाधान–खरबूजा देखनेमें गोल होता है परन्तु जो उसकी फांकि अलग अलग कीजावें तो वे फांके देखनेमें सीधी दृष्टि पड़ेगी और जब सब फाकोंको जोड़कर देखोगे तो खरबूजा नजर आवेगा इसी तरहसे पृथ्वीगोल है परन्तु हम सम्पूर्ण भूगोलको नहीं देख सक्के हैं केवल खण्डमात्र उसका हमारे नजर आता है अतएव वह चपटा दिखाई देता है यदि पृथ्वीकी परिधिके सौ भाग करे तो विषुवत्‌रेखापर एक भागकी चौडाई २४८ मीलकी होती है और मनुष्यकी दृष्टि तो दो मील भी नहीं पहुँच सक्ती है और वह भाग तो २४८ मील तक सीधाही देख पड़ेगा फिर दूसरा भी ऐसाही दिखलाई देवेगा पृथ्वी बहुत बड़ीहै और मनुष्य बहुत छोटा है इसी कारण गोल पृथ्वी समान देख पड़ती है सिद्धान्त शिरोमणि में लिखा कि–

समो यतः स्यात्परिधेः शतांशः पृथ्वी च पृथ्वी नितरांतनीयान् । नरश्च तत्पृष्ठगतस्य कृत्स्नां- समेव तस्यप्रतिभात्यतः सा ॥

अर्थ–पृथ्वी बहुत बड़ी है और उसकी परिधिका शतांश चपटा नजर आता है और मनुष्य अपनी दृष्टिसे केवल शतांश भागही देखसक्ता है इसलिये पृथ्वी चपटी दिखाती है इति । पृथ्वी गोल होनेमें बहुतसे प्रमाण हैं और इंग्रेजी भूगोलमें इसके बहुतसे प्रमाण लिखे हुए हैं परन्तु यहां हमको केवल अपने पुराने महर्षियोंकाही सिद्धान्त देखना है अतएव इंग्रेजी ग्रन्थोक्त विषय नहीं लिखागया है. ग्रहलाघवके चतुर्थ अधिकारमें लिखाहै कि "छादस्यत्यर्कमिन्दु र्विधुं भूमिभा" अर्थात् चन्द्र ग्रहणके समय पृथ्वीकी छाया चन्द्र माको ढांकनेवाली होती है इति । और यह प्रत्यक्ष है कि जब चन्द्रमाका ग्रहण होता है तब चन्द्रमाका ग्रास सदा गोल दिखाई देता है इससे सिद्ध है कि पृथ्वी गोल है जैसा पदार्थ होता है वैसाही उसका प्रतिबिंब पड़ता है जब पृथ्वी गोल है तबही उसका प्रति बिम्ब चन्द्रमापर गोल पड़ता है। संस्कृतमें पृथ्वीके नाम धरा, अचला गौःइत्यादि हैं "गच्छतीति गौः" अर्थात् जो चलती है सो गौः भूमि है इस शब्दसे पृथ्वीका चलना विदित हुआ, दूसरा नाम पृथ्वीका अचला है अचलाका अर्थ नहीं चलनेका है इस शब्दके अर्थसे यह विदित हुआ कि,पृथ्वी स्थिर है यहां इन दोनों अर्थोंमें परस्पर विरोध आया इससे विदित होताहै कि, पूर्वकालमें बहुतसे लोग पृथ्वीको अचल मानते थे और बहुतसे चलायमान मानते थे इसीसे पृथ्वीका नाम गौ और अचला लिखाहै परंतु जब श्रीभास्कराचार्य्यने सिद्धान्तशिरोमाणि ग्रंथ रचा तो यह सब संदेह निवृत्त होगये ॥

आर्य्यभट्टीये अनुलोमगतिर्नौस्थः पश्यत्यचलं विलोमगं यद्वत्। अचलानि भान्ति तद्वत् सपश्चिमगानि लङ्कायामिति ॥

अर्थ—जैसे नौकामें बैठाहुआ मनुष्य किनारेकी स्थिर वस्तुओंको दूसरी ओरसे चलते हुये देखता है ऐसेही मनुष्योंको सूर्यादि नक्षत्र जो स्थिर हैं पश्चिमकी ओर को चलतेहुये दीखते हैं और पृथ्वी स्थिर प्रतीत होती है परन्तु वास्तवमें भूमिही चलती है॥

आर्य्यभट्ट—भपञ्जरः स्थिरो भूरेवावृत्यावृत्यप्रतिदैवसिको। उदयास्तमयो सम्पादयतिः ग्रहनक्षत्राणामिति ॥

अर्थ—सूर्यादि सब नक्षत्र स्थिर हैं पृथ्वीही बार बार अपनी धुरीपर घूमकर प्रति दिवस इनके उदय और अस्तका संपादन करती है।

ततो ऽपराशाभिमुखं भपञ्जरे सखेचरे शीघ्रतरे भ्रम त्यपि। तदल्पगत्येन्द्रदिशं नभश्चराश्चरन्ति नीचोच्चतरात्मवर्त्मसु ॥

अर्थ—यद्यपि सब तारागण अपने अपने ग्रहोंके साथ शीघ्र गतिसे पूर्वसे पश्चिमको घूमते दिखलाईदेतेहैं परंतु वस्तुतः सब ग्रह अल्प गतिसे अपनी २ कक्षामें पश्चिमसे पूर्वको चलतेहैं ॥

भपञ्जरः खेचरचक्रयुक्तो भ्रमत्यजस्रं प्रवहानिलेन। यान्तो भचक्रेलघुपूर्वगत्या खेटास्तु तस्यापरशीघ्रगत्या ॥

अर्थ–प्रवहशक्ति Force of inertia के कारण सब तारागण सहित ग्रहोंके सदा घूमते रहतेहैं ये सबलघुगतिसे पूर्वकी ओरको घूमतेहैं परन्तु शीघ्रगतिसे पश्चिमको जातेहुए दिखलाई देतेहैं इस विलोमगति (अर्थात् ग्रहोंके पश्चिमकी ओर जातेहुए दीखने) का कारण भूमिका अपनी धूरीपर घूमना है जैसे रेलगाड़ीमें बैठाहुआ मनुष्य सड़कके किनारेको उल्टी ओरको दौडतेहुए देखताहै ॥

अथ यदेनं प्रातरुदेतीति मन्यन्ते रात्रेरेव तदन्तमित्वा अथात्मानं विपर्यस्यते अहरेवास्तात् कुरुते रात्रिं परस्तात् । स वा एष न कदाचन निम्रोचति । न ह वै कदाचन निम्रोचति ॥ ऐतरेयब्राह्मण ॥

अर्थ–सूर्य न कभी छिपताहै और न निकलताहै जब वह रात्रिके अन्तको प्राप्त होकर बदलताहै अर्थात् भूमिके घूमनेके कारण पश्चिमसे फिर पूर्वमें दिखलाई देताहै और पृथ्वीके इसभागमें दिन और दूसरे भागमें रात्रि करताहै तब लोग सूर्यका उदय मानतेहैं इसी प्रकार जब दिनके अन्तको प्राप्त होकर सूर्य पश्चिममें दिखलाई देताहै और भूमिके इसभागमें रात्रि और दूसरे भागमें दिन करताहै तब लोग सूर्यका अस्त मानतेहैं वास्तवमें न वह कभी छिपताहै न निकलताहै ॥

इस विषयमें बहुधा मनुष्य कईप्रकारकी शंका किया करते हैं जैसे–

प्रश्न–यदि पृथ्वी चलती है तो हिलती क्यों नहीं ?

उत्तर–न हिलनेका तो कारण स्पष्ट है देखो गाड़ी जब ऊंची नीचीजगहमें चलेगी तो साफ सड़ककी अपेक्षा अधिक हिलेगी, और सड़ककी अपेक्षा पानीपर नौकामें कम हालने लगती है, और

विमानमें जो हवामें चलताहै नौकासेभी बहुत कम हाल लगती है तो ऐसी जगहमें चलनेसे कि जहां हवाभी नहीं है पृथ्वी कैसीहिलसक्ती है? ।

प्रश्न–अच्छा, यदि पृथ्वी चलती है तो सब नगर ग्राम जहांके तहां क्यों बने रहते हैं हट क्यों नहीं जाते ? ।

उत्तर–वाह अच्छी शंका की चलने फिरनेको तो हम तुम भी चलते फिरते हैं तो क्यों हमारी तुम्हारी आंख नाक जो मुखपर हैं पीठपर आजाती है यदि भूमिका कुछ भाग चलता और कुछ न चलता तो अवश्य नगर और ग्राम हटजाते परन्तु यह भूगोल तो सब चलता है फिर नगर और ग्राम वहीं बने रहेंगे कि जहां वे स्थित हैं। जैसे यदि एक गेंदपर कुछ विन्दु बनादियेजाँय और वह गेंद घुमादीजाय तो वे बिन्दु वहीं बनेरहेंगे जहां हमने बनाये थे ॥

प्रश्न–यह तो मैं समझा, परन्तु पृथ्वी चलती हुई प्रतीत क्यों नहीं होती ?

उत्तर–"कुलालचक्रभ्रमिवामगत्या यान्तो न कीटा इव भान्ति यान्तः" (सिद्धान्तशिरोमणि)

अर्थ–जैसे कुम्हारके घूमते हुए चाक (चक्र) पर बैठेहुए कीड़े उसकी गतिको नहीं जानसक्ते ऐसेही मनुष्योंको पृथ्वी चलतीहुई नहीं प्रतीतहोती ॥

प्रश्न–जो कबूतर सबेरेको उड़ते हैं दोपहरको आते हैं तो वे घर पर न आना चाहिये क्योंकि वे आकाशमें उड़ेंगे इतने पृथ्वी बहुत दूर चली जावेगी और पक्षियोंको बसेरेके समय उन्होंका घर नहीं मिलेगा ॥

उत्तर–पृथ्वी अपने ऊपरके जल और ४९ मील वायुमण्डलको लपेटेहुए घूमती है इससे कबूतरादि जो वायुके भीतर हैं और

समुद्र जो कि वायुके भीतर है इनकी अस्तव्यस्तताकी शंका व्यर्थ है पृथ्वीके आकर्षण शक्तिके इलाकेसे कोई बाहर नहीं जा सक्ता कोई भी पक्षी ऐसा नहीं कि जो सीधा आकाशको उड़जावे जो पृथ्वीमें आकर्षणशक्ति न हो तो जो चीजें अपने ऊपर उछालते हैं वे नीचे क्यों आपड़ती हैं ऊपरही चलीजावें इसीलिये सिद्धान्तशिरोमणि में लिखाहै ॥

आकृष्टशक्तिश्च महीतया यत् स्वस्थं गुरुस्वाभिमुखं स्वशक्त्या । आकृष्यते तत्पततीव भाति समे समन्तात् क्व पतत्वियं खे ॥

अर्थ—पृथ्वीमें आकर्षणशक्ति है इसलिये आकाशस्थ गुरुपदार्थों को वह अपनी ओर खैंचती रहती है ऊपर फेकनेसे जो पदार्थ नीचे गिरता है वह खुद बखुद नहीं पड़ता जो आकाश और पृथ्वी समान होते याने पृथ्वीमें आकर्षणशक्ति न होती तो वह पदार्थ पृथ्वीपर क्यों पड़ता—सिद्धान्तशिरोमणिमें और भी लिखाहै ॥

यो यत्र तिष्ठत्यवनीं तलस्थामात्मानमस्या उपरि ष्ठितं च । स मन्यतेऽतः कुचतुर्थसंस्थांमिथश्च ते तिर्यगिवामनन्ति ॥ अधः शिरस्त्वं कुदलान्तरस्था छाया मनुष्या इव नीरनीरे । अनाकुलास्तिर्यगधः स्थिताश्च तिष्ठन्ति ते तत्र वयं यथाऽत्र ॥

अर्थ—संसारमें जो जहां रहता है सो तहां पृथ्वीको अपने नीचे देखताहै आप ऊपरहै ऐसाही मानताहै इसहेतुसे पृथ्वीके चौथे भाग पर रहनेवाले आपसमें ये तिरछे हैं ऐसे मानते हैं आधेपर रहनेवाले आपसमें ये नीचे शिर ऊपर पांव हैं जैसे पानीमेंके छाया

मनुष्य सरीखे मानते हैं परन्तु जो जहां रहता है सो तहां है हम यहां जैसे हैं वेभी वहां ऐसेही रहते हैं ॥

यजुर्वेदके अध्याय ३ मंत्र ६ में भी यही लिखाहै कि यह भूगोल सूर्य्यके चारोंओर घूमता है । "आयं गौः पृश्निरक्रमी दसदन्मातरं पुरः । पितरं च प्रयन्त्स्वः" ॥

अर्थ-(अयम्) यह (गौः) पृथ्वीलोक (मातरम्) जलको (असत्) प्राप्तहोकर अर्थात् जलके सहित (पृश्निः) अन्तरिक्षमें (आक्रमीत्) आक्रमण करता है अर्थात् अपनी धुरीपर घूमता है (च) और (पितरम्) सूर्य्यकेभी (पुरःप्रयन्) चारों ओ घूमता है ॥

इसी तरह ऋग्वेदके अष्टक ८ अध्याय २ वर्ग १० मंत्र १ में लिखा है (या गौःवर्त्तनिं पर्य्येति विवस्वते ॥)

अर्थ-(यागौः) यहपृथ्वी (वर्त्तनिम्) अपनी कक्षामें (विवस्वते) सूर्य्यके (पर्येति)चारों ओर घूमती है ॥

सिद्धान्त शिरोमणिमें पृथ्वीकी लम्बाई चौड़ाई इसतरह लिखीहै ॥

प्रोक्तो योजनसंख्यया तुपरिधिः सप्ताङ्गनन्दाब्धयः ।
तद्व्यासः कुभुजङ्गसायकभुवोऽथ प्रोच्यते योजनैः ॥

अर्थ-पृथ्वीकी परिधि ४९६७ योजन अर्थात् ५ मीलका योजन माने तो २४८३५ मील और ब्यास १५८१ योजन=७९०१मील होता है परन्तु ५$\frac{१}{२३०}$ मीलका १ योजन माने तो योरप वासियो और यहांके ज्योतिषशास्त्रमें समता आजाती है ॥

अब देखिये कि जो बातें आपने इंग्रेजी भूगोलमें पढ़ी हैं वेहीं बातें अपने पुराने शास्त्रोंमें महर्षियोंने लिखी हैं कि, जिनको आज लक्षावधि वर्ष व्यतीत होगए हैं ॥

प्रश्न–श्रीमद्भागवतमें लिखा है कि "अण्डमध्यगतः सूर्यो द्यावा भूम्योर्यदंतरम् । सूर्यांडगोलयोर्मध्ये कोटयस्युःपञ्चविंशतिः" श्रीमद्भागवते स्कन्ध ५ अध्याय २० श्लोक ४३ अर्थात् सम्पूर्ण पृथ्वी ५० कोटि योजन है और आपके कथनानुसार ४९६७ योजन परिधि होती है भागवतमें और ज्योतिषमें इतना विरोध क्यों है ?॥

उत्तर–श्रीमद्भागवतमें जो योजन संख्या लिखी है यह पृथ्वीका विस्तार नहीं है बल्कि सूर्य और पृथ्वीके बीचके अवकाशका विस्तार कहाहै । सिद्धांतशिरोमणिमें लिखा है कि ।

कोटिघ्नैर्नखनन्दषट्कनखभूभृद्भुजङ्गेन्दुभिर्ज्यो
तिःशास्त्रविदो वदन्ति नभसः कक्षामिमां योजनैः ।
तद्ब्रह्माण्ड कटाह सम्पुट तटे केचिज्जगुर्वेष्टनं
केचित्प्रोचुरदृश्यदृश्यकागिरिं पौराणिकाः सूरयः ॥

अर्थ–१८७१२०६९२०००००००० योजनको ज्योतिःशास्त्रके जाननेवाले सारी सृष्टिका एक छोटा भाग मानते हैं बहुतसे इसको पृथ्वीकी परिधिका मान समझते हैं और पाराणिक विद्वान् इसको केवल एक लोकालोक नामक पर्वतकी उँचाई बतलाते हैं देखिये ईश्वरकृत ब्रह्माण्डके सामने ५० कोटि योजन कोई चीज नहीं है इंग्रेज लोगोंने जो २४८५६ मीलकी परिधि और ७९१२ मीलका व्यास लिखा है सो इस मनुष्यलोकका विस्तार वर्णन किया है सम्पूर्ण ब्रह्माण्डका यह क्षेत्रफल नहीं है इस ब्रह्माण्डमें ऐसे अनेक लोक हैं इंग्रेजमहाशय यह बात खुद स्वीकार करते हैं कि, यह पृथ्वी बहुत छोटा ग्रह है इससे बड़े कई ग्रह आकाशमें हैं

जिनमें मनुष्य बसते हैं और उनमें सब प्रकारकी सृष्टि रचना मौजूद है अपने शास्त्रोंमें ईश्वरको अनन्त कोटि ब्रह्माण्डाधीश लिखा है सो बहुत सत्य है ये जो आकाशमें तारागण दिखाई देते हैं ये सब लोक हैं जो इस पृथ्वीसे किसी भाँति कम नहीं हैं पुराने शास्त्रोंमें और यूरोपनिवासियोंके सिद्धान्तमें विशेष अन्तर नहीं है नक्षत्रका नाम संस्कृतमें वसु है मनुष्यके वसनेसे इनका नाम वसु पड़ा है और यही वे लोक हैं जो पुराणोंमें चन्द्रलोक सूर्य्यलोक इत्यादिक नामों से कथन कियेगये हैं।

प्रश्न–पृथ्वी किसके आधारसे है?

उत्तर–पृथ्वी निराधारही भगवान्ने सृजी है सिद्धान्तशिरोमणि में भी नान्याधार ही लिखी है. शंका–पुराणोंमें तो लिखा है कि, पृथ्वी शेषके आधारसे धरी है और आप यहां निराधार बतलाते हो इतने विरोधका क्या कारण है?

समाधान–शेषका अर्थ सर्प भ्रमसे लेलिया गया है वास्तविक शेषका अर्थ बाकी है जो जन्म मरण और उत्पत्ति प्रलयसे शेष याने पृथक् रहता है अर्थात् परमेश्वर उसीके आधारपर यह सृष्टि स्थित है सिद्धान्तशिरोमणिमें लिखा है कि–

मूर्तो धर्ता चेद्धरित्र्यास्तदन्यस्तस्याप्यन्योऽस्यैवमत्रानवस्था। अन्त्ये कल्प्या चेत् स्वशक्तिः किमाद्ये किं नो भूमिरिति॥

अर्थ–पृथ्वी बोझलहै आकाशमें नहीं रहसक्ती इसवास्ते उसको धरनेवाला दूसरा होना इसहेतुसे शेषको कल्पना करना सो वहभी बोझल ऊपर पृथ्वी ऐसे दोनोंभी नहीं रहसक्ते सो इनको तीसरा

उनको चौथा ऐसा अंतनहीं लगनेका इसलिये अंतवाला अपनीही शक्तिसे खड़ाहै ऐसी कल्पना करनीही पड़ेगी इससे पहिले पृथ्वी मेंही शक्तिहै ऐसे क्यों नहीं कहना जिससे अनवस्थाप्रसंग दूर हो ॥

ग्रहोंका नक्शा ।

	चं.	व्यासमील	अक्षके आस-पास फिरनेका काल	सूर्यसे दूरी मील	सूर्यके आस-पास एक प्रद-क्षिणा होनेका काल	क्रांतिवृत्तसे दूसरे ग्रहों-की कक्षाका झुकाव
सूर्य		८,८२०००	२५ दिन ८ घंटे			
बुध		३,१४०	२४घं. ५ मिनट	३,७०००००	८८ दिन	७° ०
शुक्र		७,८००	२३ घं. २१मि.	६,८०००००	२२५ दिन	३° २३
पृथ्वी	१	७,९२६	२४ घं. ० मि.	९,५०००००	३६५$\frac{१}{४}$ दि.	
मंगल		४,१००	२४ घं. ३७ मि.	१४,२०००००	६८७ दिन	१° ५१
फ्लोरा		अनिश्चित	अनिश्चित	२०,९०००००	११९३ दिन	५° ५३
वेस्टा		२.५०१	तथा	२२,४०००००	१३२५ दिन	७° ८
एरिम्		अनिश्चित	तथा	२२,६०००००	१३४१ दिन	५° २८
मेटीस		तथा	तथा	२२,६०००००	१,३४५ दिन	५° ३४
हिबी		अनिश्चित	अनिश्चित	२३,००००००	१,३७९ दिन	१४° ४७
आस्ट्रिया		तथा	तथा	२४,५०००००	१,५११ दिन	५° १९
जूनो		७९.१	तथा	२५,४०००००	१,५९४ दिन	१४° ४०
सीरीस		१६३१	तथा	२६,३०००००	१,६८२ दिन	१०° ३७
पालेस		अनिश्चित	तथा	२६,३०००००	१,६८६ दिन	३४° ३७
बृहस्पति	४	८७०००	९ घं. ५६ मि.	४९,००००००	४,३३३ दिन	१° १८
शनि	८	७९१६०	१० घं. २९ मि.	९०,००००००	१०,७५९ दिन	२° २९
युरेनस	६	३४५००	९ घं. ३० मि.	१.८००००००००	३०,६८७ दिन	०° ४६
नेपच्यून	२	४१५००	अनिश्चित	२,८५,००००००	६०,१२७ दिन	१° ४६
चंद्र		२१८०	२७ दिन ८ घं.	२,४००००	२७$\frac{१}{३}$ दिन	५° ९

याम्योदक्पुरयोः पालान्तरहतं भूवेष्टनं भांशहृत्।
तद्भक्तस्य पुरान्तराध्वन इह ज्ञेयं समं योजनम् ॥
(सिद्धान्तशिरोमणि)

अर्थ–विषुवत्‌रेखासे जो नगर दक्षिणमें हों और उत्तरमें हों उन नगरोंके अक्षांशों (Latitude) का अन्तर करना और उस अन्तरसे भूमिकी परिधिके योजन गुणना और गुणन फलमें ३६० का भाग देना जो लब्धि आवे उतनेही योजनोंका अन्तर उन दोनों नगरोंके मध्यमें है अन्तर अक्षांशका उन नगरोंका करना जो विषुवत् रेखासे एक दक्षिणमें है और दूसरा उत्तरमें है पृथ्वीके भ्रमण विषयमें और भी सिद्धान्तशिरोमणिमें लिखा है–

मध्ये समन्ताद्दण्डस्य भूगोलो व्योम्नि तिष्ठति।
बिभ्राणः परमां शक्तिं ब्रह्मणो धारणात्मिकम् ॥
(सूर्य्य सिद्धान्त)

भपञ्जरस्य भ्रमणावलोकादाधारशून्या कुरिति प्रतीतिः ॥

अर्थ–भपंजर याने नक्षत्रचक्र यह पृथ्वीको वेष्टन करके फिरतासरीखा दीखता है इससे पृथ्वी निराधार मालुम होती है क्योंकि आधार होता तो चक्र अटकजाता और फिर नहीं सक्ता ॥

अक्षांश जाननेकी रीति।

यन्त्रवेधविधिना ध्रुवोन्नतिर्या नतिश्च भवतोक्ष-
लम्बकौ ॥

अर्थ –तुरीय यंत्रसे ध्रुवको वेधना सो ध्रुवके उन्नतांश जितने आवेंगे उतने अक्षांश जानना ॥

अथ देशांश जाननेकी विधि ।

यल्लङ्कोज्जयनीपरोपरिकुरुक्षेत्रादिदेशान्स्पृशत्सूत्रं मेरुगतं बुधैर्निगदितं सा मध्यरेखा भुवः ॥

अर्थ–विषुवत्‌रेखा वह मध्यरेखा है जो लंका उज्जैन कुरुक्षेत्र आदि स्थानोंको स्पर्श करती हुई पृथ्वीके मध्यमें होकर गई है और लंकासे सुमेरुपर्वततक इस रेखाकी सीमा है इस रेखाके पूर्व पश्चिम देशके अन्तर देशांश कहे जाते हैं । सिद्धान्तशिरोमणिमें लिखा है कि–

प्राग्भूविभागे गणितोत्थकालादनन्तरंप्रग्रहणं विधोः स्यात् । आदौ हि पश्चाद्विवरे तयोर्या भवन्ति देशान्तरनाडिकास्ताः ॥ तद्धं स्फुटं षष्टिहृतं कुवृत्तं भवन्ति देशान्तर योजनानि ।

अर्थ–ग्रहणादि गणित विषुवत् रेखापर बसनेवाले स्थानोंका कहा गया है जो स्थान इस रेखासे पूर्वमें है वहां गणितकालके पीछे चन्द्रग्रहण होवेगा और पश्चिमस्थानोंमें गणितकालसे पहले ग्रहण होवेगा सो दोनोंके बीच जितनी घड़ी आवेगी उतनी देशान्तर घड़ी हैं उन घड़ीसे स्पष्ट परिधि गुणना और ६० का भाग देना तो देशान्तर योजन आते हैं ॥

परिधि जाननेका प्रकार ।

लम्बज्यागुणितो भवेत्कुपरिधिः स्पष्टस्त्रिभज्याहृतः ॥

अर्थ– लंबांश जीवासे मध्यपरिधि गुणके त्रिज्यासे भाग लेना तो स्पष्ट परिधि आवेगी परन्तु यह रीति चन्द्रग्रहणके समय देशांतर जाननेकी है परन्तु आजकलके इंग्रेजी नशक्रोंमें अक्षांश

देशांश सब स्पष्ट लिखे रहते हैं जिनके समझनेमें कुछ भी झगड़ा नहीं है ।

पृथ्वीके स्थिर माननेवाले यदि विचारेंगे तो मालुम होगा कि, पृथ्वीके स्थिर माननेमें कितनी कठिनाई नजर आतीहै क्योंकि संपूर्ण नक्षत्रचक्रके फिरनेमें बड़ा गुरुत्व है और एकही ग्रह पश्चिम और पूर्व दोनों ओर फिरे यह असंभवहै अब पृथ्वीका फिरना माननेसे बहुत लाघव होताहै सो सुनिये गा । सूर्य्य पृथ्वीसे साढ़ेचार करोड़ कोसकी दूरीपर हैं और उसका कक्षाव्यास नौकरोडकोस है इसके त्रिगुणसेभी कुछ ऊपर अधिक मिलानेसे निकट कक्षा तीसकरोड़ कोसकी आई इतनी कक्षा ६० घडीमें फिरताहै तो एक घडीमें पचासलाख कोस फिरना पडेगा यह केवल सूर्य्यका हिसाब है इसके सिवाय मंगल वगैरह और भी ग्रह हैं इनके फिरनेमें बहुत विस्तार बढ़ेगा एक नक्षत्रको एक घडीमें ३११८६७८२००००००० इतने योजन फिरना पडेगा तब कहीं उन्होंकी परिक्रमा पूरी होगी इसलिये इसरीतिमें बडाही गुरुत्व है और पृथ्वीके फिरनेमें बहुतही लाघव है, क्योंकि पृथ्वीकी परिधि कुल १२४२८ कोसकी है यह ६० घड़ीके फिरनेमें घड़ी एकमें २०८ कोस फिरना पड़ेगा ये भी विषुवत्‌रेखा परके मध्यका हिसाब है दोनों बगलोंमें परिधिकी न्यूनता है क्योंकि किसी गोल चीजकी जो चौडाई मध्यमें होतीहै वह शिरोपर नहीं होती जो यह शंका कीजाय कि, पृथ्वी सूर्य्यकेही आसपास क्यों फिरती है उसका समाधान यह है कि, भगवान्‌ने सब पदार्थोंमें आकर्षणशक्ति रक्खीहै बडा पदार्थ छोटेको अपनी ओर खेंचताहै छोटा बडेको नहीं खेंचसक्ता क्योंकि छोटेमें आकर्षणशक्ति कम होतीहै जैसे तराजूमें एक ओर सेरका पत्थर रखाजावे और दूसरी ओर दशसेरका पत्थर रखाजावे तो सेरके पत्थरको दश-

सेरका पत्थर अपनी ओर खींचलेगा इसी तरह सब ग्रहोंमें सूर्य्य बडाहै अतएव सबको अपनी ओर खींचताहै ॥

प्रश्न–जो सूर्य्य सबको अपनी ओर खींचताहै तो वे लोक सूर्य्य-पर क्यों नहीं गिरपड़ते ? ॥

उत्तर–ईश्वरने पृथ्वीमें विक्षेप शक्तिभी दीहै जैसे गेंदको आकाश में उछालनेसे वह पीछी पृथ्वीपर गिरतीहै इसका नाम आकर्षण शक्तिहै और धरतीसे जो गेंद आकाशको जाती है इसका नाम विक्षेपशक्ति है सूर्य्यके आकर्षणसे पृथ्वी अपनी कक्षाको छोड़कर बाहर नहीं जासक्ती और विक्षेपशक्तिसे सूर्य्यपर पडभी नहीं सक्ती। प्रत्युत पृथ्वी सूर्य्यके आसपासही फिरती रहतीहै इसलिये सबसे बडा जो सूर्य्य है उसीके आसपास पृथ्वी सब ग्रह और फिरतेहैं और संपूर्ण विषयोंमें लाघव मुख्य है वैयाकरण महाभाष्यके कर्त्तानें महाभाष्यमें लिखा है किः–

"लघ्वर्थं उपदिश्यते" अर्थात् लघु बातका उपदेश करता हूं इसीलिये पृथ्वीका फिरना मानना ठीक है ।

प्रश्न–जो आपने कहा कि पृथ्वीकी छाया पड़नेसे चन्द्रग्रहण होता है इसमें यह शंका है कि पृथ्वीकी छायासे जो चन्द्रग्रहण होता हो तो वह ग्रहण पृथ्वी निवासियोंको नहीं दीखना चाहिये बल्कि अन्यलोकवालोंको दीखना चाहिये ।

उत्तर–पृथ्वी और सूर्यके बीचमें चन्द्रमा है और चन्द्रमा सूर्यके प्रकाशसे चमकता है और पृथ्वीके चारों ओर चन्द्रमा घूमता है इसलिये जब घूमता हुआ चन्द्रमा पृथ्वी और सूर्यके बीचमें आता है तब सूर्यको ढाँकता है और सूर्यग्रहण होता है और जब चंद्रमा पृथ्वीके इस ओर और सूर्य उस ओर होता है तब पृथ्वी सूर्य चंद्र-माके बीचमें आकर सूर्यके प्रकाशको चन्द्रमापर अपनी छायासे

नहीं जाने देती बस जितने चन्द्रभागपर पृथ्वी सूर्यके प्रकाशको जानेसे रोकती है उतना भाग अस्त जानपडता है और यह दशा पृथ्वी निवासियोंको भलेप्रकार दीखसक्ती है क्या आप अपने मकानकी छाया अपने मकानमेंसे नहीं देखसक्ते हैं ?॥

प्रश्न—नत क्या है और उन्नत क्या है ?

उत्तर—सूर्यादि सब ग्रह अपने अपने मार्गमें चलते हुये अपनी चारों तरफकी क्षितिजसे जितने ऊंचे होवें उसे उन्नत और अपने शिरसे जितने झुके होवें उसे नत कहते हैं। जैसे सूर्य अपनी पूर्व क्षितिजसे उदय होकर ३० अंश ऊपर चढ़ा है इन ३० अंशोंका नाम उन्नत है फिर ३० अंशोंको ९० अंशोंमें घटा देनेसे शेष ६० अंश रहे इन अंशोंको नतांश कहते हैं क्योंकि अपने खमध्यसे ६० अंश झुका है इसी तरह नतांश मालुम होवे तो उन्नतांश मालुम होजाते हैं जैसे नतांश ४५ अंश हैं तो ४५ अंशको ९० में घटाने से शेष ४५ उन्नतांश होवेंगे क्योंकि नतांश और उन्नतांशका योग ९० होता है फारसीमें नतको बअद अजसिमतुर्रास, उन्नतको इरतफ़ अंग्रेजीमें जेनिथ डिस्टेन्स, एट ए लेटि त्यूट, बोलते हैं (Zenith distance at a latitude)

विषुवत्रेखाका वर्णन।

जिस रेखापर सूर्य्यके आनेसे दिन रात बराबर हो उस रेखाका नाम विषुवत् रेखा है यह भूगोलके मध्यसे निकली है फारसीमें इस रेखाका नाम खतेइस्तवा है औरं अंग्रेजीमें Equatar ईक्वेटर बोलते हैं श्रीभास्कराचार्य्यने विषुवत् रेखापर ४ चार और याम्योत्तरपर दो इस तरह छे स्थान गणितके वास्ते माने हैं उनके नाम ये हैं, लंका, यमकोटि, रोमकसान, सिद्धपुर इतने विषुवत् रेखापर और उत्तर तथा दक्षिण ध्रुव ये दोनों दक्षिणोत्तर वृत्तपर निर्द्धा-

रित किये गये हैं इन छै स्थानोंमें परस्पर नब्बे नब्बे अंशोंका अन्तर है और इन दिनोंमें सिद्धपुर अमेरिकाको कहना चाहिये ॥

विमण्डलवृत्तका वर्णन ।

जिस वृत्तमें चन्द्रमा चलता है उसका नाम विमण्डल वृत्त है सूर्य्यको छोड़कर और सब ग्रहोंके दोदो वृत्त होते हैं एक कक्षा वृत्त दूसरा विमण्डल वृत्त इस विमण्डल वृत्तको फारसीमें मदार कमरी और अंग्रेजीमें Orbit of moon ओरबिट ऑफ मून कहते हैं ॥

उन्मण्डलका वर्णन ।

लंकाके क्षितिज वृत्तका नाम उन्मण्डल है सब धरतीपर छोटे बड़े दिन होनेका कारण वही वृत्त है उन्मण्डलको फारसीमें उफुक खते इस्तवा और अँग्रेजीमें Hrizon of equatar. होराइजन ऑफ ईके-टर बोलते हैं ॥

याम्योत्तरवृत्तका वर्णन ।

एक वृत्त अपने शिरपर होता हुआ दक्षिणोत्तर ध्रुवमें प्रवेश करता है उसका नाम याम्योत्तर वृत्त है और प्रतिदिवस जब सूर्य्य उसपर आते हैं तो दिनमान रात्रिमानके दो दो भाग बराबर होजाते हैं इस वृत्तको फारसीमें दायरे शमालवजनूब कहते हैं और अंग्रेजीमें रेडिअन बोलते हैं ॥

क्रांतिवृत्तका वर्णन ।

क्रांतिवृत्त वह महावृत्त है जिसमें सूर्य्यपर यथार्थमें पृथ्वी अपनी वार्षिकपरिक्रमा पूरी करती है उसके बारह विभाग हैं जिनमेंसे प्रत्येकको राशि कहते हैं। उनके नाम ये हैं उत्तरीराशि—मेष, वृषभ, मिथुन, कर्क, सिंह, और कन्या और दक्षिणी राशि—तुला, वृश्चिक, धन, मकर, कुम्भ, और मीन इनमेंसे ९ राशि हररातको दिखाई

देती हैं और छठीराशि सूर्य्यके प्रकाशसे छिपजाती है ॥ बाकी ६ राशि पृथ्वीकी आड़में होजाती है क्रांतिवृत्त विषुवद्रेखाको सम्पातके दो बिन्दुओंमें वक्रकोणसे काटता है और वे रेखा जो विषुवत् रेखाके दोनों ओर क्रांतिवृत्तकी सीमा है अयनवृत्त कहलाती है हर एक ग्रहकी कक्षामें दो स्थान रहते है। एक उच्च स्थान दूसरा नीच स्थान जब ग्रह अपने उच्च स्थानमें जाता है तो उसका बिम्ब छोटा दृष्टि आता है और गति कम होजाती है, जब नीच स्थानपर जाता है तो बिम्ब बड़ा और गति बढ़जाती है, इसीप्रकार जब सूर्य्य अपनी क्रांतिवृत्तमें फिरतेहुए उच्चस्थानपर जाते हैं तब सब पृथ्वीवालोंसे बहुत दूर रहते हैं हजारों कोसका अथवा मीलका अन्तर पड़जाता है जब नीचस्थानमें जाते हैं तब सब पृथ्वीवालोंसे समीप रहते हैं उच्चस्थानसे ७ राशि नीचका होता है ॥

प्रश्न–इसीलिये फलित ज्योतिषमें नीच ग्रहका फल अशुभ बतलायागया है क्या नीचग्रहभी किसी स्थानपर शुभ फक देता है?

उत्तर–हां कुण्डलीमें इन स्थानोंपर शुभ फलभी देता है ॥

लाभे धने भ्रातृकसौख्यधर्मे नीचग्रहाश्चेत् स्थित राजयोगः। लग्ने व्यये छिद्रगते हि तुङ्गे नृपगृहे जात भवेद्दरिद्री ॥ द्वित्रिसंस्था ग्रहा नीचाः धर्मखाये नृपो भवेत्। उच्चे षष्ठे भवेद्दासः निधनांत्ये च भिक्षुकः ॥

अर्थ–ग्यारहवें, दूसरे, तीसरे चौथे, नवें, दशवें इनमें नीच ग्रह पडे तो राजयोगकारक होताहै और लग्नमें, छठे, आठवें, बारवें, इनमें उच्चका ग्रह पडे तौभी दरिद्रयोगकारक होताहै ॥

प्रश्न–उदय अस्त और मध्याह्न इनकालोंमें सूर्य्य पृथ्वीसे किस समयमें दूर रहते हैं?

उत्तर–सूर्य्य पृथ्वीसे उदयके समयमें और अस्तके समयमें पृथ्वीके व्यासार्द्धतुल्य दूर रहतेहैं और मध्याह्नके समयमें समीप रहतेहैं ॥

भूपृष्ठकी स्वाभाविक रचना ।

भूपृष्ठका संपूर्ण क्षेत्रफल १९७०००००० वर्गमील है जिसमेंसे थल ५१५०००००० वर्गमील अर्थात् संपूर्ण पृष्ठकी चौथाईसे कुछ अधिकहै और जल १४५५०००००वर्गमील अर्थात् संपूर्णकी प्रायः तीन चौथाईके बराबर है ॥

पृथ्वीसे चन्द्रमा सब ग्रहोमें अत्यन्त समीप है इसीलिये पृथ्वीके पदार्थोंपर चन्द्रमाका प्रभाव अत्यन्त पडताहै यहांतक कि समुद्रकी लहरोंका घटना बढ़ना चन्द्रमाहीके वृद्धि ह्रासपर निर्भर है और फलितमेंभी चन्द्रमाका प्रभाव अत्यन्त बतलाया है ॥

इन्दुः सर्वत्र बीजाभो लग्नन्तु कुसुमप्रभम् । फलेन सदृशोंशश्च भावः स्वादु समः स्मृतः ॥ (भु०दी०)

अर्थ–कार्य्य है सो वृक्षस्वरूप है उस कार्य्यरूपी वृक्षका बीज चन्द्रमा है उस वृक्षका फल लग्न है और फल लग्नका नवांशहै और इसफलका स्वाद द्वादशभाव है ॥

सूर्य्यके समीप रहनेवाले ग्रह बुध शुक्र हैं जब बुध सूर्य्यसे२८।० अंशके फासलेपर रहताह तबतक देखनेमें आताहै और इससे अधिक समीप होनेपर देखनेमें नहीं आता शुक्र सूर्य्यसे ४८ अंशके फासलेतक दिखलाई देताहै इससे समीप होनेपर देखनेमें नहीं आता और सूर्य्यके उदयअस्तके पहले और पश्चात् ३॥ घंटेसे अधिक कालतक यह दिखलाई नहीं देता जब यह सूर्य्यके पश्चिम हो तब सूर्य्यके उदयके पहले और जब सूर्य्यके पूर्वमें हो तब सूर्य्यके अनंतर देखपड़ताहै संपूर्ण ग्रहोमें सूर्य्य बहुत बड़ा है इसलिये उसके

पास जो ग्रह होताहै उसकी गतिको सूर्य्य शीघ्र करदेताहै क्योंकि सूर्य्यका आकर्षण उस ग्रहपर समीप होनेसे ज्यादे पड़ताहै यह बात पञ्चाङ्ग देखनेसे स्पष्ट मालुम होजावेगी कि जो ग्रह सूर्य्ययुक्त व अस्तगत होताहै उसकी गति मामूली गतिसे बहुत अधिक होजाती है। इसीतरह बृहस्पतिके साथ होनेसेभी ग्रहकी कुछ गति बढ़जाती है क्योंकि सूर्यके उपरांत फिर शेष ग्रहोंमें बृहस्पति ही बड़ा है नेपूच्यून वगैरह और जो अंग्रेजी ग्रह हैं ये पृथ्वीसे बहुत दूर हैं और इनकी इतनी मंदगति है कि, मनुष्यकी सम्पूर्ण अवस्थामें भी इनकी एक परिक्रमा पूरी नहीं होती है इसीलिये फलितमें ये ग्रह नहीं लिये गये हैं॥

प्रश्न–इस सृष्टिको उत्पन्नहुये कितने वर्ष हुये?॥

उत्तर–आर्य्योंके सिद्धान्तानुसार सं० १९६१ चैत्रसुदी १ प्रतिपदा शुक्रवारको १९७२९४९००४ एक अरब, सत्तानबे करोड़ उन्तीस लाख, उनंचास हजार, चार वर्ष होते हैं ये गणित सूर्य-सिद्धांत आदि पुरातनग्रंथोक्त लिखागया है हिन्दुओंमें सब छोटे बड़े इस संकल्पको भली भाँति जानते हैं जो हरएक कार्य्यके प्रारम्भमें पढ़ाजाता है "वैवस्वतमन्वन्तरे अष्टाविंशतितमे युगे कलियुगे कलिप्रथमचरणे आर्यावर्त्तान्तर्गते" अर्थात् आर्यवर्त देशमें यह सातवां वैवस्वत मन्वन्तर है जिसका यह अट्ठाईसवां कलियुग और कलियुगमें भी प्रथमचरण अर्थात् पहिला चतुर्थांश व्यतीत होरहा है और एक मन्वन्तर ३०६७२०००० वर्षोंका होता है ऐसे ६ मन्वन्तर बीत चुके हैं अतएव इस अवधिको छः गुणा करनेसे १८४०३२०००० वर्ष होते हैं और प्रत्येक मन्वन्तर के अंतमें एक सत युगके प्रमाण संधिके वर्ष शामिल किये जाते हैं और १४ मन्वन्तरोंमें १५ संधि होती हैं इसलिये ६ मन्वन्तरों

क खतम होनेपर ७ संधियां शामिल करना चाहिय अतएव ७ संधियोंके वर्ष १२०९६००० गतहुये इनको ६ गत मन्वन्तरोंके वर्षोंमें जोड़नेसे १८५२४१६००० वर्ष हुये अब २७ चतुर्युगी व्यतीत होचुकी है इनके वर्ष ११६६४०००० उपरोक्त अंकमें जोड़-नेसे १९६९०५६००० वर्ष होते हैं और २८ वीं चतुर्युगीमें ३ युग बीतकर ४ था कलियुग विद्यमान है इसलिये गत ३ युगोंके वर्ष ३८८८००० उक्त अंकमें मिलानेसे १९७२९४४००० वर्ष हुये और कलियुगके प्रारम्भसे शालिवाहन शके तक ३१७९ वर्ष व्य-तीत हुये हैं और शालिवाहनके गत वर्ष १८२५ हुये हैं इन १८२५ को ३१७९ में जोड़नेसे कलियुगके गत वर्ष ५००४ होते हैं इन कलियुगके गत वर्षको १९७२९४४००० म शामिल किया तो १९७२९४९००४ वर्ष हुये बस इतने ही वर्ष सृष्टिको उत्पन्नहुये हुये हैं॥

शंका–आपने यह कैसे जाना कि वर्त्तमान कलियुगकेशालि-वाहन शाकेतक इतने वर्ष गएहैं क्योंकि इसका जिकर संकल्पमें नहीं है॥

समाधान–सिद्धान्तशिरोमाणिमें लिखाहै कि–

याताः षण्मनवो युगानि भमितान्यन्यद्युगांघ्रित्रयम्।
नन्दाद्रीन्दुगुणास्तथा शकनृपस्यान्ते कलेर्वत्सरः॥

अर्थ–छःमन्वन्तर बीतचुके और सातवां वर्त्त रहाहै उसकी भी सत्ताईसवीं चतुर्युगी बीतिचुकी तथा अट्ठाईसवीं चतुर्युगी वर्त्तमान है उसकेभी तीन युग बीतगये और चौथा अब कलियुग है उसके भी शाका शालिवाहनके आरंभ तक ३१७९ वर्ष होगए हैं इति। इसीके अनुसार हमने कलियुगके गत वर्ष जोड़े हैं॥

प्रश्न– अंग्रेज लोग तो सृष्टिको उत्पन्नहुए कुल पांचहजारही वर्ष बताते हैं इसका क्या कारण है ?॥

उत्तर–अंग्रेजोंमें सबका यह सिद्धान्त नहीं है जो लोग नूहके तूफानके बाद सृष्टिका आरम्भ मानते हैं वे ऐसा समझते होंगे प्रोफेसर निकसलीसाहिब बहादुर प्रसिद्ध ज्योलोजिस्टने अत्यन्त अनुसंधानके उपरान्त यह निश्चय किया है कि, जबसे दुनियामें वनस्पति ऊगना आरम्भ हुई है उससे आजतक १०००००००००० एक अरब वर्ष व्यतीत हुए होंगे (देखो किताब World life वर्ल्डलाइफ पृष्ठ १८०) प्रोफेसर रीड साहिब कहते हैं ५०००००००० पचास करोड़ वर्ष हुए होंगे तबसे योरोपमें वनस्पति ऊगना आरम्भ हुवा है, ऐतिहासिक आनरेबल इर्नफिसटन साहिब बहादुर भूतपूर्व गवरनर बंबई कहते हैं कि, जो समय ब्रह्माका एक दिन नियत किया गया है यह ज्योतिष विद्याके नियमपर स्थित हुआ है वे लिखतेहैं कि, नोडिज और इम्पायजरकी कामिल गर्दिश जो हिन्दुओंके ज्योतिषानुसार चार अरब बत्तीस करोड़ वर्षमें पूरी होती है एक दिन ब्रह्माका है नोडिज सूर्य्यके उस स्थानको कहते हैं कि, जहां किसी ग्रहकी गतिकी परिधिका कटाव होता है अर्थात् रास जनब, इम्याइजर सितारेके उन दो स्थानोंको कहते हैं कि, जो आदि कालमें अत्यन्त निकट और महा दूर समझे जाते थे और अब सूर्य्यके अतिनिकट और अतिदूर समझे जाते हैं याने शीर्षतले और पदतले (तारीख हिन्दुस्तान पृष्ठ २५६ बाब तीसरा सन् १८६६ ई० छपाहुआ अलीगढ़में देखिये) चीनी सम्वत् जो चीनके प्रथम बादशाहसे चला है इसवक्त ९६००२४०४ नौकरोड़ साठ लाख दो हजार चारसौ चार है और खताई सम्वत् वर्त्तमान ८८४०२७७ है तथा पारसी सम्वत् इसवक्त १८९८७० एक लाख

नवासीहजार आठसौ सत्तर है जब मनुष्यके चलाये सम्बतोंकोही करोड़ों वर्ष होगये फिर सृष्टि की उत्पत्तिकी क्या बात पूँछतेहैं जरा गौर करके समझियेगा और पुरातन आर्य्योंके सिद्धान्तपर आस्था रखियेगा जो अविचल सत्य है ॥

प्रश्न–आपने जो सृष्टिको उत्पन्न हुए इतने वर्ष बतलाये इसका क्या सुबूत है ? ॥

उत्तर–शास्त्रीय प्रमाण ऊपर लिखे गए हैं परन्तु आप तो जेन्टलमेन हैं ऐसी बातोंको क्यों माननेलगे प्रत्यक्ष प्रमाण इन वर्षोंका यहीहै कि इन वर्षोंका अहर्गण बनाकर सिद्धान्तानुसार ग्रह बनाइयेगा संपूर्ण स्पष्ट ग्रह तिथि वार नक्षत्रादि सहित सब निकलआवेंगे श्रीकृष्णका जन्म सन् १९६१ चैत्र सुदी १ से ५१२९ बरस पूर्व भादों वदी ८ बुधवारको हुआ है उस दिनका गणित कीजियेगा बरावर रोहिणी नक्षत्र और संपूर्ण जन्मग्रह श्रीकृष्णचन्द्रके निकलआवेंगे फिर और प्रमाण आपको क्या चाहिये हिन्दू देवताओंकी ईश्वरता आप उन्होंको ग्रहोंसेही विचार सक्ते हैं जो ज्योतिषमतानुसार स्पष्ट किये गएहैं संपूर्ण ग्रह उच्चके किसीके नहीं होते हजरत ईसा मसीह व अन्य पैगम्बरोंकी कुण्डलियोंके साथ श्रीरामकृष्णके जन्म ग्रहोंका मुकाबला कीजिये तब उन्होंका तारतम्य आपको मालुम होगा? ॥

प्रश्न–क्या प्रमाण है कि, रामकृष्णके वस्तुतः ग्रह यही हैं जो आजकल प्रचलित हैं ॥

उत्तर–आप गणितकरके देखलीजिये और इतना तो बिनागणितके मालुम होसक्ताहै कि, श्रीरामका जन्म चैत्र सुदी ९ मध्याह्न में हुआहै उस दिन सदा कर्कका चन्द्र होताहै और मध्याह्नको कर्क-

लग्न आतीही है सूर्य्य मेषके आदी जातेहैं और शुक्र मीनके प्रायः रहतेहीहैं तो अब कर्कस्थ चन्द्रमूर्ति बर्त्ती और उच्चका सूर्य्य दशम तथा उच्चका शुक्र भाग्यघरमें हुआ या नहीं ज्योतिषमतानुसार ये क्या कम योगहैं इसीतरह श्रीकृष्णका जन्म भादों वदी ८ को निशीथ समयपर हुवाहै अब देखिये भादोंमें सदा सूर्य्य सिंहके रहतेहैं भादों वदी ८ को चन्द्रमा सदा वृषराशिस्थ होताहै और आधी रातको उनदिनोंमें प्रायः वृषलग्न आतीही है शुक्र प्रायः तुलाके होतेहीहैं अब ऊंचका चन्द्रमा लग्नवर्ती, स्वक्षेत्री सूर्य्य चौथे घरमें आदि क्या अल्प स्वल्प योग हैं इतने ग्रह तो सदा भादों और चैत्रमें आतेही हैं, रहे गुरु शनि मंगल सो आप गणितकर लीजिये ॥

प्रश्न–आर्य्यसमाजके संस्थापक स्वामी दयानन्दसरस्वतीने भाष्यभूमिकादि ग्रंथोंमें जो सृष्टिके उत्पत्तिके वर्ष लिखेहैं उनमें और आपके वर्षोंमें १२०९६२०० एक करोड़, वीस लाख छानबे हजार दोसौ वर्षोंका अन्तर है इसका क्या कारण है ? ॥

उत्तर–स्वामीजी गणितकरनेमें भूलगएहैं उन्होंने प्रत्येक मन्वन्तरके आद्यन्तमें जो कृतयुत प्रमाण संधिके वर्ष आतेहैं वह शामिल नहीं कियेहैं यही उन्होंकी भूलहै और वही गलत सम्वत् आर्य्यसमाजमें अभीतक चलरहा है इसविषयमें सबकी आखें बन्द हैं दयानन्दातिमिरभास्करके कर्त्ताने भी इस भूलको नहीं पकड़ाहै ॥

यदि सज्जनोंने वर्त्तमानग्रंथको पसंदाकिया है तो फिर औरभी उत्तमोत्तम ग्रंथ प्रकाशित किये जावेंगे–यहांतक फलित ज्योतिष

जो मेरापरीक्षित है लिखा गया अब मैं अपनी लेखनीको विश्राम देताहूँ ॥

वक्रमभूषड्गोब्जेऽब्दे रविवारे सुठालियाग्रामे ॥
ज्येष्ठे शुक्ले षष्ठ्यां ज्योतिःकल्पद्रुमो वरीवर्ति ॥१॥

अर्थ-संवत् १९६१ विक्रमी ज्येष्ठ सुदी ६ रविवारको यह-ज्योतिषकल्पद्रुम नामक ग्रंथ पूर्ण हुआ ॥१॥ इति ॥

इति पवाँरकुलकमलमार्त्तण्ड श्रीमहाराज शंभुसिंह सुठालिया धीशकृते ज्योतिषकल्पद्रुमग्रंथे स्वानुभूतज्योतिषवर्गे सिद्धांतप्रकरणं समाप्तम् ।





सिविललिस्ट राज्य सुठालिया जिसके फरमारवाय, महाराज श्रीशम्भूसिंह जी साहब वर्त्तमान सुठालियाधीश हैं।

नं०	नाम.	ओहदा.
१।	काकासाहब जसवन्तसिंहजी,	प्रेजीडेंट कौंसिल.
२।	ठा०साहब ॐकारसिंह जी,	कमाण्डररिसाला.
३।	ठा०रघुनाथसिंह जी साहेब,	अफसर केवलरी.
४।	ठा०शङ्करसिंह जी साहब,	मशीरे खासदरबार.
५।	ठा०गोर्धनसिंह जी साहब,	मशीरुद्दोला.
६।	ठा० क्षत्रसाल जी साहब,	एड. डी. केम्पदरबार.
७।	पं०नन्दलाल जी साहब,	दीवान रियासत.
८।	महामहोपाध्याय भट्टवैज्यनाथ जी,	राजगुरु.
९।	पं० दौलतराम जी साहब,	मुन्तजिम जनरल.
१०।	पं०कन्हैयालाल जी,	प्राइवेटसेक्रेटरीदरबार
११।	पं०चम्पालाल जी,	खजाञ्ची रियासत.
१२।	मुंशीखुरशेदअली जी,	मुन्तजिम पुलिस.
१३।	ला०गोपीलाल जी,	तहसीलदार कलाँ.
१४।	विद्यासागर पं० गङ्गाधर जी शास्त्री,	याज्ञिक.
१५।	पं०उद्धवजीशास्त्री,	पौराणिकराज.
१६।	ठा०शिवसिंह जी, कछावा,	मुसाहिबआला.
१७।	ठा०चेनसिंह जी गांगावत,	मुसाहिब.
१८।	ठा०सरवनसिंह जी चौड़ावत,	दफेदार केवलरी.
१९।	ठा०अनारसिंह जी,	उमराव रियासत.
२०।	ठा०बेरीसाल जी,	किलेदार.

२१। ला॰प्यारेलाल जी,	नायब तहसीलदार
२२। ला॰मोतीलाल जी	सबइंस्पेक्टर पुलिस.
२३। ला॰विहारीलाल जी,	चेक नवीस.
२४। ला॰गजाधर जी,	मुत्सद्दी भण्डार.
२५। ठा॰जवाहरसिंह जी,	तहसीलदार पाटड़ी.
२६। ला॰दुर्गाप्रसाद जी,	हेडक्लर्क दफ्तरअंग्रेजी.
२७। ला॰मनोहरलाल जी,	मुहत्मिमसायर.
२८। ला॰नन्दलाल जी,	मुहत्मिममोघयान.
२९। ला॰सुन्दरलाल जी,	असिस्टंट मुहत्मिमसायर.
३०। मा॰रघुनाथसिंह जी,	हेडमास्टर राजस्कूल.
३१। कुँवर महताबसिंह जी,	मुहत्मिम भण्डार.
३२। मोलवीचांदअली,	मुदर्रिस फारसी.
३३। पं॰नारायणवख्शजी,	मुहतमिम हदबस्त.
३४। ला॰नवलकिशोर जी,	कानूंगो.
३५। ला॰ॐकारवख्श जी,	कारपरदाज खेड़ी.
३६। ठा॰शैतानसिंह जी,—मुन्तजिम डिवढ़ीबड़ी रानीसाहिबा.	
३७। ला॰रामलाल जी,	हेड पटवारियान.
३८। ठा॰मदनसिंह जी,	सुपरडण्ट तामीरात.
३९। कुँवरकुवेरसिंह जी,	मैनेजर सरस्वती भण्डार.
४०। ठा॰हरीसिंह जी,	फोटोग्राफरराज.
४१। कुँवरबलभद्रजी,	असिस्टंट मशीरेशास.

"श्रीवेङ्कटेश्वर" स्टीम्-यन्त्रालय-बम्बई.

मुद्रक एवं प्रकाशक:

खेमराज श्रीकृष्णदास,

अध्यक्ष : श्रीवेंकटेश्वर प्रेस,

खेमराज श्रीकृष्णदास मार्ग, बम्बई-४०० ००४